द्वितीय वर्ष कला

हिन्दी प्रश्न पत्र क्र. 3

आधुनिक गद्य

डॉ. राजन वेळुकर,
कुलगुरु,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्राचार्य डॉ. नरेश चंद्र
उप-कुलगुरु,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

डॉ. धनेश्वर हरिचंदन,
प्राध्यापक एंव संचालक
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

कार्यक्रम समन्वयक
प्रा. संतोष राठोड,
सहाय्यक प्राध्यापक- नि. साहाय्यक संचालक
दूर एवं मुक्त अध्ययन संस्था
मुंबई विश्वविद्यालय
मुंबई- ४०००९८

संपादन एवं लेखन
डॉ. अनिल सिंह
उपप्राचार्य एंव अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सोनुभाऊ बसवंत कला-वाणीज्य महविद्यालय
शहापूर, जि. ठाणे - ४२१६०१

लेखक
डॉ. संतोष मोटवाणी
आर. के. तलरेजा कला वाणिज्य
एवं विज्ञान महाविद्यालय
उल्हासनगर, जि. ठाणे
डॉ. निर्मला त्रिपाठी
विभाग प्रमुख
सोफिया महिला महाविद्यालय
मुंबई - ४०००२६

द्वितीय वर्ष कला, हिन्दी प्रश्न पत्र क्र. 3 आधुनिक गद्य

प्रकाशक : प्राध्यापक एवं संचालक
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

अक्षर जुळवणी : गांवकर लेझर पॉईंट,
बोरिवली (प), मुंबई – ४०००९२

अनुक्रमणिका

१.	समुद्र में खोया हुआ आदमी - कमलेश्वर	१
२.	समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास पर आधारित प्रश्न	८
३.	समुद्र में खोया हुआ आदमी में पात्र और चरित्र-चित्रण	१४
४.	समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास का उद्देश्य	२४
५.	परीक्षा हेतु उपयोगी प्रश्न	३०
६.	मिथिलेश्वर की कहानियाँ	४२
६-अ	बापुजी	४६
६-ब	बन्द रास्तों के बीच	५३
७	दूसरा महाभारत	६०
७-अ	मेघना का निर्णय	६६
८	तिरिया जनम	७३
८-अ	हरिहर काका	८०
९	जी का जंजाल	८७
९-अ	जंगल होते शहर	९४
१०	सावित्री दीदी	१००
१०-अ	थोड़ी देर बाद	१०७
११	रंग-सप्तक	११३
१२	राखी का मूल्य	११८
१३	वापसी	१२२
१४	दो कलाकार	१२५
१५	कॉफी हाऊस में इंतजार	१२९

द्वितीय वर्ष कला

हिन्दी प्रश्न पत्र क्र. 3

आधुनिक गद्य

१. **समुद्र में खोया हुआ आदमी (उपन्यास) - कमलेश्वर,**
लोकभारती प्रकाशन,
एम.जी. रोज, इलाहबाद- ०१

२. **प्रतिनिधि कहानियाँ - मिथिलेश्वर**
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
१- बी. नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२

पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित कहानियाँ

१. बाबूजी
२. बंद रास्तों के बीच
३. दूसरा महाभारत
४. मेघना का निर्णय
५. तिरिया जनम
६. हरिहर काका
७. जी का जंजाल
८. जंगल होते शहर
९. सावित्री दीदी
१०. थोड़ी देर बाद

(३) **रंग-सप्तक (एकांकी-संग्रह)**
संपादक - डॉ. सरस्वती भल्ला
वाणी प्रकाशन २१-ए, दरियागंज
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित एकांकियाँ

१. जोंक- उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

२. राखी का मूल्य - हरिकृष्ण प्रेमी

३. वापसी- विष्णु प्रभाकर

४. दो कलाकार - भगवतीचरण वर्मा

५. कॉफी हाऊस में इंतजार - लक्ष्मीनारायण लाल

Semester - III (सत्र-III)

निर्धारित पाठ्यक्रम

- समुद्र में खोय हुआ आदमी - कमलेश्वर
- प्रतिनिधि कहानियाँ - मिथिलेश्वर

प्रथम पाँच कहानियाँ - (बाबूजी से लेकर तिरिया जनम तक)

Semester-IV (सत्र- IV)

निर्धारित पाठ्यक्रम

- रंग-सप्तक (एकांकी संग्रह) संपादक - डॉ. सरस्वती भल्ला

संकलन से निर्धारित एकांकियाँ

- प्रतिनिधि कहानियाँ - मिथिलेश्वर

प्रथम पाँच कहानियाँ (हरिहर काका से लेकर थोड़ी देर बाद तक)

Semester-IV (सत्र- IV)

- समुद्र मे खोया हुआ आदमी (उपन्यास)

यूनिट - ०१-	व्याख्यान-०५	पाठ वाचन एवं व्याख्यौ
यूनिट-०२	व्याख्यान - ०५	पाठवाचन एवं व्याख्या
यूनिट-०३	व्याख्यान-०५	पाठालोचन एवं प्रश्न चर्चा

प्रतिनिधि कहानियाँ- मिथिलेश्वर

यूनिट-०४	व्याख्यान-०९	- बाबूजी, बंद रास्तों के बीच, दूसरा महाभारत
यूनिट-०५	व्याख्यान-०६	- मेघना का निर्णय, तिरिया जनम
यूनिट-०६	व्याख्यान-१५	- प्रस्तुतिकरण, प्रकल्प, चर्चा, वाचन,

लेखन तथा अन्य रचनात्मक कार्य

Semester-IV (सत्र- IV)

- प्रतिनिधि कहानियाँ - मिथिलेश्वर

यूनिट - ०१	व्याख्यान-०९	- हरिहर काका, जी का जंजाल, जंगल होते शहर
यूनिट - ०२	व्याख्यान- ०६	सावित्री दीदी, थोड़ी देर बाद

- रंग-सप्तक (एकांकी-संग्रह)

यूनिट-०३	व्याख्यान-०६-	जोंक, राखी का मूल्य,
यूनिट-०४	व्याख्यान-०६-	वापसी, दो कलाकार
यूनिट- ०५	व्याख्यान-०३-	कॉफी हाऊस में इंतजार
यूनिट-०६	व्याख्यान- १५	प्रस्तुतिकरण, प्रकल्प, चर्चा,वाचन

अन्य लेखन तथा रचनात्मक कार्य

प्रति सत्र कुल क्रेडिट- ०३

३० व्याख्यान - पाठ्य-पुस्तकें

१५ व्याख्यान - प्रस्तुतिकरण एवं रचनात्मक गतिविधियाँ

नियमित विद्यार्थियों हेतु-

प्रश्न-पत्र का प्रारूप (दोनो सत्रों हेतु) प्रत्येक सत्र समय ०२ घंटे कुल	-	**६० अंक**
प्रश्न -१. संदर्भ सहित व्याख्या (दोनों पुस्तकों में से विकल्प सहित)	-	१६ अंक
प्रश्न-२. दीर्घोत्तरी प्रश्न (दोनों पुस्तकों में से विकल्प सहित)		२४ अंक
प्रश्न-३. टिप्पणियाँ (दोनों पुस्तकों में से विकल्प सहित)	-	१० अंक
प्रश्न-४. एक वाक्य में उत्तर (दोनों पुस्तकों में से ५-५)	-	१० अंक

नियमित विद्यार्थियों हेतु-

आंतरिक परीक्षण (दोनों सत्रों हेतु) प्रत्येक सत्र कुल	-	**४० अंक**
(क) कक्ष परीक्षा (०१)	-	१० अंक
(ख) रचनात्मक कार्य, प्रकल्प आदि (०१)	-	२० अंक
(ग) कक्ष-शिक्षण के दौरान सक्रिय सहभागिता	-	०५ अंक
(घ) अकादमिक गतिविधियों के संचालन में नेतृत्व कुशलता शिष्टाचार तथा जिम्मेदार विद्यार्थी के रूप में समग्र आचरण	-	०५ अंक
आई.डी.ओ.एल. विद्यार्थियों हेतु-समय ०३ घंटे कुल	-	**१०० अंक**

प्रश्न-पत्र का प्रारूप

प्रश्न -१.संदर्भ सहित व्याख्या (तीनों पुस्तकों में से विकल्प सहित)	२७ अंक
प्रश्न -२. दीर्घोत्तरी प्रश्न (तीनों पुस्तकों में से विकल्प सहित)	३० अंक
प्रश्न -३. संदर्भ सहित व्याख्या (तीनों पुस्तकों में से एक उत्तर अपेक्षित)	०८ अंक
प्रश्न -४. सामान्य प्रश्न (तीनों पुस्तकों में से एक उत्तर अपेक्षित)	१० अंक
प्रश्न-५. टिप्पणियाँ (तीनों पुस्तकों में से विकल्प सहित)	१५ अंक
प्रश्न-६. लघुत्तरीय प्रश्न (वस्तुनिष्ठ) (तीनों पुस्तकों में से)	१० अंक

१

समुद्र में खोया हुआ आदमी - कमलेश्वर

प्रो. डॉ. अनिलकुमार सिंह

इकाई की रूपरेखा

१.१ इकाई का उद्देश्य

१.२ प्रस्तावना

१.३ कमलेश्वर परिचयात्मक रेखांकन

१.३.१ रचनाएं

१.३.२ पुरस्कार एवं सम्मान

१.४ कथासार

१.१ इकाई का उद्देश्य

कमलेश्वर द्वारा रचित 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास के अध्ययन के साथ आप इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहीत स्पष्टीकरण भी कर सकेंगे। उपन्यास की विशेषताओं से भी परिचित होंगे। इस इकाई अध्ययन करने पर आप :-

- समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास के पाठांश के माध्यम से उनके विवेचन की प्रक्रिया से परिचित हो जायेंगे।
- समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में कमलेश्वर की रचना दृष्टि की समझ प्राप्त करेंगे।
- उपन्यास के छोटे-छोटे अध्याय जो अलग-अलग शीर्षकों में लिखे गये है उनसे कमलेश्वर के लेखन शैली से अवगत होंगे।
- ज़ीवन की परिवर्तनशीलता का गहरा अहसास एवं आर्थिक तंगी से जूझते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी को समझ सकेंगे।
- विवेच्य उपन्यास में आए व्यक्ति और परिवेश के द्वंद्व से जीवन को समझने की दृष्टि पैदा कर सकेंगे।
- समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में आए युग-सत्य का परिचय प्राप्त करेंगे।

१.२ प्रस्तावना

कमलेश्वर के 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास को पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित मुद्दों को केन्द्र में रखते हुए उसका अध्ययन अनिवार्य है। उपन्यासकार कमलेश्वर से विध्यार्थी भलीभांति अवगत हो सके, इसलिए उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए कथासाहित्य में उनके प्रदेय आदि पर भी विचार किया गया है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास को पढ़ने और समझने में विद्यार्थियों में रूचि निर्माण हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए कथासार में इन सब पर भी गहराई से विचार किया गया है। आजादी के पश्चात् परिवेशगत विषमता और विद्रुपताओ को लेखक ने किस तरह रूपायित किया है। समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास

के आधार पर अध्ययन हेतु विवेचन विश्लेषण किया गया है। उपन्यासकार ने श्यामलाल, रम्मी, तारा, समीरा, वीरेन्द्र और हरबंस के माध्यम से उनके चरित्रिक विशेषताओं और परिस्थितिजन्य स्थितियों से साक्षात्कार करवाया है। रोजमर्रा के जीवन में मध्यमवर्गीय परिवार को जिन कठीनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिन आकांक्षाओं और आशंकाओं की प्रतीक्षा में जिन्दगी जीता है उन सबको 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के जरिए चित्रित किया गया है।

विद्यार्थियों को उपन्यास में चित्रित परिवेश और समस्याओं आदि से अवगत होने में कठिनाई न हो इसलिए कथासार दिया गया है। परीक्षा की दृष्टि से तैयारी करने में असुविधा न हो। इन सब पर विचार करते हुए 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के महत्त्व को भी प्रतिपादित किया गया है।

१.३ कमलेश्वर परिचयात्मक रेखांकनः

किसी रचनाकार के व्यक्तित्व निर्माण में परिवेश के साथ-साथ परिवार और समाज का बहुत बड़ा योगदान होता है। प्रेमचंद के बाद के सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकारों में कमलेश्वर का नाम सबसे पहले लिया जाता है। कमलेश्वर का जन्म ६ जनवरी १९३२ को जगदम्बा प्रसाद सक्सेना के यहां उत्तरप्रदेश के मौनपुरी में हुआ था। 'कैलाश' से 'कमलेश्वर' नाम से विख्यात होनेवाले इस रचनाकार का पूर्ण नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना है। इनके पिता का नाम जगदम्बा प्रसाद और माता का नाम शान्तिदेवी था। उन्हीं ने कमलेश्वर को पालपोसकर बड़ा किया। बाल्यावस्था में ही पिता का साया उठ जाने के कारण कमलेश्वर को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

भाई सिद्धार्थ की मृत्यु से घर की नौका पुरी तरह के डगमगा गई। रही सही साख भी धीरे-धीरे धूमिल पड़ती गई। पिता और भाई के देहान्त ने उन्हें बचपन में हर तरह से अकेला कर दिया था। अपने गर्दिश के दिनों में भी कमलेश्वर ने सदैव हिम्मत और विवेक से काम लिया। आत्मसम्मान खुद्दारी से जीने का पाठ उन्होंने अपनी माँ शांतिदेवी से पढ़ लिया था। माँ ने पुरे शांती के साथ दुःख में हंसना, जीना और निरन्तर आगे बढ़ते रहने का पाठ पढ़ा दिया था। अकेलेपन और अभावों की भट्टी ने कमलेश्वर को तपाकर जिम्मेदार, संयमी और स्वाभाविक बना दिया।

कमलेश्वर शिक्षा की ओर अग्रसर जरूर हो रहे थे, पर वहां भी उन्हें संघर्ष करना पड़ रहा था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. कर लेने के बाद भी दुर्दिन के बादल छटे नहीं थे। इन्हीं परिवेश से उन्हें साहित्यिक संस्कार भी मिला। यही कारण है कि इलाहाबाद उनके सासों में, उनके दिलों में, उनके शब्दों में हर तरह से समाया हुआ था। हाड़तोड़ परिश्रम का पाठ इन्होंने अपनी माता से पढ़ा । कमलेश्वर के बालसखा दुष्यंतकुमार ने उनके स्वभागत विशेषताओं को रेखांकित करते हुए कहा है - ''उन दिनों भी खुद्दार इतना था कि वह अपनी बात किसी से नहीं करता था। मुझे वो दिन याद है जब वह अपने आप में 'सर्वोदयी' हो गया था। साबुन बनाने से लेकर अपनी स्याही तक खुद बनाता था, संकोची वह इतना था कि खाना भी भरपेट नहीं खा पाता था। उसकी माँ ने ही मुझे एक बार बताया था, कैलाश इतना संकोच करता है कि दुबारा रोटी तक नहीं मांगता... मुझे जिंदगी में हमेशा यह अफसोस रहेगा कि मेरे बेटे ने मुझ से ही कभी रोटी या पैसा नहीं माँगा।''

इलाहाबाद के साहित्यिक महाकुंभ से जो साहित्यिक वातावरण मिला उसकी खुलकर अभिव्यक्ति कमलेश्वर ने की है। यह वह भूमि है जहाँ उन्हें गुरुवर धीरेन्द्र वर्मा, रामकुमार वर्मा, निराला, लक्ष्मीकान्त वर्मा, मार्कंडेय, बच्चनजी आदि रचनाकारों के सम्मिलन से समृद्ध रचना

संस्कार प्राप्त हुआ। इसी का परिणाम है कि उन्होंने 'राजा निरबंसिया' जैसी कहानी लिखी। अपने सिद्धान्तों से समझौता न करते हुए भी विरोधियों को अपना मित्र बना लेने की कला कोई कमलेश्वर से ही सीख सकता है।

कमलेश्वर जी बचपन से ही कर्मठ, साहसी, निडर, मिलनसार और खुशमिजाजी प्रवृत्ति के थे। अपने आदर्शों और सिद्धान्तों के चलते जीवन में उन्होंने कभी झुकना नहीं सिखा था। भले ही कमलेश्वर को तमाम कठीनाइयों का सामना क्यों न करना पड़ा हो। जीवन के प्रारम्भिक दौर में 'प्रूफरीडिंग, साईनबोर्ड पेटिंग, चाय गोदाम की चौकीदारी, स्क्रिप्ट-राइटर जो भी काम मिला चाहे वह संपादन और टी.वी. सिरियल लेखन, संपादन का कार्य क्यों न हो बड़े ही मेहनत और ईमानदारी से उन्होंने किया।

कमलेश्वर बहुमुखी पतिभा के धनी और कुशल रचनाकार थे। कविता को छोड़कर हिन्दी की शायद ही कोई विधा उनकी लेखनी से अनछुई रह गई हो। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाट्य रुपांतर, लेख समीक्षा, स्क्रिप्टलेखन, संवाद लेखन यात्रा संस्मरण, पत्र-पत्रिकाओं का संपादन आदि में अपनी लेखनी का जादू दिखाया है।

१.३.१ प्रकाशित रचनाएं:

कमलेश्वर के प्रकाशित रचनासंसार को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है-

कहानी संग्रह

१) राजा निरबंसिया
२) कस्बे का आदमी
३) खोई हुई दिशाएं
४) मांस का दरिया
५) जिंदा मुर्दे
६) बयान तथा अन्य कहानियां
७) इतने अच्छे दिन
८) मेरी प्रिय कहानियाँ
९) कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

उपन्यास

१) एक सड़क सत्तावन गलियाँ
२) डाक बंगला
३) तीसरा आदमी
४) समुद्र में खोया हुआ आदमी
५) लौटे हुए मुसाफिर
६) काली आँधी
७) आगामी अतीत
८) वही बात
९) सुबह... दोपहर....शाम
१०) रेगिस्तान
११) एक और चन्द्रकांता

१२) कितने पाकिस्तान

१३) पति-पत्नी और वह

१४) अम्मा

नाट्य रूपान्तर

अधुरी आवाज, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नष्टनीद का रूपान्तर, प्रेमचंद के चर्चिच उपन्यास गोदान, निर्मला, गबन, बाल नाटक, चार संग्रह आदि प्रकाशित है।

यात्रा वृत्तान्त

खण्डित यात्राएँ, देशदेशान्तर, कमलेश्वर की चर्चित यात्रा-वृत्तान्त है।

आत्मकथा (आत्म परक संस्मरण)

जो मैंने जिया, यादों के चिराग, जलती हुई नदी

संपादन कार्यः

इंगित, संकेत, नई कहानियाँ, सारिका, श्री वर्षा, गंगा, कथा यात्रा, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, गर्दिश के दिन, नई कहानी की भूमिका आदि संपादित कृतियां है

रचित कार्यक्रम (सीरियल लेखन) :

दर्पण, आकाश गंगा, रेत पर लिखे नाम, बिखरे पन्ने, विराट, बेताल पच्चीसी, चन्द्रकान्ता आदि सीरियलों का कुशल लेखन किया।

फिल्म लेखन

अमानुष, सारा आकाश, फिर भी, मि. नटवरलाल, उसके बाद दि बर्निंग ट्रेन, मौसम, आँधी, राम बलराम, पति-पत्नी और वह, आदि फिल्मों में पटकथा लेखन आदि का सराहनीय कार्य किया।

समीक्षात्मक पुस्तके (आलोचना)

नई कहानी की भूमिका, नई कहानी के बाद, मेरा पन्ना, दस्तक देते सवाल, मेरे साक्षात्कार, घटनाक्रम, हिन्दू बनाम हिन्दू, अपनी निगाह में आदि लोकप्रिय पुस्तके प्रकाशित हुई है।

१.३.२ पुरस्कार एवं सम्मान :

कमलेश्वर के विविधतापूर्ण लेखन, बहुआयामी लेख व साहित्यिक प्रदेय को देते हुए, कई पुरस्कार और सम्मानों से नवाजा गया है। उनके उल्लेखनीय प्रदेय को देखते हुए 'हिन्दी अकादमी पुरस्कार' साहित्य अकादमी पुस्कार, उत्तर प्रदेश द्वारा भारत-भारती सम्मान, शलाका सम्मान, २००५ में उन्हे पद्मभूषण से सम्मानित किया गया, इस प्रकार उनके साहित्यिक व उल्लेखनीय कार्यों के लिए और भी बहुत से संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। हिन्दी कथा साहित्य में कमलेश्वर अपनी विशिष्ट लेखनी के लिए अलग से जाने जाते हैं और जाने जाते रहेंगे। यही कमलेश्वर की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है।

१.४ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का 'कथा-सार'

किसी भी उपन्यास की रीढ़ उसकी कथा होती है। बगैर कथ्य के उपन्यास अपने मूल आकार व रूप को ग्रहण नहीं कर सकता। कथा को एक सूत्र में पिरोये रखना इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। उपन्यास का थीम, प्लॉट, चरित्र और अर्न्तकथाएँ जितना व्यक्ति और समाज सत्य के निकट होगा उपन्यास उतना ही मार्मिक और प्रभावी होगा।

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास कमलेश्वर का लघु एवं महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में कस्बों, नगरों और महानगरों की मूल्यहीनता, यांत्रिक सभ्यता, जीवनगत सफलता-असफलता, स्त्री-शिक्षा, स्वीकार-अस्वीकार, सुनहले सपनों का मोहभंग, बिखरते परिवार, पुलिस व सरकारी कार्यालयों, समाज से व्यक्ति और व्यक्ति से समाज के द्वंद्व में फसे मध्यवर्गीय व्यक्ति के सुख-दुख, आशा-निराशा, उपेक्षा, संघर्ष तमाम पीड़ाओ के बीच, भविष्य की अनिश्चिता और बुनते स्वप्न के विध्वंश होने की कसक को कथा के रूप में दिखाया गया है।

कस्बों या छोटे शहरों में रहनेवाले व्यक्ति का आकर्ष दिन पर दिन नगरों, महानगरों की ओर बढ़ता जा रहा है। ज्यादातर लोगों का यह भ्रम है कि नगरों में पहुँचते ही सभी आकांक्षाएं और अभिलाषाएं पूर्ण हो जाती है। बहुत कम लोग होते हैं जिन्हें यह सब नसीब होता है। सिंधी ट्रांसपोर्ट कम्पनी की ब्रांच जब दिल्ली में खुली श्यामलाल बड़े उम्मीद में बुकिंग क्लर्क के रूप में अपने परिवार के साथ दिल्ली चले जाते है। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि एक दिन वे ब्रांच मैनेजर बन जायेंगे। धीरे-धीरे अपना स्वयं का व्यवसाय भी प्रारम्भ कर देंगे। जिससे घर की आर्थिक स्थिति और अच्छी हो जायेगी। शेड में एक दिन चोरी हो जाने से श्यामलाल को न केवल नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया, अपितु हर्जाने के रूप में एक महीने की तनख्वाह भी उन्हें भरनी पड़ी। यही से श्यामलाल के जीवन का गणित बिगड़ता चला जाता है।

श्यामलाल जिन दिनों नौकरी से अलग किए गऐ। उस समय उनके पास किसी भी पकार का कोई सहारा न रह गया था। बड़ी लड़की तारा बीस वर्ष, समीरा सत्रह और छोटा बेटा वीरन चौदह साल का ही था। इसी बीच ट्रेसिंग का कार्य करनेवाले हरबंस का उनके घर आना जाना प्रारम्भ हो जाता है। कोई और मार्ग निकलते न देख हरबंस के कहने पर श्यामलाल घर-र जाकर आर्डर ले आने का काम करते। हरबंस उन घरों में जाकर इच्छानुसार बेलबूटों के डिजाईन ट्रेस कर आता। श्यामलाल, तारा और समीरा के सहयोग से अपना स्वयं का काम प्रारम्भ करने की सोचते है पर लड़कियों से खासा सहयोग न मिलते देख वे चुप बैठ जाते हैं।

हरबंस के पैटर्न हाऊस में तारा चालीस रूपये माहवार पर काम करने लगती है। हरबंस दुकान बंद करने के बाद तारा को घर पर भी छोड़ देता था। श्यामलाल यूनिफार्म मे स्कूल जाते बच्चों को देखते रहते हैं और सोचते है कि हर पिता अपने बच्चों के बड़े होने का इंतजार करता है मानों बड़े होते ही बच्चे सभी मुश्किलों से उबार लेंगे। वीरन घर की परिस्थितियों से भली-भांति अवगत होने के नाते बड़ा सादगी से रहता था। नौसेना में चुन लिए जाने की खुशखबरी से घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। बीरन के जहाज पर चले जाने पर एक तरह से घर खाली-खाली सा लगने लगता है। हरबंस के कहने पर समीरा भी कॉलेज जाने लगती है। वीरन के तार और मनीआर्डर भी आने लगे थे। नमता द्वारा उठाकर लायी गई चिट्ठी को पढ़ने पर वीरन के समुद्री जीवन और आने की सूचना मिलती है।

श्यामलाल महसूस करने लगते है कि स्थिति सुधर जायेगी और घर अपने ढर्रे पर पुनः आ जायेगा। श्यामलाल को जब भी वक्त मिलता बड़े इतमिनान से उप पुराने बक्से को खोलकर बैठ जाते और पुरानी यादों में खो जाते। एक रात रम्मीने तारा के हरबंस से विवाह की बात भी श्यामलाल से कहती है। रम्मी भी महसूस करती है कि लड़कियों में बड़ा बदलाव आ रहा है। हरबंस एक दिन बड़े सालीनता से कहता है। मुझे आपका और बाबूजी का आशीर्वाद चाहिए। रम्मी को स्वयं इन बातों पर विश्वास नहीं होता।

वीरन के पत्र से सभी को सूचना मिली की उसका जहाज न्यूजीलैण्ड पहुँच गया है। वहाँ से वैज्ञानकों और नाविकों की टीम के साथ दक्षिणी ध्रुव जाने की तैयारी हो रही थी। वहाँ से लौटने पर ही घर पहुँच पायेगा। किसी के शायद कुछ समझ में आया हो या न आया हो पर रम्मी समझ गयी की वह कुम्भकरन के देश जा रहा है। कमाण्डर द्वारा वीरन को साहसिक

अभियान पर जाने की अनुमति मिल जाती है। अभियान हेतु सभी तैयारियाँ भी पूर्ण हो गई थी। हर देश ने अपने-अपने नक्शे बनाये हुए थे। उन नक्शों में दक्षिणी ध्रुव प्रदेश को अपना उपनिवेश घोषित किया हुआ था। यह लड़ाई अभी नक्शों पर ही चल रही थी। खुद दक्षिण ध्रुव प्रदेश में पहुँचकर अपना वास्तविक उपनिवेश किसी ने भी नहीं बनाया था। दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की यात्रा बड़ी कठिन थी। समुद्री रास्तों से जहाज एक नयी दुनिया में चले जा रही थी। ऐसे दुर्गम स्थान में वीरेन्द्र को घर के सभी लोग बहुत याद आ रहे थे। उसके सामने फैला था दक्षिण ध्रु का बर्फ विस्तार, हिम-विवर, हिम द्वीप। वीरेन्द्र का मन एक तरह से उबने लगा था। एक लम्बी यात्रा के बाद जहाज न्यूजीलैण्ड वापस पहुँच जाता है।

वीरेन्द्र के मनी ऑर्डर पिछले पाँच महिने से नहीं आ रहे थे श्यामलाल की हालत दयनीय थी। तारा से मिलनेवाली छोटी-मोटी सहायता भी बन्द हो जाती है। समीरा की फीस भरना भी कठिन हो जाता है। कबाड़ी के सौदे में फंस जाने के बाद से श्यामलाल को धंधा भी बन्द कर देना पड़ता है। वीरेन्द्र के आने की सूचना से सभी के चेहरे खिल उठते हैं। श्यामलाल हर आनेजाने वाले स्कूटर-टैक्सी को देखते रहे। काफी इंतजार के बाद लिखी गाड़ी से वीरेन्द्र के न आने पर घर के सभी लोग उदास हो जाते हैं।

खोई हुई आवाज में श्यामलाल का परिवार उस समय और खो जाता है जब वीरेन्द्रनाथ का साथी चरनजीत सिंह घर आकर 'वीरेन्द्र के खो जाने की सूचना देता है। खबर सुनते ही घर में कोहराम मच जाता है। रम्मी की हालत इतनी बिगड़ जाती है कि रह रहकर उसे फिट आने लगते हैं। हरबंस सभी को सांत्वना देता है। सरकारी खत में भी उसके लापता होने की सूचना लिखी थी। साथ ही साथ यह भी लिखा था कि उसकी खोज अभी जारी है। जब तक सच्चाई सामने नहीं आ जाती, सरकार भी इस सन्दर्भ में कुछ निर्णय लेने में असमर्थ है। हरबंस समुद्र में खो जाने की घटनाओं का जिक्र करते हुए रम्मी से कहता है। समुद्र में लापता हुए लोग भी बरसों बाद लौटकर आए हैं। श्यामलाल, रम्मी, तारा और समीरा के मन में कई तरह की आशंकाएँ वीरेन्द्र को लेकर होती रहती है।

वीरेन्द्र के खोजाने की खबर से घर के लोगों का किसी भी काम में मन नहीं लगता है वीरेन्द्र के पसंद की चीजों को भी एक-एक करके परिवार के सभी लोगों ने खाना बंद कर दिया था। वीरेन्द्र की खोज-खबर हेतु श्यामलाल रोज नौसेना के दफ्तर का चक्कर लगाते रहते हैं। नौसेना वर्दी में हर आने-जाने वाले में उनकी नजरे वीरन को ढूंढ़ती रहती है। वीरेन्द्र के केस की तहकीकात सिविल पुलिस को सौप दी जाती है। पुलिस के उलटे सीधे प्रश्नों से श्यामलाल को और दुःख होता है। श्यामलाल को अधिक दुःख तब होता है जब लोग वीरेन्द्र के भाग जाने की झूठी खबरें फैलाते हैं। दरवाजे की छोटी सी छोटी आहट भी उन्हें सचेत कर देती है।

अन्य देशों की सरकारें और पुलिस तहकीकात के पश्चात्। भारत सरकार भी वीरेन्द्र को मरा हुआ घोषित करना चाहती है। तारा नहीं चाहती है कि माता-पिता को यह सच्चाई हरबंस बतलाए। तारा भली भाँति जानती है कि इस खबर से अम्मा बाबूजी का दिल टूट जायेगा। पुलिस इन्स्पेक्टर का श्यामलाल से यह कहना कि अगर आपको एतराज न हो और मन गवाही दे तो आप यह भी लिख दिजिए की सारी खोजबीन के बाद आप भी इसी नतीजे पर पहुँचे हैं कि वह मर गया है। अधिकारियों ने भी यही समझाया कि अब इस केस में कुछ रखा नहीं हैं। श्यामलाल के घर की आर्थिक हालत इतनी गिर जाती है कि घर को जिन्दा रखने के लिए घर की छोटी-मोटी चीजे गिरवी रखनी पड़ती है। मकान मालिक के व्यवहार से भी परेशान होना पड़ता है। श्यामलाल पर लोगों का इतना कर्ज हो जाता है कि आनेवाले आहट से उन्हें यही भय होता है कि कही कोई पैसा उगाहने के लिए तो नहीं आ गया है। काफी मस्कत के उपरान्त एक फैक्टरी में श्यामलाल को दरबान की नौकरी मिल जाती है। जहाँ हमेशा लोहा

जलने की महक भरी रहती है। माल कही अधिक न लद जाय इसीलिए माल लदते समय श्यामलाल का काम और बढ़ जाता है। पूरी रात जागने, घर से फैक्ट्री आनेजाने में वे और अधिक थक जाते थे। आस-पास की झुग्गियों को देखकर श्यामलाल के मन में कई बार एक झोपड़ी लेने का विचार आता है पर ठेकेदारों के रवैये से उनका मन नहीं होता।

श्यामलाल के घर की नाजुक स्थिति को देखकर हरबंस समझाता है। बीरेन्द्र की मौत मान लेने में ही हम सब की भलाई है। मुआवजा मिलने से घर की हालत भी कुछ सुधर जाएगी। बीरेन्द्र के मौत के मातम की तारा सभी तैयारी कर लेती है। मातम के लिए तारा ने अपने आस-पड़ोस की महिलाओं को बुला लिया था। स्यापा के बाद औरते एक-एक करके अपने घर चली जाती है। जाते-जाते तारा ने भी समझा दिया था कि अब यही कहना है कि बीरन नहीं रहा, पुलिसवाले बाबूजी के बारे में पुछे तो कहना यहाँ नहीं रहते। घर में हो रहे इस बदलाव को समीरा समझ नहीं पाती, वह सोचती है यह सब क्या हो रहा है?

हरबंस ने एक ट्रस्टी की सहायता से समीरा को नर्सिंग कोस हेतु भर्ती करवा दिया था। श्यामलाल फैक्टरी में रहने लगते हैं। हरबंस ने पुरे मामले को एक एम्पी की सहायता से फिर से खुलवाने के लिए काफी भागदौड़ की थी। मुआवजे हेतु रम्मी से अर्जी भी दे दी जाती है। मुआवजे हेतु जिन-जिन बातों की पुख्तगी होनी चाहिए, उन्हें और मजबूत कर लिया जाता है। यह भी बता दिया जाता है कि पति का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। लड़के की परवरिश मां ही करते आई है। रम्मी भी बस्ता लिए रात-दिन इस काम में जुट जाती है। श्यामलाल, समीरा के चले जाने पर रम्मी का मन भी घर में नहीं लगता था। तारा के आग्रह पर हरबंस मकान खाली करवाकर पुरे सामान के साथ अम्मा को अपने घर लिवा आता है। रम्मी की व्यवस्था बरामदे में कर दी जाती है। बोरे के सामानों को परछती पर डाल दिया जाता है।

तारा की बेटी मुन्नी, रम्मी से काफी हिल-मिल जाती है। रम्मी बीरेन्द्र के केस के विषय में जानना चाहती है कि बात कहा तक पहुँची है। हरबंस समझाता है सरकारी काम है समय तो लगता ही है, पर मुआवजा जरूर मिलेगा। तारा के गर्भवती हो जाने पर रम्मी तारा के घर कपड़े धोने से लेकर खाना बनाने तक के सभी कामों में दिन रात व्यस्त रहती है। श्यामलाल कभी समीरा से मिलने होस्टल चले जाते तो कभी तारा के यहां जाकर बीरेन्द्र के केस की जानकारी लेते। बहुत जल्द ही काम हो जाने की सूचना हरबंस ने दी थी। नौसेना दफ्तर में सामान की शनाख्त हो जाने पर तनख्वाह का चलान और बीरन का बक्सा रम्मी को सौं दिया जाता है। उस समय सबकी आंखे नम थी। घर पहुंचने पर जब बक्सा खुलता है तो उसमें से कुछ नये कपड़े, पैरों के नाप, तीस रूपये और बीरन के नाम नमता के लिखे कुछ पत्र थे। बक्सा बंद करके उसे भी परछती पर डाल दिया जाता हैं। उस दिन के बाद से सभी लोग फिर से अपने-अपने स्थान पर चले जाते हैं। श्यामलाल फैक्टरी में, समीरा होस्टल में, रम्मी तारा के घर। तारा अम्मा को समझाते हुए कहती है अब रोने धोने में कुछ नही रखा है। हिम्मत से काम लो। हरबंस भी कहता है - अब इन बातों में कुछ नहीं रखा है माँजी- जो लौटकर आनेवाला नहीं है, उसके लिए....।

इस प्रकार समुद्र की हरहराते लहरों ने मानों सबको अलग-थलग कर दिया है। इस घर और परिवार के लोग वास्तव में जिस हालात में पहुँच जाते हैं, वह मात्र परिस्थितीजन्य है। अतः 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में कमलेश्वर ने परिस्थितीयों से टूटते एवं बिखरते मध्यवर्गीय परिवार का बड़ा ही सघन एवं संवेदनात्मक चित्रण किया है।

२

''समुद्र में खोया हुआ आदमी'' उपन्यास पर आधारित प्रश्न

इकाई की रूपरेखा :

२.१ इकाई का उद्देश्य

२.२. प्रस्तावना

२.३ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में महानगरीय सभ्यता और मध्यमवर्गीय जीवन विसंगतियों का वर्णन किस प्रकार किया है?

२.४ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के आर्थिक एवं वैयक्तिक जीवन का बड़ा ही मार्मिक चित्र उपस्थित करता है, स्पष्ट कीजिए।

२.५ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में बदलती हुई नैतिक मान्यताओं और सामाजिक परिस्थितियों को अत्यंत सूक्ष्मता तथा यथार्थता से चित्रित किया है, स्पष्ट कीजिए।

२.१ इकाई का उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- उपन्यास की कथावस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे।
- 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के युग सत्य से परिचित हो जायेंगे।
- दीर्घोत्तरी प्रश्नों का उत्तर तैयार कर सकेंगे।

२.२ प्रस्तावना :

कमलेश्वर के अब तक प्रकाशित उपन्यासों में 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण है। मध्यम और निम्नवर्ग का जीवन उनके उपन्यासों का मूल कथ्य है। कस्बे और छोटे शहरों से आनेवाला व्यक्ति महानगरों की भीड़ में अपने को शामिल तो कर लेता है पर वहाँ की स्थितियों में अपने को ठीक से ढाल नहीं पाता। समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास की मूलसस्या को कमलेश्वर ने गहरे सामाजिक जीवन से जोड़कर उरेहा है। लाख चाहने पर भी मध्यवर्गीय व्यक्ति पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हो पाता। हर व्यक्ति को अपने संतानों को सही-मुकाम तर पहुँचाने के लिए काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक परिस्थितियों के डावाडोल होते ही सभी आकांक्षाए धरी की धरी रह जाती है। इस प्रकार हम देखते है कि 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार की जीती जागती तस्वीर कमलेश्वर ने पेश की है।

२.३ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में महानगरीय सभ्यता और मध्यमवर्गीय जीवन की विसंगतियों का वर्णन किस प्रकार किया है?

महानगरों की चकाचौंध, सुख-सुविधाओं का आकर्षण और बेरोजगारी के चलते व्यक्ति रोजी रोटी के फिराक में नगरो, महानगरों की ओर रूख करने लगता है। गाँव कस्बे से गया हुआ व्यक्ति भली-भाँति जानता है कि जीने खाने हेतु महानगरों में अवश्य कोई न कोई छोटा-मोटा काम मिल जायेगा। जिससे वह अपना और अपने परिवार जनों का भरण पोषण कर सकता है। पर जब व्यक्ति महानगरों में अपने खड़े रहने के लिए पैर पसारता है तब उसे। महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ, परायापन, अलगाववाद, अकेलापन, घुटन, ऊब और एक रसता आदि जीवनगत सच्चाईयों का पता चलता है। ऐसी स्थिती में वह भी महानगर की इन स्थितियों का न केवल आदि हो जाता है बल्कि यंत्रीकरण के इस युग में धनोर्पाजन की लालसा में धीरे-धीरे यहाँ का हिस्सा बन जाता है।

गाँव, कस्बे एवं शहर में व्यक्ति एक दूसरे से कम से कम परिचित तो होता है, एक दूसरे को कम से कम थोड़ा बहुत जानता तो है। वही महानगरों में व्यक्ति सालों से लोगों के बीच रहकर भी अजनबी सा बना रहता है।अपनत्व की तलाश में निरन्तर भटकता रहता है। खोखलेपन और दिखावे भरी जिन्दगी के बीच व्यक्ति जिस तरह के जीवन को जीने के लिए विवश है। उन सबका मार्मिक चित्रण कमलेश्वर के समुद्र में खोया हुआ उपन्यास में देखा जा सकता है। कमलेश्वर के अभीतक के लघु उपन्यासों में सम्भवतः 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' सबसे सफल है। विशेष रूप से यथार्थ की दृष्टि से वैसे जिस मध्यमवर्गीय परिवार की कथा इस उपन्यास में कही गयी है। वह अकेले ही दिल्ली का नहीं, भारत के किसी भी महानगर का हो सकता है। यदि हम दिल्ली का नाम हटा दे और किसी दूसरे महानगर का नाम इस उन्यास में रख दे तो कथा में हमें कही से भी कोई परिवर्तन नजर नहीं आयेगा यदि स्थान का नाम हटा दिया जाए तो देश के प्रायः सभी महानगरों का परिवेश, जिन्दगी, कल्चर लगभग-लगभग समान है।

श्यामलाल को दिल्ली के प्रति कुछ इसी तरह का आकर्षण और मोह खींच ले आता है। असल में अपना शहर छोड़ते वक्त श्यामलाल ने कभी यह नहीं सोचा था कि दिल्ली पहुंचने के एक साल के भीतर ही उन्हें नौकरी से अलग कर दिया जाएगा। फिर वह इतने कंगाल हो जाएंगे कि न अपने शहर लोट पाएंगे और न यहाँ ही पैर जमा पाएंगे। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के संदर्भ में कमलेश्वर लिखते हैं- 'यह उपन्यास आजादी के बाद के भारत का उपन्यास है। कथात्मक स्तर पर यह एक टूटते हुए परिवार की कहानी है। बेरहम महानगर में धीरे-धीरे टूटते हुए परिवार की करुण गाथा! आधुनिक जीवन की सामान्य सुविधाओं के लिए हर व्यक्ति लालायित है, पर उसे सुविधायें उन छोटे शहरों, कस्बो या गाँवों में नहीं मिल री हैं, जहाँ वह रहता है। ऐसी स्थिति में हर आदमी बड़े नगर की ओर भाग रहा है, क्योंकि उसे लगता है कि वहाँ वे सुविधायें भी हैं और काम के अवसर भी अधिक है।''

श्यामलाल इन्हीं आकांक्षाओं के चलते कोई अवसर हांथ से जाने नहीं देना चाहते। सिन्धी ट्रांसपोर्ट कम्पनी की ब्रांच जब दिल्ली में खुली, तब श्यामलाल बुकिंग क्लर्क होकर चले आए थे। चार ट्रक उनके साथ आए थे, इसीलिए एक में वह अपना पूरा कुनबा बटोर लाए थे। दोनो जवान लडकियों, बीमार बीवी और अकेले लडके को आखिर किस के आसरे पर छोड़कर आते। उन्होंने सोचा यही था कि रफ्ता-रफ्ता वह दिल्ली ब्रांच के मैनेजर बन जाएंगे और फिर धीरे-धीरे अपना सिलसिला चालू कर लेंगे। लाइसेन्स मिलते ही अपना स्वयं का ट्रक चालू कर देंगे। बहुत जल्द ही श्यामलाल के इन आशाओं पर पानी फिर जाता है। चोरी हो जाने के कारण न केवल उन्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाता है, अपितु हर्जाना भी भरना पड़ता है।

आजीविका की यातना और घर को चलाने के लिए इस परिवार को काफी मस्क्त करनी पड़ती है। ट्रेसींग का काम करनेवाला हरबंस से मदद की कुछ उम्मीद झलकती हैं। हरबंस के कहने पर ही श्यामलाल तारा को उसके यहां काम करने की अनुमति दे देते है। हरबंस का तारा को घर छोड़ने आना अखरता है। इसीलिए 'पैटर्न हाऊस' में भी तारा पर निगरानी रखने हेतु उनका दिन भर दुकान पर जमें रहना तारा को कतई नहीं सुहाता। हरबंस के रवैये से खिन्न हो कह भी देते कल से तारा नहीं जायेगी। नयी परिस्थितियों से श्यामलाल अपना तालमेल नहीं बैठा पाते हैं इसीलिए उन्हे महसूस होता है कि अब इनकी जरूरत किसी को नहीं है। अब उनके वश में कुछ नहीं रह गया है। वह कोई फैसला लेना भी चाहे तो नहीं ले पाते। धीरे-धीरे उनके हाथों से फैसला ले सकने की ताकत मानों निकल गई हो। घर-परिवार की छोटी से छोटी बात भी उनके अधिकार में नहीं रह जाती। यहीं नहीं घर की जरूरतों में भी उनके निर्णय अब कोई मायने नहीं रखते थे।

बीरेन्द्र ही श्यामलाल के घर का भविष्य था। जब वही खो गया तो ऐसे में परिवार का क्या भविष्य होगा इसका अंदाजा बखूबी लगाया जा सकता है। महानगर में ऐसा कोई नहीं है जो डूबते जहाज को ऐसे क्षणों में उबार लें। परिवार के लोगों की सभी आशाएं, आकांक्षाएं बीरेन्द्र जे जुड़ी हुई थी। उसका जाना एक तरह से सभी के जिन्दगी में तूफान खड़ा कर देता है। श्यामलाल का परिवार भी इस तुफानी लहरों की चपेट से बच नहीं पाता। महानगरीय जीवन के दबाव में मानों आपसी खून के रिश्ते भी बिखरने लगे है। अजनबी भीड़ में मानों अजनबी नहीं है। खून के रिश्ते से अलग यहां संघर्ष के रिश्ते तेजी से कायम हो गए है। इसलिए हँसना, रोना, सुख-दुःख अब इतने मामूली हो गए है कि अब उनका भी वजूद नहीं रह गया है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में महानगरीय परिवेश में जी रहे मध्यवर्गीय व्यक्ति न चाहते हुए भी संवेदनशून्यता, बनावटीपन, आत्मीयता का अभाव, परायापन, कुंठा, व्यक्तिस्वातंत्र्य आदि विसंगतियों से जुड़ता चला जाता है।

२.४ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास मध्यवर्गीय समाज के आर्थिक एवं वैयक्तिक जीवन का बड़ाही मार्मिक चित्र उपस्थित करता है, स्पष्ट कीजिए।

'समुद में खोया हुआ आदमी' उपन्यास मध्यवर्गीय समाज के आर्थिक एवं वैयक्तिक जीवन का बड़ा ही मार्मिक चित्र उपस्थित करता है। अपनी साफ और सरल दृष्टि से कमलेश्वर ने स्पष्ट करने का पयास किया है कि आर्थिक स्थितियाँ व्यक्ति को जीने के लिए कितना विवश कर देती है। श्यामलाल के जरिए आर्थिक अभाव में जूझते व्यक्ति की जीती जागती जो तस्वीर कमलेश्वर ने 'समुद्र में खोया हुआ आदमी में चित्रित किया है। अपने आप में लघु होते हुए भी एक तरह से उनके लेखन क्षमता को उद्‌घाटित करता हैं। श्यामलाल ने इलाहाबाद छोड़ते समय कभी यह नहीं सोचा था कि दिल्ली पहुंचने के एक वर्ष के भीतर ही उन्हें नौकरी से अलग कर दिया जाएगा और दिल्ली की सड़कों पर कबाडीयों का कार्य अपनाना होगा।

आर्थिक मजबूरियों के चलते श्यामलाल को जब कोई सहारा नहीं रह जाता ऐसे में हरबंस ही एकमात्र सहारा बनकर आता है। हरबंस द्वारा दी गयी सहायता श्यामलाल को थोडी खटकती है पर उनके पास और कोई पर्याय नहीं था। श्यामलाल ने कभी कल्पना भी नहीं की थी उनके जीवित रहते घर दूसरों की दया पर जीने के लिए मजबूर हो जायेगा। इन्ही परिस्थितियों के कारण श्यामलाल चाह कर भी तारा को चालीस रूपये माहवार पर हरबंस के यहाँ काम करने से रोक नहीं पाते। वे महसूस करते हैं कि आर्थिक स्त्रोत न होने के कारण ही घर जहाँ का तहा रूका हुआ था। जैसे घर को सिर्फ चालीस रुपये माहवार की जरूरत थी... इतने से रूपयों के कमी के कारण पूरा घर रूका-रुका सा लगता था। इसप्रकार कमलेश्वर ने नारी स्वावलम्बन के चेतना को मुखरित किया है।

आर्थिक परेशानी के चलते चाहकर भी व्यक्ति ढंग का मकान ले पाने में असमर्थ होता है। यदि लेने की सोचे भी तो उसे काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। श्यामलाल जैसे व्यक्ति के लिए ऐसी हालात में मकान लेना तो दूर मकान का किराया भी चुकाना कठीन हो जाता है। मकान अच्छा न होने पर भी उसी में जिन्दगी व्यतीत करने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि उसके सिवाय उनके पास और कोई चारा नहीं है। ''यह कमरा था जो उन्हें सबसे अलग करता था। कीलों पर मैले कपड़े, कोने में ट्रंक और उनके ऊपर तमाम घरेलू सामान, खिड़की पर मरी हुई खाल की तरह झुलता हुआ पर्दा। बल्ब के आसपास पुरा हुआ जाला...।''

घर की गिरती हालात में जीवन गति एक तरह से रुकती सी प्रतित होती है। श्यामलाल के भीतर एक सपना पल रहा था। उन्हें लगता है, बीरेन्द्र के पढ़लिख कर बड़े हो जाने पर घर की न केवल स्थिति सुधर जायेगी बल्कि इस बेबसी की जिन्दगी से पुरा घर उबर जायेगा। बीरेन्द्र भी इस बात को महसूस करता था। वह जानता था कि माँ और बाबूजी किस तरह अपना पेट काट-काट कर उसे पढ़ा रहे थे सन्तान यदि कमाऊँ हो तो घर के हर मामले उसकी राय बड़ी अहमियत रखने लगते है। उसका घर में बड़ा मानसम्मान बढ़ जाता है। तारा का अब हर मामले में राय जानी जाती है। घर के निर्णय के सभी अधिकार तारा के हाथों में चला जाता है। छोटीसी छोटी चीजों के लिए भी तारा की बाट जोहनी पड़ती है। जैसा की संकेत किया गया है। ''तारा के बक्से अब ताला बन्द रहने लगा था... उसके कपडे सबसे अलग टाँगे थे। उसकी चम्पले अल्मारी में रहती थी और घर में जब उसे कोई काम करना होता था तब सब बेकार हो जाते थे। उनके नहाने के लिए सबको इन्तजार करना पड़ता था। उसके तैयार होने के वक्त कोई और तैयार नहीं होता था। उसका हर काम सबसे जरूरी हो गया था। सब चीजें उसके पास इकट्ठी हो गई थी। कलम की भी जरूरत पड़ती तो तारा से माँगना पड़ता। वक्त पूछना होता तो उसी से मालूम होता। दुनिया-जहान की बाते चलती तो उसकी बात सबसे ज्यादा सही मानी जाती है।''

अर्थ का अभाव ही जीवन को कनि बना देता है। अर्थ के बगैर सभी आकांक्षाए और संभावनाए धरी की धरी रह जाती है। आज दुनिया पैसेवालों की है, उन्हीं का सबसे अधिक बोलबाला है। बगैर हैसियत के व्यक्ति यदि कदम बढ़ाना चाहे तो भी नहीं बढ़ा सकता, उल्टे शहरों में उखड़ने की नौबत आ जाती है। आज जिनके पास धन और दौलत है उन्हीं की समाज में इज्जत और पूछ हो रही है। सामान्य हैसियत के व्यक्ति को कोई नहीं पूछता भले ही वह कितनी ही कठिनाइयों और मुश्किलों में क्यों न हो। वीरेन्द्र का मनीआर्डर इस घर का सबसे बड़ा बल और साहस था, जब कुछ महीने से आना बंद हो जाता है तब घर का खर्च चला पाना दुभर हो जाता है। इसीलिए श्यामलाल कहते हैं- यह शहर ऐसा है कि बिना पैसे के यहाँ कोई पहचानता ही नहीं। पैसा पास है तो दुनिया अपनी है, नहीं तो कोई....।''

श्यामलाल का परिवार दिन पर दिन आर्थिक रूप से कमजोर होता चला जा रहा था। आर्थिक मजबूरियों के चलते व्यक्ति को न चाहते हुए भी बीरेन्द्र की मौत को स्वीकारने हेत विवश होना पड़ता है। मुआवजा ही मानों अब इस घर को बचा सकता है। उसीसे घर की आर्थिक स्थिति सुधर सकती है। हरबंस समझाते हुए कहता है- इससे आप लोगों के हाथ में कुछ रुपया आ जाएगा.. और यह जो रोज-रोज की खिटखिट है, इससे नजात मिलेगी। बाबूजी चाहे तो कुछ काम भी शुरू कर सकते है। ''वीरेन्द्र के खोजाने का गम और घर की आर्थिक परिस्थिति श्यामलाल को निरन्तर खाये जा रही है। श्यामलाल सोचते हैं क्या मुआवजा मन की रिक्तता को हर तरह से भर देगा? मुआवजा, पति-पत्नी के आपसी संबंधों में भी अलगाँव की स्थिति पैदा कर देता है। जहा न चाहते हुए भी रम्मी को कहना पड़ता है- 'मेरा तो कोई आसरा नहीं। पति जिन्दा जरूर हैं, लेकिन उनसे मेरो कोई सम्बन्ध नहीं है। लड़के

की पूरी परवरिश मैंने की थी। यहाँ इस घर में अकेली पड़ी हूँ। एक पैसे की आमदनी नहीं। उस लड़के के सिवा मेरा कोई देखनेवाला नहीं था।''

श्यामलाल घर की दयनीय होती स्थिति को देखकर ही नजफगढ़ की एक फैक्टरी में दरबान की नौकरी करने हेतु तैयार हो जाते हैं। परिस्थितियों में घिरे व्यक्ति का आर्थिक शोषण करने से महानगर का व्यक्ति कोई अवसर हाँथ से जाने नहीं देता। श्यामलाल को नौकरी दिलवानेवाला व्यक्ति भी पचहत्तर रुपये में से पन्द्रह रुपये माहवार पहले ही तय कर लेता है। इसी शर्त पर उन्हें दरबान की नौकरी मिलती है। अतः छोटी सी छोटी सहायता देनेवाला व्यक्ति भी रुपया ऐठे बिना नहीं रहता।

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में कमलेश्वर आर्थिक परिस्थितियों से घिरे ऐसे परिवार का चित्रण किया है जो लाख कोशिशों के बावजूद इन परिवेश से उबर नहीं पाता। यह उपन्यास हमें व्यथित ही नहीं करता है अपितु गहरे अर्थबोध को भी उद्घाटित करता है। जहाँ व्यक्ति चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता। परिवार का हर सदस्य कही न कही इन दिशाओं में खो जाने के लिए मानो विवश है। बीरेन्द्र समुद्र में, श्यामलाल फैक्टरी में, समीरा होस्टल में, तो रम्मी तारा के घर में खो जाती है। इस प्रकार, अर्थाभाव के चक्र से मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी और आर्थिक विषमता में टूटते परिवार का यथार्थ चित्रण किया गया है।

२.५ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में बदलती हुई नैतिक मान्यताओं और सामाजिक परिस्थितियों को अत्यंत सूक्ष्मता तथा यथार्थता से चित्रित किया है, स्पष्ट कीजिए।

भारतीय परिवेश, संस्कार और परम्पराओं के मध्य नैतिक मान्यताएं मानो अपने अर्थ खोते जा रहे हैं। डगमगाते नैतिक स्थितियों को उद्घाटित करने का प्रयत्न भी 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में देखा जा सकता है। मध्यवर्गीय की घात-प्रतिघातों, सामाजिक रूढ़ियों और नैतिक मान्यताओं के बीच बदली सामाजिक परिस्थितियों की सांकेतिक अभिव्यक्ति हुई है। महानगरों में रहते हुए भी व्यक्ति अपने को अजनबी और अकेला महसूस करता है। जहाँ कोई किसी को न तो जानता है और नहीं जानना चाहता है।

महानगरी जीवन की सच्चाई को रेखांकित करते हुए भूकिा में लिखा है-''महानगर जीवन के दबाव के नीच सारे रिश्ते, जिन्हें हम कलेजे से लगाये जीते रहे हैं, भिन्न-भिन्न हो जाते हैं और खून के रिश्ते तक बदलने लगते हैं। यहाँ आकर हर व्यक्ति अकेला हो जाता है और अपने अस्तित्व तथा सार्थकता की खोज करता है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माँ-बेटी आदि के खून के रिश्ते व्यर्थ होकर भी बने रहते हैं पर उनके आन्तरिक सन्तुलन बदलने लगते हैं, क्योंकि महानगर की संस्कृति मात्र पुरुषआश्रित या पिता-आश्रित नहीं है। वह एक-एक अंश पर आश्रित है। यहाँ मशीन का हर पूर्जा महत्त्वपूर्ण है। यदि छोटा-सा पूर्जा भी टूट जाये या कम न करे तो मशीन ठप हो जाती है।''

श्यामलाल महानगर में रहते हुए भी अपने को अकेला महसूस करते हैं। मानों श्यामलाल से पूछा जा रहा हो, कि तुम्हारे होने और न होने का क्या मतलब है? महानगरीय परिवेश में नैतिक मूल्य भी डगमगाते नजर आते हैं। हरबंस से विवाह करने का तारा प्रस्तार एक तरह से माता-पिता की नींद उड़ा देता है। श्यामलाल स्पष्ट शब्दों में तारा से कहते है- ''यह सब इस घर में नहीं चलेगा। सात बजे तक बाहर रहने की जरूरत नहीं है। मैं समझता था तुम खुद सोचोगी..। आगे बात बिगड़ जाए उससे पहले ही हरबंस स्वयं स्थितियों को स्पष्ट कर देना चाहता है- ''यह ठीक है कि मुझसे ज्यादती... अगर समझझिए तो.. हो गई है.. पर मुझे को आप से कहना ही पड़ता। आप लोगों को कोई ऐतराज तो नहीं है।'' रम्मी की घबराहट और बढ़ जाती है। समीरा को सचेत करते हुए कहती है- रोज-रोज मैं नहीं सुनुंगी कि बस नहीं मिली। अगर रोज छः बजते हैं तो कोई जरूरत नहीं कॉलिज-फालिज जाने की।

वर्तमान हालात में पारिवारिक रिश्तों में भी तेजी से बदलाव आता जा रहा है। जीवन की तमाम विसंगतियों और संबंधों में आए खोखलेपन को कमलेश्वर ने बड़े ही सजीवता से उद्‌घाटित किया है। श्यामलाल भी सामाजिक परिस्थितियों में आये इस बदलाव से काफी चिन्तित है। पिछले दो-तीन बरसों में चीजें अपने, आप बदल गई थी। लड़कियाँ बहुत अपनी थी, पर न जाने क्यों दूरी बढ़ गई थी। आपस में कही कुछ धीरे से पिघल कर बह गया था, जिसे वह अब महसूस कर रहे थे। चूँकि रिश्तों को नया नाम नहीं दिया जा सकता, बाप-बेटी, या माँ-बेटी अब भी बाप-बेटी और माँ-बेटी ही कहे जायेंगे, पर उनके बीच से कोई चीज अनजाने ही खो गई थी। हकों में कहीं बड़ा फर्क आ गया था। लड़कियाँ, लड़कियाँ ही थी पर वे न तो 'पराई सम्पत्ती' रह गई थी और न घर का वासन' पता नहीं उनमें क्या उपज आया था, जो पहले नहीं था.''

स्वतंत्रता के पश्चात जैसे-जैसे संयुक्त परिवार का विघटन हुआ वैसे-वैसे व्यक्ति के रहन-सहन, उसके पारम्परिक रितिरिवाजों और संस्कारों में तेजी से बदलाव आता जा रहा है। पुराने और नई पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष ने जीवन मूल्यों में जो बदलाव लाया है। उसकी यथार्थ अभिव्यक्ति 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में देखा जा सकता है। श्यामलाल सोचते है कि आज नगरीकरण के प्रवाह में बहकर समाज अपने मूल रूप को न चाहते हुए भी खोने लगा है। व्यक्ति, परिवार और समाज के त्रिकोण से श्यामलाल चाहकर भी अपने को मुक्त नहीं कर पाते। श्यामलाल धीरे-धीरे यह महसूस करने लगे है- ''हजारों... लाखों... करोड़े की आबादी में वे बिल्कुल तनहा और फालतू हो गए है... किसी को उनकी जरूरत नहीं..... कोई ऐसा नहीं जो उनकी सुने/पति के रूप में - वे बस पति भर रह गए हैं- एक जबर्दस्ती का बोझ, और पिता के रूप में- सिर्फ पिता कहे जाने भर का सवाल रह गया है। ..... सदियों से आँसुओ, दया, मर्यादा, परिवार जैसी भावनाओं ने इस रिश्तों को जिन्दा रखने की कोशिश की है। कितने पति पति न रह गए होते अगर बीच में आँसू न आए होते और शायद पिता भी नाम भर को पिता रह गए होते अगर परिवार ने उन्हे जीने का मौका न दिया होता....।

आपसी रिश्ते कितने खोखले और बेमानी होते जा रहे है। संबंधों आये बदलाव ने भी व्यक्ति को हर तरह से तोड़कर रख दिया है। बिगड़ते माहोल ने मध्यवगीय समाजरूपी जहाज को महानगरी परिवेशरूपी अथाह सागर में डूबने के लिए विवश कर दिया है। लाख कोशिशों के बावजूद भी व्यक्ति किनारा रूपी मार्ग ढूँढ नहीं पाता। वह कौन सी ताकत थी जिसने उन्हें इस तरह तीन जगहों पर फेंक दिया। सब अपनी-अपनी जगहें है। एक जगह से सिर्फ एक का सम्बन्ध है, बाकी लोग असम्बद्ध है।

अर्तमान हालात में बदलती नैतिक मान्यताओं और सामाजिक परिस्थितियों को संयमति करने हेतु हमें अपने मूल्यों और भावनाओं को नये सिरे से विचारना होगा। उन मानदण्डों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी कदाचित् हमारे समय की माँग हो। जैसा की सन्दर्भ में स्पषट संकेत दिया गया है- ''जब तक यह नया संतुलन नहीं खोजा जायेगा, हम जिन्दगी के संघर्ष में यूँ ही पिटते चले जायेंगे। एक प्रश्न यह भी उठता है कि क्या इस नयी व्यवस्था में आदमी आदमी को भावनाशूय होना पड़ेगा? क्या माँ-बेटे और बाप-बेटे के खून के रिश्ते बदल जायेंगे? यह तो कभी नहीं होगा। बेटा माँ-बाप के रक्त का अंश ही रहेगा। पर माँ-बाप की ज परिवार-सत्ता है उसका लचीला होना आवश्य होगा।'' इस प्रकार कमलेश्वर ने सांकेतिक माध्यम से संवेदनात्मक अनुभूति को बड़े ही सजीवता से यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है।

❖❖❖

३

''समुद्र में खोया हुआ आदमी''
में पात्र और चरित्र-चित्रण

इकाई की रूपरेखा :

३.१ उद्देश्य
३.२ प्रस्तावना
३.३ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास के 'श्यामलाल'।
३.४ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास की 'रम्मी'।
३.५ तारा और हरबंस का चरित्र।
३.६ वीरेन्द्र के चरित्र की विशेषताएं।
३.७ समीरा का चरित्र।
३.८ नमता का स्वभाव।

३.१ उद्देश्यः

इस इकाई को पढ़ने पर आपकोः

- 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' के पात्रों की जानकारी होगी।
- 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से परिचय होगा।
- पात्रों के माध्यम से समुद्र में खोया हुआ आदमी को जानने में सहायता प्राप्त होगी।
- समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में पात्र-परिचय का नमूना ज्ञात होगा।

३.२ प्रस्तावना :

उपन्यास में कथ्य के साथ पात्रों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पात्र ही वह धूरी है जिसके माध्यम से उपन्यासकार अपने विचारों को अभिवयक्त करता है। उपन्यास की सभी घटनाएँ कही न कही पात्रों से ही जुड़ी होती है। घटनाओं का ताना-बाना उन्ही के जरिए उभारा जाता है। कुशल कथाकार जीवन्त चरित्रों के माध्यम से जीवन की वास्तविकता को रुपायित करता है। उपन्यास का पात्र जितना सशक्त होगा रचना उतनी ही यथार्थ जीवन को प्रकट करने में सफल होगी। कथानक के कमबद्ध विकास में पात्रों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। पात्रों की अन्तर्द्वन्द्वात्मकता कथा को प्रभावशाली तो बनाती ही है साथ ही साथ पात्रों के चरित्र विकास को रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करने में सर्वाधिक सहायता भी प्रदान करती हैं।

३.३ समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास के 'श्यामलाल'

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में श्यामलाल एक ऐसे पिता है, जो परिस्थितियों, अपनी रूढ़ मानसिकताओं के कारण प्रवाह में बहते चले जाते है पर टूटते नहीं है। यही उनके

स्वभाव की सबसे बड़ी खूबी है। घर के गिरते हालात और विकट परिस्थितियों के कारण ही वे हरबंस के व्यवसाय में बिजनेस पार्टनर बन जाते है। हरबंस का तारा को घर छोड़ने आना श्यामलाल को कतई पसंद नहीं है। कई बार चाहते हुए भी मन मसोस कर रह जाते हैं। उन्हें लगता है कि घर के मामलों में जैसे उन्हें निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। सब कुछ बड़ी तेजी से बदल रहा था। श्यामलाल इस डूबते जहाज में गिर गए थे, जहाँ चारों ओर सैलाब पछाडे खाता हुआ मानों उनकी ओर बढ़ता जा रहा है। उन्हें लगता है वे सिर्फ एक फालतू चीज की तरह रह गए है जिन्हें न तो फेंका जा सकता है और नहीं बर्दाश्त किया जा सकता है, जिसे सहेजा भी नहीं जाता सिर्फ महसूस किया जा रहा हो।

श्यामलाल की सभी आशाएँ बीरेन्द्र पर टिकी हुई है। नौसेना में भर्ती होने की खबर से उन्हें प्रसन्नता होती है। मन में तमाम तरह के सपने तैरने लगते हैं। बीरेन्द्र के खत और मनीआर्डर के पैसे आते ही मानों एक बहुत बड़ा अधिकार बल उनके हाथों में आ जाता है। परिवार के उपस्थिति में बीरेन्द्र का खत पढ़ते, सभी को बेसब्री से उसके आने का इंतजार रहता। श्यामलाल कबाड़ के सामानों को खरीदने और बेचने हेतु नियमित अखबार में 'खरीद-फरोख्त' का कालम देखकर उसी के अनुरूप सौदा पटाते और बेच देते। इसी व्यवसाय के चलते उन्होंने ड्रेसिंग टेबल, पुराना कालीन, स्टोव, आयरन आदि चीजों का इन्तजाम कर लिया था। एक दिन उनके व्यापार का भेद खुल जाने से रहा सहा धंधा भी चौपट हो जाता है। यहीं आय का एक जरिया था तो उन्हें वक्त-बेवक्त छोटी-मोटी घर की जरुरतों से उबार लेता था श्यामलाल के पास एक पुराना संदूक था, जिसमें घर के बुजुर्गों की यादे और बहुत सी पुरानी चीजें पड़ी हुई थी। घर की पुरानी होती तीजे एक-एक करके उनके बक्से में सिमटती चली जाती थी।

तारा का हरबंस से शादी करने का प्रस्ताव उन्हें झकझोर कर रख देता है। रिश्तों में आ रहे बदलाव में बहुत बड़ा फर्क दिखलाई पड़ने लगता है। श्यामलाल बड़े थके मन से दिल्ली की सड़कों की खाक छानकर बेजान-से लौटते थे और बार-बार यह महसूस करते थे - कोई किनारा नहीं! कोई किनारा नहीं...। श्यामलाल बड़ी बेसबरी से बेटे के आने का इंतजार करते हैं, न आने पर इंतजार भी खत्म हो जाता है। बीरेन्द्र के साथी चरनजीत सिंह से 'बीरेन्द्र की खो जाने की सूचना' पूरे घर को शोकमग्न कर देती है। बेटे के खो जाने का गम श्यामलाल को बहुत कमजोर कर देता है। उसके सलामती के ईश्वर से दुवा की जाती है। दिल्ली नौसेना दफ्तर के चक्कर लगाने पर यह सूचना मिलती है कि यह मामला मुम्बई से ही डील होगा। श्यामलाल दिन पर दिन बेबस और लाचार होते जा रहे थे। ऐसा कोई भी हल किसी के पास नहीं था, जिससे दूसरों को दिलासा दिया जा सके। जब जिसे रोना आता, जी भरकर रो लेता था ओर थककर अपने आप चुप हो जाता । किसी के बास कुछ भी नहीं था। सिवां अपनी-अपनी एकांतिक मजबूरियों के! जो थोड़ा-बहुत पहले था भी, वह भी इस हादसे ने खत्म कर दिया था। अब सब लाचार और बेबस थे। श्यामलाल जब घर में कुछ पैसे कमाकर लाते थे तो उन्हें बड़ा सकून मिलता था। अपनी अहमियत का एहसास होता था। आज उन्हें अपनी व्यर्थता महसूस हो रही है। श्यामलाल सोचते है एक जमाना वह भी था जब अपने सिवा और सारे लोग उन्हें फालतू लगते थे... पर अब लगता था कि सब लोग आवश्यक अंग हैं- फालतू सिर्फ वह है! काम, रिश्तों, उपयोगिता, समता और जीवित रहने आदि सभी नजरों से।''

सरकार के साथ-साथ श्यामलाल को भी बीरेन्द्र को मरा हुआ मान लेने के लिए विवश होना पड़ता है। श्यामलाल ने कभी नहीं सोचा था कि नियती के आगे न चाहते हुए भी मौत को स्वीकार करना होगा? वक्त ने उन्हें बड़ा मुश्किल काम सौंप दिया था। बेटे का दुःख और वक्त की मार से श्यामलाल बहुत बूढ़े लगने लगे थे। श्यामलाल परिस्थितियों से समझौता भले

कर ले पर वे हार नहीं मानते। कुछ न कुछ करते रहने की प्रवृत्ति के कारण उन्हें एक फैक्टरी में दरबान का काम मिल जाता है। कमिशन के लालच में क्लीनर द्वारा दी गई हिदायत को भी स्वीकार नहीं करते। श्यामलाल बड़े ईमानदारी से अपना काम करते थे। वे नहीं चाहते थे कि ऐसी कोई घटना घटे जिससे उन्हें फिर नौकरी से हाथ धोना पड़े। मुआवजे की तहकीकात शुरू होने के पहले ही श्यामलाल फैक्टरी वाली कोठरी में रहने लगते हैं। उनके आँखों के सामने ही एक-एक करके उनका परिवार बिखर जाता है।

श्यामलाल फाटक पर बैठे-बैठे लोहे की चिनगारियों, रेल क पटरियों की धड़कनों के बीच महसूस करते है- ''महासागर- रात का समुद्र हिलोरे ले रहा था। वह ज्यादा दूर तक नहीं देख पा रहे थे। जैसे गहरे पानी में नजरकैद हो जाती हैं, वैसा ही लग रहा था। और वह सोच रहे थे- अगर वह समुद्र में खोया होगा... रितनी तकलीफ हुई होगी उसे... कितनी ऊब-चूब में जान फँस गई होगी। कितनी घबराहट हुई होगी! ... पर मौत को मंजूर करना किसकी ताकत में है? ... लहरों ने सबको कहाँ-कहाँ फेंक दिया है....।

३.४ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास की रम्मी

रम्मी का चरित्र एक आम भारतीय नारी का पतिनिधित्व करती है। अपनी संतानों के लिए रम्मी हर तरह से समर्पित है। आदर्श माता के सभी गुण रम्मी में देखे जा सकते है। हर परिस्थिती में निर्णय लेने की क्षमता भी रम्मी में देखी जा सकती है। रम्मी नहीं चाहती कि बच्चों की परवरिश में कोई कसर रह जाय। बीरेन्द्र के नौसेना में चुन लिए जाने की सूचना से बहुत खुश होती है। यह खुशखबरी वह अपने रिश्तेदारों को भी देना चाहती है। तारा की नौकरी और घर के हालात से श्यामलाल को अवगत कराना नहीं भूलती, श्यामलाल के रौब में आने पर वह कहती है- ''कल मनीआर्डर आया है इसलिए उछल रहे हैं। आठ दिन बाद घर का खर्च कहाँ से चलेगा? समीरा की फीस कहाँ से आयेगी- जिस दिन इन्तजाम करके एक महीने की पेशगी मेरी हथेली पर धर दोगे, उसी दिन से यह बाहर नहीं जायेगी।''

रम्मी एक दिन तारा और हरबंस के विवाह की बात श्यामलाल से कह तो देती है पर भीतर-ही भीतर हरबंस से चिढ़ी हुई थी- ''यह दुश्मनी तुमने काहे को निबाही हरबंस? हम लोगों ने तुम्हाला क्या बिगाड़ा है? हरबंस के यह कहने पर की मुझे आपका और बाबूजी का आशीर्वाद चाहिए। रम्मी को अपने कानों पर विश्वास नहीं होता है। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि हरबंस इतनी सहजता से स्वीकार कर लेगा। वीरेन्द्र ने पत्र द्वारा यह सूचना भेजवा दी थी कि वैज्ञानिको और नाविकों की एक टीम दक्षिणी ध्रुव की यात्रा पर ा रही है। ऐसे में घर आ पाना कठीन है। रम्मी इतना समझ जाती है कि वह कुम्भकरन के देश जा रहा है।

आर्थिक परिस्थितियों की मार रम्मी को झेलनी पड़ती है। पैसो के अभाव में घर के आवश्यक चीजों को खरीदना बड़ा कठिन हो जाता है। रसोई में एक चीज होती तो दस खत्म हो चुकी होती। कोई भी चीज पकाने चलती, तो शायह दी कभी पूरा और सही मसाला निकल पाता। जोड़-तोड़ करते-करते उसका जी खिसिया आता था। वीरेन्द्र के आगमन की सूचना से वह सोचती है कि उसके पसंदी की कुछ चीजें तैयार कर ली जाए। पर लिखी गाड़ी से बीरेन्द्र के न आने से रम्मी का मन उतर जाता है। रम्मी का हौसला तब टूट जाता है। जब वह चरनजीत से वीरेन्द्र के खो जाने की खबर सुनती है। नीम बेहोशी में रम्मी बार-बार इतना ही बुदबुदा रही थी- ''कहाँ खो गया मेरा बच्चा... हाय रे.. कहाँ खो गया मेरा बच्चा.... अब वो कहीं नहीं मिलेगा... वह नहीं मिलेगा। बीरन के बाबू... वो यहाँ नहीं आएगा...।''

सरकारी खत में वीरेन्द्र के लापता की सूचना दी गई थी, जिससे रम्मी को राहत मिलती है। हरबंस के समझाने पर रम्मी कहती है- ''क्यों हरबंस बेटा! ऐसा हो सकता है कि वह कहीं

रह गया हो? जहाज पर न चढ़ पाया हो। किसी छोटी-मोटी मुसीबत में फँस गया हो...। अपनी शंका प्रकट करते हुए वह कहती है- हो सकता है बीरन इस जहाज की नौकरी से घबरा गया हो और जान छुड़ाने के लिए कही उत्तर प दा हो... या।'' वीरेन्द्र के खो जाने की खबर से रम्मी का मन किसी भी काम में नहीं लग रहा था। वह सोचती है सब कुछ दूसरों के लिए हो रहा हो। रम्मी ने उसी दिन से चीन खाना बंद कर देती है। बीरेन्द्र के लौट आने पर ही चीनी छूने का प्रण करती है। बेटे की याद में उसका मन नहीं लगता है। दरवाजे पर होनेवाली दस्तक या आहट से यहीं खटका बना रहता कि शायद बीरेन्द्र ही आया हो। बेटे के बारे में वह किसी भी प्रकार की कोई अप्रिय बात सुनना नहीं चाहती। सब कुछ रुका हुआ था, सिर्फ इस इंतजार में कि कही किसी क्षण कुछ होगा, कुछ घटित होगा और इंतजार खत्म हो जाएगा। मौत को स्वीकार करना कठिन है, मौत को मंजूर करना बड़ा कठीन काम होता है। क्योंकि इंतजार ही विकट परिस्थितियों में सबसे बड़ा सम्बल होता है। सब जानते थे कि सबसे बड़ा दिलासा मौत को मंजूर कर लेना ही था... पर मौत को नामंजूर करते जाना ही उनके लिए जीते जाने का बहाना बन सकता था।

रम्मी को पूर्ण विश्वास है कि जिस तरह से मल्लाह तैरकर टापू पर पहुँच गए थे। शायद इसी तरह बीरेन्द्र एक दिन तैरकर टापू पर आ जाए। नींद में भी रम्मी को खटका बना रहता है कि खोया हुआ बीरन न जाने कब रात-बिरात घर आज जाए। रम्मी को लगता जैसे दुनिया का हर रास्ता घर की तरफ आता है। और बीरन कभी भी किसी भी रास्ते से आ सकता है। सरकार के चाहने पर भी रम्मी मौत को जल्दीबाजी में किसी भी किमत पर स्वीकारना नहीं चाहती है। भाग्य से वह लौट आए। वह आसरा नहीं छोड़ना चाहती। रम्मी जानती है कि मौत का एलान होते ही सब कुछ खत्म हो जाएगा।

रम्मी घर के हालात, पैसा उगाहनेवाले, मकान मालिक के रवैये से परेशान हो उठती है। रम्मी के लिए घर को चला पाना पड़ा कठीन हो जाता है। इसीलिए रात होते ही बची हुई सब्जी में से कुछ खरीद ले आती है। एकाध बची रोटियों को बड़े जतन से रखती है। बीरेन्द्र के मौत का स्यापा से रम्मी नाराय होते हुए भी कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं थी। तारा के बताए अनुसार रम्मी समीरा को बताती है कि हमें अब यहीं कहना होगा की जो खबर मिली है उसके अनुसार बीरेन्द्र नहीं रहा... बाबूजी यहाँ नहीं रहते। रम्मी स्वयं दुः है। हालात ने उसे चारों ओर से इस तरह जकड़ लिया है कि न चाहते हुए भी उसे मजबूर होना पड़ रहा है वह कहती है- ''मैं क्या करूं बेटी.... खुद कहाँ चली जाऊं.... अरे मेरा दुःख समझने वाला अब कोई नहीं है इस दुनिया में.... जो था वह चला गया... गहरे समुद्र में खो गया...।''

हरबंस के सहयोग से मुआवजे हेतु अर्जी दे दी जाती है। अर्जी के साथ-साथ मनीआर्डर की रसीदें, खत आदि संभाल कर रख दी जाती है। रम्मी एक बस्ता लिए हुए हरबंस के साथ भाग दौड़ करना प्रारम्भ कर देती है। नौसेना के दफ्तर से लेकर एम्पि कमिशनर अन्य अधिकारियों से मिलकर मिन्नते करती है। इसी आशा में शायद कोई खबर मिल जाए। रम्मी सोचती है अगर वह पहले से ही घर से बाहर कदम रखती तो शायद इतनी जिल्लत की जिन्दगी उसे न जीनी पड़ती, जो उसने पिछले दिनों जी थी। तारा की बेटी मुन्नी रम्मी से काफी घुल-मिल जाती है, रम्मी को भी उससे बड़ा संतोष मिलता है। बीरेन्द्र की शनाख्त के पश्चात् पाँच महिने की तनख्वाह का चालान और बक्सा रम्मी को सौप दिया जाता है। रम्मी बेटे के गम से बहुत दुःखी थी। जिन्दगी में अब कोई रस नहीं रह गया, अपने रहकर भी सब पराये हो गये थे। रम्मी के परिवार की यादे बोरों में बंद हो जाती है। नियति उसके साथ कौन सा खेल खेल रही थी। उके कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। परछत्ती पर रखे बोरों को देखकर रम्मी को बहुत दुःख होता- ''यह सब क्या हो गया है! एक घर बोरों में बन्द हो गया है। एक परिवार परछत्ती पर बोरों में बन्द पड़ा है। वह परिवार जो अपनी जड़े धरती में रोपने

के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। सबने अपनी-अपनी जरूरत की चीजों को अलग कर लिया था।'' रम्मी पूछती है- '' क्यों समीरा... वे मल्लाह कितने बरस में लौटे थे!'' जैसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, समीरा भी पास में नहीं रही। हर गयी थी तो सिर्फ अतीत की कुछ यादे, हहराता हुआ समुद्र जिसका कोई ओर छोर नहीं था। जिसमें खोये हुए आदमी के बारे में कोई नहीं बता सकता था। इस प्रकार भावुक और संवेदनशील रम्मी भारतीय नारी का मुक्कमल तस्वीर बनकर उभरती है।

३.५ तारा एवं हरबंस का चरित्र

तारा आधुनिक विचारों की नारी है। तारा श्यामलाल की सबसे बड़ी बेटी है। परिवार की बड़ी संतान होने के नाते अपने जिम्मेदारियों से भी वाकिफ है। घर की स्थिति दयनीय हो जाने पर हरबंस के सहयोग से बेल-बूटे ट्रेसिंग करना सीख लेती है। पिता के बर्खास्त कर दिए जाने पर और कोई सहारा न देख तारा चालीस रुपये माहवार पर हरबंस के यहाँ काम करने लगती है। काम के दौरान किसी न किसी बहाने पिता का दुकान में डटा रहना तारो को अच्छा नहीं लगता है। एक साथ काम करने के कारण हरबंस और तारा एक दूसरे को चाहने लगते हैं। बड़ी और उसपर भी कमाऊँ बेटी होने के कारण तारा की बात घर में ज्यादा मायने रखते थे। छोटे-से छोटे कार्य में भी उसकी सहमति आवश्यक हो जाती है।

आधुनिक विचारों की तारा का विवाह हरबंस से हो जाता है। घर में रहने पर तारा से जो आर्थिक सहायता मिलती थी वह भी बंद हो जाती है। सरकार भी चाहती है कि बीरेन्द्र को मरा हुआ मान लेना चाहिए। हरबंस के इस सूचना से तारा व्यथित हो जाती है। तारा नहीं चाहती कि हरबंस स्वयं यह खबर अम्मा, बाबूजी को दे। तारा भली-भाँति जानती है कि इस खबर से उन्हें बहुत दुःख होगा। इसलिए हरबंस से कहती है- ''परमात्मा के लिए यह खबर घर मत देना.. नहीं तो बाबूजी और अम्मा का हार्ट फेल हो जाएगा। वे जिन्दा नहीं रह पाएंगे।'' हरबंस भी इस घटना से बड़ा दुःखी होता है। वह सोचता है जो कुछ हुआ, बहुत बुरा हुआ... उनका तो सब मिसमार हो गया। अब क्या रह गया जिन्दगी में। सब कुछ समाप्त हो गया।

हरबंस ही इस परिवार का तारनहार था। इसीलिए घर के सभी लोग हरबंस पर राय-मशविरे के लिए हर तरह से निर्भर रहने लगे थे। हरबंस बी इसी कोशिश में था कि किसी तरह ये लोग संकट रूपी दलदल से उबर जाए। हरबंस समझाता है कि सबसे पहले हमें अपने मन को मजबूत करन होगा, अन्यथ कुछ भी नहीं होगा। सबसे पहले हमें बीरेन्द्र की मौत को सरकार से मंजूर करानी होगी। अगर वीरेन्द की मौत मान लीजाए तो सरकार से मुआवजा भी प्राप्त किया जा सकता है। बीरेन्द्र जब लापता हुआ था उस समय वह ड्युटी पर था। इसीलिए यह सरकार की जिम्मेदारी है कि या तो उसे खोजकर लाए या फिर उसके सहारे जीनेवाले लोगों को मुआवजा दे...। हरबंस सोचता है कि मुआवजे की रकम मिल जाने से श्यामलाल के घर की आर्थिक परिस्थिति सम्भल जायेगी। तारा और हरबंस चाहते हैं कि समीरा नर्सिङ्ग का कोर्स करके अपने पैर पर खड़ी हो जाए। जिससे उसका भविष्य बन जाए।

हरबंस और तारा ने बीरेन्द्र की मौत का स्यापा का मोर्चा सभार लिया था। तारा ने बड़े ही चतुराई से अपने घर की पड़ोसियों को मातम के लिए जमा कर लिया था। जब सात-आठ रोनेविालियाँ आ गई तब तारा ने पहली चीख मारी- ''हाय मेरे बीरन.... अब तू कहाँ लौट के आएगा!'' और रोना-पीटना विधिवत शुर हो गया। '' स्यापा के बाद औरते अपने घर चले जाती

है। तारा भी जाते-जाते समझाकर जाती है कि अब लोगों से यह नहीं करना है कि वीरन समुद्र में खो गया है। यही कहना है कि व नहीं रहा है।

हरबंस ने काफी मस्कत के उपरान्त समीरा को नर्स ट्रेनिंग के लिए भर्ती करवा दिया था। हरबंस ने एम्पी की सहायता से बीरेन्द्र के पूरे मामले को फिर से खुलवाने के लिए जमीन आसमान एक करता है। हरबंस के साथ रम्मी भी भाग-दौंड करती है। तारा के गर्भवती होने पर घर में एक और हाँथ की जरूरत महसूस होती है। परिस्थितियों को भाँपते हुए तारा ने बड़े आग्रह से अम्मा को अपने यहाँ बुला लिया। तारा नहीं चाहती की माँ घर में अकेली पड़ी रहे। लोग क्या कहेंगे इसी वजह से रम्मी संकोच करती है। तारा माँ को समझाते हुए वे झिझक कहती है- ''हम अपनी तकलीफ आराम देखे या लोगों का!.... तुम्हें अब यहीं रहना है।''

हरबंस ने एक दिन पुरा किराया चुराकर मकान खाली करवा दिया। घर के सामान के साथ हरबंस अपने घर लिवा आता है। हरबंस समझाते हुए रम्मी से कहता है- अम्मा रोज-रोज सरकारी दफ्तरों में जाने से कोई फायदा नहीं है। सरकारी कामों में देर लगती ही है। आप का काम अब खत्म हो गया। अब तो कागजी दौड़ रह गई है। इसके लिए मैं लोगों को खटखटाता रहूँगा। अब आप को फिक्र करने की जरूरत नहीं है। ... घर में आराम से बैठो...। काहे को इस बुढ़ापे में परेशान हो रही हो! सरकारी काम तो राज-रोग होता है। मुआवजा वसूल जरूर होगा.. कोई मजाक तो है नहीं...।

तारा बड़े चतुराई से अम्मा को खाना बनाने से लेकर कपड़े धोने तक के कामों में उलझाए रखती है। यह कहकर की माँ तुम्हे बहुत काम करना पड़ रहा है, तुम्हा हाथ का खाना इन्हें बहुत पसंद है। तारा अपनी वाक्चातुर्य से माँ को घर के किसी न किसी काम में लगाए रहती है। मुन्नी के आधी लादी कपड़ों में अपनी एक साड़ी धोने के लए और भिगों देती है। ऊपर स उल्हाना देते हुए कहती है- ''तुमने इसकी आदत बहुत खराब कर दी है अम्मा..... अपने लिए ख्वाहमख्वाह काम बढ़ा लेती हो।''

तारा बेटी होकर भी माँ से करवाने का कोई भी मौका हाँ से जाने नहीं देती है। शनाख्त के बाद हरबंस के घर पर वीरेन्द के काले बक्सा में से निकाली गई एक-एक चीजों को देखकर सभी की आँखे डबडबा आती है। रम्मी के आँसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। तारा ने अम्मा को समझाते हुए कहाँ-'अब इस रोने-धोने मे कुछ नहीं रखा है। बेकार अपना दिल खराब करती और कलपती हो... हौसले से काम लो। क्या सह मुझे बुरा नहीं लगता? पर हम क्या कर सकते हैं।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि तारा में जहाँ चालाकी, अवसरवादिता और काम करवालेने की कला में निपुण है वही हरबंस सहज और सरल प्रवृत्ति का है। श्यामलाल का अपना बेटा न होते हुए भी बेटे का सभी कर्तव्य निर्वाह करता है। हरबंस, श्यामलाल के उस पोत को भरसक हरतरह से डूबने से बचाने का प्रयत्न करता है जो लहरों के थपेड़ों में बिखर जाने के लिए विवश है। हरबंस के इन्ही विशिष्ट गुणों से खफा होकर भी श्यामलाल को हरबंस बर पूरा भरोसा है। इसीलिए घर के सभी निर्णय का अधिकार हरबंस पर छोड़ देते हैं। हरबंस भी अपनी पुरी मेहनत और ईमानदारी से इस परिवार हर तरह से सम्भाले रखता है।

३.६ वीरेन्द्र के चरित्र की विशेषताएँ

बीरन से, बीरेन्द्र, बीरेन्द से बीरेन्दना अर्थात बीरन जो घर का भविष्य है। श्यामलाल जब दिल्ली आते है उस समय बीरेन्द की उम्र सिर्फ चौदह वर्ष की थी। बीरेन्द्र का सरल और

सादगी भरा स्वभाव सभी को अपना बना लेता है। घर में रह कर भी मानों वह घर में नहीं है। जिस तरह से आम लड़के बचपन में चुलबुले और शरारती होते है। वैसा कोई भी गुण हमें वीरेन्द्र में दृष्टिगोचर नहीं होता है। बीरेन्द बचपन से ही अध्ययनशील था। कॉलेज से आते ही अपने कापी-किताबों की धुनियाँ में तल्लीन हो जाता है। बीरेन्द्र की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि घर के मामले में वह कभी हस्तक्षेप नहीं करता था। जो भी रूखा-सूखा मिलता है उसे खाकर मस्त रहता है। घर की परिस्थितियाँ उससे देखी नहीं जाती थी बीरेन्द्र भली-भाँति जानता है कि अम्मा और बाबूजी अपना पेट काट-काट कर उसे पढ़ा रहे हैं। बाबूजी की मायूसी और बेबसी उसे निरन्तर सताती रहती है। वह कभी नहीं चाहता था कि उसके कारण घर के लोगों को परेशान होना पड़े।

वीरेन्द्र घर की आर्थिक परिस्थितियों से ही केवल परिचित नहीं था। बल्कि घिसट-घिसट कर चलते हुए घर का अंग था। अन्य स्कूली बच्चों की तरह उसके पास कपड़े भी अधिक नहीं थे। इसलिए वह शाम को ी अपने ड्रेस धोकर सुखाने के लिए डाल देता। जूतों पर पॉलिस के स्थान पर सफेद खड़िया फेरकर काम चला लेता था अपनी छोटी-मोटी जरूरतों को तारा से पूरा करवा लेता था। सभी काम इतने शान्त ढंग से करता था कि उसकी उपस्थिती का भी एहसास घरवालों को नहीं होता था।वीरेन्द्र की इसी सरल और शान्त स्वभाव के कारण घर के सभी लोग उसका बहुत ख्याल रखते थे। सब की आँखों में एक खामोश सपना पल रहा था- बीरन के भविष्य का सपना। जिस दिन बीरन कुछ करने योग्य हो जायेगा, उस दिन घर के हालात सुधर जायेगा। घर सभी कठिनाइयों से उबर जायेगा। वीरेन्द्र कॉलेज में पढ़ते समय ही नौसेना के टेस्ट और इन्टरव्यू देता है। जिसमें वह पास हो जाता है। नौसेना में चुने जाने की खबर से घर में खुशी की लहर दौड़ जाती है। नाते-रिश्तेदारों को भी बीरेन्द्र की यह खुशखबरी दे दी जाती हैं।

वीरेन्द्र के नौसेना में चले जाने पर उसकी कमी काफी महसूस होने लगती है। बीरेन्द्र के खत से उसके जहाजी जीन का समाचार घरवालों को मिलता रहता है। पिताजी के नाम उसका मनीआर्डर भी आने लगा था। समीरा भी कॉलेज जाना प्रारम्भ कर देती है। दक्षिणी ध्रुवप्रदेश की यात्रा हेतु मिलनेवाली छुट्टी और इजाजत से वीरेन्द्र काफी रोमांचित था। पर अपनों से दूर जाना भी उसे कष्टदायक लगता है। बीरेन्द्र कहता है- ''जहाज जब चला तब सैंकडों लोगों ने तट से उन्हें बिदाई दी डेक की रेलिंग पकड़े बीरन भी अपरिचितों को हाथ हिला-हिलाकर बिदाई देता रहा.... आने की रा देखती रहेंगी।''

घर के आर्थिक हालात वीरेन्द्र से छुपा नहीं था। श्यामलाल जब बगैर किसी कमाई के घर लौटते थे, उनकी खामोश आँखे चुप रहकर भी बहुत कुछ कह देती थी। वीरेन्द पिता को इन विकट परिस्थितियों में घिरा देखता है। बीरेन्द्र उनकी इस दशा को रेखांकित करते हुए कहता है- ''बाबूजी दिल्ली की सड़कों की खाक- छानकर बेजान से लौटते थे... और अपनी खामोश आँखों से कहते थे... 'कोई किनारा नहीं! कोई किनारा नही... तब उसे बहुत आश्चर्य होता था कि बाबूजी को कोई किनारा क्यां नहीं मिलता... और तब कभी-कभी वह यह भी पूछना चाहता था कि अपना टापू छोड़कर घरवाले समुद्र में क्यों उतर पड़े हैं? क्या खोजने और पाने के लिए वे दिल्ली चले आए है?''

प्रकृति की विराटता सर्द हवा और बर्फली समुद्र के अतिरिक्त आसपास कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ता है। वर्ष की ऐसी सफेदी और खामोशी भरी सन्नाटे को कई बार पिता की आँखों में देखकर बीरेन्द्र भयभीत हो उठता है। वीरेन्द्र शान्त प्रकृति का था। सादगी और सरलता से रहने के कारण ही घर में सबका प्यारा है। लडकियों की तुलना में लड़के थोड़े शरारती होते है। वीरेन्द्र के भीरत इस गुण का कही भी नामोनिशान नहीं था। वीरेन्द्र के सादगी भरे जीवन को चित्रित करते हु रम्मी कहती है- ''लड़का मेरा सीधा है। आफत की

परकाला तो ये लड़कियाँ है। वह अपनी पढ़ाई पूरी कर गया, नौकर-चाकरी वाला हो गा... पर कभी उसने एक पैसे के लिए तंग नहीं किया। ये रानी जी तो सार-भर पढ़ने के लिए गई और छील के रख दिया... आज यह किताब, कल वह कापी, परसों वह चन्दा... वह कैसे पढ़-लिख गया, पता लगा किसो को घर में! न कभी पहनने-ओढ़ने का शौक, न टीमटीम, न फूँ-फाँ ! जो मिल गया पहन लिया, जो दे दिया खा लिया...।''

वीरेन्द्र के खत से उसके आने की खुशी में परिवार के सभी सदस्यों के चेहरे खिल उठते है। वीरेन्द्र द्वारा बताए गए समय पर न आने से घर के सदस्यों का मुँह उतर जाता है। किसी का भी मन काम में नहीं लगता है। धीरे-धीरे इन्तजार भी खत्म हो जाता है। घरवालों की नींद उस दिन से उचट जाती है। दिस दिन वीरेन्द्र का दोस्त चरनजीत सिंह उसके खो जाने की सूचना देता है। उदास चरनजीत सिंह वीरेन्द्र के खोजे जाने के तमाम प्रयत्नों के संबंध में कहता है, '' जहाज पर जब वह नहीं मिला तब समुद्र में तलाख की गई। जहाज लौटाया गया... करीब सौ-सवासौ मील के गिर्द में पूरा समुद्र देखा गया सिंगापुर को खबर दी गई ....। अब तक उसका कोई पता नहीं चला है।''

वीरेन्द्र का लापता होना भले घरवालों के लिए तसल्ली हो पर पुलिस इन्स्पेक्टर, नौसेना के अधिकारियों ने यह अनुमान लगा लिया था कि इस केस में उलझने से कोई फायदा नहीं है। वीरेन्द्र के मौत का ऐलान भले न किया गया हो पर सरकारी फाइलें ठंठे बस्ते में चली जाती है। श्यामलाल भी महसूस करते हैं कि एलान होते ही रही सही आशा और बेसब्री हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जायेगी। श्यामलाल के घर के हालात को देखकर हरबंस चाहता है कि इंतजार का आसरा छोड़ देने में ही भलाई है। सरकार से वीरेन्द्र की मौत को मंजूरी करवाने के बाद ही आगे का रास्ता तय किया जा सकता है। वीरेन्द्र के मामले को और मजबूत करने के लिए माँ के नाम भेजे जानेवाले मनीआर्डर की रशीदों के माध्यम से यह बताए जाने की पुरजोर कोशिश हो रही थी की बीरन ही माँ की परवरिश करता था। इसलिए माँ द्वारा बेटे का हवाला देकर मुआवजे की अर्जी दे दी जाती है। नौसेना कार्यालय से मिले चालान और बक्से की वस्तुएँ एक बार फिर से सभी को रूला देती है।

युवा बेटे के खो जाने का सबसे बड़ा गम, सबसे बड़ा दुःख और सदमा माँ को ही लगता है। उसके हृदय में उठने वाली हूक और व्यथा को कोई नहीं समझ सकता। वीरेन्द्र 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का ऐसा अविस्मरणीय पात्र है जो अपनी सरलता, सहजता और कर्मठता से आगे बढ़कर घर को डूबते हालात से उभारने की कोशिश के पहले ही पाठकों को समुद्ररूपी हृदय में से इस तरह डूब जाता है। जिसे लाख कोशिशों के बावजूद भी भूलाया नहीं जा सकता। परिवारजनों को उससे बड़ी आस थी। सबकी आँखों में पलने वाला खामोश सपना भी हमेशा-हमेशा के लिए वीरेन्द के साथ ही समुद्र में खो जाता है।

३.७ समीरा का चरित्र

समीरा श्यामलाल की छोटी बेटी है। समीरा भी सहज, सरल और कर्मठ नारी है। विकट से विकट परिस्थितियों में भी आगे बढ़ती रहती है। समीरा न केवल घर के कामों में मदद करती है बल्कि घर में दो पैसे आए इसलिए हरबंस और तारा के कार्यों में भी मदद करती है। उनके द्वारा आस-पड़ोस से लाये गए कपड़ों पर बेल-बूटों को ट्रेसिंग करने का भी काम करती है। समीरा इस घर में आते ही अपने लिए एक ऐसी जगह चुन लेती है। जहाँ से आसपडोस के आनेजाने वालों की शक्ले कम उनकी परछाईयाँ ही ज्यादा दिखलाई पड़ती है। दिल्ली जैसे महानगर में व्यक्ति, व्यक्ति कम परछाईयाँ की शक्लों में अधिक दिखने लगता है। जिससे चाहकर भी व्यक्ति कोई गिला शिकवा नहीं कर सकता। समीरा दिल्ली में आकर

आसपास के परिवेश को देखकर सोचती है- ''जिनसे दिल की कोई बात न की जा सके, जिनके साथ सुख-दुःख और अकेलापन बटाया न जा सके, उन्हें सिवा परछाई के और क्या समझा जाए !''

समीरा महागरीय जीवन के अपरिचय बोध को महसूस करती है। जहाँ भी भीड़ का सैलाब तो है पर एक दूसरे को जाननेवाले, पहचाननेवालों की कमी है। जीवन में बहुत ज्यादा खामोशी भी उबन पैदा करने लगती है। समीरा को रज्जन की बाते याद आती है- 'कविताएँ पढ़ो समीरा!'' क्योंकि कविताओं के बाद बहुत गहरी खामोशी पीछा करती है। इसके सिवा और कुछ नहीं बचता। और यहं तो वह चीज है जिसे जिन्दगीभर आदमी खोजता है...।'' समीरा कमरों में, गली में, सड़कों और बाजारों में जहाँ भी नजर दौड़ती है। हर जगह उसे खामोशी ही नजर आती है, इस माहोल में भी उसे शकुन और शांति नहीं मिल पा रही है। ''सचमुच जब अपनी आवाज ही आदमी को नहीं सुनाई देती, तब सिर्फ शोर बाकी रह जाता है। और लाखों-करोडों आवाजों के भी कोई अर्थ नहीं रह जाते। एक-दूसरे को जाल की बुनाई की तरह काटती हुई आवाजें! एक दूसरे से टकराती हुई आवाजें, एक-दूसरे को पीछे छोड़ती हुई आवाजें.... और इन सब आवाजों के ऐन बाद एक गहरा सन्नाटा! बहुत गहरी खामोशी!''

समीरा को बड़ी बहन तारा का हरबंस के साथ आनाजाना थोड़ा अटपटा लगता है। तारा और हरबंस के बढ़ते मेलजोल और तारा में आए बदलाव को रेखांकित करते हुए समीरा कहती है- ''जिसके साथ कोई लड़का जुड़ जाता है, वह कितना बदल जाती है। उसके नाक-नक्श उभरने लगते है... बदन में हल्कापन और लोच आ जाती है। बात में सलीका और मिठास भर जाती है।'' घर की आर्थिक परिस्थिति अच्छी न होने के कारण समीरा को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ती है। जैसे-जैसे स्थितियाँ सुधरने लगती है और बीरेन्द्र की नौकरी लगते ही समीरा फिर से कॉलेज जाना प्रारम्भ कर देती है। पड़ोस में रहनेवाली तमता अक्सर चिट्ठीयाँ उठाकर समीरा को दे जाती है। इसी कारण समीरा और नमता की दोस्ती और गहरी हो जाती है। समीरा ने बीरेन्द्र और नमता को कभी भी एक साथ नहीं देखा था। इसलिए वीरेन्द के पास नमता के पत्रों को पाकर उसे बड़ी हैरानी होती है।

वीरेन्द्र के खो जाने का दुःख समीरा को हर तरह से दुःखी कर देता है। इसीलिए अम्मा, बाबूजी से चर्चा के दौरान वह कहती है- ''भैया किसी बन्दरगाह पर चीजें खरीदने-वरीदने चला गया हो... वहीं कोई एक्सीडेंट हो गया हो और जहाज तक न लौट पाया हो...।'' वीरेन्द्र के लौट आने की अटकलों के चलते रम्मी बार-बार समीरा से वहीं कहानी सुनती जो हरबंस ने सुनाई थी। इसीलिए वीरेन्द्र की याद आते ही वह समीरा से पूछ बैठती... क्यों समीरा... कितने बरस बाद मल्लाह लौटे थे?'' बीरेन्द्र के स्यापा हेतु तारा द्वारा घर पर जो भीड़ जमा की गई थी, उससे समीरा और चीढ़ी हुई थी। घर में जो कुहराम मचा था उससे समीरा बेहद नाराज थी। यह सब खिलवाड़ उससे बर्दाश्त नहीं होता। समीरा स्पष्ट शब्दों में कहती है- ''हम लोगों की जिन्दगियाँ सिर्फ खिलवाड़ के लिए रह गई है। जो खो गया है, वह भी खिलवाड़ बन गया है। मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होता।'' हरबंस के माध्यम से एक ट्रस्ट के जरिए समीरा को नर्सिङ्ग कोर्स हेतु भर्ती करवा दिया जाता है। समीरा जब भ बाहर कदम रखती है, उसे यही सब लगता है। वह भीड़ में है, न आगे हैं और न पीछे...। श्यामलाल की बेटी से अब समीरा नर्स बन गयी है। महानगर में जीवन के बहते प्रवाह को रेखांकित करते हुए कहती है- ''इस महानगर में यह अकेला मसला नहीं था। यह अकेला घर नहीं था जो डूबते हुए जहाज में था। यह अकेला परिवार नहीं था, जिसका कोई समुद्र में खो गया था।''

३.८ नमता का स्वभाव

नमता 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास की ऐसी नारी पात्र है जो उपन्यास की मुख्य धारा से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। कथाकार कमलेश्वर ने बड़े ही बारीकी से उसके संवेदना को उरेहा है। वह एक ऐसी प्रेमिका के रूप में हमारे सामने आती है जो कुछ न कहते हुए भी बहुत कुछ कह जाती है। कमलेश्वर ने नमता के माध्यम से एक मूक प्रेमी का जो चरित्र उभारा है वह बड़ा ही प्रभावशाली बन पड़ा है। उपन्यास में प्रारम्भ से ही नमता पाठकों के मन मे कोतुहल पैदा करती है। जिसका खुलासा बीरेन्द्र के बक्से से मिले पत्रों के माध्यम से होता है।

नमता वीरेन्द्र के पड़ोस में रहती है। वीरेन्द्र के सरल और सौम्य व्यवहार से शायद नमता उससे प्रेम करने लगी है। नमता का तारा से बढ़ती दोस्ती और अक्सर घर में आते रहने का सिलसिला यह स्पष्ट कर देता है कि कही-न-कही वीरेन्द्र और नमता के बीच कोई हलचल थी, जिसका अनुमान किसी को भी नहीं था। वीरेन्द्र के जहाज पर चले जाने पर नमता का उस घर में आना-जाना और बढ़ जाता है। ''नमता किसी न किसी बहाने से घर मे आने लगी थी। पहले तो वह तारा से एक गिला पर बूटा उतरवाने आई थी, पर बाद में रम्मी और समीरा के पास भी आने-जाने लगी थी। जब भी वह अपनी खिड़की से श्यामलाल के दरवाजे में कोई चिट्ठी पड़ी देखती, तब निकल आती और चिट्ठी उठाकर उनके घर में दे जाती, कहती - 'यह वहाँ गली में पड़ी हुई थी।'

नमता की आँखे मानों हर पल श्यामलाल के दरवाजे पर टिकी रहती है। नमता की खामोश आँखे मानो किसी आनेवाले विशेष खबर का इंतजार कर रही हो नमता का अक्सर किसी न किसी बहाने समीरा के यहाँ आना जाना यह संकेत करता है कि नमता अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु ललायीत रहती है। नमता की यह उत्सुकता समीरा के तेज आँखों से छुप नहीं पाती है। समीरा ने एकाकबार जानबूझकर नमता को इस सन्दर्भ में कुरेदना चाहा पर नमता ने सकुचाकर इन बातों को टालना चाहा। नमता को जब यह महसूस होने लगता है कि समीरा को कुछ शक हो रहा है या वह कुछ जानने लगी है। तब से वह खत उठाकर देना बंद कर देती है।

वीरेन्द्र के आने की सूचना घरवालों के साथ-साथ नमता के चेहरे पर भी खुशी की आभा फैला देती है। उसके आने के इंतजार में नमता भी खिड़की के ही पास बैठकर अखबार पढ़ने का नाटक करती है। लिखी गाड़ी से वीरेन्द्र के न आने पर नमता भी भीतर ही भीतर बेचैनी महसूस करने लगती है। जब एक दिन वीरेन्द्र के जहाज से खो जाने की सूचना से घर में रोने पिटने की आवाज सुनकर नमता भी चली आती है। नमता अपनी नम आँखों से सब कुछ देखते हुए गुमसुम काफी देर समीरा के पास बैठे रहती है।

नमता और वीरेन्द्र के आत्मीय लगाव और प्रेम संबंधों का रहस्य उस समय उद्‌घाटित होता है जब वीरेन्द्र के नाम लिखे कुछ खत बक्से में से मिलते हैं। समीरा ने लिखावट पहचानने की बहुत कोशिश की पर वह पहचान नहीं पाई। नमता ने कुछ खत बीरन को लिखे थे... उन्हें बीरन ने बहुत संभालकर रखा था। नमता के रूप में कमलेश्वर ने लज्जालु, सरल और कोमल हुदया नारी अनूठा चरित्र उपस्थित किया है। किशोरकालीन रूपानी प्रेम में डूबी नमता अपनी प्रेम भावना का खुलकर इजहार नहीं कर पाती है।

❖❖❖

४

समुद्र में खोया हुआ आदमी

उपन्यास का उद्देश्य

इकाई की रूपरेखा :

४.१ ईकाई का उद्देश्य

४.२ प्रस्तावना

४.३ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' का उद्देश्य

४.४ महानगरीय जीवन की अभिव्यक्ति

४.५ पुराने और नये मूल्यों का संघर्ष

४.६ दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की यात्रा

४.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई में हम 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के उद्देश्य का मूल्यांकन करेंगे। इस इकाई को पढ़कर आपः
- समुद्र में खोया हुआ उपन्यास में वर्णित मुख्य बिन्दुओं से अवगत होंगे।
- उपन्यास के प्रतिपाद्य या उद्देश्य से परिचित हो सकेंगे।
- उपन्यास के आधार पर टिप्पणियों को समझकर विस्तार सहित अध्ययन कर सकेंगे।
- संभावित टिप्पणियों का विवेचन कर सकेंगे।

४.२ प्रस्तावनाः

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के कथ्य और चरित्र-चित्रण का सविस्तार विश्लेषण किया गया है। साथ ही साथ समसामायिक जीवन, महानगरीय जीवन बोध, संबंधों के यथार्थ रूप आदि को विस्तार से चित्रित करने का भी प्रयास है। इस इकाई में मानवीय मूल्यों और रूढ़ मानसिकता तथा पुराने और नये द्वंद्व का भी परिचय दिया गया है।

४.३ 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' का उद्देश्य :

कथाकार कमलेश्वर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युग-सत्य को बड़े ही साफ गोई ढंग से उद्घाटित किया है। कमलेश्वर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि अपने युग की छोटी सी छोटी समस्या को विचार विमर्श के जरिए कहानियों और उपन्यासों में इस तरह उड़ेल देते हैं कि पाठक उनसे एकाकार किए बिना नहीं रहता। भारतीय मध्यवर्गीय परिवार का यथार्थ रूप उनके कृतियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कमलेश्वर की यह रचना जीवन और सामाजिक यथार्थ को केन्द्र में लेकर चलती है। अर्थात् उनका पूर्ण लेखन सोद्देश्यता की कसौटी पर खरी उतरती है। हर रचनाकार सदैव किसी न किसी विशिष्ट उद्देश्य से ही साहित्य का सृजन करता है।

उपन्यास के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार हेनरी जेम्स ने ठीक ही कहा है- ''उपन्यास की सत्ता का एक मात्र कारण यह है कि वह जीवन को चित्रित करने का प्रयत्न करता है।'' इसी प्रकार डॉ. हर्बर्ट जे. मूलर ने भी इसकी महत्ता को समझाते हुए कहाँ है - ''उपन्यास मूलतः मानवीय अनुभवों का चित्र है, चाहे वह यथातथ्य हो अथवा आदर्श, इस कारण उपन्यास निश्चिय ही जीवन की आलोचना है।''

वर्तमान हालात में पुरानी और नई परम्परा के साथ-साथ जीवन-मूल्यों में तेजी से हो रहे बदलाव के कारण उपन्यास का कई उद्देश्य को लेकर चलना स्वाभाविक है। डॉ. घनश्याम मधुप की मान्यता है कि ''लघु-उपन्यासकार जीवन की किसी समस्या को हमारे सामने मूर्तरूप में लाकर खड़ा कर देता है। उसका समाधान खोजना पाठक वर्ग का कार्य है। वैसे यदि देखा जाए तो लेखक का यह भी उद्देश्य ही माना जा सकता है कि वह समाज के किसी ज्वलंत प्रश्न को हमारे सामने उपस्थित कर दे। इसलिए हम देखते है कि कई लघु-उपन्यासों में कोई एक विचार प्रकट किया जाता है लेकिन उसका विधिवत् तर्क पूर्ण उत्तर प्रस्तुत नहीं किया जाता। अन्त में आकर अचानक कथा-सूत्र ऐसे स्थान पर टूटता है कि पाठक को अपनी कल्पना के सहारे उसे जोड़ना पड़ता है।

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास की भूमिका में इसके उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए संकेत किया गया है- ''भविष्य का भारत क्या होने जा रहा है, यह हमें आज ही सोचना पड़ेगा, और यह तय है कि शहरों के यांत्रिक लक्षण गाँवों में भी प्रकट होंगे। ऐसा नहीं कि गाँव-कस्बे भाग कर आयेंगे और शहरों में विलीन हो जायेंगे- पर इतना तो सच है कि यह सारा विकास और यांत्रिक गति धीरे-धीरे गाँव-कस्बों का आमूल परिवर्तन करेगी, और इस परिवर्तन से आदमी की मानसिकता भी बदलेगी। उसके सामाजिक सम्बन्ध बदलेंगे। सम्बन्धों की ओर देखने की दृष्टि बदलेगी, सम्बन्धों के दायरे विस्तृत होंगे और साथ ही ये सम्बन्ध ज्यादा लचीले होंगे। लचीले यानी ज्यादा व्यावहारिक! आधुनिकता और यांत्रिकता का दबाव महानगरों में पैदा हो चुका है, और इससे मुक्ति अब है नही। धीरे-धीरे यह यंत्र-संस्कृति गाँवों-कस्बों की ओर जायेगी और वहाँ के संतुलन को असंतुलित करेगी। ऐसी प्रक्रिया के झटके को मनुष्य कैसे झेलेगा, कहाँ तक उसे पुरातन के अनुकूल बनायेगा और कहाँ तक उसके अनुकूल बनेगा- इसका आभास मिलने लगा है।

श्यामलाल का परिवार इस आभार को महसूस तो करता था पर उसके अनुकूल बनने को तैयार नहीं था। पर परिस्थितियों की मार उन पर इतनी भयानक पड़ती है कि बीरन की मौत का मुआवजा लेकर फिर से किसी तरह जिन्दगी शुरू कर सकने की अनिवार्यता में श्यामलाल को अन्ततः वह मंजूर करना पड़ता है, जो वे कभी नहीं कर पाये थे - परिवार और पत्नी से अलगाव! उन्हें यह भी घोषित करना पड़ता है कि परिवार का भरण-पोषण नहीं करते थे। वे निठल्ले और बेकार थे और उनकी पितृ तथा पतिसत्ता व्यर्थ हो चुकी थी। और उनका वह परिवार-पोत जनसमुद्र में खो जाता है। उनका पूरा परिवार बोरों में बँध कर हरबंस के घर परछती पर पहुँच जाता है - यानी एक परिवार नामक पुरानी ईकाई अतीत की चीज हो जाती है और यहाँ से व्यक्तियों का संघर्ष शुरू होता है।

जिस हालत में इस घर के लोग पहुँच जाते है, वह केवल परिस्थितिजन्य है। जरूरी नहीं कि सब परिवारों का यही हश्र हो- पर जो परिवार अपने नये संतुलन को स्वयं राह नहीं देंगे, उनकी स्थिति इससे बहुत भिन्न नहीं होगी।

यहाँ किसी की नियति अलग नहीं है.... क्योंकि सब हारती हुए पाली के आजाद लोग है!..... बहुत बड़े समुद्र में डूबते हुए जहाज पर चढ़े हुए लोग है.... जो सिर्फ एक-दूसरे को देखते हैं और हर एक दूसरे को बोझ समझता है एक फालतू बोझ! एक ख्वाहमख्वाह चलता-फिरता हुआ आदमी- जिसके होने, चलने, रहने और साँस लेने से कोई फर्क नहीं पड़ता। ....

यहाँ दुःख समेटकर चलने का वक्त नहीं है। यहाँ सुख की बात का भी वक्त नहीं है। यहाँ चारों तरफ एक घेरा पड़ा हुआ है। इस घेरे को चाहकर भी व्यक्ति तोड़ नहीं सकता। जिन्हों ने इसे तोड़ने की कोशिश की लहरों ने एक-एक कर सभी को फेंक दिया था, ऐसी कोई ताकत नहीं बची थी कि फेंके गए लोगों को फिर से जोड़ा जा सके।

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में आर्थिक मजबूरियों में जीनेवाले मध्यवर्गीय परिवार अपने आपको महानगरिय परिवेश में जीने और जोड़े रखने की तमाम कोशिशों के बावजूद उखड़ जाता है। लाख कोशिशों के परिवार के विघटन को रोक नहीं पाता है। बदलते मूल्यों को रेखांकित करते हुए 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास यह स्पष्ट कर देना चाहता है कि परिस्थिति से समझौता न करने का ही परिणाम है कि लहरों के समक्ष श्यामलाल का परिवार रूपी पोत हर तरह से तहस-नहस हो जाता है।

४.४ महानगरीय जीवन की अभिव्यक्तिः

आधुनिक जीवन की चका-चौंध और भौकि सुख सुविधाओं हेतु व्यक्ति गाँव और कस्बे से नगर और महानगरों की ओर तेजी से रूख करता हुआ नजर आता है। हर व्यक्ति जानता है कि महानगरों में काम की कमी नहीं होती है। छोटे-मोटे काम मिल तो जाते हैं। पर उन कामों से होनेवाली कमाई आज की बढ़ती हुई महगाई में क्या पूरी हो सकती है। बढ़ती महगाई में श्यामलाल का परिवार किसी तरह घिसट घिसट कर चल रहा है। रम्मी दबे स्वर में इस दबाव को अभिव्यक्त करते हुए कहती है - चीजों के दाम बढ़ते जा रहे थे और दिन-दिन वक्त काटना दूभर होता जा रहा था। समझ में नहीं आता था कि कहाँ से घर की पूर डाली जाए। दिल्ली जैसी जगह में आदमी के करने के लिए हजार काम थे पर उन्हें किसी काम में पैसा नहीं मिला। काम तो कोई भी शुरू किया जा सकता था, पर हमेशा बीच में ऐसे दिन आते थे कि काम अपने आप ठप्प हो जाता था, क्योंकि उसे जिलाए रखने के लिए पैसा नहीं होता था और ऐसे में थोड़ा-बहुत जोड़ा या उधार लिया हुआ मूल पैसा भी खत्म हो जाता था।''

महानगरिय जीवन में व्यक्ति चाहकर भी शकुन से नहीं हर पाता है। यदि व्यक्ति कुछ कहना भी चाहता है तो वहाँ के कोलाहल में सबकुछ दब जाता है। श्यामलाल महानगरीय जीवन को रेखांकित करते हुए कहते हैं- ''ये कोलाहल से भरी सड़के... आदमी पर हुआ आदमी.... ये कारें, बसें, मोटरें, शोर करते हुए स्कूटर... इमारतें और इमारतों में अपना खून चूसवाते हुए निरीह लोग.... जिनके पास अपनी कोई जिन्दगी नहीं है। न अपनी आकांक्षाएँ और न सपने। न अपने फैसले... और न अपनी आजादी! धरती से आसमान तक लम्बी मीनार है, जिसके तल में करोड़ों अरबों आदमी खड़े हैं और उनकी गर्दनों पर दूसरे सवार हैं- उन दूसरों पर तीसरे सवार है.... उन तीसरों पर चौथे सवार है... और आसमान तक यहीं सिलसिला चला गया है! ... करोड़ो... अरबों की जिन्दा मीनार है और करोड़ों-अरबों फालतू पड़े हैं- अपने जख्मों को चाट-चाटकर प्यास बुझाते हुए.... किसी के पास किसी के लिए वक्त नहीं है।''

महानगरी जीवन के दबाव में जीते भारतीय मध्यवर्गीय परिवार की हकीगत को 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' की भूमिका में स्पष्ट किया गया है। इस भागमभाग के पीछे सबसे बड़ा कारण है- भविष्य की अनिश्चितता! कोई भी व्यक्ति भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं है। उसे पता नहीं है कि कल क्या होने वाला है। वह नितान्त असुरक्षित महसूस करता है और इसी भय को वह साहस का नाम देकर महानगरों की ओर भागता है; और वे महानगर है महासागर की तरह, जिनकी अतल गहराईयों और तूफानों का पता तब तक नहीं चलता, जब तक आदमी उनमें उतर नहीं जाता। महानगरों की यांत्रिक सभ्यता पहले बनी-बनायी व्यवस्था को तोड़ती है और फिर उसकी जगह एक व्यावहारिक व्यवस्था को जन्म देती है। होता यह है कि हमारे

मध्यवर्गीय घर इस यांत्रिक सभ्यता में चरमरा कर टूट तो जाते हैं, पर नयी व्यवस्था को मंजूर नहीं कर पाते। उनके संस्कार और सदियों के विश्वास आड़े आते हैं।

महानगर जीवन के दबाव के नीचे सारे रिश्ते, जिन्हें हम कलेजे से लगाये जीते रहे हैं, भिन्न-भिन्न हो जाते हैं और खून के रिश्ते तक बदलने लगते हैं। यहाँ आकर हर व्यक्ती अकेला हो जाता है और अपने अस्तित्व तथा सार्थकता की खोज करता है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माँ-बेटी आदि के खून के रिश्ते व्यर्थ होकर भी बने रहते हैं पर उनके आन्तरिक सन्तुलन बदलने लगते हैं, क्योंकि महानगर की संस्कृति मात्र पुरुष-आश्रित या पिता-आश्रित नहीं है। वह एक-एक अंश पर आश्रित है।

महानगर में हर कोई किसी न किसी समस्या से घिरा हुआ है, फर्क सिर्फ इतना ही है कि सबकी समस्याएँ अलग-अलग है। दुःख और सुख कितने मामूली बनकर रह गए हैं। सिर्फ इन्हें लेकर ही पूरी जिन्दगी नहीं गुजारी जा सकती। यहाँ कोई पीछे नहीं छूट सकता। यहाँ कोई आगे नहीं बढ़ सकता। यहाँ कोई अजनबी नहीं है। यहाँ कोई अपना भी नहीं है और कोई पराया भी नहीं है। जब तक हम दूसरों के दुःख को नहीं देखते तब तक हमें लगता है हमारा दुःख बहुत बड़ा है। वास्तविकता का पता चलते ही आभास हो जाता है कि हमारा दुःख कितना छोटा है। नर्सों के होस्टल में जाने पर समीरा महसूस करती है- ''इस महानगर में यह अकेला मसला नहीं था। यह अकेला घर नहीं था जो डूबते हुए जहाज में था।''

४.५ पुराने और नये मूल्यों का संघर्ष :

''समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में कस्बाई और महानगरीय जीवन का यथार्थ अपने मूल रूप में उद्‌घाटित हुआ है। समय के साथ-साथ पुराने और नये मूल्यों में भी बड़े तेजी से परिवर्तन हो रहा है। यदि हम समय के साथ बदलाव नहीं लायेंगे तो उससे अलग कर दीये जायेंगे। परम्परा से प्रेरणा लेते हुए सत्य को आत्मसात करने में ही भलाई है। ''श्यामलाल का परिवार दिल्ली चला तो आता है पर वह इसी स्वीकार-अस्वीकार के भँवर-जाल में चकराता रहता है- क्योंकि श्यामलाल उसे अकेल चलाने का परम्परागत दम्भ रखते हैं। वे इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते कि वे एक नयी व्यवस्था के दबाव में हैं और इस व्यवस्था के अनुकूल और अनुरूप बन सकने के लिए उन्हें अपने दृष्टिकोण, संस्कार, अवस्थाओं और विश्वासों में आमूल परिवर्तन स्वीकार करना होगा।

श्यामलाल अपनी लड़कियों को लेकर भी उसी पुरानी और दकियानूसी परम्परा के गुलाम है, जहाँ लड़कियाँ अपने पिता के इशारों पर चलती हैं और गऊ की तरह अपने अभिभावकों के फैसलों को स्वीकार कर जिन्दगी भर घुटती ही रहती है। कठिनाई यह है कि पिता की सत्ता का जो अनिवार्य विघटन महानगर की संस्कृति में होता है, वह यहाँ नहीं हो पाता और पुराने मूल्यों और परिवार सत्ता का नवीनीकरण अवरुद्ध हो जाता है। श्यामलाल के मन में 'पुराने' के लिए वह आदर है जो नयी महानगर संस्कृति में व्यर्थ हो चुका है- पर श्यामलाल उस पुराने से अपने को तोड़ नहीं पाते। यदि वे परिस्थितियों से समझौता कर लेते तो शायद परिवार की स्थिति कुछ और होती।

घर के घिरते हालात को देखते हुए ही तारा चालीस रुपये माहवार पर हरबंस के यहाँ काम करने लगती है। पिता का दिन भर किसी न किसी बहाने दुकान पर जमें रहना, रखवाली करती नजरों से देखते रहना, उसे कतई पसंद नहीं है। तारा अपना भला-बुरा समझने लगी है। इसीलिए संस्कारोंकी जकड़बंदी को ध्वस्त करते हुए हरबंस से विवाह कर लेती है। युवा पीढ़ी दूसरों के फैसले से अपनी जिन्दगी नहीं जीना चाहती। वह जिन्दगी अपने तरीके से जीना चाहती है। माता-पिता की अनावश्यक रोकटोक उन्हें कतई पसन्द नहीं है। रम्मी बेटी

समीरा को सजते-धजते देखकर कहती है- ''ज्यादा फैशन करने की जरूरत नहीं है। सीधी चोटी करो!... और साड़ी का पल्ला सीधा पड़े... समझी! समीरा माँ के कहने पर 'हाँ' तो कह देती है पर करती वही है जो वह करना चाहती है। इसीलिए समीरा चुपके से नमता के घर में घुस जाती है और दस मिनट बाद उल्टा पल्ला डाले और जुड़ा किए चुपके से खिसक गई।

श्यामलाल के घर का पुराना संदुक केवल बुजुर्गों की यादों से ही भरा हुआ नहीं है अपितु उन संस्कारों, भावनाओं को भी सजोये हुए हैं। सन्दुक जब जब खुलता था, बुजुर्गों का वह जमाना और वैभव की दास्तान आँखों के सामने तैरने लगता है। घर- परिवार की मर्यादाओं के संबंध में श्यामलाल कहते हैं- 'हमारी दादी ने तो पड़ोस के आदमियों की शक्ल तक नहीं देखी थी.... देहरी के बाहर पैर नहीं रखा था। पूजा के लिए जब हम लोग जाया करते थे तब इक्कों में पर्दे बँधते थे और देवी-मंदिर में हम सब लड़के दोनों तरफ चादरें तानकर खड़े होते थे तब बड़ी-बूढियाँ दर्शन के लिए जाया करती थीं। मजाल क्या कि चादर सिर से सरक जाए!''

आधुनिकता और यांत्रिकता के दबाव हर ओर दिखलाई पड़ता है। संबंधों के दायरे विस्तृत होने के साथ-साथ लचीले भी होने चाहिए। अन्यथा संतुलन बिगड़ने का भय बना रहता है। मनुष्य अपने सारे व्यर्थ के संस्कारों, पुरातन मूल्यों, रूढ़ विश्वासों, जड़ और झूठे अहंकार और गौरव के साथ इस नयी उपजती परिस्थितियों से तब तक टकराता है। जब तक उसका अंग-अंग टूट कर गिर नहीं जाता। तब तक हम देखते हैं दुनिया बहुत आगे निकल चुकी होती है। श्यामलाल सोचने के लिए विवश होते हैं। उन्होंने पिता के रूप में अपनी संतानों को और पत्नी के रूप में रम्मी हेतु कुछ नहीं कर पाए। यह विवशता कही न कही उन्हें कचोटता रहता है। ''समीरा ने उन्हें जन्मदाता माना होता और उन्हें पिता न मानकर अगर वह अपनी जिन्दगी खोज सकी होती तो शायद आज किसी लायक होती.. आखिर वह पिता और पति के रूप में क्या दे पाए हैं उन्हें? कुण्ठाएँ, वर्जनाएँ, रूढ़ियाँ और जिन्दगी का एक टूटा हुआ जहाज, जो किसी भी क्षण इन थपेड़ों में टुकड़े-टुकड़े हो सकता है।''

श्यामलाल के परिवार की हालत परछती पर रखे उस सामान की तरह थी। जिसे देखकर रम्मी को बहुत कोफ्त होती थी- ''एक घर बोरों में बन्द हो गया है। एक परिवार परछती पर बोरों में बन्द पड़ा है। वह परिवार जो अपनी जड़ें धरती में रोपने के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। सबने अपनी-अपनी जरूरत की तीजों को अलग कर लिया था।'' इस प्रकार 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में कमलेश्वर ने पुराने और नये के संघर्ष को बड़ी सजीवता से चित्रित किया है।

४.६ दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की यात्रा

अभियान जहाज के नेता ने ध्रुव प्रदेश की यात्रा का समय इस प्रकार चुना था कि ध्रुव प्रदेश तक पहुँचते-पहुँचते सर्दियाँ खत्म हो जाएंगी और छः महीने की लम्बीरात भी बीत चुकी होगी। देश जब गर्मी में झुलस रहा होता है उस दौरान दक्षिण ध्रुव प्रदेश में सर्दियों का मौसम होता है। यात्रा के दौरान हर जरूरत पड़ने वाली चीज को सहेजकर रख लिया जाता है। जहाज पर से नजर दौड़ाने पर दो ही चीजें दिखलाई पड़ती थी नीचे अथाह समुद्र और ऊपर मटमैला आसमान। कहीं-कहीं तो समुद्र का जल इतना सफेद और तेज होता था कि आसमान पर भी उसका अक्स पड़ने लगता था। अक्स की सफेद धुन्ध में सिवा जहाज के और कुछ नजर नहीं आता था।

हजारों मिल का सफर तय करने के उपरान्त जहाज अन्त में स्काट द्वीप पहुँचता है। स्काट द्वीप पहुँचने से पहले ही समुद्र उग्र रूप धारण कर लेता है। सामने बर्फीला समुद्र था

बफीली शिलाओं और हेलों से भरे उस समुद्र को पार करते समय वीरेन्द्र आश्चर्य चकित हो उठता हैं क्योंकि दूर-दूर तक बर्फ का समुद्र था... और बर्फ पर बैठे हजारों की तादाद में सफेद सील ऐसे दिख रहे थे.. वे बोतलों की तरह बैठे हुए थे। और जो छोटे पेंग्विन थे वे बर्फ पर लेटे हुए थे। समुद्र का पानी फूटकर जहाँ झील बन गई थी उनमें मछलियाँ खोजी जा रही थी।

प्रकृति की विराटता सामने फैली हुई थी... चारों ओर नीरवता थी.... निर्जन एकांत। सर्द हवा और बर्फ के अलावा वहाँ कुछ भी नहीं था। चारों और खामोशी और बर्फ की सफेदी थी। मीलों दूर तक बर्फ की सूनी खाड़ी फैली हुई थी। समतल 'हिमप्रदेश' मिलते ही दल के नेता द्वारा अपने राष्ट्र का ध्वज गाड़ा जाता है। शिविर बनाकर रास्तों पर झण्डियां लगाते हुए स्लेजे बाहर रख दी जाती है। अभियान दल के सदस्य अनुसंधान कार्यों में जुट जाते हैं। एक टुकड़ी दक्षिण ध्रुव की ओर प्रस्ताव करती है तो दूसरी टुकड़ी बर्फ की परतों को भेदकर समुद्र-तल की गहराई का पता लगाने में संलग्न थी। बर्फ काटकर एक गड्ढा बनाकर पेंग्विनों को उसमें डाल दिया जाता है जिससे वे भाग न सकें, पर उनमें से कुछ पेंग्विन भागने में सफल हो जाते हैं।

एक दिन बेहद तेज अंधड़ में जहाज का एक नाविक गुम हो जाता है। उसे खोजने के लिए टुकड़ियाँ बनाई जाती है। तेज अंधड़ में कुछ भी दिखलाई नहीं देता था। उसके जीवित रहने की आशा सब ने छोड़ दी थी। दूसरे दिन पता चला कि नाविक हिमपुरुष की तरह गड्ढे के पास गिरा हुआ था। अभियान दल के डाक्टर ने उसे मौत के मुँह से किसी तरह बचा लिया था। वहाँ से जहाज चलने के पहले अभियान दल के नेता के आदेश पर सभी को अपनी कैमरा, डायरियाँ, नोट्स, रोजानामचे, तालिकाएँ आदि सभी दस्तावेज जो उन्होंने ध्रुव प्रदेश में तैयार किया था वहीं जमा कर देना पड़ता है। लम्बी यात्रा के उपरान्त दक्षिण अभियान से जहाज न्यूजीलैंड वापस पहुँच गया था।

दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की यात्रा के दौरान विशाल हिम-खण्डों, बर्फ की खाड़ियों, समतल हिम मैदानों, ह्वेल से भरे हुए सागर-प्रदेश, हिमानी अंधड़ों पेंग्विन पक्षीयों को बीरेन्द्र चाकर भी नहीं भूल पाता है। मीलों लम्बे हिमखण्ड के सरक जाने से जहाज को नियंत्रित करना बड़ा कठिन था, क्योंकि ऐसे में किसी भी क्षण जहाज टुकड़ों में बिखरकर यात्रियों को गहरे हिम-गह्वरों में विलीन कर सकता था। इस प्रकार कमलेश्वर ने दक्षिण ध्रुव प्रदेश का बड़ा ही सजीव एवं मार्मिक चित्र उरेहा है।

❖❖❖

५

परीक्षा हेतु उपयोगी प्रश्न

इकाई की रूपरेखाः

५.१ उद्देश्यः
५.२ प्रस्तावनाः
५.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण का प्रारूप
५.४ संदर्भ सहित व्याख्या के लिए अन्य अंशः
५.५ अभ्यास हेतु प्रश्न
५.६ अभ्यास हेतु टिप्पणियाँ
५.७ अभ्यास हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्न (उत्तर सहित)
५.७.१ बहुविकल्पीय प्रश्न
५.७.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
५.८ बोधप्रश्न

५.१ उद्देश्य

- इस इकाई को पढ़कर आप :
- संभावित अवतरणों की संदर्भ-सहित व्याख्या कर सकेंगे
- संभावित प्रश्नों से परिचित हो जायेंगे।
- संभावित टिप्पणियों को समझकर सकेंगे।
- संभावित वस्तुनिष्ठ एवं बोध-प्रश्नों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

५.२ प्रस्तावनाः

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास से संबंधित दीर्घोत्तरी प्रश्न पुछे जाते हैं। अतः यह जरूरी है कि उन आधारों पर अध्ययन किया जाय। परीक्षा में सही ढ़ंग से प्रश्नों का उत्तर लिखा जाय, जिसके लिए अभ्यास की नितांत आवश्यकता है। बगैर अभ्यास के विद्यार्थी चाहकर भी प्रश्नों का उत्तर सही रूप में नहीं दे पाता है। इसलिए इस इकाई में संभावित व्याख्या के अंश, प्रश्न, टिप्पणियाँ और वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को दिया गया है, जिससे विद्यार्थी स्वयं इन प्रश्नों का समुचित अभ्यास कर सकें।

५.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण का प्रारूप

१) बीरन किसी लायक हो जाए तो यह बिखरता हुआ कंगाल साम्राज्य बचाया जा सकता है..... यह डूबता हुआ जहाज उबारा जा सकता है...।

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण कमलेश्वर के चर्चिच उपन्यास ''समुद्र में खोया हुआ आदमी'' उपन्यास से अवरित है।

प्रसंग : इस अवतरण में कथाकार यह बतलाना चाहता है कि पुरे घर का भविष्य यदि किसी पर टिका है तो वह है, वीरन। वही इस घर को उबार सकता है।

स्पष्टीकरण : श्यामलाल जब दिल्ली में बुकिंग क्लर्क के रूप में आते हैं तब अपने साथ वे कई कल्पनाएं भी साथ लेकर आते हैं। दिल्ली ब्रांच के मैनेजर बन जायेगे, उत्तर प्रदेश सरकार का लाइसेन्स लेकर अपना स्वतंत्र कारोबार चलायेंगे। पर इन उमिदों पर बहुत जल्द ही पानी फिर जाता है। नौकरी से बखास होने पर वे कहीं के नहीं रह जाते। कबाड़ी के व्यवसाय से घर को चला पाना बड़ा कठीन हो जाता है। श्यामलाल यह महसूस करने लगते है कि वे एक फालतू चीज की तरह रह गए है, जिसे फेंका नहीं जा सकता, सिर्फ बर्दाश्त किया जाता है। जिसे सहेजा भी नहीं जाता, सिर्फ होने को महसूस किया जाता है। वे अपने को भीड़ में भी एकदम अकेला पाते हैं। मानो वे स्वयं से कह रहे हों, तुम्हारे होने का मतलब? क्यों..... किस लिए।

श्यामलाल की सम्पूर्ण आशाएं घर के भविष्य बीरन पर टिकी हुई है। स्कूल जाते बच्चे को देखने पर वे महसूस करते हैं। उनकी तरह हर पिता स्कूल जाते बच्चों से उम्मीदे लगाए होंगे। जिस दिन बच्चे पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी पा जायेंगे। उस दिन कितनी खुशी होगी इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। श्यामलाल अपने बेटे बीरन के लिए करना तो बहुत कुछ चाहते थे पर परिस्थितिवश कुछ भी नहीं कर पाते। उन्हें बीरन पर पूर्ण विश्वास है कि वह पढ़ाई पूर्ण करते ही न केवल घर को संभाल लेगा अपितु इस बेबसी भरे जिन्दगी से भी उन्हें उबार लेगा। घर के हालात से वीरेन्द्र भली-भांति परिचित था. इसलिए कभी किसी को परेशान नहीं करता है। वह यह भी जानता था कि बाबूजी दिक्कतों में रहकर भी किस तरह बड़े मुश्किल से घर को चला रहे हैं। बीरन से श्यामलाल को बहुत उम्मीद है इसलिए वे सोचते है कि वह किसी योग्य हो जाए तो यह बिखरा हुआ कंगाल साम्राज्य बचाया जा सकता है- यह डूबता हुआ जहाज उबारा जा सकता है।

विशेष : लेखक स्पष्ट करना चाहता है कि हर पिता के आँखों में अपनी सन्तान को लेकर एक सपना पल रहा होता है। वह चाहता है कि ऊंची से ऊंची शिक्षा ग्रहण कर अपने पैरों पर खड़े हो जाए। जिससे आगे चलकर वे अपनी जिम्मेदारियों को संभाल ले।

२) जहाज डूबने का क्षण कब आ जाएगा, यह किसी को पता नहीं था। पर वह क्षण कहीं आस-पास ही था, इसका एहसास सभी को था। जहाज के कम्पास बेकार हो गए थे और दिशाएं खो गई थी...।

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास से अवतरित है। इस उपन्यास के लेखक कमलेश्वर है।

प्रसंग : प्रस्तु अवतरण के माध्यम से कमलेश्वर ने यह बतलाना चाहा है कि दक्षिण ध्रुव प्रदेश की यात्रा उतनी आसान नहीं है, प्रायः जितना लोग समझते हैं। हिमखंडों में जहाज कभी भी, किसी क्षण डूब सकता है।

स्पष्टीकरण : दक्षिण ध्रुव प्रदेश में अपने स्वार्थों हेतु कई देश आपस में उलझे हुए थे। सभी देश चाहे वे इंग्लैंड, फ्रांस, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया और नार्वे ध्रुव-प्रदेश पर सब अपना दावा कर रहे थे। यहीं नहीं हर देश ने अपने-अपने नक्शों में दक्षिण ध्रुव प्रदेश को अपना उपनिवेश घोषित किया हुआ था। यह लड़ाई सिर्फ नक्शों पर ही चल रही थी। दक्षिण ध्रुव प्रदेश में पहुँचकर अपना वास्तविक उपनिवेश किसी भी देश ने अभी तक नहीं बनाया था। अमेरीका ऐसा कोई भी दांव हाँथ से जाने नहीं देना चाहता था। इसलिए वह समय-समय पर अपने अभियान दल को दक्षिण ध्रुव प्रदेश में भेजता रहता

है। भविष्य में वह कानून यह प्रमाणित कर सके कि वह अमेरिका का वास्तविक उपनिवेश है। जहाँ से उसके बराबर संबंध बने हुए है। इसी नीति के मातहत यह अभियान दल ध्रुव प्रदेश से रिश्तों को दोबारा ताजा करने हेतु जा रहा था।

दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की यात्रा इतनी कष्टकारक थी कि कभी-कभी जहाज तूफानों से घिर जाता था।.... ऊपर नीचे गिरती खौफनाक लहरों पर झूलता था और कभी चारों तरफ हजारों मील के विस्तार में फैले समुद्र की मनहूस खामोशी फैली हुई थी। चारों ओर समुद्र ही समुद्र जहाँ दूर-दूर तक कोई किनारा नहीं है। ऐसा भी कोई नहीं जिसे आवाज दी जा सके! आगे जानेवाले जहाजों के मस्तूल भी न जाने कहाँ ओझल हो गये थे और तब उस वीरान और खौफनाक सन्नाटे के बीच सब लोग एक-दूसरे को भयग्रस्त और लाचार आँखों से देखा करते थे। किसी के पास कुछ कहने के लिए मानों कोई शब्द न बचा हो। उस आतंक के बीच बड़ा भयंकर सन्नाटा था और उस सन्नाटे में धीरे-धीरे कुछ लगातार मरता जा रहा था। कभी कभी तो मृत्यु की आहट तक सुनाई देने लगती थी। सरकते हिमखण्डों में किसी का कोई वश नहीं चलता। किसी भी क्षण दुर्घटना घट सकती है। जहाज के कम्पास बेकार हो जाने पर दिशाएं खो गई थी। ऐसे हालात में जहाज टुकड़े-टुकड़े होकर किसी भी क्षण समुद्र में डूब सकता है।

विशेष : इस अवतरण में तूफान से घिरे खौफनाक लहरों पर झूलते जहाज का चित्रण किया गया है जो किसी भी पल, किसी भी क्षण डूब सकता है।

३) वह खुद चले आये है... और शायद किसी दिन घर लौट आये और अब लौट भी आया तो क्या? लहरों ने सबको कहाँ-कहाँ फेंक दिया है.... कोई एक लौट भी आया तो सब लौट आएंगे, इसका क्या पता...?

संदर्भ : कमलेश्वर हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उनका लिखा हुआ बहुचर्चित उपन्यास है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी उपन्यास से ली गई है।

प्रसंग : इस अवतरण के माध्यम से लेखक यह बतलाना चाहता है कि जिसका बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है उसके आने तक स्थितियाँ डावाडोल हो चुकी है। जो खो चुका है क्या उसके आ जाने स्थिति बदल जायेगी?

स्पष्टीकरण : लापता वीरेन्द्र के काफी खोजबीन के बाद सरकार भी चाहती है कि वीरेन्द्र को अब मरा हुआ मान लेने में ही सबकी भलाई है?वीरेन्द्र के माता-पिता से भी यह कहाँ जाता है कि यदि आप सबको एतराज न हो और मन गवाई दे तो यह लिख दिजिए कि सारी खोजबीन के बावजूद हम इसी नतीजे पर पहुँचे है कि वह मर गया है। श्यामलाल सोचते है कि अब मौत को स्वीकार करना ही होगा कितना मुश्किल काम उन्हें वक्त ने सौंप दिया था। रम्मी के पास जाकर यह सब कहने और उसकी मंजूरी लेने की हिम्मत श्यामलाल में नही होती है। मन में कही यह भी था कि मौत सामने है... मौत हर तरहसे मौजूद है पर उसे मंजूर कर सकने की ताकत उसी मन में नहीं थी। सब भली भाँति जानते थे कि सबसे बड़ा दिलासा मौत को मंजूर कर लेने में ही था... पर मौत को नामंजूर करते जाना ही उस परिवार के लिए जीते जाने का बहाना था।

वीरेन्द्र की मौत को पास-पड़ोस वालों ने पहले ही दिन मंजूर कर लिया था। इसलिए वे अब दिखावे के लिए भी दुःखी नहीं थे। दुःखी सिर्फ वे लोग थे जो मौत को मंजूर नहीं कर पाये थे। रम्मी रूआंसी होकर कहती है - परमात्मा के लिए ऐसा मत कहो! जाकर अफसरों से विनती करो, शायद भाग्य जोर मार दे। परमात्मा के लिए उनसे जाकर कहो कि कुछ दिन और इन्तजार कर लें। एलान मत होने दो नहीं तो सबकुछ खत्म हो जाएगा। बहुत बार समुद्र में तुफान आ जाने से बहुत से जहाज डूब जाते हैं। तैरते-तैरते

न जाने कहाँ पहुँच जाते हैं। मुसीबत के वक्त बड़ी हिम्मत आ जाती है आदमी में। श्यामलाल सोचते हैं-अगर वह समुद्र में खोया होता... कितनी तकलीफ हुई होगी। उसे कितनी ऊब-चूब में जान फँस गई होगी। कितनी घबराहट हुई होगी। पर मौत को मंजूर करना किसकी ताकत में! क्या पता, वह घबराकर कहीं और चला गया हो--- वैसे ही जैसे खुद चले आये हैं... और शायद किसी दिन घर लौट आये और अब लौट भी आया तो क्या? लहरों ने सबको कहाँ-कहाँ फेंक दिया है.... कोई एक लोट भी आया तो सब लौट आयेंगे, इसका क्या पता...?

विशेष : इस अवतरण में बतलाया गया है कि न चाहते हुए भी जीवन में हमें बहुत सी बातों को स्वीकार कर लेनी पड़ती है। मौत को नामंजूर करके या झूठी दिलासा के जरिए भी बहुत ज्यादा दिन नहीं जिया जा सकता। समुद्र रूपी लहरों ने एक एक करके परिवार जनों को इस तरह फेंक दिया है कि चाहकर भी सब एकत्र नहीं हो सकते हैं।

५.४ संदर्भसहित व्याख्या के लिए अन्य अवतरणः

१) जिनसे दिल की कोई बात न की जासके, जिनके साथ सुख-दुःख और अकेलापन बाँटा न जा सके, उन्हें सिवा परछाई के और क्या समझा जाए।

२) कविताओं के बाद बहुत गहरी खामोशी पीछा करती है। इसके सिवा और कुछ नहीं बचता। और यही तो वह चीज है जिसे जिन्दगी-भर आदमी खोजता है।

३) यहाँ तो वह खामोशी भरी हुई है- कमरों में, गली में, सड़कों और बाजारों में। आदमियों में। चीजों में...। अगर इसी की खोज थी, तो अब शांति क्यों नहीं मिलती?

४) अब उनके वश में कुछ नहीं रह गया है। न बाहर की दुनिया और न भीतर की। वह कोई फैसला नहीं ले सकते। धीरे-धीरे उनके हाथों से फैसला ले सकने की ताकत निकलती गई है और अब वह वापस नहीं लाई जा सकती।

५) बीरन किसी लायक हो जाए तो यह बिखरता हुआ कंगाल साम्राज्य बचाया जा सकता है। यह डूबता हुआ जहाज उबारा जा सकता है।

६) रिश्तों को नया नाम नहीं दिया जा सकताः बाप-बेटी या माँ-बेटी अब भी बाप-बेटी और माँ-बेटी ही कहे जायेंगे, पर उनके बीच से कोई चीज अनजाने ही खो गई थी। हकों में कहीं बड़ा फर्क आ गया था।

७) इतनी बड़ी दुनिया को कितने लोग हैं जो उसकी खैरियत के लिए दुआएं माँग रहे हैं और बिदाई दे रहे है कि कुशलता से वापस आना.... पता नहीं।

८) अपनी लड़की नहीं देखते किसी-से उन्नसी नहीं है। जब कोई नहीं मिलेगा ते ढकेल दूंगी भाड़ में। पर देख के मक्खी कोई नहीं निगलता।

९) अच्छा गया बीरन समुद्र पर हमारा जहाज तो डुबो गया... भैया... अब डूब गया सब कुछ....।

१०) कोई ऐसा नहीं जो उनकी सुने। पति के रूप में वे बस पति भर रह गए है - एक जबर्दस्ती का बोझ, और पिता के रूप में-सिर्फ पिता कहे जाने भर का सवाल रह गया है।

११) आदमी पर जीता हुआ आदमी ये कारें, बसें, मोटरें, शोर करते हुए स्कूटर, इमारतें और इमारतों में अपना खून चूसवाते हुए निरीह लोग.... जिनके पास अपनी कोई जिन्दगी नहीं है।

१२) करोड़ों अरबों की जिन्दा मीनार है और करोड़ों-अरबों फालतू पड़े हैं- अपने जख्मों को चाट-चाटकर प्यास बुझाते हुए किसी के पास किसी के लिए वक्त नहीं है।

१३) बेहद बेबसी और मजबूरी में जीते चले जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह गया है। मृत्यु का यही रूप उन्हें स्वीकार करना पड़ रहा है- जीते जी मरते जाना। निरन्तर मरते जाना। और इस अनुभव के साथ कि इसके सिवा और कोई चारा नहीं है!

१४) एक जमाना वह भी था जब अपने सिवा और सारे लोग उन्हें फालतू लगते थे पर अब लगता था कि और सब लोग आवश्यक अंग हैं- फालतू सिर्फ वह है!

१५) तो मौत को स्वीकार ही करना होगा? कितना मुश्किल काम उन्हें वक्त ने सौंप दिया था।

१६) मैं क्या करूं बेटी... खुद कहाँ चली जाऊँ... अरे मेरा दुःख समझने वाला अब कोई नहीं है इस दुनिया में... जो था वह चला गया गहरे समुद्र में खो गया...।

१७) दुःख और सुख- कितने मामूली बनकर रह गए हैं। अब सिर्फ इन्हें लेकर ही पूरी जिन्दगी नहीं गुजारी जा सकती। यहाँ रहते हुए इन्हें बहुत दूर तक और देर तक साथ नहीं रखा जा सकता।

१८) यहाँ किसी की नियति अलग नहीं है क्योंकि सब हारती हुई पाली के आजाद लोग है। बहुत बड़े समुद्र में डूबते हुए जहाज पर चढ़े हुए लोग है जो सिर्फ एक-दूसरे को देखते हैं और हरेक दूसरे को बोझ समझता है एक फालतू बोझ।

१९) इस महानगर में यह अकेला मसला नहीं था। यह अकेला घर नहीं था जो डूबते हुए जहाज में था। यह अकेला परिवार नहीं था, जिसका कोई समुद्र में खो गया था।

२०) हम अपनी तकलीफ-आराम देखेंगे या लोगों को! हम लोग यहाँ न होते तो दूसरी बात थी। यह अच्छा लगता है कि तुम यों तकलीफ उठाओं... इसमें अब सोचना साचना नहीं है।

२१) वह कौन-सी ताकत थी जिसने उन्हें इस तरह तीन जगहों पर फेंक दिया। सबकी अपनी-अपनी जगहें है। एक जगह से सिर्फ एक का सम्बन्ध है, बाकी लोग असम्बद्ध है।

२२) काहे को इस बुढ़ापे में परेशान हो रही हो। सरकारी काम तो राज-रोग होगा है। मुआवजा वसूल जरूर होगा..... कोई मजाक तो है नहीं...।

५.५ अभ्यास हेतु प्रश्नः

१) कमलेश्वर ने 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास के माध्यम से क्या कहना चाहा है?

२) श्यामलाल परम्परागत मध्यवर्गीय संस्कारों के प्रतीक है, स्पष्ट कीजिए।

३) श्यामलाल के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

४) कमलेश्वर ने श्यामलाल के माध्यम से व्यर्थ हो गए मूल्यों पर करारा प्रहार किस प्रकार किया है।

५) रम्मी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

६) रम्मी सहृदय माता, पतिव्रता पत्नी एवं व्यवहारकुशल नारी है, स्पष्ट कीजिए।

७) हरबंस भावुक एवं संवेदनशील नवयुवक है, चर्चा कीजिए।

८) हरबंस प्रगतिशील विचारों का वाहक है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

९) वीरेन्द्र 'समुद्र में खोया आदमी' का अविस्मरणीय चरित्र है, इस कथन की समीक्षा कीजिए।

१०) वीरेन्द्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

११) 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में मध्यमवर्गीय जीवन की मानसिकता को सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है, स्पष्ट कीजिए।

१२) समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास की समीक्षा कीजिए

१३) समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में श्यामलाल के जीवन संघर्ष का वर्णन किस प्रकार किया गया है?

१४) हरबंस और तारा की चरित्रगत विशेषताओं की तुलना कीजिए।

१५) श्यामलाल की आर्थिक विपन्नता पर प्रकाश डालिए।

१६) समुद्र में खोया हुआ आदमी में आर्थिक परिवेश का मार्मिक चित्रण किया गया है, स्पष्ट कीजिए।

१७) समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में महानगर की निम्न मध्यवर्गीय जिन्दगी को अत्यन्त सूक्ष्मता से चित्रित किया है- स्पष्ट कीजिए।

५.६ अभ्यास हेतु टिप्पणियाँः

१) श्यामलाल और घर का खानदानी संदूक।

२) वीरेन्द्र की महत्त्वाकांक्षा।

३) रम्मी सहृदय माता।

४) संवेदनशील हरबंस।

५) श्यामलाल का पारिवारिक जीवन।

६) तारा का चरित्र।

७) समीरा का स्वभाव।

८) वीरेन्द्र के मौत का मुआवजा।

९) श्यामलाल की खस्ता हालत।

१०) समुद्र में खोया हुआ आदमी में अकेलापन

११) दक्षिणी ध्रुवपदेश की यात्रा

१२) महानगर में टूटते परिवार।

१३) समुद्र में खोया हुआ आदमी की भाषा-शैली

१४) समुद्र में खोया हुआ आदमी शीर्षक की सार्थकता।

१५) 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' का उद्देश्य।

५.७ अभ्यास हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.७.१ बहुविकल्पी. प्रश्न

प्र.१) समीरा इस घर में आते ही अपने लिए क्या चुन लेती है?

(i) कुर्सी (ii) जगह (iii) पुस्तक (iv) अखबार

उ. जगह

प्र.२) अजीब-अजीब सी शक्ले कहाँ पर उभरती है?

(i) आकाशपर (ii) धरतीपर (iii) सड़कपर (iv) दीवार पर

उ. दीवार पर

प्र. ३ परछाईयों में उलझे रहना किसे बहुत अच्छा लगता है?

(i) श्यामलाल (ii) समीरा (iii) तारा (iv) वीरेन्द्र

उ. समीरा

प्र. ४ सिन्धी ट्रांसपोर्ट कम्पनी की ब्रांच किस शहर में खुलती है?

(i) दिल्ली (ii) मुम्बई (iii) कलकत्ता (iv) मद्रास

उ. दिल्ली

प्र.५ हरबंस की छोटी सी क्या थी?

(i) कुर्सी (ii) गाड़ी (iii) नौकरी (iv) दुकान

उ. दुकान

प्र.६ तारा कितने रुपये माहवार पर हरबंस के यहाँ काम करने लगती है?

(i) तीस (ii) चालीस (iii) पचास (iv) साठ

उ. चालीस

प्र. ७ श्यामलाल की सारी आशाएँ किस पर टिकी हुई थी?

(i) हरबंस (ii) तारा (iii) समीरा (iv) वीरन

उ. वीरन

प्र. ८ बीरन ने भर्ती होने का हुकुमनामा किसे थमा दिया?

(i) तारा (ii) समीरा (iii) रम्मी (iv) श्यामलाल

उ. श्यामलाल

प्र.९) समीरा को पढ़ाई शुरु करनी चाहिए, यह फैसला किसने किया था?

(i) तारा (ii) श्यामलाल (iii) हरबंस (iv) रम्मी

उ. हरबंस

प्र. १०) डायमण्ड हार्बर पहुँचने की तारीख कौन-सी थी?

(i) १० अगस्त (ii) ३० अगस्त (iii) १० सितम्बर (iv) ३० सितम्बर

उ. ३० अगस्त

प्र. ११) इस घर में जो भी पुराना होकर बीतता जाता था, वह कहाँ पहुँच जाता था।

(i) दुकान में (ii) मकान में (iii) सन्दूक में (iv) गोदाम में

उ. सन्दूक में

प्र. १२) किसने कहाँ था कि कुम्भकरन का देश देखकर लौटूंगा तो आपको सब बताऊंगा?

(i) हरबंस (ii) वीरन (iii) श्यामलाल (iv) चरनजीत

उ. वीरन

प्र. १३) वीरन पेंग्विनों के गड्ढे के पास बैठा उन्हें क्या खिला रहा था?

(i) चना (ii) केला (iii) चर्बी (iv) गुड़

उ. चर्बी

प्र. १४) तुषार के बाद लगभग कितने घंटों तक हिमानी आंधी चलती रही?

(i) १० घंटे (ii) १५ घंटे (iii) २० घंटे (iv) २७ घंटे

उ. २७ घंटे

प्र. १५) वीरन के मनीआर्डर पिछले कितने महीनों से नहीं आ रहे थे?

(i) चार (ii) पाँच (iii) सात (iv) आठ

उ. पाँच

प्र. १६) किसने घर आकर वीरेन्द्र के खोजाने की सूचना दी थी?

(i) तारा (ii) समीरा (iii) चरनजीत (iv) नमता

उ. चरनजीत

प्र. १७) सरकारी खत में वीरन की कौन सी खबर दी गई थी?

(i) लापता (ii) मिलने (iii) आने (iv) जाने

उ. लापता

प्र.१८) किसने कहा की हम लोगों की जिन्दगियाँ सिर्फ खिलावाड़ के लिए रह गई है?

(i) हरबंस (ii) तारा (iii) समीरा (iv) रम्मी

उ. समीरा

प्र.१९) सरकारी दफ्तरों में जाते समय रम्मी के हाथ में हमेशा क्या रहता था?

(i) बेत (ii) बस्ता (iii) मोबाइल (iv) किताब

उ. बस्ता

प्र. २०) किसने कहाँ की सरकारी काम तो राज-रोग होता है?

(i) तारा (ii) समीरा (iii) श्यामलाल (iv) हरबंस

उ. हरबंस

प्र. २१) शनाख्त हो जाने के बाद तनख्वाह और चालान किसके हाथों में दे दिया गया था?

(i) तारा (ii) हरबंस (iii) रम्मी (iv) श्यामलाल

उ. रम्मी

प्र. २२) नमता ने कुछ खत किसके नाम लिखे थे?

(i) हरबंस (ii) चरनजीत (iii) मिगलानी (iv) वीरन

उ. वीरन

५.७.२ वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

प्र.१ कौन कहाँ करता था- 'कविताएं पढ़ो समीरा?

उ. १ रज्जन कहाँ करता था - 'कविताएं पढ़ो समीरा।'

प्र. २ किसका दिन भर घर से बाहर रहना ही जैसे जिन्दगी की निशानी है?

उ. २ बाबूजी का दिन-भर घर से बाहर रहना ही जैसे जिन्दगी की निशानी है।

प्र. ३ किसने श्यामलाल को घर-घर जाकर आर्डर बुक करने का काम दिया था?

उ. ३ हरबंस ने श्यामलाल को घर-घर जाकर आर्डर बुक करने का काम दिया था।

प्र.४ कौन पहला आदमी था, जिसने श्यामलाल के घर में आनाजाना शुरू किया था?
उ. ४ हरबंस पहला आदमी था, जिसने श्यामलाल के घर में आना-जाना शुरू किया था।

प्र. ५ हरबंस दुकान बन्द करके किसको घर पहुँचाने जाता था?
उ. ५ हरबंस दुकान बन्द करके तारा को घर पहुँचाने जाता था।

प्र. ६ श्यामलाल ने किसे दे-दिलाकर रफा किया था?
उ. ६ श्यामलाल ने चपरासी को दे-दिलाकर रफा किया था।

प्र. ७ धीरे-धीरे फैसले लेने की ताकत किसमें समाती जा रही थी?
उ. ७ धीरे-धीरे फैसले लेने की ताकत तारा में समाती जा रही थी।

प्र. ८ सबकी आँखों में किसको लेकर भविष्य का सपना पल रहा था?
उ. ८ सबकी आँखों में वीरन को लेकर भविष्य का सपना पल रहा था।

प्र. ९ पैसे खत्म होते ही फैसले लेने का हक अपने आप किसके पास चला जाता था।
उ. ९ पैसे खत्म होते ही फैसले लेने का हक तारा के पास चला जाता था।

प्र.१०. किसने एका एक सबको उबार लिया था?
उ १० बीरन ने एका एक सबको उबार लिया था।

प्र. ११ किसने बहुत सकुचाते हुए माँ से कहा था कि वह हरबंस से शादी करना चाहती है?
उ. ११ तारा ने बहुत सकुचाते हुए माँ से कहा था कि वह हरबंस से शादी करना चाहती है।

प्र. १२ वैज्ञानिकों और नाविकों की टीम कहां जा रही थी?
उ. १२ वैज्ञानिकों और नाविकों की टीम दक्षिणी ध्रुव जा रही थी?

प्र. १३ वापसी में वीरन को अपना जहाज किस बन्दरगाह पर पकड़ना था?
उ. १३ वापसी में वीरन को अपना जहाज पर्ल बन्दरगाह पर पकड़ना था।

प्र. १४ बर्फीले रास्तों पर संकेत देने के लिए छोटी-छोटी क्या बनाई गई थी?
उ. १४ बर्फीले रास्तों पर संकेत देने के लिए छोटी छोटी झण्डियाँ बनाई गई थी।

प्र. १५ जहाज जब चला तब सैंकडों लोगों ने तट से उन्हें क्या दी?
उ. १५ जहाज जब चला तब सैंकडों लोगों ने तट से उन्हें बधाई दी।

प्र. १६ बर्फ के समतल मैदान पर क्या बस गया था?

उ १६ बर्फ के समतल मैदान पर उपनिवेश बस गया था।

प्र.१७ पेंग्विन किसका मांस आसानी से खा लेते थे?

उ.१७ पेंग्विन ह्वेल और सील का मांस आसानी से खा लेते थे।

प्र. १८ गिरते हुए तापमान को देखकर अभियान दल के नेता ने जहाज को वापस कहाँ ले जाने का हुक्म दिया?

उ. १८ गिरते हुए तापमान को देखकर अभियान दल के नेता ने जहाज को न्यूजीलैंड वापस ले जाने का हुक्म दिया।

प्र. १९ किसके न आने से सबका मन उतर जाता है?

उ. १९ वीरन के न आने से सबका मन उतर जाता है।

प्र. २० खलासी ने किसकी चप्पलें रेलिंग के पास पड़ी देखी थी?

उ. २० खलासी ने वीरेन्द्र की चप्पलें रेलिंग के पास पड़ी देखी थी।

प्र. २१ किसे मिठाई बहुत पसन्द थी?

उ. २१ वीरेन्द्र को मिठाई बहुत पसन्द थी।

प्र. २२ नौसेना ने वीरेन्द्र का मामला किसके हाथों में सौंप दिया था?

उ. २१ नौसेना ने वीरेन्द्र का मामला सिविल पुलिस के हाथों में सौंप दिया था।

प्र.२३ मकान-मालिक ने किसे अपने शहर लौट जाने की सलाह दी थी?

उ.२३ मकान-मालिक ने श्यामलाल को अपने शहर लौट जाने की सलाह दी थी।

प.२४ किसने कभी रिहायशी बस्ती में गिरजाघर नहीं देखा था?

उ.२४ श्यामलाल ने कभी रिहायशी बस्ती में गिरजाघर नहीं देखा था।

प्र. २५ तारा ने अपने घर की पड़ोसियों को किस लिए जमा किया था?

उ. २५ तारा ने अपने घर की पड़ोसियों को मातम के लिए जमा किया था।

प्र. २६ श्यामलाल धीरे-धीरे अपनी चीजें घर से कहाँ उठाकर ले गये थे?

उ. २६ श्यामलाल धीरे-धीरे अपनी चीजें घर से फैक्टरीवाली कोठरी में उठाकर ले गये थे।

प्र. २७ किसने भरोसा दिलवाया की मुआवजा दिलवाकर रहेंगे?

उ. २७ रम्मी ने भरोसा दिलवाया की मुआवजा दिलवाकर रहेंगे।

प्र.२८ किस पार्क में तमामा आयाएँ बच्चों को लिए हुए मिलत थी?

उ. २८ अजमल खाँ पार्क में तमाम आयाएँ बच्चों को लिए हुए मिलती थी।

प्र. २९ हरबंस को किसके हाथ का खाना बहुत पसंद है?

उ. २९ रम्मी (अम्मा) के हाथ का खाना बहुत पसंद है।

प्र. ३० आठवें-दसवें रोज फैक्टरी में क्या हो जाती है?

उ. ३० आठवें-दसवें रोज फैक्टरी में चोरी हो जाती है।

प्र. ३१ किसकी शनाख्त के लिए हरबंस ने पहले से ही लोगों को जमा कर रखे थे?

उ. ३१ वीरेन्द्र की शनाख्त के लिए हरबंस ने पहले से ही लोगों को जमा कर रखे थे।

प्र. ३२ किसने कहाँ की अम्मा, अब इसे रोने-धोने में कुछ नहीं रखा है?

उ. ३२ तारा ने कहाँ की अम्मा, अब इस रोने-धोने में कुछ नहीं रखा है।

५.८ बोध प्रश्नः

५.८.१ अभ्यास हेतु संदर्भसहित स्पष्टीकरण के अवतरणः

१) वह सिर्फ एक फालतू चीज की तरह रह गए है, जिसे फेंका नहीं जा सकता, सिर्फ बर्दाश्त किया जाता है। जिसे सहेजा भी नहीं जाता, सिर्फ होने को महसूस किया जाता है।

२) जिस दिन इन्तजाम करके एक महीने की पेशगी मेरी हथेली पर धर दोगे, उसी दिन से यह बाहर नहीं जाएगी।

३) इन पिछले दो-तीन बरसों में चीजें अपने-आप कैसे बदलती गई थी। लड़कियाँ बहुत अपनी थीं, पर न जो क्यों दूरी बढ़ गई थी। आपस में कहीं कुछ धीरे से पिघल कर बह गया था, जिसे वह अब महसूस कर रहे थे।

४) यह शहर ऐसा है कि बिना पैसे के यहाँ कोई पहचानता ही नहीं। पैसा पास है तो दुनिया अपनी है।

५) हम लोगों की जिन्दगियाँ सिर्फ खिलवाड़ के लिए रह गई है। जो खो गया है, वह भी खिलवाड़ बन गया है। मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होता।

५.८.२ बोध प्रश्नः

१) श्यामलाल 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का केन्द्रिय पात्र है, स्पष्ट कीजिए।

२) समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास के सभी पात्रों का चित्रण स्वाभाविक रूप से हुआ है, इस कथन की समीक्षा कीजिए।

३) समुद्र में खया हुआ आदमी उपन्यास भारतीय मध्यवर्ग की आर्थिक मजबूरियों का दस्तावेज है, स्पष्ट कीजिए।

४) समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में महानगर के निम्न-मध्यवर्गीय परिवार के टूटते जाने की अभिव्यक्ति है, विवेचना कीजिए।

५) समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में श्यामलाल और तारा के माध्यम से बदलती हुई नैतिक मान्यताओं का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

६) समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में आर्थिक संघर्ष के साथ-साथ आशावादी दृष्टिकोण भी दिखाई देता है, स्पष्ट कीजिए।

७) महानगरीय जीवन के दबाव के नीचे सारे रिश्ते, भिन्न-भिन्न हो जाते हैं- समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

८) तारा आधुनिक नारी की प्रतिनिधि एवं सजग चरित्र है। विवेचन कीजिए।

९) 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में पुराने और नये का संघर्ष किस तरह प्रकट हुआ है?

१०) 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

६

मिथिलेश्वर की कहानियाँ

लेखक मिथिलेश्वर

इकाई की रूपरेखा

६.१ उद्देश्य
६.२ प्रस्तावना
६.३ लेखक का परिचय
६.४ लेखन कार्य
६.५ कृत्तित्व

६.१ उद्देश्य :

इस इकाई में आप लेखक के जीवन से अवगत होंगे। इस इकाई को पढ़कर आप लेखक के जन्म के विषय में माता-पिता आदि को जानेंगे।

लेखक के लेखन कार्य की जानकारी आप को प्राप्त होगी।

किसी भी रचना को पढ़ने के पहले यदि उसके लेखक के विषय में जान लिया जाए तो रचना के कई तत्त्वों की जानकारी हमें प्राप्त हो सकती है।

६.२ प्रस्तावना :

कहानीकार मिथिलेश्वर हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार हैं। आप प्रेमचन्द की परम्परा के लेखक है। आपने स्वयं मध्यम वर्ग को आँखों से देखा एवं भोगा है। समाज की कई कुरीतियों को आपने अपने लेखन के द्वारा अभिव्यक्त किया है और उसका जमकर विरोध भी किया है। आपकी कहानियों में गाँव, शहर परिवार, गरीब किसान, मजदूर, स्त्री सभी मिलते है। आपने सभी प्रकार के शोषण अत्याचार का लेखन द्वारा विरोध किया है। आप जिन लोगों को अपने वाणी द्वारा उत्तर देने में असमर्थ थे उनको लेखनी द्वारा उत्तर दिया। यह उत्तर आप जैसे कत्र, लोगों का उत्तर हो गया है। यहाँ आपने ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है।

६.३ लेखक का परिचय

''साहित्यकार मिथिलेश्वर का वास्तविक नाम मिथिलेश्वर ही है, अपने जातिवाचक लाल (कायस्थ जाति) कुलमिधान का प्रयोग आप नहीं करते हैं, साहित्य क्षेत्र में उपनाम से प्रसिद्ध होने में उनका विश्वास नहीं है।''

आपका जन्म ३१ दिसंबर १९५० को बिहार राज्य के भोजपुर जिले के बैसाडीह गाँव में हुआ था। अपने जन्मस्थान की विशेषता का जिक्र मिथिलेश्वर ने स्वयं एक स्थान पर किया है- ''मैं आपको बता दूं मेरा जन्म भोजपुर जिले के एक ऐसे इलाके में हुआ है। जो चोरी-डकैती,

लूटपाट, मनमानी और ज्यादती को लेकर पूरे जिले में मशहूर है। उस इलाके में कोई भी बात जो पहले लाठी के सहारे तय की जाती थी, अब बंदूक की नोक पर तय की जाती है। पता नहीं क्यों; बचपन से ही अपने इलाके के अत्याचार-अनाचार, जुल्म सितम शोषण-अन्याय को मै सह नहीं पाता था।'' (अपनी बात बंद रास्तों के बीच पृ. १० प्रथम सं. १९७८)

आपके पिताजी का नाम श्री बसरोपन लाल तथा माता जी का नाम श्रीमती कमलावती देवी है। पिताजी वंसरोपनलाल अद्‌भुत प्रतिभा के धनी जीनियस व्यक्ति थे। वे आरा के एच.डी. जैन कालेज में वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष थे। मात्र बी.काम करने के बाद उन्हें प्रोफेसर नियुक्त कर दिया गया था। 'एक थे प्रो. बी.लाल' कहानी संग्रह मिथिलेश्वर जी ने अपने पिताश्री स्वर्गीय प्रो. बी.लाल को सादर समर्पित किया है। संग्रह की शीर्षक कहानी उनके पिताश्री की विशिष्टता को रेखांकित करती है। (नेपथ्य की बात एक थे प्रो.बी.लाल पृ.८ प्र.स.)

इस कहानी की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते उन्होंने उस कहानी संग्रह की भूमिका 'नेपथ्य की बात' में लिखा है प्रो. बी. लाल मेरे पिता थे। ऐसे पिता जिनकी विलक्षण प्रतिमा की मार मैं बचपन से ही सहता रहा हूँ। गाँव की पाठशाला में गुरुजी का विशेष ध्यान मेरी उत्तर पुस्तिका पर ही होता था। छात्रों की सभी गलतियाँ उनके लिए क्षम्य होती थी। लेकिन मेरी सामान्य भूल को भी वे माफ नहीं करते थे-

''प्रो. बी. लाल का लड़का होकर यह भूल छीः छीः...।''

कथाकार के रूप से मिथिलेश्वर को मान्यता मिल जाने के बाद उनके पिताजी के समर्थकों ने यह दुष्प्रचार शुरु किया कि ये रचनाएँ प्रो. बी.लाल ही लिख गए थे, जिन्हें उनका पुत्र अपने नाम से छपवाकर ख्याति बटोर रहा है। इस दुष्प्रचार पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री मिथिलेश्वर ने लिखा है- मुझे उनके इस प्रचार से दुख नहीं हुआ है। जानता था, मेरे प्रति यह उनका ईर्ष्या या रोष भाव नहीं पिताजी की विद्वत्ता के प्रति उनकी प्रतियश श्रद्धा भावना थी।''

वस्तुतः प्रो. वंशरोपनलाल तत्कालीन शाहाबाद जिले में ही नहीं बल्कि पूरे बिहार में एक अद्‌भुत जीनियस के रूप में विख्यात थे। उनकी स्मरणशक्ति अद्‌भुत थी, जिसे अंग्रेजी में 'फोटोग्रोफिक मेमरी' कह सकते है। प्रो. साहब एक बार पढ़ी हुई चीज को पूरी तरह याद रखते थे- कामा फुलस्टाप के साथ। शिक्षक वे कामर्स के थे लेकिन विज्ञान से लेकर दर्शन और साहित्य तक सब पर उनका समान अधिकार था। अपने पिता की इसी विलक्षण प्रतिभा को मिथिलेश्वर ने 'एक थे प्रो. बी. लाल' ने अमर कर दिया है।

कहानी का घटनास्थल आरा का जैन कालेज ही रखा गया है। एक परिसंवाद के मुख्य अतिथि डा. बोस है, उनके विषय की प्रस्तावना का कार्य प्रो. बी.लाल को दिया गया है। प्रो. लाल ने अपने प्रस्तावना में डॉ. बोस के आलेख के संपूर्ण मजमून को कामा फुलस्टॉप के साथ सुना दिया। डॉ. बोस अभिभूत हो गए। उन्हें याद आता कि ट्रेन में जब वे अपने आलेख को पढ़ते हुए टाइपिंग की भूलों को दुरुस्त कर रहे थे तब एक पहलवान सा दिखनेवाला देहाती व्यक्ति कंबल ओढ़े युँजा चबा रहा था और उनके आलेख को ध्यान से निहारे जा रहा था। डॉ. बोस को याद आया कि वह देहाती और कोई नहीं प्रो. बी. लाल ही थे। (नेपथ्य की बात एक थे प्रो. बी. लाल पृ.११ प्र.स.)

मिथिलेश्वर जी का लालन पालन एक मध्यम वर्गीय कायस्थ परिवार में सामान्य रूप में हुआ है, इस मध्यमवर्ग की प्रकृति से वे भलीभाँति परिचित है- मैं मध्यवर्ग से आता हूँ। मध्यवर्गीय जीवन के खोखलेपन और आडंर से भलीभाँति परिचित हूँ। घर से सतू खाकर आने

लेकन मलाई खाने की बात कहने वाले मध्यवर्ग को मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ, उसके लिए सामाजिक मर्यादा और प्रतिष्ठा, चाहे वह झूठी ही क्यों न हो, से बढ़कर और कुछ नहीं।

भूखे पेट सो रहने और जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के बावजूद इज्जतदार बने रहने का स्वाँग सिर्फ मध्यवर्ग ही कर सकता है। अब की स्थिति यह है कि रीढ़विहीन यह वर्ग गुस्से का कम, दया का पात्र ज्यादा होता जा रहा है। आचरण में सामंतीपन और व्यवहार में भीरुता इस वर्ग की खास पहचान है!''

मिथिलेश्वर चार भाई और तीन बहन हैं। भाइयों में मिथिलेश्वर का स्थान दूसरा है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव पर हुई। के.के. विद्यालय जमोढ़ी और उच्च विद्यालय कातर (भोजपुर) में माध्यमिक शिक्षा हुई। एम.एस. कालेज विक्रमगंज (रोध्तास) से बी.ए. हिन्दी आनर्स तथा मगध विश्वविद्यालय बोधगया से हिन्दी में एम.ए. और पी.एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की। परिवार में प्रायः सभी व्यक्ति शिक्षित उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। लेखन में उनकी बेटियों और भतीजे भतीजियों की रुचि है।

६.४ लेखन :

मिथिलेश्वर ने अपने लेखन की शुरुआत काव्य से नहीं बल्कि गद्य से की है। आपकी प्रथम प्रकाशित कहानी 'अनुभवहीन' है जो मई १९७३ क सारिका के नवलेखन विशेषांक में प्रकाशित हुई थी।

''अन्याय अत्याचार का प्रतिरोध शारीरिक रूप से न कर पाने के कारण वे लेखन की ओर अग्रसर हुए। शरीर में मैं लड़ नहीं पा रहा था और मन से मैं हार नहीं मान रहा था, ऐसी स्थिति थी मेरी। मुझे भलीभांति याद है इन्हीं बेचैन स्थितियों के बीच एक दिन मैंने लिखना शुरू किया था।'' (अपनी बात, बंद रास्तो के बीच पृ.७,८,११) प्र.सं.

''मुझे लगता है, दुनिया का हर लेखन किसी न किसी रुप से कमजोर होता है। शरीर की लड़ाई न लड़ पाने के कारण ही वह कलम का सहारा लेता है। यह उसकी खासियत होती है कि शरीर के स्तर पर लड़ी जाने वाली लड़ाई को वह अपनी कलम के माध्यम से देर तक और दूर तक बरकरार रखता है।''

निश्चित रूप से मिथिलेश्वर स्वयं को 'कलम का सिपाही' प्रेमचंद की परंपरा का लेखक मानते है। वे हिन्दी कहानी की सही शुरूआत प्रेमचंद युग से मानते है। ''प्रेमचंद हिन्दी के पहले कथाकार थे जिन्होंने हिन्दी कहानी को अच्छी तरह पहचाना था और जनजीवन की मूलभूत सच्चाइयों से उसे जोड़ने के लिए कलम के मोर्चे पर अंत तक लड़ते रहे थे। यहाँ यह कहने में हमें तनिक संकोच नहीं कि प्रेमचंद की लड़ाई ही हमें विरासत में मिली है।''

मिथिलेश्वर सामाजिक प्रतिबद्धता को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उनके कथालेखन का मूलाधार यही विचार-सूत्र है। तभी तो उनकी स्पष्ट स्वीकारोक्ति है- ''अपने लेखन के माध्यम से प्रेमचंद जी ने जिस लड़ाई की शुरुआत की थी, आज के बदलते समय में उस लड़ाई को और अधिक तेज और प्रखर बनाना हमारा दायित्व है।''

इसलिए वक्त काटू मनोरंज प्रधान उपन्यास लिखने वाले गुलशन नंदा और प्रेमचंद को एक ही वर्ग में रखे जाने के वे कट्टर विरोधी हैं।

६.५ 'कृतित्व'

मिथिलेश्वर की अब तक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं
प्रकाशन काल के अनुसार उनका विवरण निम्नलिखित है-

कहानी संग्रह

१. बाबू जी(१९७६)
२. बंद रास्तो के बीच (१९७८)
३. दूसरा महाभारत (१९७९)
४. मेघना का निर्णय (१९८०)
५. तिरिया जनम (१९८२)
६. हरिहर काका (१९८३)
७. एक से अनेक (१९८७)
८. एक थे प्रो. बी. एल (१९९३)
९. भोर होने से पहले (१९९३)
१०. उस रात की बात (बातोपयोगी (१९९३)

६-अ

बाबूजी

इकाई की रूपरेखा

६.अ.१ प्रस्तावना
६.अ.२ कथानक
६.अ.३ चरित्र चित्रण
६.अ.४ भाषा शैली
६.अ.५ शीर्षक चित्रण
६.अ.६ उद्देश्य
६.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या
६.अ.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
६.अ.९ बोधप्रश्न

६.अ.१ प्रस्तावना

'बाबू जी' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित कहानी है, जो १९७६ में प्रकाशित हुई थी। कहानी का आरम्भ बाबू जी की मृत्यु से होता है। जब तक बाबू जी जीवित थे, तब तक पूरा गाँव उनकी बुराई करता था लेकिन मृत्यु के पश्चात् हर गली हर घर में उनकी प्रशंसा की पुल बाँधी जा रही है। लेखक बाबू जी की असामायिक मृत्यु का कारण बड़े भाई को मानते हैं और बाबू जी की आधी बची शराब की बोतल को उनके सिर पर मारकर अपना प्रतिशो व्यक्त करना चाहते हैं। इस कहानी में ग्रामी जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।

६.अ.२ कथानक

लेखक अपने गाँव की एक खास विशेषता बताता हैं कि उनके गाँव के लोग जीवित मनुष्य में कम और मरे हुए मनुष्य में ज्यादा रुचि लेते हैं। गाँव के लोग किसी व्यक्ति का सही मूल्यांकन व्यक्ति के मरने के बाद ही कर पाते हैं। लेखक के बाबू जी के साथ भी ऐसा ही होता है। लेखक बाबू जी का यथार्थ जीवन पाठकों के सामने प्रस्तुत करके उनपर परिवार द्वारा लगाये गये अपमान व लांछनाओं को कुछ हद तक दूर करने का प्रयास करते हैं।

लोगों के अनुसार बाबूजी के सर से पिता का हाथ बहुत पहले ही उठ चुका था और माँ कुटाई-पिसाई करके बाबूजी को पालती-पोषती है। बाबू जी तेरह साल की उम्र से ही बकरियाँ पालने व बेचने का व्यवसाय करने लगे थे और बाईस साल की उम्र तक गाय व भैंस का भी व्यवसाय करने लगते हैं। गाँव में धन-सम्मान की कमी न थी, इसलिएक एक बीघा जमीन भी खरीद लेते हैं।

सुभगसिंह के कहने पर उनकी क्वाँरी लांछित लड़की से बाबू जी ने विवाह कर लिया। समाज द्वारा इसकी खूब आलोचना की गयी लेकिन वह तनिक भी विचलित न हुये। बाबूजी का वह पहला क्रांतिकारी कदम था। बाबूजी को तबला हारमोनियम में गहरी रुचि थी। जब बाबू जी नाच-गाने व शराब में ही अपना सारा समय बिताने लगे, तब माँ बड़े भैया, मंझले भैया, बासन्ती दीदी और स्वयं लेखक (नायक) को लेकर मायके चली जाती हैं। बाबू जी के साथ वह नाचनेवाली स्त्री घर में ही रहने लगती है।

काफी समय बाद एक दिन मामा जी के कहने पर माँ अपने सारे बच्चों के साथ बाबू जी के यहाँ चली आती है। उस समय बड़े भैया मास्टर तथा मँझले भैया पोस्ट ऑफिस में क्लर्क बन गये थे। बासन्ती दीदी भी शादी लायक हो गयी थी। माँ अपने बच्चों के साथ जब बाबू जी के घर पहुँचती हैं, तो एक उन्नीस-बीस साल की लड़की नाचती रहती है और अचानक उन्हें देखकर रूक जाती है। बाबू जी अपने पत्नी और बच्चों को पहचानने से इंकार कर देते हैं। बड़े भैया और बाबू जी में रिश्तों को लेकर बहस चलती रहती है तभी मँझले भैया बाबू जी के शराबी दोस्तों को लात मारकर निकालने लगते हैं। इससे गुस्सा होकर बाबूजी गंड़ासा निकाल लेते हैं। बाबू जी उनसे अपना कोई रिश्ता न बताते हुये घर से बाहर निकाल देते हें, लेकिन बाद में दरोगा के डराने-धमकाने से उन्हें घर में लेना पड़ता है।

बाबूजी अपनी मंड़ली के साथ दालान में असंतुष्ट थे क्योंकि वह दालान बहुत छोटा था और परिवार घर के अन्दर असंतुष्ट था क्योंकि बाहर शराबियों का जमाववाड़ा था। बड़े भैया व मँझले भैया बाबू जी को दालान से भी हटाना चाहते थे तथा माँ व बासन्ती दीदी गाँव में बाबू जी के विरुद्ध जनमत तैयार कर रही थी। स्वयं लेखक को अपने बाबू जी से हमदर्दी थी। जब बाबू जी को दालान में परेशानी होने लगी, तो वे एक अलग घर बनाने की योजना तैयार करने लगे थे। वह जानते थे कि अलग घर बनाने के लिए उन्हें पैसों की आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए वह एक नौटंकी बनाये जिसकी प्रसिद्धी व धूम पूरे इलाके में फैल गयी। नौटंकी की बढ़ती प्रशंसा से परिवारवालों को जलन होने लगती है लेकिन लेखक की बड़ी इच्छा होती उस नौटंकी को देखने की।

लेखक की बहन बासन्ती दीदी की शादी धनी गृहस्थ रामभजनसिंह के लड़के से तय हो जाती है। पूरे गाँव में यह खबर फैल जाती है कि रामभजनसिंह के लड़के की बारात में बाबू ललनसिंह की नौटंकी आ रही है। लेखक खुश होते हैं कि बाबू जी की नौटंकी देखने का अवसर मिलेगा। शादी का दिन आ जाता है। बड़े भैया ने गाँव के चार-पाँच बदमाशों को रुपये देकर तैयार किया था कि बाबू जी बारातियों के सामने कुछ उल्टा पुल्टा न बोल सकें। एक खुबसूरत नर्तकी के साथ जब रामभजन सिंह गंदी-गंदी बात व मज़ाक करने लगे, तो बाबू जी से यह बर्दाश्त नहीं होता है क्योंकि वह घर के अन्दर बंद औरतों से ज्यादा सम्मानित ऐसी नर्तकियों को मानते हैं। कम से कम वह जो कुछ करती हैं, वह तो खुलेआम करती हैं।

इस बात पर रामभजनसिंह तथा बड़े भैया के बदमाशों का बाबू जी से झगड़ा हो जाता है, जिसमें बाबू जी बुरी तरह से घायल हो जाते हैं। अस्पताल से बाबू जी को सहकर्मियों द्वारा घर पहुँचा दिया जाता है। अब वह चलने-फिरने लायक नहीं रह गये थे। धीरे-धीरे उनकी नौटंकी पार्टी टूटती गयी और उनके दोस्त भी उनका साथ छोड़ एक-एक सामान ले चंपत हो गये। केवल एक मशहूर नर्तकी ही बाबू जी के पास रह गयी थीं और पूरे भाव से उनकी सेवा में कार्यरत थी। एक दिन सबेरे उसके रोने की आवाज से पता चला कि बाबू जी मर चुके हैं। वह नर्तकी खटिया पकड़कर फूट-फूटकर रो रही थी तथा सिरहाने तीन शराब की बोतलें रखी थी। दो बोतलें खाली थीं लेकिन एक बोतल में आधी शराब बची थी। लेखक उस आधी बोतल की शराब को लेकर अब भी सोच में पड़े हैं कि उसे क्या करें? कभी सोचते हैं कि उसे पी जाऊँ, फिर कभी सोचते हैं कि इस बोतल को ले जाकर सीधे भैया के माथे पर पटक दूँ लेकिन अभी तक ऐसा कुछ न कर सकें, पर कुछ न कुछ करना चाहते हैं।

६.अ.३ चरित्र-चित्रण 'बाबूजी'

बाबूजी इस कहानी के मुख्य पात्र है। बाबू जी का नाम ललन सिंह है, जो कि लेखक के पिता जी हैं। जब तक वह जीवित थे, तब तक एक आदमी से भी प्रशंसा न पा सके थे, लेकिन मृत्यु के बाद सम्पूर्ण गाँव में उनकी ही प्रशंसा व चर्चा है। बाबू जी शराबी, वेश्यागामी चाहे जो भी थे, लेकिन गलत आदमी नहीं थे। कोई भी काम छिपाकर करना उनकी वृत्ति के खिलाफ था। समस्याओं का डटकर सामना करनेवाले तथा मुसिबतों में न टूटनेवाले एक निराले आदमी थे। समाज व परिवार द्वारा लगाये गये अपमान व लांछनाओं को स्वीकार करनेवाले बाबूजी विशाल हृदय के मनुष्य थे।

सर से पिता का साया छिन जाने के बाद मात्र तेरह साल की उम्र में बकरियों के पालन व बेचने का व्यवसाय शुरू करते हैं। बाईस साल की उम्र तक गाय व भैंस का व्यवसाय भी अच्छी तरह से करने लगते हैं। अपने अटूट परिश्रम व लगन के बल पर धन-दौलत व मान-सम्मान सब कमा लेते हैं। सुभगसिंह की लांछित लड़की से विवाह कर उन्होंने अपने उदार हृदय का परिचय दिया। इस विवाह के उपरान्त उन्हें समाज की काफी आलोचना व फब्तियाँ सुननी पड़ी लेकिन वह तनिक भी विचलित न हुये।

बाबूजी लम्बे व तगड़े शरीरवले व्यक्ति थे। बड़ी-बड़ी मूँछे, हाथ में कड़ा तथा गले में ताबीज उनके रोबिले चेहरे की शान थी। बाबू जी तबला, हारमोनियम तथा संगीत के बहुत बड़े प्रेमी तथा नाच-गानों के शौकिन थे। नर्तकियों का नाच देखते थे लेकिन उनकी इज्जत का इतना ख्याल रहता था कि रामभजनसिंह से झगड़ा तक कर लेते हैं।

बाबू जी अपनी पत्नी और लड़कों को अच्छी तरह पहचानते थे लेकिन वह पत्नी जो उन्हें बहुत पहले छोड़कर अपने मायके चली गयी थी, उसके लिये उनके हृदय में कोई स्थान न था। पत्नी के छोड़कर जाने पर उनका हृदय कठोर हो गया था। वह नाचनेवाली के साथ रहते हैं लेकिन इसे गर्व से स्वीकारते हैं और कहते हैं - ''मैं सिर्फ मर्द हूँ और इसलिए कभी-कभी किसी औरत के साथ रह लेता हूँ.... मुझे उसके शरीर की आवश्यकता रहती है, तो उसे भी मेरे मर्द शरीर की चाह रहती है।'' बाबू जी चाहते थे कि औरत आत्मनिर्भर बने तथा पुरुष की भाँति स्वतन्त्र रहें। उनका मानना था कि हर एक व्यक्ति स्वतन्त्र है और उसे अपने हिसाब से जीने का पूर्ण अधिकार है। बाबूजी अपने परिश्रम व हिम्मत के बल पर एक नौटंकी पार्टी बनाते हैं। उस पार्टी का संचालन बड़े ही नियंत्रण के साथ करते हैं। उनकी नौटंकी पार्टी बहुत ही कम समय में पूरे भोजपुर जिले में नम्बर एक की पार्टी हो गयी। जब रामभजनसिंह नर्तकी की बेइज्जती करते हैं, तो बाबू जी का खून खौल उठता है। उससे उनकी निडरता का पता चलता है। उनके इस साहसिक स्वभाव के कारण उन्हें लाठियों से इतना मारा जाता है कि उसी चोट के कारण उनकी आकस्मिक मृत्यु हो जाती है। वह भले ही शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, पर समय आने पर शेर की तरह दहाड़ भी लगाते थे।

लेखक

लेखक अपने घर में सबसे छोटा अधिक शांत व विवेकशील था। लेखक को अपने बाबू जी के प्रति अपार सहानुभूति व श्रद्धा है। बाबू जी की आकस्मिक मृत्यु पर उन्हें गहरा दुख है। उससे भी ज्यादा उन्हें इस बात का दुख है कि जब तक उनके बाबू जी जीवित थे, तब तक गाँव के किसी एक आदमी से भी प्रशंसा न पा सके थे, लेकिन अब, जबकि वे इस दुनिया में नहीं हैं, तब हर गली, घर व दालान में उनकी ही तारीफ़ की चचा है। पूरे परिवार द्वारा बाबूजी को अपमानित व लांछित किया जाता है, पर लेखक को अपने परिवार का यह व्यवहार कभी भी पसंद न आया। लेखक को अपने बाबूजी के सही होने का एहसास बहुत पहले से ही था। लेखक निष्पक्ष रूप से विचार करके देखते हैं कि गलती केवल बाबू जी की ही नहीं है बल्कि माँ की भी गलती है। लेखक के विचार से संसार का हर प्राणी अपनी स्वतंत्रता के लिये पूर्णतः मुक्त है। बाबू जी की इसी स्वतंत्रता में माँ का हस्तक्षेप उन्हें गलत लगता है। लेखक का आधा बचपना मामा के घर बीतता है और उसके बाद पिता का सर से साया ही उठ जाता है। लेखक से बाबू जी का अपमान सहा नहीं जाता है, पर अपनी कम उम्र और भाइयों के दबदबे के कारण बाबू जी का अपमान होते उन्हें देखना पड़ता है। लेखक की स्मरणशक्ति इतनी तेज़ है कि बचपन की एक-एक घटनाएँ उन्हें क्रमबद्ध रूप से याद आती जाती है। जिस नौटंकी पार्टी का नाम सुनकर पूरा परिवार बाबू जी को गाली देता है, उसी नौटंकी पार्टी की एक झलक पाने की तीव्र इच्छा लेखक में थी। नौटंकी पार्टी की अद्‌भुत सफलता पर लेखक को आश्चर्य होता है। वह बाबू जी के साथ रहना चाहते थे, पर इसका अवसर उन्हें न मिला। लेखक को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि वह बाबू जी के करीब रहकर अपनी जिन्दगी और अपने अन्दर के मर्द को अच्छी तरह से पहचान सकते हैं।

लेखक जागरूक एवं उत्साही बालक थे। जब उन्हें पता चला कि बासंती दीदी के शादी में बाबू जी नौटंकी पार्टी आ रही है, तो उनके खुशी का ठिकाना न मिला। बड़े भैया के

बदमाशों द्वारा जब बाबू जी को लाठियों से मारा गया, तब लेखक छोटे होने के कारण विद्रोह न कर सके थे, पर आज जब वह कहानी लिख रहे हैं, तो उनका वह इकट्ठा विद्रोह फूट पड़ा है। लेखक के मन में भाइयों के प्रति आक्रोश है। बाबू जी की बची हुई आधी शराब की बोतल को वह बड़े भैया के सिर पर पटककर बाबू जी का बदला और अपना विद्रोह शांत करना चाहते हैं। लेखक के मन में बाबू जी का उज्ज्वल व बेदाग चेहरा आज भी मौजूद है।

बड़े भैया

बड़े भैया लेखक के सबसे बड़े भाई हैं और इस कहानी में बड़े भैया के नाम से आये हैं। इस कहानी में उनका चरित्र बाकि पात्रों से बिल्कुल अलग है। वह हाईस्कूल की पढ़ाई के बाद एक स्कूल में मास्टर बन जाते हैं। उनकी शादी भी कर दी गयी थी। बाबू जी से दूर और माँ के साथ रहने के कारण उनका झुकाव माँ की तरफ है। वह पढ़े-लिखे व मास्टर पेशे के होने के बावजूद भी हिंसात्मक प्रवृत्ति के इंसान है। इस कहानी में उनका पहला वाक्य ही आग की तरह जलनशील है- ''अब आप लोग यहाँ से जाइए, इस घर को आप लोगों ने रण्डीखाना और शराबखाना बना दिया है।'' इस वाक्य के जगह अगर बड़े भैया ने दो प्यार भरे शब्द बोले होते, तो शायद इस कहानी का विषय कुछ और ही होता।

बड़े भैया बाबू जी से बहस करते हैं और कहीं न कहीं बाबू जी के लम्बे-तम्बे शरीर और रोबिले चेहरे से डरते भी हैं। बाबू जी के हाथ में गँड़ासा देखकर मकान से बाहर गली में चले आते हैं। बड़े भैया के व्यवहार को देखकर ऐसा लगता है कि वह बाबू जी से किसी प्रतिशोध का बदला लेना चाहते थे इसलिए दिन-रात उनके खिलाफ साजिश में लगे रहते हैं। केवल लेखक को छोड़कर सम्पूर्ण परिवार इस साजिश में बड़े भैया का साथ देता है। बड़े भैया में कुछ अच्छाईयाँ भी हैं। घर का बड़ा होने के नाते वासन्ती के विवाह की जिम्मेदारी उनके ही कन्धे पर थी। उस जिम्मेदारी को वह बखूबी निभाते हैं। अपनी बहन का विवाह इलाके के सबसे बड़े जमींदार के लड़के से कर उन्होंने अपने बड़े होने का फर्ज निभाया लेकिन बूढ़े पिता का मुँह बन्द रखने के लिये उन्होंने चार-पाँच बदमाशों के द्वारा बाबू जी को डंडों से मरवाकर अपने निष्ठुर हृदय और कुपुत्र होने का पूरा प्रमाण भी दिया। सब मिलाकर इतना कहा जा सकता है कि उनमें अच्छाइयाँ कम और बुराइयाँ अधिक थी। उनमें मातृत्व प्रेम तो था, पर पितृत्व प्रेम की अपार कमी थी।

६.अ.४ भाषा शैली

'बाबू जी' लेखक मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित बहुचर्चिच कहानी है। इस कहानी में लेखक सहज एवं सरल भाषा में अभिव्यक्ति का प्रयास करते हैं। लेखक को अंग्रेजी और उर्दू शब्दों से परहेज नहीं है। वह 'बाबू जी' कहानी में अरबी-फारसी का खुलकर प्रयोग करते हैं। जैसे - आदमी, औरत, बेपर्दगी, इलाका, गलतफहमी, मर्द, नफरत, महफिल, साजिश, इन्तजार, शामियाना, जिस्म, अजीब आदि। एक सफल कहानीकार की यह विशेषता है कि वह उस स्थान की आम भाषा का प्रयोग अपनी कहानी में अवश्य करता है, जिस स्थान से कहानी जुड़ी हुई है। कहानी में प्रयोग किये गये ग्रामीण शब्दों का कुछ उदाहरण देखिए- जीवट, मुरेठा, साटा, ठिठोली, मखौल, लाट आदि।

कहानी में मुहावरेदार भाषा-शैली अपना विशेष आकर्षण प्रस्तुत करती है। कुछ मुहावरों का उदाहरण देखिए- आग बबूला होना, आँखें लाल होना, फटी आँखों से देखना, एक न सुनना, मखौल उड़ाना, त्योरियाँ बदल जाना, तमतमा उठना, फनफना उठना, चम्पत हो जाना आदि। कहानी में पात्रों का मानसिक विश्लेषण लेखक ने बड़ी सुन्दरता के साथ किया है। कहानी की भाषा पात्र के अनुरूप है। इसकी एक बानगी देखिए - ''अब आप लोग यहाँ से जाइए, इस घर को आप लोगों ने रण्डीखाना और शराबखाना बना दिया है।''

'बाबू जी' कहानी में उपमा अलंकार का एक प्रयोग देखिए- ''अंगारों- जैसी आँखों से वे बाबूजी को घूरने लगे।'' शब्दों के माध्यम से चित्रों को प्रस्तुत या प्रकट कर देना लेखक की

विशेष विशेषता है। अरबी-फारसी, अंग्रेजी तथा बोलचाल की व्यावहारिक भाषा के शब्दों का सामंजस्य इस काहनी में उल्लेखनीय है। प्रस्तुत कहानी वर्णन शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय है। स्पष्टता, सजीवता और भावात्मकता इस वर्णन शैली की प्रमुख विशेषता है।

६.अ.५ शीर्षक

'बाबू जी' कहानी का शीर्षक बिल्कुल सटीक और उपयुक्त है। सम्पूर्ण कहानी में एक ही पात्र की चर्चा है। चाहे आरम्भ हो या अंत बाबू जी हर जगह मौजूद हैं। लेखक को बाबू जी के सही होने का एहसास तो बचपन में ही हो गया था, परन्तु यह एहसास भाइयों के कठोर प्रवृत्ति के कारण मन तक ही सीमित रह जाता है। गाँव के हर बैठक, हर दालान और हर व्यक्ति के जुबान पर बस बाबू जी की ही चर्चा थी। जो लोग बाबू जी के जिंदा रहने पर हमेशा उनकी बुराई किया करते थे आज वही लोग बाबूजी की मृत्यु के बाद गिरगिट की तरह रंग बदल कर कहते हैं- ''शराबी वेश्यागामी चाहे वे जो भी थे, लेकिन गलत आदमी नहीं थे।'' लोगों का यह व्यवहार बाबू जी के कारण ही उजागर होता है। इस कहानी में बाबू जी का बचपना, किशोरावस्था, यौवन, बुढ़ापा और मृत्यु सब कुछ है। पिता की मृत्यु के बाद तेरहसाल का लड़का बकरियों, गाय और भैसों को पालकर नाम सम्मान व धन सब कुछ प्राप्त करता है। लांछित लड़की से विवाह कर उन्होंने अपनी सहृदयता का परिचय दिया है। यह संघर्षशील और सहृदयवाला व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि स्वयं बाबूजी ही हैं। बड़े भाई के प्रति लेखक के मन में जो आक्रोश है वह भी बाबू जी के कारण ही है। बाबू जी के प्रति बड़े भाई सहित पूरे परिवार का व्यवहार लेखक को दुखी करता है। इस कहानी में किसी को किसी के प्रति प्रेम व सहानुभूति है, तो वह लेखक का बाबूजी के प्रति है और कहीं क्रोध व प्रतिशोध की भावना है, वह बड़े भाई का बाबू जी के प्रति है।

पूरे गाँव की मौजूदगी में रामभजनसिंह नर्तकी के साथ गंदी-गंदी मज़ाक करता है लेकिन कोई व्यक्ति रामभजनसिंह का विरोध नहीं करता सिवाय बाबूजी के। लेखक इस कहानी का लेखन बाबू जी पर लगाये गये अपमान व लांछनाओं से पीड़ित होकर करते हैं। लेखक अपने विचारों को लोगों के सामने रखकर बाबूजी के सही व गलत का फैसला उनपर ही छोड़ते हैं।

बाबूजी की आधी बची शराब की बोतल लेखक के मन में क्रांति की भावना पैदा करती है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्पूर्ण कहानी का केन्द्र बिन्दु बाबू जी ही हैं। अतः कहानी का शीर्षक 'बाबूजी' बिलकुल सही है।

६.अ.६ उद्देश्य

'बाबू जी' कहानी के माध्यम से लेखक अपने गाँव की एक खास विशेषता पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं कि उनके गाँव में जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो अचानक उसकी सारी अच्छाइयाँ निकलकर गाँववालों को मोहित कर देती है। इस कहानी में लेखक ने व्यंग किया है कि जब तक उनके बाबू जी जीवित थे, तब तक हर कोई उनकी उपेक्षा करता रहा लेकिन उनकी मृत्यु के बाद चारों तरफ उनकी अच्छाइयों की चर्चा की जा रही है। लेखक के मन में बचपन से लेकर आजतक अपने बाबूजी के प्रति जो प्रेम है, इस कहानी में वह स्पष्ट झलकता है। परिवार द्वारा बाबू जी के प्रति किये गये व्यवहार से लेखक दुखी हैं। कहानी में अपने मन का दुख व भाइयों के प्रति क्रोध व्यक्त करना लेखक का मुख्य उद्देश्य है।

बाबू जी की मृत्यु को लेखक 'आकस्मिक का नाम इसलिए देते हैं क्योंकि उस आकस्मिक मृत्यु के पीछे सबसे बड़ा हाथ बड़े भैया का ही था। यह हमारे संस्कारों का पतन है कि पुत्र द्वारा पिता के साथ इस तरह का बर्ताव किया जाता है। बाबू जी में भी कमियाँ थी

लेकिन क्या मृत्यु ही उन कमियों को दूर करने की साधन थी? इसका निर्णय पाठकों के ही विवेक पर ही छोड़ देते हैं।

लेखक ने अपने बाबू जी के परिश्रमी और प्रयत्नशील स्वभाव का वर्णन किया है। बाबू जी मात्र तेरह साल की उम्र से घर का खर्च सम्भाल लेते हैं। छोटे-छोटे व्यवसाय करके अपनी बिगड़ी स्थिति को उन्होंने सुधारा। घर बनाने के लिये जब उन्हें पैसे की आवश्यकता पड़ती है, तो वह अपने प्रयत्नशील व संघर्षशील व्यवहार के बल पर नौटंकी पार्टी का गठन करते हैं और वह पार्टी पूरे भोजपुर में धूम मचा देती है। अगर उनकी मृत्यु न हुई होती तो वह नौटंकी पार्टी पूरे देश में हलचल मचा देती। इस कहानी का एक उद्देश्य हमारी पुरानी मानसिकता को उजागर करना है। यह एक ग्रामीण विचारधारा और हमारे देश की लगभग विशेषता सी हो गयी है कि जीते जी किसी व्यक्ति को सम्मान व इज्जत नहीं दिया जाता है और मरने के बाद उसे फूलों का हार पहनाया जाता है। प्रेमचंद जी द्वारा लिखित यह वाक्य स्मरण हो जाता है - ''जीते जी आदमी को तन ढ़कने को चिथड़ा नहीं मिलता और मरने पर उसे नया कफ़न चाहिए।'' लेखक बाबूजी के प्रति बचपन से ही अनुरागमय थे लेकिन छोटे होने के कारण कुछ बोल न पाते थे। बड़ा होने पर अपनी उसी गलती का पश्चाताप करना चाहते हैं। लेखक बाबू जी से जुड़े अनेक प्रसंगों का उल्लेख करते हुये अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

गाँव में क्वाँरी लड़कियों पर लांछन लग जाना, दूसरों की आलोचना करना, फब्तियाँ कसना, पत्नी का रूठ कर मायके चले जाना, मदिरा पान करना, वेश्यावृत्ति, उद्दंड पुत्रों आदि ग्रामीण समस्याओं का यथार्थ चित्रण इस कहानी में किया गया है। इस कहानी में यह एक करारा व्यंग्य है कि बड़े-बड़े घरों की इज्जतदार औरतें शादी के पूर्व ही अपनी स्त्रीत्व को खो देती हैं। उनसे अच्छी तो ये वेश्याएँ और रण्डियाँ हैं जो सब कुछ खुलेआम करती हैं।

अंत में लेखक ने इस कहानी के माध्यम से अपना क्रोध प्रकट करते हुये कहा है कि अब भी बाबू जी की आधी बची शराब की बोतल उन्हें विद्रोह की तरफ़ अग्रसर कर रही है।

६.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या :

गद्यांश : 'घूर-घूरकर क्या देख रहे हैं। आपके घर की औरतें पराश्रित हैं। वे कोई भी काम छिपाकर करती हैं। रोटी से लेकर अन्य चीजों तक के लिए आप पर आश्रित हैं। लेकिन ये औरते पूरी आजाद हैं। खुद कमाती हैं और मजे से खाती हैं। अपनी किसी भी इच्छा के लिए किसी पर आश्रित नहीं रहतीं।''

सन्दर्भ - प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानी' के 'बाबूजी' शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक हिन्दी कथा साहित्य के जाने-माने कथाकार 'मिथिलेश्वर जी' हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण में लेखक मिथिलेश्वर जी ने बाबू जी के साहस और हिम्मत का जीवंत चित्रण किया है। जब बाबू रामभजनसिंह नर्तकी के साथ गंदी और भद्दी मजाक करते हैं, तो बाबूजी अपने शब्दों के माध्यम से उन्हें ऐसी पटकनी देते है कि वह चारों खाने चित हो जाते हैं और अपनी सज्जनता का मुखौटा उतारकर गुंडा-गर्दी पर उतर आते हैं।

व्याख्या : बाबू रामभजनसिंह द्वारा नर्तकी के साथ - भद्दी मज़ाक करने के उपरान्त जब बाबू जी ने नर्तकियों को बाबू रामभजन सिंह के घर की औरतों से अच्छा बताया तो बाबू रामभजन सिंह उन्हें घूर कर देखने लगते हैं। अपनी नौटंकी पार्टी की नर्तकी का अपमान उनसे सहा नहीं जाता है और वह रामभजन सिंह से कहते हैं, कि आप अपने घर की जिन औरतों को अच्छा समझते हैं, वह आत्मनिर्भर न होकर दूसरों पर आश्रित हैं जब कि जिन नर्तकियों को

आप बुरा समझते हैं, वह पूर्णतः आत्मनिर्भर हैं। यह नर्तकी जो भी काम करती हैं खुलेआम बिना डरे करती हैं जबकि आपके घर की औरतें हर काम छिपाकर करती हैं। छोटी-छोटी चिजों के लिए भी वह आप पर आश्रित हैं। यहाँ पर लेखक ने बड़े घर की उन स्त्रियों पर व्यंग्य किया है, जो पर्दे में रहकर भी गलत काम करती हैं तथा पूर्णतः पुरुषों पर आश्रित हैं और उन नर्तकियों की प्रशंसा की गयी हैं, जो आत्मनिर्भर हैं। ये नर्तकियाँ भौतिक सुखों का आनन्द अपनी कमाई के बल पर लेती हैं। बाबू जी जानते हैं कि रामभजन सिंह बहुत पहुँचवाले इंसान हैं लेकिन फिर भी उन्हें ऐसा तीखा जबाब देते है कि रामभजन सिंह बौखला जाते हैं।

विशेष :

- लेखक ने इस अवतरण में बाबू जी के साहसिक स्वभाव का वर्णन किया है।
- औरतों को आत्मनिर्भर होने की सलाह दी गयी है।
- 'घूर-घूरकर देखना' मुहावरे के प्रयोग से रामभजन सिंह के क्रोध को लक्षित किया गया है।
- यहाँ पर रौद्र एवं वीर रस का संचार हुआ है।

६ अ ८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १- बाबू जी ने गाँव में कितना जमीन खरीदा था?

(क) एक बीघा (ख) दो बीघा (ग) तीन बीघा (घ) पाँच बीघा

प्रश्न-२ बाबू जी का पहला क्रांतिकारी कदम क्या था?

(क) पत्नी-बच्चों को पहचानने से इंकार कर देना (ग) रामभजनसिंह से टकराना

(ख) सुभगसिंह की लांछित कन्या से विवाह करना (घ) नौटंकी का आयोजन करना

प्रश्न-३ लेखक की बहन का क्या नाम था?

(क) साँवली (ख) बसुमति (ग) सावित्री (घ) बासन्ती

प्रश्न-४ बाबू जी को कितने बच्चे थें?

(क) तीन (ख) चार (ग) पाँच (घ) दो

प्रश्न-५ बाबू जी की मृत्यु के बाद शराब की कितनी बोतलें खाली थीं?

(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार

६ अ.९ दीर्घ पश्न

प्रश्न १ - 'बाबू जी' शीर्षक कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न २ - 'बाबूजी' शीर्षक कहानी के आधार पर मिथिलेश्वर जी के कहानियों की शैलीगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न ३ - बाबूजी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न ४ - 'बाबूजी' कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न ५ - ललनसिंह और रामभजनसिंह के बीच घटित घटना का उल्लेख कीजिए।

❖❖❖

६-ब

बन्द रास्तों के बीच

इकाई की रूपरेखा

६.ब.१ प्रस्तावना
६.ब.२ कथानक
६.ब.३ चरित्र चित्रण
६.ब.४ भाषा शैली
६.ब.५ शीर्षक चित्रण
६.ब.६ उद्देश्य
६.ब.७ संदर्भ सहित व्याख्या
६.ब.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
६.ब.९ बोध प्रश्न

६.ब.१ प्रस्तावना

'बन्द रास्तों के बीच' एक ऐसे गाँव की कहानी है, जहाँ मालिकों द्वारा बनिहारों का इतना शोषण किया जाता है कि उनका राशनकार्ड तक जब्त कर लिया जाता है। आजादी के बाद देश की अपनी सरकार बनी और गाँव-गाँव की कच्ची सड़कें पक्की सड़कों में तब्दील होने लगी थी। यह सरकारी योजना जगेसर के गाँव में भी पहुँची और जगेसर के भाग्योदय का माध्यम बन रही थी लेकिन उसकी बनी-बनायी दुकान को सरकारी अधिकारियों द्वारा गिरा दी जाती है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह बताया है कि सरकारी योजनाओं का वास्तविक लाभ केवल उच्च वग को होता है, निम्न वर्ग तो उस लाभ को प्राप्त करने का साधन होता है।

६.ब.२ कथानक

जब से यह खबर गाँव में आयी है कि इस गाँव से होकर गुजरनेवाली कच्ची सड़क पक्की सड़क में तब्दील होने जा रही है, तब से जगेसर की निराश दुनिया में खुशहाली आ गयी है। जगेसर गाँव के मिट्टी के मकान में रहता है लेकिन कच्ची सड़क के किनारे जगेसर की अपनी एक छोटी-सी मड़ई भी है। यह मड़ई जगेसर की पुश्तैनी मड़ई है। यही मड़ई जगेसर के भाग्योदय का आधार है। पूरे गाँव में जगेसर की यह मड़ई ही एकमात्र ठहराव है, जो सड़क के किनारे स्थित है। पक्की सड़क बन जाने पर जगेसर अपनी मड़ई को चाय-पान तथा बीड़ी-सिगरेट की दुकान में तब्दील कर देगा। सड़क पर गाड़ी-मोटर आने-जाने लगेगी और गाड़ियों का ठहराव सड़क के किनारे एक मात्र जगेसर की दुकान पर ही रहेगा। इस तरह की अनेक बातें उसे मन ही मन आनन्दित कर देती हैं। वह बनिहार का काम छोड़ देगा तथा अपने बेटे बटेसर को भी चरवाही के काम से हटा देता है। पहले मालिक के यहाँ काम करने में उसे थकान, चिंता व तनाव होता था लेकिन अब वह खुश है।

जगेसर सोचता है कि कस्बे के गुरुचरण के पास भी कुछ नहीं था लेकिन चाय-पान की गुमटी के बदौलत ही उसने कस्बे में हजारों रुपयें की इमारत खड़ी कर दी है। जगेसर की पत्नी जब प्रसन्न होकर यह खबर जगेसर को सुनाती है कि आज से सड़क पर मिट्टी पड़नी शुरू हो गयी है, तो तुरन्त वह सड़क पर आ जाता है। मजदूरों को मिट्टी डालते देख वह भी अपनी मड़ई को दुकान में बदलने का सपना देखने लगता है। अब बटेसर सारा दिन उसी मड़ई में पड़ा रहता है, केवल खाना खाने ही घर जाता था। जगेसर को अपने पुरखों द्वारा मड़ई बनाने की सोच पर गर्व होता है। अन्यथा आज उसकी दुखद जिन्दगी में यह सुखद बदलाव न आता।

जगेसर अपने बेटे बटेसर को आश्वासन देता है कि सड़क बनते ही और दुकान खुलते ही वह उसकी शादी कर देगा। पत्नी और पुत्र दोनों इस आश्वासन से प्रसन्न हो जाते हैं। जब से सड़क का कार्य शुरू हुआ है, तब से जगेसर अपने मित्रों के साथ दिल खोलकर खर्च करता है। अब गाँव के प्रायः सभी बनिहार उसे अपने से विशिष्ट समझने लगे हैं और इसकी इज्जत करने लगे हैं। मालिकों के रोब-दाब और अंकुश से सारे बनिहार ऊब चुके थे। कोई उस पक्की सड़क पर इक्का चलाने की बात करता है, तो कोई सड़क से जुड़ी हुई अन्य काम करने की बात करता है।

इतवार के दिन बनिहारों की छुट्टी रहती है। जगेसर अपने बेटे बटेसर के साथ हर इतवार को मड़ई को दुकान बनाने में जुटा रहता है। सड़क बनाने का काम भी तेज़ी से होता है। एक दिन मालिक के यहाँ काम पर पहुँचने में जगेसर को देर हो जाती है। इस पर मालिक उसपर आग बबूला होकर गरज पड़ते हैं। पर जगेसर अब पहलेवाला जगेसर न था। मालिक के प्रत्युत्तर में काम छोड़ने और कर्ज पर लिए पैसे को लौटाने की बात करके वह वहाँ से चल देता है। लेकिन कहीं से पैसा न मिलने पर निराश होकर जगेसर मालिक के पास जाता है और सिर नीचा कर मालिक की डाँट-फटकार सुन लेता है। रामनारायण यादव और गणेश महतो से भी जगेसर उधार ले चुका था। दुकान खोलते समय वह उन्हीं दोनों से उधार लेगा।

लम्बे समय के बाद सड़क और दुकान दोनों तैयार हो जाते हैं। अब जगेसर की चौपाल दुकान के पास ही लगती है। वहीं पर सब बनिहार अपने-अपने मालिकों के दुव्यवहार की चर्चा करते हैं। तभी अचानक उसे सरकारी अधिकारी द्वारा सूचित किया जाता है कि आज से सातवें दिन सड़क का उद्घाटन है इसलिए सड़क के किनारे से अपना दुकान हटा ले, नहीं तो गिरा दिया जाएगा। यह सुनते ही जगेसर बेहोश हो जाता है। दो दिन बाद उसे होश आता है, लेकिन किसी से बात नहीं करता। पूरे गाँव में यह खबर फैल जाती है कि जगेसर चन्द क्षणों का मेहमान है। सातवें दिन मालिक व्यंग्य भरे शब्दों में जगेसर से कहते हैं कि आज सुबह तुम्हारी दुकान ढाह दी गयी। यह सुनते ही उसके शिथिल शरीर में ऐसी स्फूर्ति आती है कि वह उठ दुकान की तरफ भागने लगता है। पीछे-पीछे पत्नी, बटेसर और पूरा गाँव भागता है। दुकान की गिरी दीवारों को देखकर जगेसर की आँखें खुली रह जाती है और साँस निकल जाती है। बड़े बड़े माइकों से सड़क का उद्घाटन जोरों-शोर से हो रहा था।

६.ब.३ चरित्र चित्रण - जगेसर

जगेसर गाँव का एक सीधा-सादा व्यक्ति है। मालिक के दुर्व्यवहार से पीड़ित व नाराज़ रहता है, पर जब से उसे पता चला है कि उसके गाँव में पक्की सड़क बनने जा रही है, तब से उसके जीवन में खुशहाली आ गयी है। उसे लगने लगता है कि उसकी गरीबी अब चंद दिनों के लिए है। बनिहारी का काम छोड़कर वह पक्की सड़क के किनारेवाली अपनी मड़ई को दुकान में तब्दील कर दुकान सम्भालेगा। पहले काम से लौटने पर वह बुरी तरह थक

जाता था। अंग दर्द से टूटते रहते थे, चिंता और तनाव से उसका माथा फटता रहता है। उसे अपना भविष्य बिल्कुल अंधकारमय दिखता था। जिंदगी लाश बन गयी थी, जिसे वह ढो रहा था लेकिन पक्की सड़क की खबर सुन उसके पूरे शरीर में जोश व स्फूर्ति का संचार हो उठता है। जगेसर अपनी खुशी को अपने तक ही सीमित नहीं रखता है बल्कि जी खोलकर उन खुशियों का प्रचार करता हैं।

जगेसर व्यवहारिक है तथा ग्रामीण व्यवहारों से भली भाँति परिचित है। उसे अपने बाप-दादा पर गर्व है। उसके पूर्वजों की बनाई मड़ई से उसका भाग्य बदलता नज़र आ रहा है। जगेसर को अपने बेटे बटेसर की चिंता है। वह अपने बेटे को सांसारिक समस्याओं से निफिकिर होकर खूब छककर खाने की सलाह देता है। बेटे के स्वास्थ्य का उसे पूर्ण ख्याल है। चाय-पान का दुकान खुलते ही वह बटेसर का शादी करने का आश्वासन उसे देता है। गाँव के बनिहारों में जगेसर की खाशी इज्जत है। जगेसर को अपने परिवार से बेहद प्रेम है। जगेसर एक कर्मठ, जिज्ञासू व साहसी बनिहार है। दूसरों के स्वागत-सत्कार का उसे पूरा ध्यान है। वह मालिक के अत्याचार व दुर्व्यवहार को इसलिए सहता था क्योंकि उसके पास कोई दूसरा काम न था, पर जब उसे अपनी दुकान खुलती नज़र आती है, तब वह डँटकर मालिक से कहता है कि ठीक है, मैं आपके रुपये लौटा दूँगा। जगेसर पूरी तरह कर्ज में डूबा रहता है, पर उसे विश्वास है कि शीघ्र ही वह अपने सारे कर्जों को चुकता कर देगा। जगेसर का सपना उस समय टूट जाता है, जब सरकारी कर्मचारी पक्की सड़क के किनारे उसकी मड़ई को हटाने के लिए कहता है। यह सुन जगेसर होश खो बैठता है। सात दिन बात अपनी ढही दुकान को देखकर उसकी बची साँस भी निकल जाती है।

जगेसर जो स्वप्न देखता है, उस स्वप्न को पूरा करने के लिए रात-दिन प्रयत्न भी करता है, परन्तु सामाजिक व्यवस्था के कारण उसके सारे सपने टूटकर बिखर जाते है।

चरित्र-चित्रण बटेसर

बटेसर जगेसर का इकलौता बेटा है। बटेसर चरवाही का कार्य करता है, पर जबसे उसके गाँव में पक्की सड़क बनने की खबर आयी है, तब से उसके पिता जगेसर उसे चरवाही के काम से मुक्त कर देते हैं। वह सारा दिन सड़क के किनारेवाली अपनी मड़ई में रहता है। बस खाना खाने घर आता है। दिनभर अपनी कड़ी मेहनत व परिश्रम के बल पर मड़ई को दुकान बनाने में लगा रहता है। दुकान खुलने की प्रसन्नता उसके पूरे शरीर में दिखाई दे रही है। पूरे उत्साह से सप्ताह के सातों दिन वह दीवार बनाने के कार्य में जुटा रहता। पिता से अपनी शादी का आश्वासन पाकर बटेसर फूला नहीं समाता।

बटेसर पिता की आज्ञा का पालन करनेवाला पुत्र है। पिता के बेहोश होने पर अपनी माँ के साथ पिता की सेवा में लग जाता है। पिता की हालत खराब होते देख उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। बटेसर अपने दुकान को मलबे के रूप में देखकर दुखी हो उठता है, पर उससे ज्यादा दुख उसे अपने पिता का है। इस प्रकार बटेसर कर्तव्यशील, जिम्मेदार, परिश्रमी एवं पितृभक्ति आदि गुणों से सम्पन्न युवक है।

६.ब.४ बन्द रास्तों के बीच - भाषा शैली

'बन्द रास्तों के बीच' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित एक घटनाप्रधान कहानी है। किसी भी कहानी की अभिव्यक्ति भाषा द्वारा होती है, अतएव कहानी की भाषा सरस, आकर्षक एवं सजीव होनी चाहिए। यह कहानी खड़ी बोली में लिखी गयी है, जिसका सीधा सम्बन्ध जनसामान्य से है। अरबी-फारसी एवं ग्रामीण शब्दों का सामंजस्य इस कहानी की भाषा-शैली को प्रभावमयी बनाता है।

कहानी में प्रयोग किये गये अरबी-फारसी के कुछ शब्दों को इस प्रकार देखा जा सकता है। जैसे मुर्दानगी, मायूसी, तब्दील, इन्तजाम, मुहताज, इमारत, इजहार, तलाशने, साहखर्च, रुख्सत, खामोशी, इत्मीनान, तकरार, बेरुखी आदि। शब्द किसी भी भाषा के हों, किसी भी रूप में हों, साहित्यिक या देशज हों, आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग ही उन्हें सार्थक बनाता है। कहानी को सजीव बनाने के लिए लेखक ने ग्रामीण शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया है। जैसे - बनिहार, पसर, डली, पुश्तैनी, तपिस, राही-बटोही, गुमटी, छककर, दिराखे, पुआल, बदा, खपच्चियाँ, अधियाने, बुहारकर आदि। कहानी को चमत्कारपर्ण बनाने के लिए लेखक ने अनेक ऐसे मुहावरों का प्रयोग किया है। जिससे कहानी की भाषा आकर्षक हो जाती है। कुछ मुहावरों का उदाहरण देखिए- मूछों पर ताव देना, दिन पलटना, मुँह खुला रह जाना, फूला न समाना, आग बबूला होना, मुँहतोड़ जवाब देना, सातवें आसमान पर चढ़ जाना, कान खोलकर सुनना, काठ मार देना आदि।

कहानी की भाषा पात्रानुकूल एवं प्रवाहमयी है। कहानी में उपमा अलंकार का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग हुआ है। इसकी एक बानगी देखिए- ''वह घोंसलानुमा हो गया है।'' 'बन्द रास्तों के बीच' कहानी की शैली वर्णनात्मक है फिर भी कहानीकार ने स्थान-स्थान पर सांकेतिक भावचित्रों के समावेश द्वारा कहानी की जीवन्तता को और अधिक मुखर कर दिया है।

६.ब.५ बन्द रास्तों के बीच - शीर्षक

'बन्द रास्तों के बीच' कहानी का शीर्षक जगेसर के पूर्वजों की मड़ई से जुड़ी हुई है। कहानी के आरम्भ में ही जगेसर की जिन्दगी में तेज़ी से होते परिवर्तन को दिखाया गया है। वह अपने बेटे को चरवाही के कार्य से हटा लेता है तथा खुद बनिहारी का काम छोड़ने की बात करता है। यह सब खुशियाँ उसके जीवन में उसकी मड़ई की बदौलत आयी थी। जगेसर की मड़ई कच्ची सड़क के पास थी लेकिन जब से जगेसर को पता चला है कि वह सड़क सरकारी योजना के तहद पक्की होनेवाली है, तब से उसकी खुशी का ठिकाना नहीं है। जगेसर सोचता है कि पक्की सड़क बन जाने पर वह अपनी मड़ई को दुकान बना देगा और उसमें चाय-पान की दुकान खोल देगा।

शहर से गाँव को जोड़नेवाली उस रास्ते पर उसकी अकेली मड़ई है इसलिए बस का ठहराव वहीं बनाया जाएगा। बन्द रास्तों के बीच जगेसर की मड़ई उसके जीवन में आशा का संचार भर देती है। मालिकों के व्यवहार से वह बहुत तंग हो गया था इसलिए खुद का रोजगार करना चाहता है। जो रास्ता जगेसर के बाप-दादा के समय से बन्द था, वह रास्ता पक्की सड़क के रूप में बनने भी लगता है। जिसे देखकर जगेसर और बटेसर अपने दुकान का निर्माण भी तेजी से करते हैं। सरकारी योजना के कारण गाँव का वह बन्द रास्ता चहल-पहल में बदलने जा रहा है। जिस दिन सड़क का उद्घाटन होनेवाला है उसके सात दिन पहले कुछ कर्मचारी सड़क के पास की जगेसर की मड़ई को हटाने के लिए कहते हैं, जिसे सुनकर वह बेहोश हो जाता है और जब सातवें दिन अपने दुकान को मलबे के रूप में देखता है, तो उसकी बची-खुची जान भी निकल जाती है।

इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी का शीर्षक कहीं बाहर से लाकर जोड़ नहीं दिया गया है बल्कि सम्पूर्ण कहानी का ताना-बूना तैयार करती है। जब तक वह रास्ता बन्द था, तब तक जगेसर के जीवन में परिवर्तन की आशा लगी थी और जैसे ही रास्ता पक्की होकर तैयार होती है, वैसे ही उसके जीवन की सारी आशाएँ मिट्टी में मिल जाती है। बन्द

रास्तों के बीच जगेसर की मड़ई उसके खुशहाली की प्रतीक थी, पर बन्द रास्तों के खुलते ही वह सुध-बुध खो बैठा। इसलिए कहानी का शीर्षक उपयुक्त व सार्थक है।

६.ब.६ बन्द रास्तों के बीच कहानी का उद्देश्य

गाँव के सीधे-सादे लोग अपना सारा जीवन असुविधा और सरकारी योजनाओं के अभाव में ही बिता देते हैं। उनके लिए न बिजली है, न पक्की सड़कें। उनके जीवन का आरम्भ अभाव से शुरु होकर अभाव में ही विलीन हो जाती है। मालिकों की डाँट-फटकार, दुर्व्यवहार, गाली-गलौज सुनकर बनिहारों का जीवन गुजर जाता है। लम्बे अरसे के बाद जगेसर के गाँव का भाग्य खुलता है और गाँव की कच्ची सड़क पक्की सड़क में तब्दील होने लगती है। साथ ही साथ जगेसर को अपने भाग्योदय की उम्मीद रहती है। सड़क के किनारे की उसकी मड़ई जो उसके पूर्वजों ने बनाई थी, उसे वह दुकान में तब्दील कर अपने गरीबी व मालिकों के दुर्व्यवहार से छुटकारा पा जाएगा। सरकार की सड़क बनाने की योजना का पूरा गाँव स्वागत करता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक मालिकों द्वारा बनिहारों के शोषण पर प्रकाश डालते हैं। बनिहार सारा जीवन कठिन परिश्रम करके भी अपना व अपने परिवार का पेट नहीं भर पाते हैं। फलस्वरुप कर्ज के बोझ से दबते जाते हैं। मालिक इस तरह अपने कर्ज में उलझाया रहता है कि मज़दूर-बनिहार जाति के लोग चाहकर उस नारकीय जीवन से बाहर नहीं निकल सकते हैं।

जगेसर अपने मालिक का रुपया लौटाने का भरसक प्रयत्न करता है लेकिन रुपया न लौटा पाने पर चुपचाप सिर नीचा करके मालिक का फटकार और गरज सुन लेता है। जाड़े की रात में रात-रात जागकर जो बेचारे फसल की देख-रेख करते हैं, वे गरीब के गरीब ही रह जाते हैं और जो आराम से घर में सोते हैं वे मालामाल हो जाते हैं। यह हमारे समाज का कटु सत्य है। इतना ही नहीं जगेसर का राशन कार्ड भी मालिक ले लेते हैं क्योंकि राशन कार्ड पर मिलनेवाले शक्कर का इस्तेमाल बड़े लोगों के घर में किया जाता है। गरीब तो गुड़ से ही काम चला लेते हैं। जगेसर ब्लैक में चीनी खरीदकर अपने बनिहार मित्रों को शरबत पिलाता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सरकार के तरफ से समय समय पर गरीबों के लिए योजनाएं तो बनती हैं, पर उन योजनाओं का वास्तविक फायदा उन्हें न होकर बड़े जाति व मालिकों को होता है।

जगेसर पक्की सड़क के निर्माण का बेसब्री से इंतजार करता है और उसी पक्की सड़क का निर्माण हो जाने पर उसकी बनी-बनाई दुकान को ढाह दिया जाता है और मालिक द्वारा व्यंग्य किया जाता है कि दौलत जिसके नसीब में बदा होता है, उसी को मिलता है। जगेसर इस बात को भूल गया था कि उस जैसे गरीब बनिहारों का नसीब इन्हीं बड़े लोगों पर आश्रित होता है। 'बन्द रास्तों के बीच' यह कहानी केवल जगेसर की नहीं है बल्कि अनेक किसान-मजदूरों की है, जो आज भी शोषण का शिकार हो रहे हैं। जगेसर के बनिहार मित्र भी मालिक की बेरुखी और दुर्व्यवहार से परेशान हैं। उन्हें अपने ऊपर बढ़ते जा रहे कर्जों की चिंता है। अपने अंधकारपूर्ण भविष्य के प्रति अपनी निराशा और अपना गुस्सा प्रकट करते हैं। उनकी स्थिति पर न सरकार को दया आती है और न ही मालिकों को। इन सब समस्याओं का उल्लेख इस कहानी में किया गया है।

६.ब.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश - ''उसकी जिन्दगी के अंधियारे को दूर से आती हुई रोशनी की एक स्पष्ट किरण आलोकित कर रही है।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानी' के 'बन्द रास्तों के बीच' शीर्षक से अवतरित है। इस कहानी के लेखक भारतीय ग्रामीण जीवन के चहेते 'मिथिलेश्वर जी' हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण में जगेसर के जीवन में आये परिवर्तन का वर्णन किया गया है। जगेसर अपने मालिक के गालियों और शोषण से थक गया था, तभी अचानक उसके गाँव से गुजरनेवाली कच्ची सड़क के पक्की सड़क में तब्दील होने की सूचना उसे मिलती है और उसके जीवन में खुशी की थोड़ी-सी उम्मीद दिखाई देने लगती है।

व्याख्या : जगेसर छोटी जाति का एक गरीब बनिहार है। उसका जीवन बहुत ही कष्टमय ढंग से बीत रहा था, लेकिन जब से उसे मालूम हुआ है कि उसके गाँव की कच्ची सड़क पक्की सड़क में तब्दील होनेवाली है, तब से उसे लगने लगा है कि उसका भविष्य भी साफ-सुथरा एवं उज्ज्वल है। उसके जीवन में दुख रूपी जो अंधकार छा गई थी, वह सड़क के किनारे से आती हुई रोशनी से कम होने लगी थी अर्थात् उसी सड़क के किनारे जगेसर की एक पुश्तैनी मड़ई है और सड़क पक्की बनने के साथ-साथ जगेसर उस मड़ई को दुकान का रूप दे देना चाहता है। दुकान से होनेवाली आमदनी से उसका जीवन भी गुरुचण की तरह खुशहाल हो जायेगा। जगेसर के जीवन में कायापालट कर देनेवाली यह रोशनी उसी मड़ई से आती प्रतीत हो रही थी। मड़ई के दुकान बन जाने की उम्मीद में उसका जीवन आनन्दमय हो गया था।

विशेष :

- बेबस और शोषित व्यक्ति के जीवन में खुशियों की क्या एहमियत है? इस बात को लेखक ने यहाँ बताने का सफल प्रयास किया है।
- 'जिन्दगी के अंधियारे' में रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।
- यहाँ पर ग्रामीण बनिहारों के करुण जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।
- इसकी भाषा सरल और सजीव है।

६ ब ८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १- बटेसर क्या काम करता था?

(क) मजदूरी का (ख) चरवाही का (ग) किसानी का (घ) चौकीदारी का

प्रश्न २ - जगेसर अपने बेटे को क्या आश्वासन देता है?

(क) पढ़ाने का (ख) काम से मुक्ति का (ग) शादी का (घ) पैसा देने का

प्रश्न ३ - कितने दिन बाद सड़क का उद्घाटन था?

(क) पाँच (ख) सात (ग) आठ (घ) दस

प्रश्न ४ - दुकान ढाह देने की सूचना जगेसर को कौन देता है?

(क) बटेसर (ख) उसकी पत्नी (ग) मालिक (घ) तपेसर

प्रश्न ५ जगेसर को कितने दिन बाद होश आया था?

(क) एक दिन (ख) दो दिन (ग) तीन दिन (घ) पाँच दिन

६.ब.९ दीर्घ प्रश्न

प्रश्न १ 'बन्द रास्तों के बीच' कहानी का सारांश लिखिए।

प्रश्न २ 'बन्द रास्तों के बीच' कहानी का उद्देश लिखिए।

प्रश्न ३ जगेसर तका चरित्र-चित्रण कीजिए

प्रश्न ४ 'बन्द रास्तों के बीच' कहानी का शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है? समझाइए।

प्रश्न ५ सड़क के निर्माण कार्य से गाँववालों के जीवन में क्या परिवचन आया?

❖❖❖

७

दूसरा महाभारत

इकाई की रूपरेखा

७.१ प्रस्तावना
७.२ कथानक
७.३ चरित्र चित्रण
७.४ भाषा शैली
७.५ शीर्षक
७.६ उद्देश्य
७.७ संदर्दभ सहित व्याख्या
७.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
७.९ बोध प्रश्न

७.१ प्रस्तावना

मिथिलेश्वर जी की अधिकतर कहानियाँ ग्रामी जीवन से जुड़ी हुई हैं। 'दूसरा महाभारत ऐसे ही एक गाँव की कहानी है, जहाँ जमीन को लेकर चार भाइयों में झगड़ा आरम्भ होता है और देखते-देखते पूरा गाँव दो गुट में बँट जाता है और अन्त में ऐसा घमासान युद्ध हाता है कि सँझले भैया और लेखक के गुट के इक्कीस आदमी तथा बड़े भैया और मँझले भैया के गुट के अट्ठारह आदमी की मृत्यु हो जाती है तथा पूरा गाँव छावनी में बदल जाता है।

७.२ कथानक

लेखक अपने परिवार के आपसी झगड़ों को विकरालता को देखते हुये। इस कहानी को 'दूसरा महाभारत का नाम देते है। लेखक के बाबू जी को मरे आठ साल बीत चुके हैं। पिछले साल माँ भी गुजर गयी। लेखक चार भाई हैं, जिनमें लेखक सबसे छोटे हैं। तीनों बड़े भाइयों की शादी हो चुकी है। बड़े भैया और मँझले भैया नौकरी करते हैं। जबकि सँझले भैया और स्वयं लेखक गाँव में खेती का काम करते हैं। बड़े भैया और मँझले भैया ने एक दिन पत्र भेजकर लेखक व सँझले भैया को सूचित कर दिया कि वह अपने हिस्से का खेत बेचकर शहर में मकान बनवाना चाहते हैं।

लेखक के बाबू जी अपने पिता के अकेले संतान थे। अकेले होने का दुख उन्हें हमेशा रहता था। इसलिए जब उन्हें चार पुत्र हुये, तो वह खुश होकर बच्चों के बचपन में ही निर्णय कर लेते हैं कि दो बच्चे नौकरी करेंगे और दो बच्चे जो शरीर से मजबूत है, वे खेती का काम करेंगे। लेखक और सँझले भैया गाँव में ही रहते हैं जबकि बड़े भैया और मँझले भैया की परवरिश बड़े घर के बच्चों की तरह हुई तथा वे होस्टल में रहकर पढ़ते हैं। लेखक और सँझले भैया को अपने दोनों भाइयों पर गर्व है कि दोनों एक दिन अफसर बनेंगे तथा घर की स्थिति सुधर जायेगी। कुछ समय बाद दोनों बड़े भाई पढ़-लिखकर नौकरी पा जाते हैं तथा बाबूजी दोनों का विवाह भी करवा देते हैं। सँझले भैया का भी बाबू जी ने विवाह तय कर दिया था लेकिन विवाह के पूर्व ही उनकी मृत्यु हो जाती है। बड़े भैया और मँझले भैया लड़की को अपशकुन मानते हैं पर सँझले भैया बाबू जी के द्वारा तय किया हुआ विवाह तोड़ने के पक्ष में न थे। इसलिए उसी लड़की से उनका विवाह करवा दिया जाता है। बड़ी और मँझली भाभी के

पति नौकरी करते हैं इसलिए वे दोनों शौक-श्रृंगार किया करती थी जबकि सँझली भाभी साधारण तरह से रहती थी क्योंकि सँझले भैसा खेती का काम करते थे और उनके पास पैसे नहीं रहते थे। दोनों बड़ी भाभीयाँ सँझली भाभी को ताना भी मारती थी। बाबू जी की मृत्यु के कुछ समय बाद ही बड़े व मँझले भैया अपनी-अपनी पत्नियों को लेकर शहर चले जाते हैं। त्योहार या छुट्टी में जब आते, तो खूब अनाज भरकर ले जाते थे। खेती के काम में पैसा देना भी बन्द कर देते हैं। सँझले भैया ठण्डी, गर्मी व बरसात को सहते हुये, किसी तरह परिवार का खर्च खेती से चलाते हैं। बड़े व मँझले भैया लेखक और सँझले भैया की तरफ से बिल्कुल मुँह मोड़ लेते हैं।

बड़े व मँझले भैया द्वारा भेजे गये पत्र को पढ़कर सँझले भैया का गुस्सा आग बबूला हो गया। वह कहने लगे कि उन दोनों की खेत की पगडण्डियों पर चढ़ने नहीं दूँगा। यह खबर पूरे गाँव में फैल गयी। लेखक को अपने गाँव के गणेशी और सीचरन के बँटवारे की खबर लोगों द्वारा मालूम पड़ती है। गणेशी बँटवारे के सदमे को बर्दाश्त नहीं कर पाया और महुआ के पेड़ से फाँसी लगा लेता है। गणेशी की तरह गाँव में खेती करनेवाले लोग सँझले भैया के गुट में शामिल हो गये तथा गाँव से बाहर नौकरी करने वाले लोग बड़े भैया के गुट में शामिल हो गये। पूरा गाँव दो गुट में बँट गया था। एक वर्ग चाहता था कि बड़े भैया व मँझले भैया को खेती में हिस्सा मिलना चाहिए। लेकिन दूसरा वर्ग इस पक्ष के विरोध में था। पूरा गाँव बड़े भैया और मँझले भैया के गाँव आने की प्रतीक्षा में था। जब बड़े व मँझले भैया गाँव आते हैं, तो उस समय खेत में धान की फसल पक चुकी थी। बड़े भैया के गुट ने यह फैसला किया कि आधे खेत की फसल को बड़े भैया व मँझले भैया कटवा ले और आधी फसल सँझले भैया के लिए छोड़ दें। लेखक व सँझले भैया के दल के लोगों ने कहा कि उन लोगों को फसल का एक दाना भी छूने नहीं देंगे।

उस रात पूरा गाँव हथियार जमा करने में लगा। सुबह लेखक के सात बीघे खेत की फसल में दोनों गुटों द्वारा ऐसा घमासान युद्ध हुआ कि लेखक व सँझले भैया के गुट के इक्कीस आदमी तथा बड़े भैया के गुट के अट्ठारह आदमी घटनास्थल पर ही लाश बन गये। पुलिस द्वारा पूरे गाँव को छावनी में बदल दिया गया था। लेखक को यह घटना दूसरे महाभारत जैसी लगती है।

७.३ चरित्र-चित्रण लेखक

'दूसरा महाभारत' कहानी लेखक के अपने परिवार की कहानी है। इस कहानी के चारों भाइयों में सबसे छोटे लेखक हैं। लेखक मिडिल स्कूल तक पढ़े हैं क्योंकि इसके बाद बाबू जी नाम कटवा देते हैं ताकि वह खेती का काम कर सकें। वे अत्यन्त विवेकशील, स्नेही तथा दूरदर्शी व्यक्ति हैं। लेखक को अपने परिवार के आपसी झगड़ों के परिणाम पर गहरा दुख है। झगड़े से पूर्व जमशेदपुर और आरा जैसे शहरों में वह जाते अवश्य थे लेकिन घूम फिरकर वापस अपने गाँव ही लौट आते थे। उन्हें अपनापन और पहचान भरी आत्मीयता सिर्फ गाँव में ही मिल पाती है। लेखक शारीरिक दृष्टि से काफी स्वस्थ होने के कारण अपने बाबू जी के आज्ञानुसार सँझले भाई के साथ खेती के काम में लग जाते हैं। संझली भाभी जब लेखक को बड़े व मँझले भैया की नीयत के बारे में बताती है, तो लेखक को उनकी बातों पर विश्वास नहीं होता है क्योंकि लेखक अपने भाईयों से अपार प्रेम करते हैं। लेखक को सामाजिक व्यवहार का पूर्ण ज्ञान है इसलिए उनको लगता है कि सँझली भाभी भाइयों में फुट डालने का प्रयास कर रही हैं। लेखक को बाद में अपनी इस गलत सोच पर पश्चाताप भी होता है। कभी-कभी वह बाबू जी की सोच पर क्रोधित हो उठते हैं क्योंकि बाबू जी की घटिया सोच के कारण ही दूसरा महाभारत का जन्म होता है। लेखक को इस बात का खेद भी है कि जिस तरह दोनों बड़े भाइयों का लालन-पालन हुआ था, उस तरह उन दोनों छोटे भाइयों का न हो सका। लेखक को इस बात की खुशी भी थी कि कुछ दिन बाद दोनो भाई पढ़-लिखकर अफसर बन जाएँगे, सभी आराम की जिन्दगी गुजारेंगे।

लेखक को अपने सँझले भाई और भाभी के प्रति बेहद हमदर्दी है। बड़ी व मँझली भाभी के द्वारा सँझली भाभी के साथ किया गया व्यवहार उन्हें कतई पसन्द न था। लेखक परिवार को जोड़कर चलने के पक्ष में थे लेकिन दोनों बड़े भाइयों के व्यवहार में दिनों-दिन परिवर्तन के कारण घर का पूरा माहौल खराब हो जाता है। लेखक अपने सँझले भाई के सीधे व्यवहार के कारण उनपर समर्पित हैं। जब दोनों बड़े भाइयों का पत्र आता है, तो लेखक उसे पढ़कर फाड़ देना चाहते हैं क्योंकि उस पत्र को पढ़कर सँझले भाई को दुख होता। लेखक को इस बात का भी दुख है कि यह महाभारत अब दूसरे गाँव तक भी विस्तार पा रहा है।

७.४ चरित्र-चित्रण संझले भैया

सँझले भैया को बचपन से ही दोनों बड़े भाइयों की अपेक्षा माँ-बापू से कम स्नेह मिला था। पर उन्हें कभी इस बात का दुख न था। वह बड़े मेहनती और कर्तव्यशील स्वभाव के व्यक्ति हैं। अपने परिवार से उन्हें प्रेम है। भाईयों के प्रति अपनी पत्नी द्वारा सचेत करने पर भी उन्हें अपने भाइयों पर पूर्ण विश्वास था। सँझले भैया शारीरिक दृष्टि से काफी मजबूत और स्वस्थ हैं। इसलिए बाबू जी उन्हें खेती के काम में लगा देते हैं और वह जी-तोड़ मेहनत करके अच्छी फसल उगाते हैं। सँझले भैया मिडिल स्कूल तक पढ़े हैं क्योंकि बाबू जी ने मिडिल स्कूल के बाद उनका नाम कटवा दिया था। जिससे वह खेती का काम कर सकें। सँझले भैया शकुन-अपशकुन में विश्वास न करनेवाले व्यक्ति थे। इसलिए बाबू जी की मृत्यु के बाद वह वहीं शादी करते हैं, जहाँ बाबू जी तय कर गये थे। संझले भैया के मन में अपने छोटे भाई लेखक के प्रति अपार प्रेम था। जब एक बार होली के अवसर पर दोनों बड़े भाई अपने लिए तथा अपनी बीवियों के लिए नये कपड़े लाये थे, तो सँझले भैया को बड़ा दुख होता है कि घर के सबसे छोटे लड़के के पास कपड़ा नहीं है, तो उन्होंने अपने लिए कपड़ा न सिलवाकर लेखक के लिए कपड़ा सिलवाया था। इससे उनका अनुज प्रेम झलकता है। बाबू जी की मृत्यु के बाद बड़े व मँझले भैया खेती के काम में पैसा देना बंद कर देते हैं, लेकिन सँझले भैया कैसे परिवार और खेती को चलाते थे, इसका किसी को आभास तक नहीं होने देते थे। लाख दुख सहकर भी किसी के सामने अपना दुखड़ा नहीं गाते थे। उन्हें सबसे ज्यादा दुख तब हुआ जब दोनों बड़े भाइयों के पत्र में जमीन बेचने की बात लिखी गयी थी। बाबू जी का निर्णय था कि जो नौकरी करेगा, उसे खेती में हिस्सा नहीं मिलेगा लेकिन बाबू जी की मृत्यु के बाद दोनों बड़े भाई अपना हिस्सा माँगने लगते हैं। वह भी जमीन न बेचने की जिद पर अडिंग हो गये। पत्नी के खराब स्वास्थ्य व भाभियों द्वारा उसके साथ किये गये व्यवहार से उन्हें दुख होता है। गाँववालों को भी उनके प्रति हमदर्दी थी। उन्हें भी बार-बार बाबू जी गलत फैसले व उनकी पुरानी सोच पर गुस्सा आता है।

चरित्र-चित्रण बड़े भैया

बड़े भैया बाबू जी के सबसे बड़े लड़के हैं। इस कारण वह माँ-बाबू के लाडले व चहेते हैं। माँ-बाबू उनकी हर इच्छा पूरी करते थे। वह मिडिल स्कूल तक की पढ़ाई गाँव में करके शहर हॉस्टल में पढ़ने के लिए चले जाते हैं। उनका पालन-पोषण बिलकुल राजकुमार की तरह किया जाता है। उनके लिए बाबू जी हर त्योहार पर नये कपड़े सिलवा देते हैं। जब वह हॉस्टल से हफ्ते भर बाद शनिवार को घर आते तो माँ उनके खाने के लिए अच्छे-अच्छे पकवान बनाती थी। बड़े भैया शकुन-अपशकुन में विश्वास करनेवाले व्यक्ति थे। इसलिए वह सँझले भैया का शादी वहाँ करने के पक्ष में नहीं थे, जहाँ शादी लगते ही बाबू जी चल बसे थे। बाबू जी की मृत्यु के बाद बड़े भैया अपनी पत्नी को लेकर शहर चले जाते हैं। वह अपने चरित्र को पत्नीभक्ति से बचा नहीं पाते हैं। उनके अन्दर अपनापन व परायापन की भावना का समावेश हो गया था। पत्नी का प्रभाव उन पर स्पष्ट झलकता था। यहीं कारण है कि धीरे-धीरे भाइयों के प्रति उनका प्रेम समाप्त होता गया। वह अपनी जिन्दगी शहर में बसाते जा रहे थे। इसलिए गाँव की जमीन बेचना चाहते थे। बड़े भैया का व्यक्तित्व स्वार्थ में लिप्त दिखाई देता है। नौकरी करने के बाद भी उनके मन में लालच था। अपने छोटे भाईयों की खुशी व दुख का उन्हें जरा भी एहसास न था। शहर में जाकर उनकी मानसिकता इतनी बदल चुकी थी कि उन्हें इस बात

का भी ज्ञान न था कि वह उस जमीन को बेचना चाहते थे, जो उनके बाबू जी की शान थी। उनके इसी विकृत मानसिकता का परिणाम ही 'दूसरा महाभारत'है।

चरित्र-चित्रण बाबू जी

बाबूजी अपने पिता के अकेले संतान थे। अपना अकेलापन उन्हें हमेशा सताता था। उन्हें इस बात का दुख था की अगर उनका कोई भाई होता, तो वह मिल जुलकर अच्छे से खेती करते तथा तकलीफों को आपस में बाँट लेते। इसलिए बाबू जी को जब चार बेटे हुये, तो उन्होंने यह निर्णय किया कि जो दो बच्चे शारीरिक दृष्टि से मजबूत हैं, उन्हें खेती के काम में लगाया जाये तथा जो दो बड़े लड़के थोड़े कमजोर है उन्हें पढ़ लिखाकर अफसर बना दिया जाये। बाबू जी की सोच थी कि जब दोनों लड़के नौकरी करके पैसे भेजेंगे, तो दोनों छोटे लड़कों के साथ अच्छी खेती करवा सकेंगे और घर खुशहाल रहेगा। बाबू जी ने प्रेम के मामले में कभी अपने बच्चों में भेद-भाव न किया। हाँ, इतना अवश्यक था कि पहले व दूसरे लड़कों के होने पर उन्हें पिता बनने का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसके कारण उन दोनों लड़कों का पालन-पोषण थोड़ा अच्छे ढंग से हुआ। बाबू जी को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास था इसलिए उन्होंने समय पर अपने लड़कों का विवाह कर दिया था। बाबू जी की सोच सीधी-सादी तथा ग्रामीण भावनाओं से जुड़ी हुई थी। उन्हें तनिक भी इस बात का एहसास न था कि उनकी इस पुरानी सोच का परिणाम इतना भयानक होगा।

७.५ दूसरा महाभारत - भाषा शैली

'दूसरा महाभारत' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी की भाषा सरल, सरस और स्पष्ट है। ग्रामीण बोली और भाषा की जितनी अच्छी पकड़ मिथिलेश्र जी के पास है, वैसी कम लेखकों के पास दिखलायी पड़ती है। 'दूसरा महाभारत' कहानी में बोलचाल की भाषा में प्रयोग किये जानेवाले मुहावरों का रमणीय प्रयोग किया गया है। जैसे - नीयत खराब हो जाना, आगाह कर देना, फूट डालना, फनफना उठना, खूब फबना, भूत सवार होना, आँखें लाल होना, त्योरियाँ बदल जाना, फेर में पड़ जाना, रोंगचे खड़े हो जाना, खून खौल उठना आदि।

ग्रामीण शब्दों के साथ साथ कहानी में अरबी-फारसी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे- लहजा, गर्दिशों, तकलीफों, दफा, खुशबूदार, इमारतें आदि। कहानी में सजीवता लाने के लिए लेखक ने कुछ सुन्दर उदाहरणों का प्रयोग किया है। जैसे -

''उनके समझौते की दीवार इतनी हलकी और पुलपुली थी कि उनकी मृत्यु के बाद पाँच साल की भी वह प्रतीक्षा नहीं कर सकी। भरभराकर गिर पड़ी।'' तथा ''आज मुझे लगता है कि वही आग दूसरे महाभारत में तेज़ आँधी का झोंगा पाकर धधकती ज्वाला बन उठी थी।''

कहानी की भाषा प्रवाहमयी एवं पात्रानुकूल है। अभिधा के साथ-साथ व्यंजना का भी प्रयोग करके लेखक ने कहानी को रोचक बना दिया है। इसकी शैली स्वभावात्मक, व्यावहारिक, प्रवाहमयी और भावव्यंजक है। इनमें विचारों की प्रधानता है। अतः 'दूसरा महाभारत कहानी भाषा शैली की दृष्टि से पूर्णतः सफल है।

७.६ शीर्षक

'दूसरा महाभारत' कहानी लेखक के भाइयों से आरम्भ होकर सम्पूर्ण गाँव में फैल जाती है। एक परिवार के बच्चे जब छोटे होते हैं,तो उनमें कितना आपसी प्रेम रहता है लेकिन जैसे-जैसे वह बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे उनमें दूरियाँ बढ़ती जाती है। वह दूरियाँ धीरे-धीरे भयंकर वातावरण का निर्माण करती चली जाती है। जो लोग विवेकशील और संतोषी स्वभाव के होते हैं, वे लोग अपने आपको इस महाभारत से बचा लेते हैं। लेकिन लेखक के भाइयों में इसी बात की कमी थी। इसलिए बाबू जी की मृत्यु के बाद पूरा परिवार दो टुकड़ों में बँट जाता है और

जमीन को लेकर इतना भयानक युद्ध होता है कि सम्पूर्ण गाँव दो गुट में बँट जाता है।

युद्ध के परिणाम स्वरूप बड़े भैया और मँझले भैया के गुट के अट्ठराह आदमी तथा संझले भैया और लेखक के गुट के इक्कीस आदमी घटनास्थल पर ही दम तोड़ देते हैं। लेखक ने इस कहानी को 'दूसरा महाभारत' नाम इसलिए दिया है क्योंकि यह कहानी मात्र एक घटना-सी नहीं है बल्कि इतिहास प्रसिद्ध महाभारत की घटना से मेल खाती है। जिस तरह इतिहास प्रसिद्ध महाभारत पाण्डवों व कौरवों तक सीमित न थी, उसी तरह लेखक के घर की यह घटना बस उनके परिवार तक ही सीमित नहीं रह जाती है। इस कहानी के लिए लेखक ने दूसरा शब्द इसलिए इस्तेमाल किया है क्योंकि इसके पूर्व लेखक एक ऐसी ही घटना लिख चुके थे। जिसे उन्होंने 'पहली घटना' नामक शीर्षक दिया था। लेखक की यह दूसरी ऐसी कहानी है जिसमें आपसी संघर्ष भयंकर रूप में परिवर्तित हो जाता है। इस सम्पूर्ण कथा में आपसी झगड़ों, उन झगड़ों की पृष्ठभूमि तथा उसके भयावह परिणाम पर चर्चा की गयी है। इन सब पहलूओं पर विचार करने के पश्चात् ऐसा लगता है कि कहानी का शीर्षक 'दूसरा महाभारत' सटीक और उपयुक्त है।

७.७ उद्देश्य

'दूसरा महाभारत' कहानी लेखक की अपनी कहानी है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह नायक की आप बीती कहानी है। लेखक इस कहानी के माध्यम से सम्पत्ति के कारण उपजी पारिवारिक विघटन की समस्या का यथार्थ चित्रण करते हैं। 'दूसरा महाभारत' घटना जो लेखक के गाँव में घटित होती है, वह बाबू जी के वाहियात और अपरिपक्व फैसले का परिणाम था। बाबू जी ने कभी यह सोचा भी नहीं होगा कि जितनी आसानी से उन्होंने अपने बच्चों के लिए निर्णय ले लिया था, उतनी ही आसानी से बच्चे उस निर्णय को नामंजूर कर देंगे। आपसी प्रेम के टूटने से पैदा हुई भयानक स्थिति का वर्णन लेखक इस कहानी में करते हैं।

लेखक के घर से उत्पन्न हुई यह भयानक स्थिति पूरे गाँव को अपने चपेटे में ले लेती है। लेखक सहित चारों भाई दो गुट में बँट जाते हैं। दोनो गुटों के भीषण युद्ध और उसके परिणाम को लेखक इस कहानी के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं। यह कहानी मनुष्य के लोभी प्रवृत्ति को उजागर करती है। चंद धन-दौलत व सम्पत्ति के लिए मनुष्य अपने खून के रिश्ते तक को भूला देता है। आज हम जितने पढ़े-लिखे होते जा रहे है, उतने ही एकांकी भी होते जा रहे हैं। यहीं एकांकीपन हमारे मजबूत रिश्तों की डोर को तोड़ते जा रहे हैं। इस कहानी में बड़े व मँझले भैया भी पहले अपना परिवार शहर में बसाने लगते हैं और जब उन्हें गाँव में कोई रस नज़र नहीं आता है, तो वह अपने हिस्से का खेत बेचकर गाँव से किनारा ही खींच लेना चाहते हैं।

लेखक 'दूसरा महाभारत' कहानी में यह स्पष्ट कर देते हैं कि युद्ध का परिणाम हमेशा दुखदायी ही होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब युद्ध हुआ है तब तब अशांति ही फैली है। लेखक इस कहानी से हमें यह बताना चाहते हैं कि किसी भी समस्या का समाधान युद्ध नहीं है। हम उस समस्या को धैर्य के साथ अपने विवेक से दूर कर सकते हैं।

७.८ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : ''और मैं सच कहता हूँ, मैंने स्पष्ट लक्ष्य किया था, तटस्थ दर्शक की भाँति तमाशा देखनेवाले लोग एकाएक गमगीन हो गये थे। उनकी मुट्ठियाँ भिंच गयी थीं तथा चेहरे पर आक्रोश की रेखाएँ उभर आयी थी।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानी' के 'दूसरा महाभारत' कहानी से उद्धृत है। इस कहानी के लेखक हिन्दी साहित्य के जाने-माने ग्रामीण कथाकार 'मिथिलेश्वर जी' हैं।

प्रसंग : लेखक के भाई जिस तरह अपना खेत बेचना चाहते हैं, उसी तरह दस साल पहले

गाँव का सीचरन अपने हिस्से का जमीन बेच देता है। उसका छोटा भाई गणेशी उस जमीन पर खेती करके अपना जीवनयापन करता था, जबकि सीचरन शहर में भौज में नौकरी करता था। खेत बेचने का सदमा गणेशी बर्दाश्त नहीं कर पाता है और महुआ के पेड़ से गले में फंदा लगा लेता है। इस घटना का गाँववालों पर गहरा असर पड़ा।

व्याख्या : इस अवतरण में लेखक पूरी ईमानदारी के साथ पाठकों को बताते हैं कि जिस समय गणेशी ने फंदा लगाया था, उस समय इस घटना के बाद हुई गाँववालों की प्रतिक्रिया आज भी उन्हें याद है। जिस महुआ के पेड़ से गणेशी ने फंदा लगाया था, वहाँ पूरा गाँव जमा हो गया था और गणेशी की हृदय विदारक स्थिति देखकर हर किसी को आँखों में आँसू आ गये थे क्योंकि उस पर आश्रित उसकी पत्नी गर्भवती थी और अपनी छोटी बच्ची के साथ दहाड़े मार-मारकर रो रही थी। वहाँ मौजूद हर व्यक्ति सीचरन के प्रति क्रोध में उबल रहा था क्योंकि गणेशी की मृत्यु का जिम्मेदार सीचरन ही था। गणेशी की तरह गाँव के जो लोग खेती का काम करते थे, वह क्रोध से जलने लगते हैं क्योंकि आज जो घटना गणेशी के साथ घटी थी कल वही घटना उनके साथ भी घटित हो सकती है।

विशेष :

- लेखक ने यहाँ पर बताया है कि जो आक्रोश हमारे हृदय में चिनगारी की भांति होती है, अवसर पाकर वही ज्वालामुखी का रूप धारण कर लेती है।
- 'आक्रोश की रेखाएँ उभर आना' तथा 'गमगीन हो जाना' मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया गया है।
- इस अवतरण में रौद्र रस विद्यमान है।

७.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १ सँझले भैया के विवाह से पूर्व कौन-सी घटना घटती है?

(क) भाइयों में झगड़ा (ख) बाबू जी की मृत्यु (ग) माँ की मृत्यु (घ) लड़की का मना करना

प्रश्न २ चारों भाइयों में लेखक का कौन सा नम्बर था?

(क) पहला (ख) दूसरा (ग) तीसरा (घ) चौथा

प्रश्न ३ जब बड़े भैया और मँझले भाया गाँव आते हैं, तो कौन-सी फसल पक चुकी थी?

(क) धान (ख) दाल (ग) गेहूँ (घ) सरसों

प्रश्न ४ सँझले भैया के गुट के कितने आदमी घटनास्थल पर दम तोड़ चुके थे?

(क) अट्ठारह (ख) उन्नीस (ग) इक्कीस (घ) चौबीस

प्रश्न ५ लेखक के बाबू जी को किस बात का दुख था?

(क) पुत्र न होने का (ख) अकेले होने का (ग) पैसा न होने का (घ) चार पुत्र होने का

७.१० बोध प्रश्न

प्रश्न १ गणेशी और सीचरन से संबंधित घटना का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न २ 'दूसरा महाभारत' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ३ चारों भाइयों के झगड़े का मुख्य कारण क्या था?

प्रश्न ४ लेखक ने इस कहानी को दूसरा महाभारत का नाम क्यों दिया?

प्रश्न ५ सँझले भैया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

❖❖❖

७-अ

मेघना का निर्णय

इकाई की रूपरेखा

७.अ.१ प्रस्तावना
७.अ.२ कथानक
७.अ.३ चरित्र चित्रण
७.अ.४ भाषा शैली
७.अ.५ शीर्षक
७.अ.६ उद्देश्य
७.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या
७.अ.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
७.अ.९ बोध प्रश्न

७.अ.१ प्रस्तावना

'मेघना का निर्णय' बिहार प्रांत के 'भदवर' ग्राम की कहानी है। इस कहानी में लेखक ने उच्चवर्ग एवं समाज के प्रतिष्ठित लोगों द्वारा निम्न वर्ग के मजदूरों का शोषण प्रस्तुत किया है। मजदूरों के अधिकारों का हनन करने में केवल गाँव के बाबू लोग ही नहीं हैं बल्कि सरकारी अधिकारी भी लिप्त है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी हमारे देश का एक बड़ा जनसमूह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहा है। सन् १९८० ई. में प्रकाशित यह कहानी इस बात का प्रमाण है। अंत में मेघना अपने वर्ग के अधिकारों के लिए ऐसे लोगों से टकराने का निर्णय लेता है, जो उनके रोटी के बीच में आते हैं।

७.अ.२ कथानक

दो-तीन दिनों से मेघना बहुत चिंतित और बेचैन होकर शिवाले के चबूतरे पर लेटा रहता है। उसकी पत्नी उसे समझाती है कि गाँव के बड़े लोगों की बात का बुरा नहीं मानना चाहिए। मेघना जानता था कि उसकी पत्नी सही कह रही है लेकिन फिर भी वह उसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था। उसे दुख इस बात का था कि जब शहर में मजदूरी करते समय उसे सताया जाता है, तब तो बाबू लोग उसकी सहायता नहीं करते और जब वह अपने हक के लिए लड़ रहा है, तो बाबू लोग उसके बीच में आ पड़े।

मेघना अपने मजदूर मित्रों के साथ आरा शहर मजदूरी करने जाता था और रात की रेलगाड़ी पकड़कर वापस गाँव लौट आता था। लेकिन एक ऐसी घटना घटी कि दो-तीन दिनों से वह काम पर नहीं जा पा रहा है। मेघना चाहता है कि किसी भी समस्या का समाधान सब मजदूरों को मिलकर करना चाहिए। इसलिए वह कुल्हाडिया स्टेशन की तरफ चल पड़ता है, जहाँ उसके मित्र उसके बिना ही काम पर जाकर वापस लौटनेवाले थे।

मेघना कुल्हडिया स्टेशन पर बैठकर सोचता है कि जिस दिन वह शहर में पहली बार मजदूरी के लिए निकला था। उस दिन उसके साथ सिर्फ चार व्यक्ति थे। दिनभर घूमने के बाद उन्हें कहीं भी काम न मिला था, लेकिन दूसरे दिन उन्हें हेड़ मिस्त्री के द्वारा काम मिल जाता है। धीरे-धीरे गाँव के अनेक मजदूर मेघना के साथ शहर जाने लगे तथा मेहनत करके

दो वक्त की रोटी का इंतजाम कर लेते थे। मेघना के हृदय में हेड मिस्त्री के प्रति प्रेम व श्रद्धा था लेकिन जब उसे मालूम पड़ा कि हेड मिस्त्री उनके मजदूरी में से एक रुपया काट लेते हैं, तब उसे हेड मिस्त्री से घृणा होने लगी। हेड मिस्त्री मज़दूरों में से उसे ही मिस्त्री बनाते थे, जो उनकी चापलूसी करता था। यह सब देख मेघना अपने साथियों के साथ उनका काम छोड़ स्वतंत्र रूप से शहर में काम ढूँढने और करने लगता है। अगर कभी मालिक पैसा देने में आनाकानी करते, तो मेघना डरा-धमकाकर अपनी चतुराई से पैसे निकलवा लेता था। गाँव के मजदूर उसे अपना अगुवा मानते। एक दिन काम की तलाश में मेघना और जगुआ रेलबाबू के बँगले की ओर जा पहुँचे। उन्हें रेलबाबू के यहाँ दिहाड़ी पर सब्जी बोआई के काम पर रख लिया जाता है। दिनभर काम करने के बाद जब मेघना पैसा माँगता है, तब रेलबाबू ने कल देने का वादा करके बात टाल दिया। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। तिसरे दिन जब मेघना और जगुआ ने जल्दी-जल्दी काम समाप्त कर रेलबाबू से पैसा माँगा, तो उन्हें सिर्फ बीस रुपये उनके सामने बढ़ाया। मेघना कहने लगा कि बीस रुपये बहुत कम है। हमने रोजाना पर आपसे बात किया था। रेलबाबू अपने पद का रोब दिखाने लगे, मेघना भी गुस्सा हो गया। वह बोलने लगा, हम आपसे पूरे पैसे निकलवा के रहेंगे। रेलबाबू ने गरजते हुए कहा कि तुम जैसों को रोज चराता हूँ। उस दिन तो मेघना वहाँ से लौट आया लेकिन दूसरे दिन वह तीस मजदूरों के साथ रेलबाबू के बंगले पर जा धमका, जिसे देख रेलबाबू पुलिस को बुला लेते हैं। पुलिस को देख वहाँ से सब भाग निकलते हैं। बाद में मेघना ने यह तय किया कि चार दिन बाद फिर रेलबाबू के बँगले पर जाएँगे और अपनी मजदूरी भर का सामान लेकर भाग आएँगे। लेकिन उससे पहले ही रेलबाबू मेघना का पता लगाते हुये, मेघना के गाँव भदवर चले आते हैं। गाँव के बड़े बाबुओं से उन्होंने मुलाकात की। बाबू तेगासिंह तथा कुछ प्रमुख बाबुओं ने अपने नौकरों को भेजकर मेघना तथा उसके साथियों को वहीं बुलवा लिया। मेघना तथा उनके साथियों के साथ जब बाबू तेगासिंह के दालान में पहुँचा, तो वहाँ रेलबाबू को देखकर चकित हो जाता है। तेगासिंह, रंगुनराय तथा जोरावरसिंह ने उन्हें खूब डाँटा-डपटा तथा शहर जाकर बड़े व शरीफ लोगों को परेशान करने तथा उन्हें लूटने का इलजाम उनपर लगाया। मेघना ने सफाई में कहा कि हम अपनी मजदूरी माँग रहे थे लेकिन उनकी आवाज को दबा दिया गया। उन्हें यह कहकर बड़ी मुश्किल से छोड़ा गया कि अगर फिर ऐसी खबर मिली तो तुम लोगों को एक दिन भी गाँव में न रहने दिया जाएगा। यह बात सुन बाकि मजदूर तो शहर काम पर जाने लगे क्योंकि वह गाँव के बाबुओं से झगड़ा मोल नहीं लेना चाहते थे लेकिन मेघना उसी दिन से काम छोड़कर गाँव में चिंतित है कि क्या अपने हक के लिए लड़ना गलत है? कुल्हडिया स्टेशन पर सुबह से बैठे-बैठे शाम हो गया। आज जब सारे उसके मजदूर मित्र शहर से वापस लौटेंगे, तो वह उनका निर्ण पूछेगा? क्योंकि सवाल सिर्फ एक रेलबाबू का नहीं है। उनके हक और रोटी के लिए उन सब के बारे में उन्हें सोचना है, जो रोड़े बनकर सामने उपस्थित हो जाते हैं। अंत में मेघना ऐसे रेलबाबू व गाँव के बाबुओं का डटकर सामना करने का निर्णय लेता है। उसे मालूम है कि शुरू में कुछ मजदूर मित्र तैयार नहीं भी होंगे, तो बाद में जब लड़ाई छिड़ जाएगी, तो उन्हें तैयार होना पड़ेगा क्योंकि इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

७.अ.३ चरित्र चित्रण - मेघना

मेघना भदवर गाँव का एक गरीब मजदूर है। जो बहुत कम पढ़ा-लिखा है लेकिन चिट्ठी-पत्री पढ़ना जानता है। उसकी झोपड़ी इतनी छोटी है कि वह पूरा दिन घर के बगलवाले शिवाले पर पड़ा रहता है। वह कर्मठ तथा आत्मस्वाभिमानी स्वभाव का युवक है। वह अपने साथ-साथ अपने गाँव के मजदूर वर्ग की दशा सुधारने का प्रयास करता है। बड़ी जाति के लोग जब मजदूरों को हेय दृष्टि से देखते हैं, तो मेघना को बहुत बुरा लगता है। पढ़े-लिखे लोगों की सोच का पता उसे तब चलता है, जब वह रेलगाडीं में पढ़े-लिखे लोगों को बात करते सुनता है कि मजदूर मूर्ख होते हैं तथा एक मरेगा तो फिर दूसरा कहीं न कहीं से आज

जाएगा। मेघना के व्यक्तित्व की खासियत है कि वह जो भी सोचता है अपने वर्ग के लिए सोचता है न कि अपने लिए। उसके इसी समझदारी के कारण मज़दूरों ने उसे अपना अगुआ मान लिया था। गाँव के बड़े-बूढ़े और बच्चे-मजदूर तक ने निर्विवाद रूप से उसे अपना हितैषी मान लिया था। मेघना के अंदर सहनशीलता भी है। जब मिस्त्रियों द्वारा उसका व उसके साथियों का मज़ाक उड़ाया गया, तब वह सब कुछ सहन कर लेता है। मेघना दूसरे गाँव के मजदूरों का खाना देखकर उन्हें भी अपने जैसा अकाल का मारा समझता है। मन ही मन उसे उन मज़दूरों पर दया आती है। जिससे उसके उदार हृदय का पता चलता है। वह अपने मिलनसार स्वभाव के कारण सभी से हिलमिल जाता है। वह इतना सीधा-सादा स्वभाव का है कि उसे लगता है कि उसके गाँव के बाबू लोग ही सबसे अमीर हैं। मेघना किसी का गुलाम बनकर काम करनेवाला न था। वह स्वतन्त्र रूप से काम करने में विश्वास रखता हैं। उसके एक आवाज पर सभी मजदूर हाजिर हो जाते थे। अगर कभी कोई मालिक मजदूरी देने में आनाकानी करता तो मेघना हाथ जोड़कर, डरा-धमकाकर उनसे पैसा निकलवा ही लेता था। गाँव की सीधी सोच के कारण ही वह हेड मिस्त्री को अच्छा इंसान समझ लेता है लेकिन जब उसे हेड मिस्त्री की सच्चाई का पता चलता है, तो दुख भी उतना ही होता है।

रेल बाबू द्वारा मजदूरी का पैसा न देने पर वह किसी मायने में उनसे नहीं डरता। मेघना के अन्दर नेतृत्व करने का अद्‌भुत गुण है। वह तीस मजदूर सहित रेलबाबू के बँगले पर जम जाता है। उसे दुख तो इस बात का है कि जब वह अपने हक के लिऐ शहर में लड़ता है, तो उसके बीच में गाँव के बाबू लोगों को आने की क्या आवश्यकता है? जब वह उसकी सहायता नहीं कर सकते, तो उनके बीच में क्यों आते है? अपनी व मजदूरों की दयनीय स्थिति देखकर उसका क्रोध और भी भड़क उठता है कि बेइज्जत व अपमान सहकर हम तो पहले ही जी रहे हैं, तो क्यों न इन बाबुओं का डटकर सामना किया जाए।

अतः मेघना बहुत ही साहसिक, निडर तथा अत्याचार के खिलाफ बुलंद आवाज उठानेवाला एक ग्रामीण मजदूर है। वह पुराने जमाने के उन मजदूरों की भाँति नहीं है जो सब अत्याचार व अपमान बर्दाश्त कर जाते हैं। वह कम पढ़ा-लिखा होने के बावजूद भी ऊँची सोच और प्रगतिवाद विचार में विश्वास रखता है। उसे इस बात का पूर्ण ज्ञान है कि अपनी स्वतंत्रता के लिए स्वयं ही लड़ना पड़ेगा। वह किसी का गुलाम या दब्बू बनकर जीने से अपेक्षा मौत को अच्छा मानता है।

चरित्र-चित्रण - (रेलबाबू)

रेलबाबू का नाम और पद इतना टेढ़ा-मेढ़ा है कि मेघना द्वारा इस कहानी में उन्हें रेलबाबू के नाम से ही पुकारा जाता है। वह रेलवे के एक बड़े अधिकारी है। उनका बँगला आरा शहर की भीड़-भाड़ से अलग शांत वातावरण में है। उनके बँगले के बाहर काफी मैदान है, जिसमें वह सब्जियाँ उगाते हैं। अपने बँगले के खुले मैदान में वह सब्जी बोआई के लिए मेघना व उसके साथी जगुआ को रख लेते हैं लेकिन काम समाप्त होने पर उन्हें सिर्फ बीस रुपये देते हैं। मेघना के विरोध करने पर अपने पद का रोब जमाते हुये उसे एक पैसा नहीं देते हैं तथा पुलिक को बुला लेते हैं। रेलबाबू का बड़े-बड़े लोगों से जान-पहचान है। रेलवे में उनके मजदूर कई बार हड़ताल कर चुके थे इसलिए वह मजदूरों का शोषण करने में अभ्यस्त हो गये थे। कहीं न कहीं उन्हें मेघना के शब्दों का डर भी है इसलिए वह मेघना के गाँव पहुँचकर गावँ के बाबुओं से मिलकर मेघना व उसके मजदूर साथियों को उनके ही गाँव के बाबुओं द्वारा डाँट-फटकार लगावते हैं। रेलबाबू भले ही ऊँचे पद पर और पैसेवाले थे लेकिन उनके हृदय में

मानवतावादी एवं उदारवादी स्वभाव की कमी है। उनके स्वभाव में पैसे व पद का घमण्ड स्पष्ट झलकता है। अंत में सभी मज़दूरों को बाबू तेगसिंह से छुड़वाकर थोड़ी दया भी दिखा देते हैं। एक तरफ तो वह मज़दूरों के हक को मारते हैं और दूसरी तरफ उदारता दिखाते हैं।

७.अ.४ भाषाशैली

किसी भी साहित्य की सफलता में भाषा का बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मिथिलेश्वर जी ने इस कहानी में जिस भाषा का प्रयोग किया है, वह भारत के जनसामान्य की भाषा है। हाँ, इतना अवश्य है कि इसमें कहीं-कहीं बिहार प्रांत की ग्रामीण भाषा का भी प्रयोग किया गया है। 'मेघना का निर्णय' कहानी में सजीवता लाने के लिए यह आवश्यक भी था क्योंकि स्वयं लेखक और कहानी के घटनास्थल का संबंध बिहार प्रांत से है। कहानी में प्रयोग किये गये कुछ ग्रामीण शब्द इस प्रकार हैं - तड़के, बनिहार, अगुआ, परती, बियड़ी आदि।

मिथिलेश्वर जी ने कहानी को सहज एवं सजीव बनाने के लिए जगह-जगह पर मुहावरों एवं कहावथों का भी प्रयोग किया है। जैसे माथा पीटकर रह जाना, आँख मूँदकर बात मान लेना, खून पसीना बहाना, दहाड़ देना, आग बबूला होना आदि।

पानी में रहकर मगर से बैर ठीक के नहीं होता है, साँप का बिल पता लगाकर उसकी सूराख ही बन्द कर देना आदि कहावतों कारण कहानी में जान आ गयी है। भाषा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए लेखक ने उदाहरण एवं उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है। जैसे-

उदाहरण अलंकार - ''जब एक छोटी-सी चींटी पाँव पड़ने पर अपनी शक्ति भर काटने से नहीं बाज आती, तब हम फिर मनुष्य होकर क्यों चुपचाप सहेंगे?''

उपमा अलंकार - ''बगुले की पंखों की तरह बिलकुल सफ़ेद कमीज़ पजामें में वे थे।''

''मेघना का निर्णय'' एक घटना प्रधान कहानी है। लेखक इस कहानी के आरम्भ में ही यह स्पष्ट कर देते हैं कि मेघना को कोई दुख है और वह उस दुख से छुटकारा पाने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना चाहता है। तत्पश्चात् लेखक मेघना के दुख का कारण वर्णनात्मक ढंग से बताते हुये निर्णय लेने की प्रक्रिया तक कहानी का क्रमबद्द रूप से वर्णन करते चले जाते हैं। इस प्रकार ''मेघना का निर्णय'' वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी लेखक की अद्‌भुत कला का प्रमाण है।

७.अ.५- शीर्षक

'मेघना का निर्णय' कहानी का शीर्षक सम्पूर्ण कहानी को अपने में समेटे हुये है। कहानी का आरम्भ मेघना की बेचैनी से होता है। इस कहानी में मेघना ही एक ऐसा पात्र है, जो आरम्भ से लेकर अंत तक एक समस्या पर विचार करते हुये कोई न कोई निर्णय लेना चाहता है। हमारे स्वतंत्र देश में भले ही प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है लेकिन यह कटु सत्य है कि आज भी हमारे समाज में मज़दूर और किसान का शोषण किया जा रहा है और यह शोषण कोई और नहीं बल्कि समाज के धनी व सम्मानित व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। इनके खिलाफ अगर कोई आवाज़ उठाता है, तो उसे डरा-धमका कर शांत कर दिया जाता है। मेघना जो इस कहानी का नायक है, उसके साथ भी ऐसा ही होता है। जब से रेलबाबू और उसके गाँव के बाबुओं ने उसके और उसके मज़दूर मित्रों के साथ बुरा व्यवहार किया है, तब से वह इस घटना को भूला नहीं पा रहा है। वह अपने मज़दूर मित्रों के काम से लौट आने की राह देखता है ताकि वह इस समस्या पर उनका निर्णय जान सके क्योंकि सवाल सिर्फ रेलबाबू का नहीं है बल्कि सवाल अपने हक और स्वतन्त्रता का है। अन्य मजदूरों की भाँति मेघना कायर व दब्बू न था। वह एक ऐसा निर्णय लेना चाहता है जिससे मज़दूरों से टकराने से पहले बाबू लोग और शहर के मालिक दस बार सोचने पर विवश हों

तथा उन्हें डराने या दबाने से पहले खुद भी भय खायें। जब मेघना को विश्वास हो जाता है कि उसके सब साथी उसका साथ देंगे तब वह एक महत्त्वपूर्ण निर्णय बाबुओं से टकराने का लेकर सुखद अनुभव महसूस करता है। जो मेघना कहानी के आरम्भ से ही बेचैन व दुखी-सा नज़र आता है, वही मेघना अपने द्वारा लिए गये निर्णय के बाद शान्ति महसूस करता है। इस प्रकार कहानी का शीर्षक 'मेघना का ' निर्णय मेघना द्वारा लिये गये महत्त्वपूर्ण फैसले का संकेत है। उसे पता है कि इस निर्णय से अनेक मजदूरों की जान तक जा सकती है लेकिन इस बार अगर वह दब जायेगा, तो हर बार उन्हें दबाया जायेगा। अत्याचार व शोषण से मुक्त होने के लिए किसी न किसी को मेघना बनना ही पड़ता।

अतः कहानी का शीर्षक 'मेघना का निर्णय' सटीक व उपयुक्त है।

७.अ.६ उद्देश्य

'मेघना का निर्णय' इस कहानी में लेखक मिथिलेश्वरजी ने बिहार के आरा जिले के भदवर गाँव की कहानी का वर्णन किया है। उस गाँव में तीन सौ घर बड़ी जाति के बाबू लोगों का है तथा सौ घर छोटी जाति के मज़दूरों का। उन्हीं मज़दूरों में साहसी और मजदूरों का भला चाहनेवाला मज़दूर मेघना है। इस कहानी में लेखक ऐसे गरीब मज़दूर का यथार्थ चित्रण करते हैं, जिन्हें दो वक्त दी रोटी के लिए संघर्ष करना पड़ता है। गाँव के मज़दूरों को बाबू लोग हेय दृष्टि से देखते है तथा उन्हें मन्दिर तक में प्रवेश करने से रोका जाता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक इस तरह की मानसिकतावाले तथा बड़ी जाति के लोगों के अमानवीय व्यवहार का वर्णन करते हैं। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य हमारे समाज में फैले शोषण वृत्ति का उजागर करना है। यह शोषण वृत्तिवाले लोग केवल गाँव तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि शहर तक फैले हुये हैं। हेड मिस्त्री द्वारा मज़दूरों के हिस्से का एक रुपया काटना तथा मकान मालिकों से अधिक रुपया लेना इसी शोषण वृत्ति का अंश है। रेलबाबू द्वारा मेघना व उसके मज़दूर साथियों के साथ जो बर्ताव किया गया, वह भी हमारे समाज का यथार्थ सत्य है। लेखक इस कहानी के माध्यम से ऐसे वर्ग का वास्तविक चेहरा समाज के सामने लाने का प्रयास करते हैं, जो एक तरफ तो समाज में सम्मानित व सरकार द्वारा ऊँचे पद पर आसिन हैं और दूसरी तरफ दस-बीस रुपये के लिए गरीब-मजदूरों से गाली-गलौज तथा झगड़ा तक कर लेते हैं। गरीब मजदूरों के आवाज़ को दबाने के लिए पुलिस तक का सहारा लिया जाता है।

मेघना इस अत्याचार व शोषित वृत्ति को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। वह बेचैन है, इस वृत्ति के लोगों का विद्रोह करने के लिये। आज समय बदल चुका है। वह पहलेवाली बात नहीं है कि मजदूर व किसान सब कुछ बर्दाश्त कर सहते जाएँगे। अब उनमें भी जागरूकता आ गयी है। वह जान देकर इस समस्या का समाधान चाहते हैं।

इस कहानी में लेखक ने समाज में व्याप्त आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ रोज़गार तथा ग्रामीण मज़दूरों के रहन-सहन का यथार्थ वर्णन किया है। गरीबी इस कदर है कि मज़दूर सत्तू, मक्के, बाजरे की रोटी, जौ, आटे की लिट्टी, प्याज तथा नमक खाकर गुजारा करते हैं। मेघना का निर्णय कहानी उन लोगों को सावधान भी करता है जो गरीब मज़दूरों का शोषण करने का अभ्यस्त हो चुके हैं।

७.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : ''कौन-सी उनकी इज्जत बची है, जो बाद में चली जायेगी? उनके बाल-बच्चों को कौन-सी तकलीफ नहीं है, जो बाद में होगी? उन्हें जेल भेजकर किस मुसीबत में डाला

जायेगा, जिस मुसीबत में आज उन्हें नहीं डाला जा रहा है? उसके सामने एक मात्र रास्ता है अपने हक के लिए बाबुओं से टकराना।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानी' के 'मेघना का निर्णय' शीर्षक से उद्धृत है। इस कहानी के लेखक हिन्दी साहित्य के जाने-माने कथाकार 'मिथिलेश्वरजी' हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण में मेघना दो-तीन दिनों की बेचैनी के बाद एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेता है कि अपने हक और रोटी के लिए उसे अपने साथियों के साथ गाँव के बाबुओं और शहर के मालिकों से टकराना होगा ताकि फिर कभी कोई मालिक या गाँव के बाबू उनके हक और रोटी के बीच में न आये। मेघना अच्छी तरह से जानता है कि ऐसे कदम से मजदूरों की घरवाली और बच्चों के साथ भी बड़े लोग अत्याचार करने में संकोच नहीं करेंगे।

व्याख्या : मेघना अपने मज़दूर साथियों के शहर से आने का इंतजार कुल्हड़िया स्टेशन पर कर रहा था। जब उसके मज़दूर साथी आयेंगे, तब वह उन्हें समझायेगा कि हम सब अपनी जिस इज्जत को बचाने के लिए डर रहे हैं, वह इज्जत गाँव के बाबुओं और शहर के मालिकों द्वारा हर रोज मिट्टी में मिला दी जाती है। गाँव के बाबुओं का अत्याचार बर्दाश्त करने के बाद भी उन्हें और उनके पत्नी-बच्चों को मुसीबत और तकलीफ उठानी पड़ती है। मेघना अपने निर्भय व्यक्तित्त्व के कारण सोचने लगता है कि जब ये सारे कष्ट हम सब सहन कर ही रहे हैं, तो फिर गाँव के बाबुओं और शहर के मालिकों से क्यों डरे? बल्कि उन्हें मुँहतोड़ ऐसा जवाब दें ताकि वह फिर कभी मजदूरों पर अत्याचार करने से डरे। वह जानता है कि इस संघर्ष के दौरान उन्हें जेल में भी भेजा जा सकता है, लेकिन अब उसे जेल जाने का भी डर नहीं है। भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए वह वर्तमान की तिलांजलि देने को पूर्णतः तैयार है। मेघना अच्छी तरह जानता है कि उसके जैसे शोषित मजदूरों के सामने एक ही रास्ता है कि अपने हक के लिए बाबुओं से टकराना। मेघना यह निर्णय लेने के बाद गर्व एवं शान्ति का अनुभव करता है।

विशेष :

- यहाँ पर मज़दूरों पर अत्याचार एवं शोषण की करुण व्यथा का वर्णन है।
- यहाँ पर वीर रस की अभिव्यंजना हुई है।
- भाषा सरल, प्रभावमयी तथा उत्साहवर्धक है।
- इस अवतरण में मेघना निर्णय लेने के बाद आत्म संतुष्टि का अनुभव करता है।

७ अ ८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १ मेघना अपने मजदूर मित्रों के साथ किस शहर मजदूरी करने जाता था?

(क) कुल्हाडिया (ख) बरिया (ग) आरा (घ) नरिया

प्रश्न २ हेड मिस्त्री मजदूरों के मजदूरी में से कितना रुपया काट लेते थे?

(क) दो रुपया (ख) एक रुपया (ग) चार रुपया (घ) तीन रुपया

प्रश्न ३ मेघना के गाँव का नाम क्या था?

(क) कुल्हडिया (ख) आरा (ग)भदवर (घ) बरिया

प्रश्न ४ रेलबाबू मेघना को कितने रुपये दे रहे थे?

(क) पन्द्रह (ख) बीस (ग) दस (घ) सत्रह

प्रश्न ५ रेलबाबू के बँगले पर मेघना के साथ कौन गया था?

(क) जगेसर (ख) जगुआ (ग) कलुआ (घ) तपेसर

७ अ ९ बोध प्रश्न

प्रश्न १ मेघना के काम पर न जाने का क्या कारण था?

प्रश्न २ कहानी में वर्णित समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न ३ मेघना के चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न ४ 'मेघना का निर्णय' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ५ 'मेघना का निर्णय' कहानी का शीर्षक आपको कहाँ तक सार्थक लगता है?

८

तिरिया जनम

इकाई की रूपरेखा

८.१ प्रस्तावना
८.२ कथानक
८.३ चरित्र चित्रण
८.४ भाषा शैली
८.५ शीर्षक
८.६ उद्देश्य
८.७ संदर्भ सहित व्याख्या
८.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
८.९ बोध प्रश्न

८.१ प्रस्तावना

''तिरिया जनम'' लेखक मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित बहुचर्चित कहानी है। इसका प्रकाशन सन् १९८२ ई. में हुआ था। इस कहानी में लेखक ने माँ-बाप द्वारा बेटा और बेटी के प्रति लिए जानेवाले पक्षपातपूर्ण व्यवहार को स्पष्ट किया है। बचपन में सुनयना को इसी कारण आगे पढ़ाया नहीं जाता है। एक बार उसका विवाह करने के बाद माँ-बाप अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं। ससुराल में पति द्वारा मार खाती है लेकिन फिर भी माँ बाप उसके प्रति बेफिक हो जाते हैं। सुनयना ससुराल में सारे कष्टों को सहती रहती है लेकिन एक दिन उसका नपुंसक पति दूसरी शादी कर लेता है। अन्त में सुनयना फैसला करती है कि नौकरानी से भी बत्तर जिंदगी जीने से अच्छा वह घर छोड़कर मामा के यहाँ चली जाएगी।

८.२ कथानक

सुनयना को उसके पति ने फिर पीटा है लेकिन आज की मार उसके लिए सबसे गहरी है क्योंकि आज ही उसके पति की नई पत्नी आयी है। सुनयना को पहले गलती अपने ससुरालवालों की लगती थी लेकिन अब वह समझ गयी है कि दोष उसका है क्योंकि उसने नारी रूप में जन्म पाया है। उस रात सुनयना अपने बचपन से लेकर आज तक की जीवन कहानी को याद करने लगती है। उसे अच्छी तरह याद है कि वह बचपन में पढ़ाकू थी लेकिन प्राइमरी स्कूल के बाद पिता जी ने उसे आगे पढ़ने नहीं दिया। अगर पिताजी ने उसे पढ़ाया होता, तो वह नौकरी करके इस दुर्गति से छुटकारा पा लेती।

आज पति अपनी नई पत्नी के साथ सुहागरात मना रहा है और सुनयना को बेकार व फालतू चीजोंवाले कमरे में रहने के लिए भेज दिया गया है। उसके बाबा और बाबूजी सुनयना के इस हालत से परिचित होने के बावजूद भी उसे मायके रखने के पक्ष में न थे। उनका मानना था कि किस्मत में सुख लिखा होगा तो उसे अवश्य मिलेगा। सुनयना कई बार दूसरी औरतों की तरह ससुराल और पति के अत्याचार को सहने की कोशिश करती है लेकिन उसका मन विद्रोह कर उठता है। उसे याद है कि लड़की के रूप में जन्म लेकर वह अपने

परिवारवालों पर बोझ बन गयी थी क्योंकि उसके विवाह में दहेज देना था। सुनयना अपने मामा के बारे में सोचती है कि वह गाँव में रहकर भी गाँव के सोच से बिलकुल अलग हैं। सुनयना के मामा लड़की-लड़का में कोई फर्क नहीं मानते। दशहरा के अवसर पर सुनयना को मालूम पड़ता है कि शहर की औरतों व गाँव की औरतों में कितना अन्तर है। एक बार ससुराल में उसके साथ अत्याचार होने पर उसने अपने मामा को बुलाया था लेकिन ससुरालवालों ने उन्हें गाली-गलौज देकर घर से निकाल दिया था। जब उसने इसका विरोध किया था, तो उसे डण्डों से पीटा गया था।

सुनयना को अच्छी तरह याद है, जब वह दुलहन बनकर इस घर आयी थी, तो उसके रूप और जवानी पर मोहित होकर पति ने उसकी खूब आवभगत की थी। उसका पति बेहिसाब खैनी खाता है और बीड़ी पीता है। एक दिन उसने प्रेम से पति को समझाया था इसे खाने से बीमारियाँ होती है तथा मुँह से बदबू आती है। यह सुन पति आग बबूला हो गया था तथा सास और ननद ने भी उसे खूब धिक्कारा था। इसके बाद जब सुनयना ने दोबारा पति को इस बारे समझाने की कोशिश की, तो पति ने उसे पहली बार मारा था। एक बार हाथ खुलने पर आजतक वह अनेक बार पीटी जा चुकी है। उसके पति का मानना था कि औरत लतियानेवाली जाति है। सुनयना की सास उसे मार खाने पर समझाती कि पति के मार में प्यार है। सुनयना सोचती है कि उसकी सास एक औरत होकर भी क्यों उसके साथ इतना अत्याचार करती है? उसके मामा कहते थे कि जिसके साथ जैसा होता है वह वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करता है।

पति के साथ रहते उसे दस वर्ष हो गये हैं लेकिन आजतक उसे कोई संतान न हुआ। सास ने उसे बाझ व बहिला का नाम दे दिया तथा वंश चलाने के लिए बेटे की दूसरी शादी कराने की बात करने लगती है। मामा ने पत्र के माध्यम से सुनयना की अच्छे डॉक्टर को दिखाने की सलाह दी थी। डॉक्टर को दिखाने पर पता चला कि कमी सुनयना में नहीं बल्कि उसके पति में है। यह बात सुनकर पूरा घर डॉक्टर की बात को झूठा कहने लगा। एक लड़कीवाले ने सब कुछ जानने के बावजूद भी अपनी लड़की का विवाह सुनयना के नपुंसक पति से कर दिया। इस खबर से सुनयना के बाबा व बाबू जी को आश्चय तो हुआ लेकिन वह तुरन्त इसे स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वह अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो चुके थे। सुनयना सोचती है कि इस जीवन से छुटकारा पाने के लिए दूसरी औरतों की तरह वह आत्महत्या भी नहीं कर सकती है क्योंकि उसके मामा कहते हैं कि आत्महत्या जीत नहीं हार है।

अंत में वह फैसला करती है कि एक दिन वह भागकर मामा के घर चली जाएगी। यह सब सोचते-सोचते सुबह हो जाती है। तभी पति कहता है कि इतना दिन चढ़ गया लेकिन अभी तक चूल्हा नहीं जला। जल्दी चलकर चूल्हा जलाओ, नयी बहुरिया आयी है। सुनयना अपनी योजना को गोपनीय रखते हुये उठ जाती है।

८.३ चरित्र चित्रण सुनयना

सुनयना इस कहानी की मुख्य पात्र है। बचपन में उसे पढ़ने-लिखने की बड़ी इच्छा थी। स्लेट-पेन्सिल के लिए वह अपने बड़े भाइयों से झगड़ पड़ती थी। शाम को जब बाबा सभी बच्चों से सवाल पूछते तो उसके भाई अपना मुँह छिपाने लगते लेकिन वह बाबा के सवालों का जवाब धड़ाधड़ देती थी। पूरा पहाड़ा उसे मुँहजबानी याद था। गाँव की परम्परा के अनुसार अपर प्राइमरी स्कूल पास करने के बाद अन्य लड़कियों की भाँति उसकी पढ़ाई भी बंद करवा दी जाती है। सुनयना को इस बात का दुख है कि अगर उसके बाबू जी लड़का-लड़की में फर्क न मानकर उसे आगे पढ़ा दिये होते, तो वह ससुराल के अत्याचार से मुक्त होकर नौकरी करके अपना गुजारा कर लेती।

सुनयना को जब पता चलता है कि उसका पति खैनी खाता है और बीड़ी पीता है, तो वह उसे समझाती है। लेकिन इसका परिणाम उल्टा ही होता है। पति उसे मारता है। तब से वह कई बार पति से मार खा चुकी है। सुनयना को न मायके से प्रेम मिलता है और न ससुराल से। सुनयना के शादी को दस वर्ष बीत चुका है लेकिन आज तक उसे कोई संतान न हुआ। मामाजी के कहने पर जब सुनयना ने डॉक्टर को दिखाया तो उसे मालूम हुआ कि कमी उसमें नहीं है बल्कि उसके पति में ही है। सुनयना को लड़कियों की करुण दशा पर गहरा दुख है। उसे पता है कि सिर्फ मामा ही उसकी मदद कर सकते हैं। उसे समाज की उस सोच से घृणा होती है, जो लड़कियों के जन्म को अपशकुन मानते है। वह भले ही गाँव में रहती है लेकिन उसकी सोच शहरी लड़कियों की भाँति है। सुनयना का पति अपने अन्दर की कमी को पहचानते हुये भी दूसरी शादी करता है। दूसरी शादी के बाद सुनयना को बेकार सामानवाले कमरे में रहने के लिए भेज दिया जाता है। सुनयना इस नारकीय जीवन से छुटकारा पाना चाहती है। अंत में वह फैसला करती है कि एक दिन वह चुपके से मामा के घर चली जाएगी। अपनी इस योजना को वह गुप्त ही रखती है। इस प्रकार सुनयना एक समझदार व गुणवान स्त्री है लेकिन अन्य स्त्रियों की भाँति वह ससुराल का अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर पाती है और न ही डर कर आत्महत्या कर पाती है।

सुनयना का पति

सुनयना का पति पढ़ा-लिखा नहीं है। गाँव की पुरानी सोच व स्त्रियों को दबा कर रखनेवाला युवक है। वह खैनी खाता है तथा बीड़ी पीता है। जब उसकी नयी-नयी शादी हुई थी, तो वह सुनयना के रूप और जवानी से काफी प्रभावित हुआ था तथा उसकी खूब आवभगत करता था लेकिन जैसे ही कुछ दिन बिता वह अपने असली रूप में आ गया। उसका मानना था कि औरत लतियाने वाली जाति होती है। वह सुनयना को हाथ-पैर, डण्डा आदि चीजों से मारता था। जब डॉक्टर उसे बताता है कि उसके वीर्य में कमी है, तो वह इस बात को स्वीकार नहीं करता है। वह कहता है कि कमी तो केवल औरतों में होती है। पुरुष तो मर्द होता है।

अपनी दूसरी शादी की उसे इतनी खुशी है कि वह सुनयना के प्रति बिलकुल उदासीन हो जाता है। अपनी नयी-नयी आयी पत्नी के साथ खुश होने का दिखावा करता है। सुनयना को अपनी नयी पत्नी की सेवा में लगा देता है। वह अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला बेटा है। माँ जब उससे दूसरी शादी की बात करती है, तो वह तुरन्त तैयार हो जाता है। एक बार भी उसे सुनयना का ध्यान नहीं आता है। डॉक्टर के पास वह अपने पिता जी के कहने पर ही जाता है। उसे इस बात का जरा भी ख्याल न था कि उसकी भी एक बहन है। पत्नी को मारना-पीटना और उनपर शासन करना अपनी ताकत समझता है। इस प्रकार सुनयना का पति अनपढ़ होने के कारण मूर्ख और अत्याचारी स्वभाव का युवक है। स्त्रियों पर अत्याचार करना वह अपना हक समझता है। पत्नी को मात्र भोग की वस्तु समझता है।

मामा जी

सुनयना को अपने मामा जी के प्रति अपार प्रेम है। मामा जी भले ही गाँव में रहते हैं लेकिन उनकी सोच गाँव से बिलकुल अलग है। वह लड़का और लड़की में कोई फर्क नहीं मानते थे। वह लड़कियों को पढ़ाने के पक्षधर थे। उनका मानना था कि लड़की को भी पढ़ा-लिखा देना चाहिए ताकि वह आत्मनिर्भर बन सकें। मामा जी सुनयना का विवाह शहर के किसी पढ़े-लिखे लड़के के साथ करवाना चाहते थे लेकिन सुनयना कम पढ़ी-लिखी थी इसलिए उसका विवाह गाँव के एक अनपढ़ लड़के से हो जाता है। मामा जी शहर में नौकरी करते थे लेकिन रिटायर होने के बाद गाँव में ही रहने लगते हैं। वह गाँव के पहले व्यक्ति हैं, जो अपनी

पत्नी को बराबरी का दर्जा देते हैं। उनका दाम्पत्य जीवन खुशहाल है। दोनों पति-पत्नी के बीच इतना प्रेम है कि गाँव में उनकी आलोचना की जाती है। जब सुनयना के ससुराल वाले उसपर अत्याचार करते हैं, तो मामा जी उन्हें समझाने जाते हैं लेकिन उनकी एक बात भी नहीं सुनी जाती है और उन्हें गाली-गलौज देकर घर से निकाल दिया जाता है। मामा जी सुनयना को बताते हैं कि मर्दो ने औरतों पर शासन चलाने में धर्मशास्त्र की रचना की है। औरत किसी मायने में मर्द से कम नहीं हैं। वह भी पढ़-लिखकर मर्द की तरह शासन चला सकती है।

इस प्रकार सुनयना के मामा जी स्त्री जाति का सम्मान करनेवाले तथा उन्हें पढ़ा-लिखाकर आगे बढ़ने के पक्षधर हैं। अपनी पत्नी को मारना-पीटना उन्हें कतई पसन्द न था। वह इसे कायरतका समझते हैं। जो औरते ससुराल से तंग आकर आत्महत्या कर लेती हैं वह कमजोर होती है। उन्हें डटकर इस अत्याचार का सामना करना चाहिए। उनके इसी विचार के कारण कई बार आत्महत्या की बात सोचकर भी सुनयना रूक जाती है।

८.४ भाषा शैली

'तिरिया जनम' एक ऐसी नारी की करुण गाथा है, जिसे ससुराल एवं मायके दोनों जगहों से ठुकरा दिया जाता है। ऐसी संवेदनशील कथा के लिए लेखक मिथिलेश्वर जी ने जिस भाषा का प्रयोग किया है, वह पाठक को उसी संवेदना का अनुभव कराने में पूर्णतः सफल हुई है, जिस संवेदना को स्वयं लेखक सुनयना का वर्णन करते समय महसूस किये होंगे। इस कहानी की भाषा बिल्कुल स्पष्ट एवं जनसामान्य की आम भाषा है। लेखक ने अभिधा के साथ-साथ व्यंग्य का भी प्रयोग किया है। जैसे - ''लड़के आकाश कुसुम होते है और लड़कियाँ पाँव की धूल।'' ''लड़कियाँ तो खूँटे की गाय हैं... एक जगह से खोलकर दूसरी जगह बाँध दो।'' तथा ''पुत्र जन्म शुभ माना जाता है, पुत्री जन्म अशुभ'' आदि।

सुनयना के जीवन को सजीव बनाने के लिए लेखक ने अनेक ऐसे मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग किया है, जो कहानी को और अधिक संवेदनशील बना देते हैं। कहानी में प्रयोग किये गये कुछ मुहावरे इस प्रकार हैं- आठ-आठ आँसू बहाना, पानी फेर देना, खरी-खोटी सुनाना, गाढ़ी नींद सोना, सीना गर्व से फूल जाना, माथे पर चढ़ा लेना, भीगी बिल्ली बनना, आग बबूला होना, काठ मार देना, अड़गा लगा देना, आँखें लाल हो जाना आदि। कहानी में लेखक ने लोक प्रचलित कहावतों का भी प्रयोग किया है। जैसे - अनब्याही बेटी मरे सारे दुख छुटि जाय। इसके अतिरिक्त कहानी को और भावपूर्ण बनाने के लिए लेखक ने बिहार की एक लोकगीत का भी प्रयोग किया है-

''जाहू हम जनिती धियवा कोंखी रे जनमिहे।
पिहितों में मरिच झराई रे।
मरिच के झाके-झुके धियवा मरि जाइति,
छुटि जाइते गुरुवा सन्ताप रे।''

यह लोकगीत लड़कियों के प्रति किये गये दुर्व्यवहार का चिट्ठा खोलकर रख देता है। इस कहानी में अरबी-फारसी के साथ-साथ कुछ ऐसे ग्रामीण शब्द भी आये हैं, जो मूलतः बिहार एवं उत्तर प्रदेश की ठेठ भोजपुरी भाषा है। कहानी में कुछ सूक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे - ''कड़वा यथार्थ चुभता ही है।'' तथा ''आत्महत्या जीत नहीं, हार होती है।'' शैली की दृष्टि से यह कहानी महत्त्वपूर्ण है। स्पष्टता, सजीवता और भावात्मकता वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी इस कहानी की प्रमुख विशेषता है।

८.५ शीर्षक

'तिरिया जनम' कहानी का शीर्षक कहानी की मुख्य पात्र सुनयना के जीवन कथा से जुड़ी हुई है। इस कहानी में लेखक सुनयना की करुण दशा का वर्णन करते हैं। सम्पूर्ण कहानी में सुनयना अपने बचपन से लेकर आज तक के दुखद अनुभवों पर विचार करती है। इस कहानी में सुनयना का तीन जन्म हुआ है। पहला जन्म माँ-बाप के घर जब वह लड़की रूप में पैदा होती है। लड़की के रूप में वह पैदा होकर जो दुखद अनुभव उसे प्राप्त हुआ, वह उसे आज तक याद है। लड़कों से अधिक पढ़ाकू होने के बावजूद भी उसे पढ़ाया नहीं जाता है जबकि लड़के पढ़ने में कमजोर थे। इसके बाद भी उन्हें आगे पढ़ाया जाता है। घर में ही उसे उपेक्षित किया जाता है।

सुनयना का दूसरा जन्म उसके विवाह के रूप में हुआ। वह अपने परिवार को छोड़कर दूसरे परिवार में जाती है। विवाह से पूर्व उसकी माँ उसे भलीभाँति समझा दी थी कि सास-ससुर और पति की सेवा करना ही उसका सबसे बड़ा धर्म है। ससुराल जाकर उसे स्त्री की स्थिति का पता चलता है। पति द्वारा उसे अक्सर पीटा जाता है तथा सास-ससुर व ननद द्वारा उसे बार-बार अपमानित किया जाता है।। संतान न होने पर सास द्वारा ताना मारा जाता है और जब घरवालों को पता चलता है कि कमी उनके बेटे में है, तो वह इस बात को झूठा साबित कर अपने बेटे का दूसरा विवाह कर देते हैं। सुनयना की स्थिति उस घर में ऐसी हो जाती है कि उसे कमरे से निकालकर बेकार सामानवाले कमरे में रहने के लिए कह दिया जाता है। वह मात्र एक नौकरानी भर रह जाती है।

सुनयना का तीसरा जन्म तब होगा जब वह इस दुर्गति से छुटकारा पाकर अपने मामा के घर चली जायेगी। एक मामा ही हैं जहाँ उसे मदद मिल सकती है।

इस प्रकार इस कहानी का शीर्षक 'तिरिया जनम' सुनयना की दुखभरी, जीवन पर आधारित है। अतः कहानी का शीर्षक उपयुक्त और सटीक है।

८.६ उद्देश्य

'तिरिया जनम' कहानी में लेखक मिथिलेश्वर जी ने स्त्री की करुण व दयनीय स्थिति का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। इस कहानी में यह दिखाया गया है कि लड़के के जन्म पर घर में खुशियाँ मनायी जाती है जबकि लड़की के जन्म पर पूरा घर उदास हो जाता है। सुनयना के बाबा कहते हैं कि पुत्री के जन्म होने पर धरती एक बित्ता नीचे धँस जाती है और पुत्र के जन्म के अवसर पर ऐक बित्ता ऊपर उठ आती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ऐसे लोगों की सोच पर व्यंग करते हैं। सुनयना के बाबू जी लड़कों को पढ़ाते हैं क्योंकि वह उनके बुढ़ापे का सहारा बनेंगे तथा दहेज घर ले आयेंगे जबकि लड़की को पढ़ा-लिखाकर क्या फायदा? क्योंकि उन्हें तो दूसरे घर जान है और दहेज लेकर जाना हैं। सुनयना के बाबू जी एक बार सुनयना का विवाह कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते है। एक पिता इतना निर्मोही कैसे हो सकता है कि अपनी लड़की को दुख में देखकर भी अपना मुँह मोड़ लेता है? लड़की के ऊपर ससुराल वाले इतना अत्याचार करते हैं कि वह आत्महत्या करने तक की बात सोच डालती है लेकिन माँ-बाप उसकी मदद करने से साफ इंकार कर देते हैं। उनका कहना था कि अगर सुनयना के भाग्य में सुख लिखा है, तो उसे मिलेगा। लड़कियों के प्रति ऐसी सोच रखनेवालों का इस कहानी के माध्यम से यथार्थ वर्णन किया गया है। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य समाज में नारी के प्रति किये जा रहे अत्याचार का वर्णन करना है।

हम भले ही नारी-सुरक्षा के लिए अनेक कानून बना लिये हैं। लेकिन आज भी समाज में नारियों के प्रति अत्याचार किया जा रही है। पति द्वारा उन्हें जानवरों की तरह पीटा जाता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक नारी से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को उजागर करते हैं।

पुरुष अपने अन्दर कमी होने के बावजूद भी अपने आपको मर्द मानता है। लेखक इस कहानी के माध्यम से समाज के ऐसे लोगों पर व्यंग्य करते हैं, जो पुरुष होने पर गर्व करते हुए स्त्रियों पर अत्याचार करते हैं।

अतः 'तिरिया जनम' कहानी स्त्री प्रधान कहानी है जिसमें स्त्री को मात्र भोग-विलास का साधन माना जाता है। लेखक इस कहानी के माध्यम से समाज में स्त्री की गिरती हुई स्थिति को सुधारने का प्रयास करते हैं।

८.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : 'शहर की मुट्ठीभर औरतों को औरत न बनकर मानव बनकर जीने का अवसर प्राप्त हो गया है, लेकिन गाँव, की औरतों को तो इस परिवर्तित यथार्थ की जानकारी तक नहीं। वे तो यह सुनकर दंग रह जाती हैं कि औरतें भी पढ़-लिखकर मर्दों की तरह शासन चलाती हैं''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानी' के 'तिरिया जनम' शीर्षक से अवतरित है। इस कहानी के लेखक भारतीय ग्रामीण जीवन के चहेते मिथिलेश्वरजी हैं।

प्रसंग : इस अवतरण में सुनयना अपने मामा की बातों को याद कर रही है। उसके मामा लड़का और लड़की में कोई भेद नहीं करते थे। उनका मानना था कि पुरुषों ने औरतों पर शासन चलाने के लिए अपने पक्ष में धर्मशास्त्र की रचना की है। सुनयना रात को सिसकती हुई सोचती है कि पूरे गाँव में एक अकेले उसके मामा ही औरतों की इज्जत और सम्मान करते हैं तथा उन्हें बराबरी का दर्जा देते हैं।

व्याख्या : विवाह से पूर्व सुनयन अक्सर एक प्रश्न में उलझ जाती थी कि लड़का-लड़की में भेद क्यों है? होश सम्भालने पर उसके इस प्रश्न का समाधान उसके मामा ने किया था। सुनयना के मामा ने बताया था कि जिन औरतों को मौका दिया गया उन औरतोंने पुरुषों से बढ़-चढ़कर अपनी योग्यता का परिचय दिया। शहर के शिक्षित वातावरण में औरतों को आगे बढ़ने और जीवन में कुछ करने का मौका तो मिल गया लेकिन गाँवों में निवास करनेवाली औरतों को इस वास्तविक यथार्थ की जानकारी तक नहीं है कि औरतें भी पुरुष की तरह पढ़-लिखकर कार्य कर सकती हैं और आत्मनिर्भर बन सकती हैं। गाँव की औरतें तो यह सुनकर आश्चर्यचकित रह जाती हैं कि औरतें भी शासन चला रही हैं तथा किसी मायने में पुरुष से पीछे नहीं हैं। गाँव की औरतें इस शहरी वातावरण से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। सुनयना अपने ससुरालवालों के अत्याचार से पीड़ित होकर अपने मामा के शब्दों को याद करती है।

विशेष :

- यहाँ पर लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि आज औरतें पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलने में सक्षम हैं।
- इस अवतरण में 'मुट्ठी भर' एवं 'दंग रह जाना' मुहावरों का सुंदर प्रयोग हुआ है।
- इस अवतरण में भारतीय ग्रामीण स्त्रियों का यथार्थ वर्णन है।

८.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १ मामा जी ने पत्र के माध्यम से सुनयना को क्या सलाह दी?

(क) घर से भाग जाने की (ख) आत्महत्या करने की

(ग) डॉक्टर को दिखाने की (घ)विद्रोह करने की

प्रश्न २ अंत में सुनयना क्या फैसला करती है?

(क) आत्महत्या करने की (ख) यातनाएँ सहने की

(ग) मामा के घर भाग जाने की (घ) मायके भाग जाने की

प्रश्न ३ सुनयना को आगे क्यों नहीं पढ़ाया गया?

(क) पढ़ने में कमजोर थी (ख) फीस का पैसा न था

(ग) उसे दूसरे के घर जाना था (घ) उसे शौक न था

प्रश्न ४ सुनयना का पति पहली बार उसे किसलिए मारता है?

(क) काम न करने पर (ख) उसे समझाने पर

(ग) मायके जाने की बात पर (घ) झगड़ा करने पर

८.९ बोध प्रश्न

प्रश्न १ लेखक कहानी के माध्यम से समाज की किस समस्या से हमें अवगत कराना चाहते हैं?

प्रश्न २ सुनयना का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न ३ सुनयना के पति का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न ४ 'तिरिया जनम' कहानी का शीर्षक स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ५ 'तिरिया जनम' कहानी का उद्देश्य समझाकर लिखिए।

❖❖❖

८-अ

हरिहर काका

इकाई की रूपरेखा

८.अ.१ प्रस्तावना
८.अ.२ कथानक
८.अ.३ चरित्र चित्रण
८.अ.४ भाषा शैली
८.अ.५ शीर्षक चित्रण
८.अ.६ उद्देश्य
८.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या
८.अ.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
८.अ.९ बोध प्रश्न

८.अ.१ प्रस्तावना

'हरिहर काका' बिहार प्राप्त की एक ग्रामीण जीवन से जुड़ी हुई कहानी है। इस कहानी में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि धन के लालच में स्वार्थांध व्यक्ति भाई के रिश्ते को भी भूल जाता है। हरिहर काका इस कहानी के मुख्य पात्र हैं। जिनके पास कुल पन्द्रह बी जमीन है। जिसकी कीमत लगभग दो लाख आँकी गयी है। सन्तान न होने के कारण हरिहर काका की इस जमीन पर उनके भाई, गाँव के साधु-महंथ, नेता, डाकू एवं रिश्तेदारों की नजर रहती है। इस जमीन के कारण उन्हें मारा-पिटा जाता है, जिसके कारण वह सबसे अलग होकर मौन धारण कर लेते हैं।

८.अ.२ कथानक

लेखक हरिहर काका के घर से लौटे हैं लेकिन आज वह जरूर लेखक से कुछ छिपा रहे थें। हरिहर काका के दुख का कारण बताने से पूर्व लेखक अपने गाँव के बारे में बताते हैं। लेखक के गाँव में तीन महत्त्वपूर्ण स्थान है। पहला पश्चिम में बड़ा सा तालाब, दूसरा गाँव के मध्य में बरगद का पेड़ तथा तीसरा पूर्व में ठाकुर जी का विशाल मन्दिर। लेखक का गाँव जब पूरी तरह बसा नहीं था, तब एक सन्त आकर एक जगह पर ठाकुरजी का पूजा करने लगते हैं। बाद में लोगों के चन्दे से उसी जगह पर ठाकुरजी का ठाकरबारी (मन्दिर) बनवा दिया जाता है। गाँव के लोगों का मानना है कि ठाकुर जी का दर्शन करते ही वह पापमुक्त हो जाते हैं। हरिहर काका चार भाई हैं। उनका नम्बर दूसरा है। उन्हें छोड़कर शेष तीनों भाइयों को संतान है। उन्होंने संतान सुख प्राप्त करने के लिए दो शादियाँ की लेकिन दोनों पत्नी उन्हें संतान सुख देने से पूर्व ही स्वर्गवासी हो गयी। हरिहर काका के भाइयों ने अपनी-अपनी पत्नियों को समझा दिया था कि हरिहर काका की सेवा में कोई कमी न होने पाये। लेकिन उसके बाद भी उन्हें बचा-खुचा ही खाना मिलता था। एक दिन हरिहर काका का क्रोध भड़क उठता है और भाई की पत्नियों से कह देते हैं कि मैं मुफ्त में नहीं खाता हूँ क्योंकि मेरे हिस्से का अनाज़ तुम लोग ही लेते हो। यह बात जब ठाकुरबारी के महन्त जी को पता चलती है, तो

वह खुशी से झूम उठते हैं क्योंकि वह ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। दूसरे दिन वह हरिहर काका से मिलकर उन्हें ठाकुरबारी ले आते हैं और उन्हें समझाने लगते हैं कि भाइयों की नजर उनके पन्द्रह बीघे खेत पर है इसलिए वे उनकी झूठी सेवा करते हैं। मनन्थ जी उनसे कहते हैं कि वह अपने हिस्से की जमीन ठाकुरजी के नाम लिख दें। जिससे उका नाम चारों ओर फैल जाएगा। एक रात हरिहर काका ठाकुर बारी में ही रहते हैं। उधर तीनो भाइयों को रात भर नींद नहीं आयी। वह सुबह हरिहर काका को मनाकर कर ले आते हैं क्योंकि वह अच्छी तरह जानते थे कि पन्दर बीघे खेत की कीमत कम से कम दो लाख है। अब उनकी सेवा सत्कार इस तरह से की जाने लगी जैसे किसी मेहमान की होती है। गाँव में इस बात की चर्चा होने लगी कि हरिहर काका को अपनी जमीन ठाकुर जी को सौंप देनी चाहिए तथा कुछ लोग कहने लगे कि यह परिवारवालों के साथ अन्याय होगा। इस तरह पूरा गाँव दो वर्ग में बँट गया। तीनों भाई हरिहर काका से कहने लगे कि वह अपनी जमीन उनके नाम लिख दें। हरिहर काका ने उन्हें समझाया कि लिखने की क्या जरूरत है? क्योंकि मरने के बाद तो अपने-आप तुम्हारी हो जाएगी। महन्थ जी को चिंता हो रही थी कि जाल में आयी चिड़िया निकलनेवाली है। वह दो खून कर दस साल की सज़ा काट चुके थे। वह अपने वर्ग के लोगों के साथ बन्दूक, गडाँसा लेकर हरिहर काका को उनके घर से उठवा लेते हैं। तीनों भाई इसकी खबर पुलिस को देते हैं लेकिन पुलिस के आने से पूर्व ही महन्थ जी ने जबरन कोरे कागज पर हरिहर काका के अँगूठे का निशान ले लिया और उनका हाथ-पैर बाँधकर फरार हो गयें। बाद में हरिहर काका ने पुलिस के सामने साधुओं की पूरी पोल खोल दी। इसके बाद भाईयों ने हरिहर काका की सुरक्षा इतनी बढ़ा दी कि हर वक्त उनके साथ आठ-दस हथियार धारी मौजूद रहते थे। उधर ठाकुरबारी में एक से बढ़कर एक डाकू हथियार सहित जमा हो रहे थे।

हरिहर काका के भाइयों तथा रिश्तेदारों ने उन्हें समझाया कि वह अपनी जमीन भाइयों के नाम लिख दें। जब इस बार भी उन्होंने साफ मना कर दिया, तो भाइयों ने भी वहीं रूप धारण कर लिया, जो महन्थ ने किया था। भाइयों ने भी जबरन उनके अँगूठें की निशान ले ली तथा इतना मारा कि पूरे शरीर पर जख्म के निशान आ गयेथे। महन्थ जी रातों-रात पुलिस लेकर आ पहुँचे लेकिन उससे पहले ही वे लोग भाग चुके थे। इसके बाद हरिहर काका अपने परिवार से अलग एक नौकर रखकर रहने लगे थे। पुलिस उनकी सुरक्षा के लिए चार राइफलधारी जवान भेज देती है। वास्तव में दोनों वर्गों ने सरकार से पैरवी करके हरिहर काका के लिए जवान लगवाये थे। दोनों ने एक दूसरे से हरिहर काका के जान को खतरा बताया था। हरिहर काका के ससुराल वाले आकर उन्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे लेकिन अब तक वह अच्छी तरह समझ गये थे कि यह सब पन्द्रह बीघे जमीन की ही माया है। गाँव में एक नेता जी हैं, जो न तो नौकरी करते हैं और न ही खेती। फिर भी बारह महीने मौज से रहते हैं। उन्होंने हरिहर काका को समझाया कि उस जमीन पर 'हरिहर उच्च विद्यालय' के नाम से एक स्कूल खोल दिया जाये। जिससे उनका नाम सदा चलता रहे लेकिन हरिहर काका नेता जी के स्वार्थ को समझ जाते हैं।

गाँववाले कहने लगते हैं कि जिस दिन हरिहर काका मरेंगे, उस दिन खून की नदी बहेगी। हरिहर काका ने स्पष्ट अपना बयान दे दिया था कि दोनों में से वह किसी को अपनी सम्पत्ति नहीं देंगे। महन्थ जी और उनके भाई इस बात का अफसोस करने लगते हैं कि अँगूठे का निशान लेने के बाद उन्हें खत्म कर देना चाहिए था। हरिहर काका के भाइयों को डाकू बुटन सिंह ने खेत दखल करवाने का भरोसा दिया था। इसके बदले उसने पाँच बीघे खेत लेना तय किया था। उधर महन्थ जी ने देश के कोने-कोने से नागों और साधुओं को बुलाना तय कर लिया था। वह आकर पूरे गाँव को धूल में मिला देंगे। हरिहर काका तो बिलकुल मौन धारण

कर अपनी जिंदगी काट रहे थे। किसी के प्रश्नों का जवाब भी नहीं देते हैं। ऐसा लगता है कि वह गूँगेपन का शिकार हो गये हैं। सारा गाँव उनकी बात करता लेकिन वह बिलकुल मौन धारण कर लिये थे। वह अपना यही दुख लेखक से भी नहीं कह पाते हैं।

८.अ.३ चरित्र चित्रण

हरिहर काका का घर लेखक के घर के बगल में है। हरिहर गाँव के सीधे-सादे ग्रामीण किसान हैं, जो पन्द्रह बीघे खेत के मालिक है। अपने चारों भाइयों में उनका नम्बर दूसरा है। सभी भाइयों को संतान सुख प्राप्त है लेकिन हरिहर काका की दो-दो शादियाँ होने के बावजूद भी न तो संतान सुख प्राप्त हो सका और न ही पत्नी सुख क्योंकि उनकी दोनों पत्नियाँ स्वर्गवासी हो गयीं। गाँव के लोग उन्हें तीसरी शादी की सलाह देते हैं लेकिन अपनी गिरती उम्र और धार्मिक संस्कारों के कारण उन्होंने साफ मना कर दिया।

हरिहर काका को बच्चों से काफी लगाव व प्रेम था। लेखक को वह अपने बेटे की तरह प्रेम करते थे। हरिहर काका भले ही ज्यादा उम्र के थे लेकिन उन्होंने अपने उम्र का फासला मिटाकर लेखक के साथ गहरी दोस्ती की। हरिहर काका को भगवान में गहरी आस्था थी। ठाकुरबारी के महन्थ व पुजारी की वह बहुत इज्जत करते थे लेकिन महन्थ जी का वास्तविक रूप देखकर वह समझ गये थे कि ठाकुरबारी पर डाकुओं का डेरा है। उन्हें अपने परिवार व खून के रिश्ते पर पूर्ण विश्वास था लेकिन उनका वह भ्रम भी टूट जाता है। अपने भाइयों से उन्हें कदापि यह उम्मीद न थी कि वह भी महन्थ जैसा जबरन उनके अँगूठे का निशान ले लेंगे। इतना ही नहीं हरिहर काका को उनके भाइयों ने मारा-पीटा भी था।

हरिहर काका जितने ही सीधे थे। समय उनको उतना ही चालाक बनाता चला गया। अब वह अच्छी तरह समझ गये थे सबकी नजर उनके पन्द्रह बीघे जमीन पर है। हरिहर काका को संतान के न होने का दुख हमेशा सताता था। संतान न होने से उत्पन्न हुई भयानक स्थिति वह अपनी आँखों से देख रहे थे। हरिहर काका का इतना बड़ा परिवार होने के बावजूद भी वह बिलकुल अकेले पड़ गये थे। हरिहर काका इतने सीधे थे कि महन्थ के समझाने पर कि अपनी जमीन ठाकुर जी के नाम कर दो वह एक पल के लिए सोचने लगते हैं लेकिन दूसरे ही पल जब उन्हें भाइयों की याद आती है, तो वह सोचने लगते हैं कि जिसका कोई नहीं होता है, वह दान-पुण्य करता है। उनके तो अपने भाई-भतीजे हैं। इससे यह पता चलता है कि परिवार के प्रति उनके मन में प्रेम था लेकिन भाइयों के गलत व उद्दंड व्यवहार के कारण उनका प्रेम समाप्त हो जाता है। वह समझ गये थे कि दुनिया में सब पैसे के साथी हैं। हरिहर काका भले ही पढ़े-लिखे न थे लेकिन वह इतना जान गये थे कि जब तक उनके पास पन्द्रह बीघे खेत है, तब तक ही उनकी पूछ-पछोर है। गाँव के रमेसर की विधवा की हालत वह अपनी आँखों से देख चुके थे। उसने जीते जी अपनी सम्पत्ति देवरों के नाम कर दी थी। बाद में उसकी दुर्गति हो गयी थी। हरिहर काका के साथ इतना अत्याचार किया गया था कि वह बिलकुल गाँववालों की तरफ से मुँह मोड़ लेते हैं। यहाँ तक कि वह लेखक से भी कम बोलने लगे थे। अब उन्हें किसी पर विश्वास न रह गया था। इसलिए उन्होंने बिलकुल मौन धारण कर लिया था। उनकी मृत्यु के बाद जो भयानक तूफान आनेवाला था। उसका आभास उन्हें पहले ही हो गया था।

अतः हरिहर काका बच्चों से स्नेह करनेवाले, परिवार में गहरी आस्था रखनेवाले, साधु-संतों व महन्थों का आदर-सम्मान करनेवाले तथा भगवान पर भरोसा रखनेवाले गाँव के सीधे-सादे ग्रामीण व्यक्ति हैं लेकिन परिस्थिति उन्हें बिलकुल अलग बना देती है। अब गाँव के किसी भी व्यक्ति पर उन्हें विश्वास नहीं है।

महन्थ जी

महन्थ जी ठाकुर जी के ठाकुरबारी में पूजा-पाठ व धर्म के विकास में लगे रहते थे। गाँव के लोगों को धर्म व भगवत् भक्ति का ज्ञान व उपदेश देते थे। वह लडाकू और दबंग प्रकृति के आदमी हैं। दो खून करके दस साल जेल की सज़ा काट लेने के बाद महन्थ बनकर धर्म-कर्म का कार्य करने लगे थे।

जब उन्हें पुजारी जी द्वारा मालूम पड़ता है कि हरिहर काका अपने भाइयों की पत्नियों पर गुस्सा होकर कह रहे थे कि मुफ्त में नहीं खाता हूँ, तो वह खुश हो जाते हैं क्योंकि महन्थ जी ऐसे ही दिन की प्रतीक्षा कई वर्षों से कर रहे थे कि कब भाइयों में दरार पड़े और वह उसका फायदा उठा सकें। संयोग से वह दिन आ गया। महन्थ जी जानते थे कि गाँव में उनकी बड़ी इज्जत व सम्मान है। इसलिए पहले वह प्रेम और धार्मिक तर्क के आधार पर हरिहर काका को समझाते हैं कि वह अपनी सम्पत्ति ठाकुर जी के नाम कर दें लेकिन जब वह ऐसा नहीं करते हैं, तो महन्थ अपना वास्तविक रूप दिखाकर उन्हें अगवा कर लिया तथा जबरन कोरे कागज पर अँगूठे का निशान ले लिया। इस तरह महन्थ जी महन्थ के वेश में एक लुटेरे थे। महन्थ जी धर्म की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं लेकिन स्वयं ही अधर्म करते हैं। गाँव में उनकी जो इज्जत थी, वह धीरे-धीरे खत्म होती जा रही थी। लोग उन्हें चोर-डाकू तक कहने लगे थे। महन्थ जी का गिरोह पूरे भारत के मन्दिरों और मठों में फैला हुआ था। उनके एक आदेश से अयोध्या, हरिद्वारा और प्रयाग से हजारों की संख्या में साधु-नागा आकर गाँव को नष्ट कर सकते हैं।

महन्थ जी पुलिस को देखकर जरूर भाग जाते हैं लेकिन अपनी ऊँची पहुँच के कारण हरिहर काका के लिए चार जवान की व्यवस्था भी वही करते हैं। यह महन्थ जी की ही कृपा थी कि पूरा गाँव दो गुट में बँट गया था और कभी भी उस गाँव में भयंकर तूफान आ सकता था।

८.अ.४ भाषा शैली

'हरिहर काका' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित एक लम्बी कहानी है। इसकी भाषा सुगम एवं सजीव है। साहित्य में उसी भाषा को महत्त्व प्रदान है, जो सर्व साधारण एवं सर्व सुलभ हो। इसकी भाषा पात्रों के अनुकूल है। महन्थ जी द्वारा नीति और भगवद् भक्ति का उपदेश दिया जाता है लेकिन जब उनका वास्तविक चेहरा सामने आता है, तो वह कठोर और अप्रिय बातें भी बोलने लगते हैं। कहानी को सजीवता प्रदान करने के लिए कुछ उदाहरण दिये गये हैं। जैसे - ''कोई नाव बीच मझधार में फंसी हो और उस पर सवार लोग चिल्लाकर भी अपनी रक्षा न कर सकते हो क्योंकि उनकी चिल्लाहट दूर तक फैले सागर के बीच उठती-गिरती लहरों में विलीन हो जाने के अतिरिक्त कर ही क्या सकती है?'' तथा ''जब तक चाँद सूरज रहेंगे, तब तक लोग तुम्हें याद करेंगे।''

भाषा को सुदृढ़ बनाने के लिए लेखक ने अरबी-फारसी, अंग्रेजी और कुछ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया है।

- अरबी-फारसी : खत, मुकदमा, औलाद, इत्मीनान, तकलीफ, औरत, हमसेजियों, मशगूल, बीमारी, माँफी, खातिर, हिमायती, जायदाद, नेक, जायज, नाजायज आदि।

- अंग्रेजी के शब्द - स्टैण्ड, क्लर्की, इंचार्ज आदि।

- ग्रामीण शब्द - दवनी, अगउम, जून, निरबंसिया, हुमाध, तड़के, बय, गुहार, चेत, आदि।

भाषा को चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए लेखक ने सुन्दर मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग किया है। जैसे - फटी आँख न सुहाना, बदन में आग लगना, कान खड़े होना, पाँव पखारना, सिर आँखों पर बैठाना, दिल पसीज जाना, जी-जान से जुट जाना, चंपत हो जाना, आसमान से जमीन पर गिरना, रंगे हाथ पकड़े जाना, खून खौल उठना, दूध की मक्खी हो जाना, धूल में मिला देना आदि। कहानी में लेखक ने कुछ सुन्दर कहावतों का भी प्रयोग किया है। जैसे गूंगेपन का शिकार होना, ईश्वर को एक दोगे तो दस भर पाओगे, इंसान की जुबान से घटनाओं की जुबान ज्यादा पैनी और असरदार होती है आदि। इसके अतिरिक्त भाषा को और

प्रभावमयी बनाने के लिए कुछ सूक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। इसकी एक बानगी देखिये- 'अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरता है।'' लेखक सम्पूर्ण कहानी में हरिहर काका के गूँगेपन का वर्णन करते हुए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किये हैं।

८.अ.५ शीर्षक

इस कहानी का शीर्षक 'हरिहर काका' सर्वथा सार्थक एवं सटीक है, क्योंकि कहानी की सारी घटनाएँ हरिहर काका के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। कहानी के आरम्भ से लेकर अन्त तक यही बताया गया है कि हरिहर काका किस तरह गूँगेपन का शिकार हो जाते हैं। हरिहर काका लेखक को अपने पुत्र की भाँति स्नेह और प्रेम करते थे। इसलिए लेखक उन्हें बचपन से ही 'काका' कहकर पुकारते थे।

पूरा गाँव दो वर्ग में बँट जाता है तथा किसी भी दिन पूरे गाँव में भयंकर युद्ध हो सकता है। इस युद्ध या गाँव की बरबादी का कारण हरिहर काका की पन्द्रह बीघे खेत है। हरिहर काका को कोई संतान नहीं है इसलिए भाइयों तथा ठाकुरबारी के महन्थ द्वारा उनकी सम्पत्ति हड़प लेने की अनेक साजिश की जाती है लेकिन वे लोग अन्त तक अपने साजिश में सफल नहीं हो पाते हैं। यह सम्पूर्ण साजिश हरिहर काका के खिलाफ ही की जाती है। इसलिए कहानी का शीर्षक 'हरिहर काका'ही सही लगता है।

लेखक अपने गाँव के जिन चन्द लोगों को सम्मान देते हैं, उनमें हरिहर काका भी एक है। लेखक जब छोटे थे, तो हरिहर काका उन्हें अपने कन्धे पर बैठाकर खिलाते थे लेकिन न जाने क्यों दो दिन से वह बिलकुल शांत हो गये हैं तथा लेखक से भी कम बोल रहे हैं। कहानी के अन्त में उनके चुप्पी का कारण मालूम पड़ता है। हरिहर काका स्वार्थी और लोभी समाज से इतना भयभीत हो जाते हैं कि गूँगेपन का शिकार हो जाते हैं। पूरे गाँव में उनकी ही चर्चा होती हैं लेकिन उनके पास कहने के लिए कोई बात नहीं था।

इस प्रकार वह हरिहर काका जो बच्चों के साथ मनोविनोद करते थे तथा हमेशा हँसते बोलते थे। वहीं हरिहर काका अकेले जीना सीख गये थे। अतः सम्पूर्ण कहानी के केन्द्र बिंदू में हरिहर काका ही हैं। इसलिए कहानी का शीर्षक बिलकुल सार्थक है।

८.अ.६ - उद्देश्य

'हरिहर काका' कहानी लेखक मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित एक लम्बी कहानी है। यह कहानी बिहार के आरा जिले के एक गाँव की है। इस कहानी में हरिहर काका मुख्य पात्र हैं। प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य लोगों के मन मस्तिष्क पर छाये लोभ के पर्दे को दिखाना है। इस आर्थिक लालच में लोग सभी संबंधों और पारिवारिक संबंधों को ताक में रख देते हैं। यह लालच लोगों के अन्दर इस तरह घर कर चुका है कि साधु-महन्थ भी उससे नहीं बच पाते हैं।

इस कहानी में मिथिलेश्वर जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि संसार में सारे रिश्ते-नाते और धर्म-कर्म धन-दौलत से ही जुड़े हुये है। हरिहर काका के पन्द्रह बीघे जमीन पर पूरे गाँव की नज़र है। इस कहानी में हमारे समाज का वास्तविक चेहरा सामने आता है। सम्पत्ति के लालच में लोक इतने स्वार्थी हो जाते हैं कि वह खून तक का रिश्ता भूल जाते हैं। अपने सगे भाई को सम्पत्ति के लिए मारते-पीटते हैं तथा जबरन उनके अँगूठे का निशान कोरे कागज़ पर ले लेते हैं। इतना ही नहीं जिंदा छोड़ देने पर पश्चाताप करते हैं। सम्पत्ति के लालच में झूठी सेवा करते हैं तथा अपनापन दिखाते हैं।

इस कहानी में पूजापाठ करनेवाले पुजारी और महन्थों पर भी करारा व्यंग्य किया गया है। गाँव के महन्थ जी जिन्हें पूजा-पाठ और धर्म-कर्म के कार्यों में मन लगाना चाहिए। वह वर्षों से इस घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब हरिहर काका के घर में झगडा हो और वह उस मौके को भूना सकें। जब सारा उपाय लगाकर भी वह हरिहर काका का पन्द्रह बीघा खेत ठाकुर जी के नाम नहीं करवा पाते हैं, तो भाला-बन्दूक लेकर हरिहर काका को उठवा लेते हैं

और उनका हाथ-पैर बाँधकर जबरन अँगूठे का निशाल ले लेते हैं। हमारे समाज के साधु - सन्यासियों का वास्तविक चेहरा इस कहानी में दिखाई देता है।

इस कहानी में यह बताने का प्रयास किया गया है कि हरिहर काका जैसे सीधे-सादे लोग स्वार्थी और लालची समाज से इतना भयभीत हो जाते हैं कि गूँगेपन का शिकार हो जाते हैं।

८.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : 'मैं घोर आस्तिक हूँ। ईश्वर की सत्ता में मेरा पक्का विश्वास है। लेकिन ईश्वर के नाम पर अपना पेट पोसनेवाले ऐसे ढोंगी-पाखण्डी साधु कभी मेरे विश्वासपात्र नहीं बन सकते।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानियाँ' के 'हरिहर काका' शीर्षक से उद्धृत है। इस कहानी के लेखक हिन्दी कथा साहित्य के जाने-माने ग्रामीण कथाकार 'मिथिलेश्वर जी' हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने साधु-सन्तों एवं झूठी प्रवचनों का खंडन किया है। लेखक का मानना है कि ठाकुरबारी में पूजा-पाठ के नाम पर रहनेवाले अधिकतर लोग आलसी एवं कामचोर हैं। ठाकुर जी को भोग लगाने के नाम पर दोनों जून हलवा-पूड़ी खाते हैं। भोले-भाले ग्रामीणों को अपनी फालतू बातों में उलझाकर रखते हैं ताकि धर्मकाण्डों के नाम पर उनका पेट भरते रहे। इस संबंध में लेखक अपनी राय बताते हुये कहते हैं।

व्याख्या : लेखक अपने गाँव के ठाकुरबारी में कभी-कभी जाते हैं और वहाँ पर रहनेवाले पाखण्डी साधुसंतों का घोर विरोध करते हैं। लेखक स्वयं बहुत बड़े ईश्वर भक्त हैं। उन्हें ईश्वर की सत्ता में पूर्ण विश्वास है। वह जिस ईश्वर की उपासना करते हैं, उसके प्रति उनके मन में किसी तरह का दिखावा नहीं है। वह उन साधु-संतों की इज्ज़त भी करते हैं, जो सर्व भौतिक सुखों को त्याग कर भक्ति में लीन हैं। लेकिन ईश्वर के नाम पर अपना पेट भरनेवाले ढोंगी-पाखण्डी साधु-संतों का जमकर विरोध करते हैं। ऐसे पाखण्डी साधुसंतों पर उन्हें जरा भी विश्वास नहीं है। लेखक के नजरों में ऐसे कामचोर एवं देहचोर साधु-संतों का कौंड़ी भर भी महत्त्व नहीं है।

विशेष :

- इस अवतरण में पाखण्डी साधु-संतों के प्रति लेखक ने अपना रोष व्यक्त किया है।
- लेखक को ईश्वर की सत्ता में पूर्ण विश्वास है।
- लेखक की सोच पर कबीर का प्रभाव लक्षित होता है।
- भाषा सरल एवं प्रभावमयी है।

८.अ.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न १ लेखक के गाँव के पश्चिम ओर क्या है?

(क) तालाब (ख) बरगद का पेड़ (ग) विशाल मन्दिर (घ) बगीचा

प्रश्न २ हरिहर काका की कितनी शादियाँ हुई थी?

(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) एक भी नहीं

प्रश्न ३ हरिहर काका के पास कितनी जमीन थी?

(क) दस बीघे (ख) तेरह बीघे (ग) सत्रह बीघे (घ) पन्द्रह बीघे

प्रश्न ४ हरिहर काका के जमीन पर 'हरिहर उच्च विद्यालय' के नाम से एक स्कूल खोल दिया जाए, यह प्रस्ताव किसका था?

(क) तीनो भाइयों का (ख) महन्थ का (ग) नेताजी का (घ) हरिहर काका का

प्रश्न ५ हरिहर काका के जमीन की कीमत कितनी बताई गई है?

(क) एक लाख (ख) दो लाख (ग) तीन लाख (घ) पाँच लाख

८.अ.८ बोध प्रश्न

प्रश्न १ हरिहर काका के तीनों भाई और महन्थ में क्या फर्क था?

प्रश्न २ कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न ३ कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४ हरिहर काका का चरित्र चित्रण कीजिए।

प्रश्न ५ 'हरिहर काका' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

❖❖❖

९

जी का जंजाल

इकाई की रूपरेखा

९.१ प्रस्तावना
९.२ कथानक
९.३ चरित्र चित्रण
९.४ भाषा शैली
९.५ शीर्षक
९.६ उद्देश्य
९,७ संदर्भ सहित व्याख्या
९.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
९.९ बोध प्रश्न

९.१ प्रस्तावना

'जी का जंजाल' लेखक मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित शहरी जीवन से जुड़ी हुई कहानी है। इस कहानी में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि आज जब हम ज्यादा सभ्य होते जा रहे हैं, तब अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। चार-चार बेटे होने के बावजूद भी माँ के खाने और रहने की सुव्यवस्था एक भी बेटा नहीं कर पाता है। चारों बेटों की निगाह हर वक्त माँ के नाम जमा किए गए रुपयों पर रहती है। रुपया प्राप्त करने लिए माँ की झूठी खुशामद की जाती है और रुपया न मिलने पर उन्हें भला-बुरा तथा कुमाता की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

९.२ कथानक

माँ इस कहानी की मुख्य पात्र हैं। उनके चार पुत्र हैं- कामता, रमता, भिमता और समता। चारों पुत्र नौकरी करते हैं तथा अपना परिवार लेकर अलग रहते हैं। माँ के पति वर्षों पहले दिवंगत हो चुके हैं। चारों पुत्र यह निर्धारित कर लेते हैं कि माँ प्रत्येक पुत्र के घर तीन मास रहेगी। इस समय छोटे पुत्र समता की पारी चल रही है। माँ के स्नान व पूजा-पाठ करने के बाद समता की बहू खाना में भात, दाल और बैंगन की सब्जी देती है। माँ को बुखार और सर्दी-खाँसी थी इसलिए वह पहले ही समता की बहू को बता देती थी कि उनके लिए रोटी बना दे लेकिन वह रोटी नहीं बनाती है और भुनभुनाते हुये अपने बिस्तर पर चली जाती है। बहू का व्यवहार देखकर माँ की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। चार-चार पुत्र होने के बावजूद भी उनका पेट पहाड़ हो गया था। हर बेटे के लिए वह बोझ बन गयी थी। इस दुर्दिन में माँ ने अपनी लड़कियों को भी परख लिया है।

माँ को लगता है कि उनके पति को इस सत्य का भान था। इसलिए वह माँ के नाम रुपये जमा करते थे। लेकिन पति के मृत्यु के बाद बच्चों ने उस पैसे को अपने भविष्य के लिए बैंक में फिक्स करवा दिया। पेंशन की जो रकम माँ को मिलती है, उसी से वह अपने कपड़े-लत्ते, पूजा-पाठ और दवाओं का इंतजाम बड़ी मुश्किल से कर पाती हैं। समता के घर आते ही उसकी पत्नी उसे माँ के विरुद्ध भड़काती है। पत्नी की बात सुनकर वह सीधे माँ के पास

पहुँचकर उन्हें भला-बुरा कहने लगता है। वह माँ से कहने लगता है कि इतने कम वेतन में मैं आपको तरह-तरह का खाना कहाँ से खिलाऊँ ? आप रुपये देकर तो देखिए क्या नहीं बन जाता है? समता की बात सुनकर माँ को दुख होता है। वह जानती थी कि उनका हर पुत्र लोभी है। माँ इस बात को अच्छी तरह से जानती थी कि अगर वह किसी एक बेटे को रुपये देती हैं, तो बाकी तीन बेटे उन्हें चैन से रहने नहीं देंगे। एक बार भिमता को मोटरसाइकिल के लिए माँ ने आधे रुपये दिये थे। रुपये लेने के लिए भिमता उनकी खूब खुशामद करता था। माँ को उसके ऊपर दया आ गयी और उन्होंने एक फिक्स डिपाजिट तुड़वाकर उसे रुपये दे दिया लेकिन न जाने यह खबर कैसे तीनों बेटों को मालूम पड़ गयी। फिर ऐसा महाभारत हुआ कि तीनों को बराबर रुपये देने के बाद ही झगड़ा शान्त हुआ।

दोपहर ढलने लगती है। माँ अपने कमरे में बिना खाये बैठी सोच रही हैं कि बहुओं के मन में उनके प्रति श्रद्धा नहीं है, वरना समता की बहू ने रोटी भी बना दी होती तो वह नमक से खा लेतीं। उसी मकान के दूसरे हिस्से में भिमता रहता है। शाम को काम से लौटने पर माँ से मिलने चला आता है। वह माँ को देखकर कहता है कि आपको बुखार है और सुना हूँ कि आज आपने कुछ खाया नहीं। यह सुन माँ को संशय होता है कि आज अचानक भिमता कैसे बदल गया। भिमता उनके स्वास्थ्य पर चिंता व्यक्त करते हुये अपनी पत्नी से पराठे और सब्जी बनवाकर माँ को खिलाता है। भिमता का प्रेम देखकर माँ तृप्त हो जाती हैं लेकिन खाना खिलाने के बाद भिमता माँ से मकान बुक करने के लिए रुपये माँगने लगता है। माँ का संदेह बिल्कुल सही निकलता है। अगर वह जानती तो भिमता के पराठे न खाती।

कामता और रमता का मकान हो गया था लेकिन समता के पास भी मकान न था। भिमता समतो को बुलाकर लाता है और दोनों साथ में माँ से कहने लगते हैं कि आप सहयोग करेंगी तभी हम दोनों को भी मकान हो सकेगा। माँ जानती है कि अगर वह रुपये दी, तो चारों आपस में लड़ने लगेंगे। माँ साफ-साफ दोनों को मना कर देती हैं। यह सुनते ही दोनों की त्योरियाँ बदल जाती है। दोनों माँ को स्वार्थी कहकर कोसने लगते हैं। उनकी हर एक शब्द माँ के कलेजे में तीर सी लगती है। वह सोचने लगती है कि ऐसी औलाद से 'निसन्तानी' और 'निपुत्तर' रहना ही ठीक था। किसी मन्दिर या मठ में जीवन गुजार देतीं। वह उठकर प्रभु की मूर्ति के सामने रोने लगती है कि मुझे भी इन पुत्रों से दूर पति के पास ले चलो। वह जानती थी कि रुपयों का बँटवारा कर देने पर वह और भी ज्यादा लाचार हो जाएंगी। इसलिए वह रुपये बाँट भी नहीं सकती थी।

९.३ चरित्र चित्रण 'माँ'

माँ 'जी का जंजाल' कहानी की मुख्य पात्र हैं। सम्पूर्ण कहानी में हर जगह वह मौजूद हैं। जब शादी बाद वह पति के घर आयी थीं, तो उन्होंने अपने परिश्रम, लगन एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार से पूरे घर में खुशहाली भर दी थी। पति उनसे इतने प्रभावित थें कि उन्हें गृहलक्ष्मी कहते थे। वह अपनी इच्छानुसार घर को चलाती थी और पूरे घर की स्वामिनी थीं। पति-पत्नी में इतना प्रेम था कि पति अलग से उनके नाम रुपये जमा करते थे। माँ को लगता था कि उनके बेटे पढ़े-लिखे तथा माँ-बाप का आदर-सम्मान करनेवाले हैं लेकिन पति की मृत्यु के बाद उनके चारों बेटे उनके प्रति इतने बेरुख हो जाते हैं कि उन्हें खाना खिलाने तक में अपनी असमर्थता प्रकट कर देते हैं। माँ को अपने बेटों से पहला दुख उस वक्त हुआ जब बेटों ने यह निश्चय कर लिया कि माँ प्रत्येक के यहाँ तीन-तीन महीने रहेंगी। जिससे किसी एक पर बोझ न पड़े। जिस दिन माँ के पति इस दुनिया से गये, उस दिन से उनकी स्थिति बिल्कुल बदल गयी। अब वह गृहस्वामिनी न रहकर परिवारवालों के लिए मुसीबत बन गयी थीं। माँ को ईश्वर में पूर्ण आस्था है। वह जब कभी ज्यादा दुखी होती हैं, तो भगवान की मूर्ति के पास जाकर अपना दुख कह डालती थी। माँ के चार पुत्र हैं- कामता, रमता, भिमता और समता। उनकी दो लड़कियाँ भी हैं, जो अपने ससुराल में रहती हैं। उनके चारों लड़के नौकरी करते हैं तथा

अलग-अलग रहते हैं। माँ को इस बात का दुख है कि उनके चारों बेटे धन के लालची हैं। माँ एक ममतामयी माँ हैं। पुत्रों द्वारा मुँह मोड़ लेने के बाद भी वह उनके प्रति उदासीन नहीं हो पाती हैं। पुत्र उनकी ममता का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं। जब भिमता माँ की झूठी खुशामद करके उन्हें खाना खिलाता है, तो वह बड़ी खुश होती हैं कि भिमता जैसा बेटा सबको हो लेकिन जब उन्हें भिमता के स्वार्थ का पता चलता है, तो वह अपनी सोच पर ही दुखी हो उठती हैं। अपने पुत्रों पर माँ को इतनी खीझ होती थी कि वह निसंतान होना ही अच्छा समझती हैं। बेटों के व्यवहार को देखकर उनके अन्दर की जीने की चाह समाप्त हो गयी है। अतः माँ के अन्दर वह सारे गुण मौजूद हैं, जो एक उत्तम माँ में होनी चाहिए।

समता

समता माँ का सबसे छोटा पुत्र है। वह शहर में अपने बड़े भाई भिमता के साथ रहता है। दोनों एक ही मकान में अलग-अलग हिस्सों में रहते हैं। कहानी में जिस समय की चर्चा की गयी है, उस समय माँ समता के ही घर पर रहती हैं। समता अपने चारों भाईयों में सबसे छोटा होने के कारण सबसे बाद में नौकरी पर लगता है। पिता क मृत्यु के बाद जब चारों भाई अलग-अलग रहने लगे थे तो माँ ने समता के परिवार का खर्च सम्भाला था, पर नौकरी लग जाने पर समता माँ के उन उपकार को भूल जाता है। उसके मन में माँ के प्रति प्रेम नहीं है बल्कि उसे माँ की सम्पत्ति से प्रेम है। माँ की बातों से अधिक उसे अपनी पत्नी की बातों पर विश्वास है। काम से लौटने के बाद जब उसे पत्नी द्वारा मालूम पड़ता है कि माँ ने आज खाना नहीं खाया है, तो वह आग बबूला होकर माँ को उल्टा-सीधा कहने लगता है।

समता का स्वार्थ उस समय चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है, जब वह भिमता के कहने पर माँ से मकान बुक करने के लिए रुपये माँगने लगता है। जिस मुँह से वह अभी अभी माँ को इतना भला-बुरा कहा था, उसी मुँह से वह माँ से रुपये माँगने लगा और जब माँ ने मना कर दिया, तो वह फिर उन्हें कोसने लगता है। इस प्रकार समता कहानी में एक कुपुत्र के रूप में प्रस्तुत हुआ है। उसमें कोई ऐसा गुण नहीं है, जो एक सुपुत्र में होना चाहिए। वह पूर्णतः स्वार्थान्ध है। उसके अन्दर लोभ भरा हुआ है तथा वह पत्नी का भक्त है।

भिमता

भिमता समता से बड़ा है। वह शहर में एक ही मकान के दूसरे हिस्से में समता के साथ रहता है। उसके मन में माँ के प्रति प्रेम नहीं है बल्कि उसे माँ के नाम जमा किये रुपयों से प्रेम है। जब वह कड़ी धूप में साइकिल से नौकरी करने जाता था, तो माँ ने उसकी हालत देखकर उसे मोटर साइकिल के लिए रुपये दिये थे। रुपये लेने से पूर्व भिमता माँ की इतनी खुशामद किया था कि माँ का हृदय पसीज गया था। रुपया पाते ही उसका व्यवहार बदल जाता है। उसकी पत्नी द्वारा जब उसे पता चलता है कि आज माँ ने खाना नहीं खाया है, तो वह अपनी पत्नी से पराठे और सब्जी बनवाकर माँ को इतने प्रेम से खिलाता है कि माँ उसे दुआएँ और आशीष देने लगती हैं लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसका सारा प्रेम रफू चक्कर हो जाता है। उसका स्वार्थ सामने आ जाता है। वह माँ की खुशामद इसलिए कर रहा था क्योंकि उसे मकान बुक करने के लिए रुपये चाहिए थे। इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि वह माँ की खातिरदारी तभी करता था, जब उसे माँ से कुछ हासिल करना होता था।

माँ द्वारा रुपये न मिलने पर उसका क्रोध भड़क उठता है। वह क्रोध में माँ को भलाबुरा कहने लगता है इस प्रकार भिमता के हृदय में माँ के प्रति ममता व प्रेम न था। उसकी नजर हर वक्त माँ के रुपयों पर रहती थी। वह माँ की झूठी सेवा का ढोंग करता है। भाइयों के प्रति विश्वासघात करने को तैयार था। उसके चरित्र में ऐसा कोई गुण विद्यमान नहीं है, जिससे उसे सुपुत्र की संज्ञा से अभिहित किया जा सके।

९.४ भाषा शैली

मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित 'जी का जंजाल' कहानी में भाषा की दृष्टि से हर वह खूबी मौजूद है, जो एक श्रेष्ठ कहानी में होनी चाहिए। इस कहानी की भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है। जिस भाषा में कहानी लिखी गयी है, वह जनसामान्य की बोलचाल की भाषा है। इसलिए सम्पूर्ण कहानी में कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि भाषा अस्पष्ट है।

इस कहानी में हिन्दी के साथ-साथ अरबी-फारसी एवं अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिस प्रकार हम आम बोलचाल में कुछ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं, उसी प्रकार लेखक ने कहानी को सजीव बनाने के लिए अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है। अरबी-फारसी के कुछ शब्द इस प्रकार देखें जा सकते हैं। रकम, औरत, आमद, बीमार, खुशामद, खुशी, कुहराम, नमक, तकलीफ, सलामत, इत्मीनान, औलाद आदि। इसके अतिरिक्त कहानी में अंग्रेजी के कुछ शब्द इस प्रकार प्रयोग किये गये हैं- फिक्स, स्कीम, डिपाजिट, नौमिनेशन, पेंशन, लोन, क्लास, ट्यूशन, पी.एफ. फैक्ट्री, हाउसिंग बोर्ड आदि।

इस कहानी में मुहावरों और कहावतों की भरमार है क्योंकि मुहावरों और कहावतों के चमत्कारपूर्ण प्रयोग से कहानी में प्राण आज जाती है। कहानी में प्रयोग किये गये कुछ मुहावरे एवं कहावतें इस प्रकार है- आग बबूला होना, हाथ पर उठा लेना, मुँह मोड़ लेना, जमीन आसमान एक कर देना, हृदय फटने लगना, कलेजे पर चढ़कर वसूलना, प्राण निकल जाना, हृदय पिघल जाना, खुशी से झूम उठना, कलेजा टुकड़ा-टुकड़ा होना, मन तिक्त हो जाना, त्योरियाँ बदल जाना, कलेजे में तीर की तरह लगना आदि। पेट पहाड़ हो जाना, बाँटा, भाई पड़ोसी, पुत्र शोक सहा जाता है, धन शोक नहीं, न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी, आदि कुछ कहावतों का कहानी में सुन्दर प्रयोग किया गया है।

कहानी में कुछ सूक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे-स्वार्थ पूरा होते या खण्डित होते ही सारे रिश्ते बदल जाते हैं, एक मात्र प्रभु का रिश्ता ही सच्चा होता है, माँ के ऋण से पुत्र कई जन्मों में उऋण नहीं होते। लेखक ने कहानी में सर्वथा अभिधा का ही प्रयोग किया है और उत्तम साहित्य की यही विशेषता भी है, पर कुछ जगहों पर लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्ति का भी प्रयोग किया गया है। जैसे- माँ होने के चलते वह दरवाजे का कुत्ता बनी हुई है, रुपये रखकर अचार डालेंगी आदि।

'जी का जंजाल' कहानी लेखक द्वारा वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी है। अन्ततः कहानी भाषा-शैली की दृष्टि से बेजोड़ है।

९.५ शीर्षक

माँ के पति कुछ पैसे उनके नाम जमा करते जा रहे थे। शायद! उन्हें अपने बेटों के उस व्यवहार का एहसास हो गया था, जो वह भविष्य में माँ के साथ करते। पति ने तो बुद्धिमानी का काम किया था कि जमा हुये पैसे से माँ अपना पूरा जीवन गुजार लेगी लेकिन वही जमा किया हुआ पैसा माँ के लिए इतनी मुसीबत ले आयेगी। इस बात का एहसास न तो पति रहा होगा और न माँ को। पति की मृत्यु के बाद माँ को लगा कि उनके दवा और छोटे-मोटे खर्च का भार किसी बेटे पर नहीं पड़ेगा क्योंकि उनके पति इसका इंतजाम पहले ही कर चुके हैं। यह वास्तविक सत्य है कि धन का लोभ मनुष्य से नहीं छुटता है। माँ के चारों बेटे माँ से नहीं बल्कि धन से प्रेम करते हैं।

माँ को लगने लगा था कि पति ने उनको सुख देना चाहा था लेकिन वह सुख-दुख में बदल गया। बेटों का लोभ और अपने प्रति उदासीन व्यवहार देखकर माँ को पति द्वारा जमा

किया हुआ रुपया जी का जंजाल लगता है। कहानी के आरम्भ, मध्य और अंत तीनों में माँ दुखी नजर आती हैं और उनको दुख भले ही अपने बेटों से हो लेकिन दुख कारण रुपया ही है। अन्त में माँ रोते हुए भगवान से प्रार्थना करती है कि उन्हें भी वह पति के पास बुला लें क्योंकि वह धन उनके लिए सुख का साधन न रहकर 'जी का जंजाल' बन गया है। वह अच्छी तरह समझ गयी हैं कि सारे उपद्रवों की जड़ उनके नाम पर जमा रुपये ही हैं। माँ सोचती हैं कि सारे रुपये पुत्रों में बाँट दे लेकिन फिर सोचने लगती हैं कि रुपये देने के बाद तो उनका और बुरा हाल हो जाएगा। रुपये हैं तब तो उनकी यह स्थिति है, नहीं रहेंगे तो लड़के और बहुएँ बाँह पकड़कर अपने दरवाजे से निकाल देंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण कहानी मे सबसे बड़ी समस्या रुपया ही है। अतः कहानी का शीर्षक 'जी का जंजाल' बिल्कुल सटीक है।

९.६ उद्देश्य

'जी का जंजाल' कहानी में लेखक मिथिलेश्वर जी ने वर्तमान समाज में व्याप्त विकट समस्या का चित्रण किया है। हमारे भारतीय समाज में संयुक्त परिवार में विश्वास रखने की परम्परा सदियों से चली आ रही हैं तथा माता-पिता को परमात्म का अंश या रूप माना जाता है लेकिन आज हम जैसे-जैसे अपनी उन्नत्ति की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे हम अपनी इन परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ऐसे कुपुत्रों का वास्तविक चेहरा समाज के सामने रखना चाहते हैं, जो धन-दौलत को महत्त्व देते हैं। एक माँ-बाप अपने बच्चों को पाल-पोसकर संसार में जीने के लायक बनाता है और वही बच्चा जब बड़ा हो जाता है, तो अपने माँ-बाप को बोझ समझने लगता है। इस कहानी में माँ को चार बेटे हैं लेकिन उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है, जिसे माँ से वास्तविक प्रेम है। माँ अपने बच्चों के लिए बोझ बन गयी हैं। इसलिए वह तीन-तीन महीना हर एक बेटे के घर रहती हैं। जब तक पति जीवित थे, तब तक सब ठीक था लेकिन पति के मरते ही लड़कों पर उनकी पत्नियों का ऐसा जादू चला कि वह माँ के प्रति बिल्कुल उदासीन हो गये हैं। दिन रात वह बस माँ के रुपये प्राप्त करने के फेर में लगे रहते हैं। लेखक इस कहानी में माँ के अपार दुख का वर्णन करते हैं। अगर वह निसंतान होती तो अकेले भी जी लेती लेकिन उन्हें दुख इस बात का है कि उनके चार-चार पुत्र हैं। चारों बेटों के नौकरी करने के बावजूद भी वह नमक-रोटी खाने के लिए सोचती हैं। इस कहानी में इस ओर भी संकेत किया गया है कि नारी पुरुष वर्ग पर आश्रित है। बचपन में वह पिता पर, जवानी में पति पर और बुढ़ापे में बेटे पर आश्रित रहती है माँ के पति तो उन्हें घर की लक्ष्मी समझते थे लेकिन शादी के बाद बेटे इतने बदल गये कि वह उनके लिए मात्र बोझ बन गयीं। समता जब नौकरी नहीं करता था, तो माँ अपने दवा के बहाने उसका खर्च चलाती थी लेकिन वही समता कहता है कि 'आपने मुझे तबाह कर रखा है।'' जिस भिमता के लिए वह फिक्स डिपाजिट तुड़वाकर मोटरसाइकिल के लिए रुपये देती हैं तथा तीनों बेटों की खरी-खोटी सुनती हैं। वही भिमता उन्हें स्वार्थी कहता है। चारों बेटे और बहुएँ उनकी सेवा इसलिए नहीं करते हैं क्योंकि वह जानते हैं कि सबको रुपयें में बराबर हिस्सा मिलेगा। किसी के मन में माँ की ममता का मोल न था।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि आज हम धन के लोभ में इतने स्वार्थी हो गये हैं कि हमारे अन्दर से मातृत्व प्रेम की भावना समाप्त होती जा रही है। धन व्यक्ति पर इस कदर हावी हो गया है कि अपनी जननी को भी बोझ समझने लगा है। इसके अलावा इस कहानी में लालच, स्वार्थ, आर्थिक तंगी, संस्कारों का पतन तथा पारिवारिक विघटन आदि सामाजिक बुराइयों का यथार्थ वर्णन किया गया है।

९.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : ''उनकी बातें माँ के कलेजे में तीर की तरह लगती है। उनका कलेजा छलनी हो जाता है। व्यथा के वेग में उनकी इच्छा होती है कि जाकर बता दें कि उन्होंने उन सबों के लिए क्या किया है और वे उनके लिए क्या कर रहे हैं।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानियाँ' के 'जी का जंजाल' शीर्षक से अवतरित है। इस कहानी के लेखक भारतीय ग्रामीण जीवन के चहेते 'मिथिलेश्वरजी' हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत अवतरण में लेखक 'मिथिलेश्वरजी'ने ऐसे कुपुत्रों का वर्णन किया है, जो माँ की ममता से अधिक धन-दौलत को महत्त्व देते हैं। वह माँ से झूठी हमदर्दी का नाटक करके रुपये प्राप्त करना चाहते हैं और जब माँ उनके स्वार्थी और लालची स्वभाव से परिचित होकर रुपये देने से मना कर दी तो भिमता और समता दोनों पुत्रों ने उन्हें खूब भला-बुरा कहा।

व्याख्या : भिमता और समता मकान बुक करने के लिए माँ से रुपये माँग रहे थे लेकिन जब माँ ने उनके स्वार्थ को पहचानते हुये रुपये देने से मना कर दिया, तो दोनों ने काफी देर तक माँ को उल्टा-सीधा एवं स्वार्थी कहा। अपने पुत्रों द्वारा कठोर शब्द सुनकर माँ का हृदय दुखी हो उठा। भिमता और समता के शब्दों में इतनी तेज थी कि वह माँ के हृदय में तीर की तरह लग रही थी और उसकी पीड़ा व कसक असहनीय थी उनकी एक-एक शब्द माँ के ममतामयी हृदय को छलनी कर रही थी। माँ को अपने पुत्रों से कदापि इस बात की उम्मीद न थी कि उनके ही बेटे उन्हें स्वार्थी, अन्यायी,. निर्मोही आदि उपमाओं से अभिहित करेंगे। माँ की इच्छा होती है कि जाकर बता दें कि उन्होंने उन दोनों के लिए कितना कष्ट सहा है और जब-जब दोनों संकट में रहे हैं तब-तब उन्होंने दोनों की मदद की है। माँ ने अपना सर्वस्व जीवन इन पुत्रों पर निछावर कर दिया, लेकिन आज जब वह बूढ़ी हो गयी है, तब यही पुत्र उन्हें स्वार्थी कह रहे हैं तथा दो वक्त की रोटी नहीं खिला पा रहे हैं।

विशेष

- यहाँ पर लेखक ने माँ के अपार दुखों का वर्णन किया है।
- कलेजे में तीर की तरह लगना तथा 'कलेजा छलनी हो जाना' इन मुहावरों की सुंदर अभिव्यंजना हुई है।
- शब्दों को तीर से उपमित किया गया है।
- भाषा सरल एवं सजीव है।

९.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ मोटरसाइकिल के लिए माँ ने किसे रुपया दिया था?

(क) कामता (ख) रमता (ग) भिमता (घ) समता

प्र.२ मकान के लिए माँ से रुपये माँगने का प्रस्ताव कौन रखता है?

(क) समता (ख) कामता (ग) रमता (घ) भिमता

प्र. ३ माँ को क्या जी का जंजाल लगा?

(क) जीवन (ख) शहरी वातावरण (ग) बेटों का व्यवहार (घ) धन

प्र. ४ माँ को हर बेटे के घर कितने-कितने महीने रहने थे?

(क) एक-एक (ख) दो-दो (ग) तीन-तीन (घ) चार-चार

प्र. ५ समता अपने किस भाई के साथ रहता था?

(क) रमता (ख) कामता (ग) भिमता (घ) किसी के साथ नहीं

९.९ बोध प्रश्न

प्र.१ 'जी का जंजाल' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्र.२ 'जी का जंजाल' कहानी के माध्यम से लेखक ने किस समस्या पर प्रकाश डाला है?

प्र.३ 'जी का जंजाल' कहानी के आधार पर माँ के चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्र.४ 'जी का जंजाल' कहानी का शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त एवं सटीक है? स्पष्ट कीजिए।

प्र.५ माँ के खाना न खाने का क्या कारण था?

❖❖❖

९-अ

जंगल होते शहर

इकाई की रूपरेखा

९.अ.१ प्रस्तावना
९.अ.२ कथानक
९.अ.३ चरित्र चित्रण
९.अ.४ भाषा शैली
९.अ.५ शीर्षक
९.अ.६ उद्देश्य
९.अ,७ संदर्भ सहित व्याख्या
९.अ.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
९.अ.९ बोध प्रश्न

९.अ.१ प्रस्तावना

'जंगल होते शहर' कहानी का शीर्षक ही एक करारा व्यंग्य है। आज हमारा शहर इतना ज्यादा विकसित हो चुका है। चारों तरफ मार-काट तथा आपसी द्वेष के कारण लोक एक दूसरे की हत्या कर रहे हैं। जिस शहर को हम अपनी सभ्यता का प्रतीक मानते हैं, वहाँ पशुओं की भाँति एक-दूसरे की हत्या की जा रही है और शहर जंगल में परिवर्तित होते जा रहा है। यहाँ तक कि जब लेखक सड़क से गुजरते हैं, तो उन्हें लगता है जैसे वह किसी जंगल से गुजर रहे हैं। यह कहानी सरकारी व्यवस्था के लिए भी एक सवाल है।

९.अ.२ कथानक

सुबह नित्यक्रिया से निबटकर सिन्हा बाबू रोज़ की तरह अखबार पढ़ने लगते हैं। अखबार के हर पृष्ठ पर हत्या और मार-काट पढ़ने के बाद सिन्हा बाबू का मन अशांत हो उठता है। परसों उनके साथी प्राध्यापक रामलाल को दो छात्रों ने छुरा मारकर उनकी जीवनलीला समाप्त कर दी। सिन्हा बाबू सोचने लगते हैं कि मारनेवालों का हृदय कैसा होता है? जिसे वह मारते हैं क्या उसके बारे में सोचते नहीं हैं? हर आदमी के साथ एक दुनिया जुड़ी हुई होती है, जो उसके गुजरते ही उजड़ जाती है। इस तरह की अनेक बातें सिन्हा बाबू सोचने लगते हैं। उन्हें लगता है कि हत्या निहायत निंदनीय और क्रूर कर्म है। रामलाल कॉलेज के सबसे सीधे-सादे प्राध्यापक थे। छात्रों से भी नम्र स्वभाव से बात करते थे। तभी पत्नी आकर उन्हें याद दिलाती है कि दस बज गये हैं। वह उठकर कॉलेज चल देते है। स्टाफ रूम में पहुँचते ही उनके साथी प्राध्यापक मुस्कुराकर उनका स्वागत करते हैं। सिन्हा बाबू अपने प्राध्यापक मित्रों से पूछते हैं कि आज का अखबार देखा आप लोगों ने? यह सुन मित्रों को लगता है कि कॉलेज से सम्बन्धित या वेतनवृद्धि से सम्बन्धित कोई बात अखबार में छपी होगी लेकिन जब उन्हें सिन्हा बाबू द्वारा मालूम पड़ता है कि चारो तरफ हत्याओं की सूचना छपी है, तो वह ठहाका मारकर हँसने लगते हैं। वह कहते हैं कि इसमें कौन-सी नयी बात छपी है। यह तो रोज होता है। मित्रों की बात सुनकर सिन्हा बाबू को और बेचैनी होने लगती है। वह सोचने

लगते हैं कि रामलाल की हत्या को इतनी जल्दी सब लोग भूल गये। उन्हें भी सब कुछ भूलकर सहज हो जाना चाहिए लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद भी वे सहज नहीं हो पाते हैं। सिन्हा बाबू क्लास में छात्रों से भी अखबार में छपी हत्याओं की चर्चा करते हैं लेकिन वहाँ भी उन्हें किसी प्रकार की सहानुभूति प्राप्त नहीं हुई। क्लास से बाहर निकलते समय सिन्हा बाबू को लगता है कि कहीं उनके पीछे कोई छात्र चाकू लेकर उन्हें मारने न आ रहा हो क्योंकि रामलाल भी इस तरह पढ़ाने के बाद क्लास से बाहर निकले थे और उन्हें क्या पता था कि कोई छात्र चाकू से उन्हें मार डालेगा। सिन्हा बाबू को भय लगने लगता है और वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर कॉलेज के बाहर से रिक्शा पकड़कर रामलाल के घर की ओर चल देते हैं। मातमपुर्सी में भाग लेने के लिए आज वह रामलाल के घर जा रहे हैं। रिक्शा पर वह तरह-तरह की बातें सोचने लगते हैं। रामलाल के घर पहुँचते ही सिन्हा बाबू के पास रामलाल की पत्नी आकर फूट-फूटकर रोने लगती हैं। रामलाल की पत्नी की हालत देख सिन्हा बाबू का मन व्यथित हो जाता है। उनका मन रुआँसा हो उठता है। तभी रामलाल की तेरह वर्षीय बच्ची गुड़िया सिन्हा बाबू से लिपटकर रोने लगती है। सिन्हा बाबू अपने को रोक नहीं पाते हैं। वह भी फूटकर रोने लगते हैं। मातमपुर्सी में उपस्थित अन्य व्यक्ति इस तरह की अनेक हत्याओं पर जिक्र करने लगते हैं कि आज कल जरा-सी बात पर आदमी आदमी की गर्दन काट देता है। यह सब सुनकर सिन्हा बाबू का माथा फटने लगता है। वह रामलाल के परिवार से विदा लेकर सड़क की ओर चल देते हैं। वे रास्ते में सोचते जाते हैं कि आज आदमी की हालत गाजर-मूली की तरह हो गयी है। सिन्हा बाबू को पत्नी के लिए कफ सिरफ लेनी थी, इसलिए वह मेडिकल की दुकान पर जा पहुँचे लेकिन वहाँ भी कुछ लोग मुरादाबाद में हिन्दू-मुसलमान के दंगे की बात कर रहे थे। यह सुन वह जल्दी से दवा लेकर घर की ओर चल पड़ते है, पर रास्ते में एक व्यक्ति को तीन-तीन व्यक्ति पकड़कर चाकू मार रहे थे। यह देख सिन्हा बाबू पागलों की तरह चिल्लाने लगते हैं कि यह अन्याय है, ज्यादती है, हत्या करना अपराध है, जुर्म है। लेकिन हत्या करनेवालों की धमकी से उन्हें होश आता है और वह डरकर वहाँ से चल देते हैं। सिन्हा बाबू समझ जाते हैं कि यहाँ शहर में कोई किसी के मसले में पड़ना नहीं चाहता है। उन्हें सड़क पर चलनेवाला हर व्यक्ति हत्यारा नजर आने लगता है। उन्हें लगता है कि वह जंगल से गुजर रहे हैं और अनेक हिंसक पशु उन्हें मारने को दौड़ रहे हैं। वह जोर से चिल्लाने लगते हैं- बचाओं! बचाओं! और बीच सड़क पर धड़ाम से गिर जाते हैं। कुछ लोग उन्हें उठाकर घर ले जाते हैं। उनकी पत्नी देखकर घबरा जाती ह वे कहने लगती हैं कि इसी तरह यह दो बार पहले भी चिल्लाते हुये बेहोश हो गये थे। यह इनका तीसरा दौरा है। कुछ लोग उन्हें डॉक्टर को दिखाने की सलाह देते हैं और कुछ लोग उन्हें पागल घोषित करते हुये मनोचिकित्सक को दिखाने की सलाह देते हैं।

९.अ.३ चरित्र चित्रण - 'सिन्हा बाबू'

सिन्हा बाबू 'जंगल होते शहर' कहानी के मुख्य पात्र हैं। वह हिन्दी के प्राध्यापक हैं। अखबार पढ़ने तथा देश के ताजा-तरीन खबरों में उन्हें विशेष रूचि है। वह सीधे-सादे, सज्जन तथा बुद्धिजीवि इंसान हैं। एक ओर जहाँ समस्त संसार लोभ और स्वार्थ में डूबा हुआ है, वहीं सिन्हा बाबू इससे काफी दूर हैं। समाचार पत्रों में देश में घटित हत्याएँ और मारकाट पढ़ कर उनका मन काफी बेचैन और अशांत हो जाता है। ऐसी ही एक घटना के चलते पिछले दो रातों से सिन्हा बाबू सो नहीं पाये थें। उनके ही कॉलेज के एक प्राध्यापक मित्र रामलाल को कुछ छात्रों ने छुरा भोंककर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। सिन्हा बाबू इस घटना को अपनी आँखों से देखे थे। इसलिए वह दृश्य बार-बार उनकी आँखों के सामने घूम रहा था। समाज में इस तरह की घटित अनेक घटनाओं को देखकर और सुनकर उनका हृदय व्यथित हो उठता

है। सिन्हा बाबू ऐसी हत्याओं को रोकना चाहते हैं लेकिन उनके इस कार्य में कोई उनका साथ नहीं देता है बल्कि उनके अपने पाध्यापक मित्र व छात्र उन्हें मज़ाक का पात्र बनाते हैं। सिन्हा बाबू समाज के इस कुकृत्य पर अन्दर ही अन्दर अस्वस्थ होते जा रहे थे। सिन्हा बाबू बड़े ही संवेदनशील स्वभाव के व्यक्ति हैं। जब वह साहस कर रामलाल की मातमपुर्सी में जाते हैं, तो रामलाल की बिलखती पत्नी और उसकी तेरह साल की मासूम लड़की को देखकर स्वयं ही फूट-फूटकर रोने लगते हैं। रामलाल के परिवार का दुख उनसे देखा नहीं जाता है और वह किसी तरह विदा लेकर वहाँ से चल देते हैं। रास्ते भर सिन्हा बाबू भयभीत रहते हैं। उन्हें हर एक व्यक्ति हत्यारा लगता है। सिन्हा बाबू केवल सोचते ही नहीं हैं बल्कि उन हत्यारों को रोकने का भरसक प्रयास भी करते हैं। रास्ते में एक व्यक्ति को पकड़कर तीन-तीन व्यक्ति छुरा से मार रहे थे। उस घटना को देख वह चिल्ला पड़ते हैं लेकिन उनके अलावा दूसरा कोई राहगीर या व्यक्ति बोलने को तैयार न था। अकेले होने के कारण उन्हें डरा-धमकाकर भगा दिया जाता है।

समाज में होनेवाली हत्याएँ उनके दिमाग पर इस तरह छा जाती है कि वह चिल्लाते हुये रास्ते में गिरकर बेहोश हो जाते हैं। सिन्हा बाबू की स्थिति उस व्यक्ति जैसी हो जाती है, जो जंगल में हिंसक पशुओं के बीच अकेले असहाय सा होकर चिल्लाता है और अंत में कुछ न कर पाने पर भयभीत होकर गिर पड़ता है। सिन्हा बाबू सच्चे अर्थों में एक सफल अध्यापक हैं क्योंकि एक अध्यापक का यह फर्ज है कि वह समाज को सुन्दर एवं सुव्यवस्थित बनाने में योगदान दे। उनके अन्दर वे सारे गुण मौजूद हैं, जो एक योग्य नागरिक में होना चाहिए।

९.अ.४ भाषा शैली

भाषा शैली की उत्कृष्टता के लिए यह आवश्यक है कि कहानी सरल, स्पष्ट एवं सजीव हो। वह मुहावरों-लोकक्तियों, सूक्तियों से युक्त, लक्षणा-व्यंजना से सम्पन्न, चित्रमयी तथा पात्र एवं परिस्थिति के अनुरूप हो। मिथिलेश्वर जी की 'जंगल होते शहर' कहानी में लगभग ये सारी विशेषताएँ मौजूद है। 'जंगल होते शहर' कहानी की भाषा सरल, सजीव एवं भावपूर्ण है। कहानी में अनेक ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर घटना पूरी तरह सजीव हो उठती है। लेखक कहानी के माध्यम से जिस विकट समस्या की ओर इशारा करते हैं वह भी पूर्णतः स्पष्ट है।

कहानी में सजीवता लाने के लिए लेखक ने विविध प्रकार के मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे- तिलमिला उठना, जीवन लीला समाप्त कर देना, काम तमाम कर देना आदि। इस कहानी में तत्सम एवं तद्भव के साथ साथ अंग्रेजी के अनेक शब्द भी आये हैं। जैसे- कॉलेज, डॉक्टर, क्लास, सेन्टीमेण्टल, स्टॉफरूम आदि।

कहानी में जगह जगह पर व्यंग भरे शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे जब खून सड़कों पर बहेगा, तब इस देश में कुछ होगा!'' तथा ''आप भी गजब करते हैं सिन्हा बाबू! हम लोगों ने सोचा था कि कॉलेज से सम्बन्धित कोई सूचना होगी या वेतन वृद्धि के लिए कोई प्रस्ताव पारित हुआ होगा, लेकिन'' कहानी में भाषा पात्रों के अनुकूल है। इस कहानी में यह बताया गया है कि आज मनुष्य अपने आचरण के कारण पशु-सा होता जा रहा है। भाषा को सँवारने के लिए लेखक ने अनेक उदाहरणों का प्रयोग किया है। उसकी एक बानगी देखिए- ''यह तो जंगल की संस्कृति है कि जब सिंह किसी जानवर पर हमला बोलता है, तो शेष जानवर वहाँ से भाग जाते हैं।''

इस प्रकार 'जंगल होते शहर' कहानी में भाषा-शैली की दृष्टि से एक-एक शब्द कहानी को सजीव बनाते हैं। सम्पूर्ण कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी है।

९.अ.५ शीर्षक

'जंगल होते शहर' एक सामाजिक कहानी है। जिसमें अनेक घटनाओं का समावेश हुआ है। इस कहानी का शीर्षक एक करारा व्यंग है। आज हम स्वतन्त्र भारत देश में जी रहे हैं। कहने के लिए हम स्वतन्त्र हैं लेकिन क्या हम वास्तविक में स्वतन्त्र हैं? यह प्रश्न हर एक सीधे-सादे एवं सज्जन व्यक्ति को परेशान व बेचैन कर रही है। कहानी के आरम्भ से ही सिन्हा बाबू विविध तरह की घटनाओं से अवगत होकर बेचैन नजर आते हैं। वह अपने आपको उस रूप में नहीं ढाल पा रहे हैं जिस रूप में बाकी सब मनुष्य अपने आपको ढाल लिये हैं। आज मनुष्य इतना असंवेदनशील हो गया है कि उसे दूसरों का दुख-दर्द दिखाई नहीं दे रहा है। वह , अपने ही स्वार्थ के मद में आकण्ठ डूबा जा रहा है। यह प्रवृत्ति तो पशुओं की है। आज मनुष्य इंसान के रूप में पशु होता जा रहा हैं और वह शहर जिसे हम अपनी सभ्यता का प्रतीक मानते हैं, वह जंगल बनता जा रहा है। जिस प्रकार जंगल के पशु विवेकशून्य होते हैं और कहीं भी हिंसा करने लगते हैं। आज उसी प्रकार मनुष्य बिना सोचे समझे किसी की भी हत्या कर दे रहा है।

सम्पूर्ण कहानी में सिन्हा बाबू इसी बेचैनी और भय के वातावरण में जी रहे हैं। एक समय ऐसा आ जाता है कि उन्हें हर एक व्यक्ति हत्यारा नजर आने लगता है। इस कहानी में जो अनेक हत्याएँ मार-काट की घटनाएँ प्रस्तुत हुई हैं, उन सब को देखकर ऐसा लगता है कि आज मनुष्य के जान की कींमत गाजर-मूली की तरह हो गय है। समाज के पढ़े-लिखे एवं विद्यार्थी जन भी ऐसी घटनाओं के अभ्यस्त हो गये हैं। हत्यारों की विवेकशून्यता को देखकर लेखक उन्हें जानवरों की संज्ञा से अभिहित करते हैं तथा शहर को जंगल का नाम देते हैं।

इस प्रकार कहानी का शीर्षक 'जंगल होते शहर' बिल्कुल सटीक और उपयुक्त है क्योंकि आज का शहर एवं वहाँ रहनेवाले व्यक्ति मानवीय संवेदना से कोसों दूर होते जा रहे हैं। उनमें पशुओं की भाँति अपना स्वार्थ साधने का लोभ समा गया है। अतः शीर्षक 'जंगल होते शहर' से ही सम्पूर्ण कहानी का आभास मिल जाता है।

९.अ.६ उद्देश्य

'जंगल होते शहर' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित वर्तमान समाज में व्याप्त लूट-पाट, मार-काट व छोटी-मोटी बातों पर आदमी द्वारा आदमी की हत्या कर देना आदि समस्याओं का बड़ा ही मर्मस्पर्शी व हृदयबेधक कहानी है। आज हम किसी भी समाचार पत्र या टेलीविजन में यहीं पाते हैं कि दिन दहाड़े एक आदमी को गोली मार दी गयी तथा कुछ लोगों को जिंदा जला दिया गया आदि अनेक खबरें आये दिन छपते रहते हैं। लेखक सिन्हा बाबू के माध्यम से एक सीधे-सादे और सज्जन व्यक्ति की संवेदनशीलता एवं समाज से उत्पन्न मानसिक कष्ट का वर्णन करते हैं। आज हमारा समाज ऐसी खबरों को पढ़ने के लिए अभ्यस्त हो चुका है। पर कुछ लोग अब भी सिन्हा जैसे हैं, जो इस निर्मम हत्या एवं मार-काट को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। सिन्हा बाबू सोचने लगते हैं कि आखिर मार-काट करनेवाले लोग जिसकी हत्याएँ करते हैं वह उनके परिवारवालों के बारे में क्यों नहीं सोचते हैं? जिस दिन से रामलाल की हत्या हुई है, उस दिन से सिन्हा बाबू को हर एक व्यक्ति हत्यारा नजर आता है।

रामलाल के मातमपुर्सी से घर लौटते समय रास्ते में हत्या की घटना देखकर उनका मन तड़प उठता है और वह बेचैन होकर चिल्लाते हुये सड़क पर बेहोश होकर गिर जाते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें पागल और मानसिक रूप से बीमार समझा जाने लगता है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आज प्रत्येक व्यक्ति

स्वार्थान्ध है। कोई व्यक्ति किसी के बीच में पड़ना नहीं चाहता है और जो व्यक्ति इन घटनाओं से तादात्म्य नहीं कर पाता है, उसे हमारा समाज पागल घोषित कर देता है। इस कहानी में सिन्हा बाबू के माध्यम से लेखक बताना चाहते हैं कि हर व्यक्ति को मिलकर ऐसे हत्यारों का विरोध करना चाहिए तथा लोगों को यह समझाना चाहिए कि जीवन अनमोल है। हर एक व्यक्ति अपने भविष्य और देश के लिए न जाने कितनी योजनाएँ अपने हृदय में संजोये रहता है। उसकी हत्या से उन सारी योजनाओं की भी निर्मम हत्या हो जाती है। हत्या तो एक की होती है, पर उसपर आश्रित अनेक व्यक्ति उस हत्या का शिकार होते हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक समाज को जागरूक करना चाहते हैं। वह समाज के उन लोगों को खासकर जागरुक होने की सलाह देते हैं, जिन पर भावी नागरिक के निर्माण की जिम्मेदारी है।

९.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : 'काश, किसी को मारने से पहले हत्यारे उसके बारे में यह जानने की कोशिश करते कि उसके अंदर कैसी-कैसी योजनाएँ हैं? अपने जीवन में वह क्या-क्या करना चाहता है? किन-किन कामों में उसने हाथ लगा दिया है... तो शायद वे नहीं मारते, लेकिन यह सब जानने की कोशिश वे कभी नहीं करते।''

सन्दर्भ: प्रस्तुत अवतरण **'**प्रतिनिधि कहानियाँ**'** के 'जंगल होते शहर' शीर्षक से उद्धृत है। इस कहानी के लेखक हिन्दी साहित्य के ग्रामीण कथाकार 'मिथिलेश्वरजी' है।

प्रसंग : लेखक अखबार में छपी हत्या की सूचना को पढ़कर बेहद दुखी होते हैं। उन्हें लगता है कि आज हत्या करना बेहद आसान हो गया है। लोग छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे की हत्या कर देते हैं। यहाँ पर लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि हत्या तो एक व्यक्ति की होती है लेकिन उसके साथ जुड़ा हर एक व्यक्ति उस निर्मम हत्या का शिकार होता है। लेखक हत्या की खबर पढ़ते ही काँप उठते है क्योंकि परसोन ही उसके प्राध्यापक मित्र रामलाल को कुछ छात्रों ने छुरा भोंककर मार डाला था।

व्याख्या : लेखक समाज में घटित हत्याओं से आहत हैं। वह सोचते हैं कि हत्या करने से पूर्व हत्यारों को उस व्यक्ति के बारे में जानने की कोशिश करनी चाहिए, जिसकी वह हत्या कर रहा है। हत्यारा जिस व्यक्ति की हत्या करता है, उसके मन के अन्दर अनेक ऐसी योजनाएँ होती होंगी, जिससे वह अपना और समाज का विकास कर सकेगा। वह अपने जीवन में अनेक कार्यों को करना चाहता होगा लेकिन उसकी निर्मम हत्या के कारण ये सारी योजनाएँ एवं कार्य अधूरी रह जाती है। हत्या का शिकार होनेवाला व्यक्ति किन-किन कार्यों में सफलता प्राप्त कर चुका है और किन-किन कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए वह संघर्षरत है अगर यह जानने की कोशिश हत्यारा करता, तो शायद वह हत्या नहीं करता। हत्यारे किसी भी व्यक्ति के भूत और वर्तमान को जाने बिना उसकी हत्या कर देते हैं और इस हत्या से उस व्यक्ति की सारी योजनाएँ, इच्छाएँ एवं कार्य अधूरे पड़ जाते हैं।

विशेष :

- लेखक समाज में घटित होनेवाली हत्याओं से आहत हैं।
- इस अवतरण में हत्या को निहायत निंदनीय और क्रूर कर्म कहा गया है।
- यहाँ करुण रस का संचार हुआ है।
- यहाँ सम्भावना अलंकार की अभिव्यंजना हुई है।

९ अ. ८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ सिन्हा बाबू का मन क्यों अशांत हो उठता है?

(क) पत्नी से झगड़ा पर (ख) अखबार पढ़ने पर

(ग) मित्र की मृत्यु पर (घ) मित्रों के व्यवहार पर

प्र.२ सिन्हा बाबू के मित्र का क्या नाम था?

(क) रामसिंह (ख) रामपाल (ग) रामलाल (घ) रामभजन

प्र. ३ मेडिकल की दुकान पर कुछ लोग किस जगह के दंगे की बात कर रहे थे?

(क) फैजाबाद (ख) मुरादाबाद (ग) हसनाबाद (घ) जमुनाबाद

प्र.४ रामलाल की तेरह साल की लड़की का नाम क्या था?

(क) गुडिया (ख) मुनिया (ग) मनिया (घ) मंजू

प्र. ५ सिन्हा बाबू कौन-सा विषय पढ़ाते हैं?

(क) इतिहास (ख) राजनीति शास्त्र (ग) हिन्दी (घ) भूगोल

९ अ ९ बोध प्रश्न

प्र.१ 'जंगल होते शहर' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्र.२ 'जंगल होते शहर' कहानी में किस समस्या को प्रस्तुत किया गया है?

प्र.३ 'सिन्हा बाबू' के मानसिक अशांति का कारण क्या था? स्पष्ट कीजिए।

प्र.४ 'जंगल होते शहर' कहानी का क्या उद्देश्य है?

प्र.५ सिन्हा बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

❖❖❖

१०

सावित्री दीदी

इकाई की रूपरेखा

१०.१ प्रस्तावना
१०.२ कथानक
१०.३ चरित्र चित्रण
१०.४ भाषा शैली
१०.५ शीर्षक
१०.६ उद्देश्य
१०,७ संदर्भ सहित व्याख्या
१०.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
१०.९ बोध प्रश्न

१०.१ प्रस्तावना

'सावित्री दीदी' कहानी एक ऐसे समाज का वास्तविक चेहरा हमारे सामने प्रस्तुत करता है, जहाँ लड़कियों को जन्म से ही बोझ समझा जाता है तथा उनके मृत्यु की कामना की जाती है ताकि दहेज में दी जानेवाली रकम से बच जाए। यह कहानी लड़कियों के प्रति किये जा रहे भेदपूर्ण व्यवहार एवं दहेज प्रथा जैसे भयानक कुरीतियों का पर्दाफाश करती है। सावित्री माँ की यातनाओं को अपनी किस्मत मानकर सहती रहती है और परिवार वालों को दहेज के बोझ से बचाने के लिए मृत्यु को स्वीकार कर लेती है।

१०.२ कथानक

सावित्री दीदी कहानी की मुख्य पात्र हैं। लेखक सावित्री दीदी से दो साल छोटे हैं। लेखक से छोटी दीप्ति और दीप्ति से दो साल छोटा विनोद है। एक भाई और है जो सावित्री दीदी से बड़ा है। लेखक की बड़ी बहन सावित्री को मरे तीन दिन ही हुआ था लेकिन घर के सभी सदस्यों में खुशहाली थी। इक्कीस साल की जवान लड़की की मृत्यु पर किसी को दुख नहीं है। माँ-बापूजी तथा बड़े भैया इसलिए खुश थे क्योंकि दहेज के लगभग दस हजार रुपये बच गये थे। घर के सारे काम दीप्ति सम्भाल लेती हैं। घर में लड़की और लड़के के बीच काफी फर्क किया जाता है। दीप्ति का परवरिश देखकर लेखक को सावित्री दीदी के परवरिश का एहसास हो जाता है। लेखक के घर में लड़कियाँ स्वतः घास-पूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। जबकि लड़कों की परवरिश पूरी संजीदगी के साथ की जाती है। आठ साल पहले मरे चाचा जी पूरे घरवालों को याद आते हैं जबकि तीन दिन पहले मरी सावित्री को पूरा घर भूल गया है! लेखक को याद है जब सावित्री दीदी दस साल की थी तो माँ उन्हें ऐसे-ऐसे ताने मारती थी कि सावित्री दीदी लड़कों की बराबरी कभी नहीं करती थी। लड़कों के लिए अच्छी-अच्छी सब्जियाँ बनती थीं तथा नये-नये कपड़े आते थे लेकिन सावित्री अचार एवं पुराने कपड़ों से ही संतुष्ट थी। जिस माँ के पेट से जन्मी थी, उन्हें भी सावित्री के प्रति जरा भी प्रेम न था। गर्मी, जाड़ा व बरसात तीनों ही मौसम में सावित्री दीदी मच्छर, ठण्डी और वर्षा का प्रकोप

सहर्ष सह लेती थी। बीमार पड़ने पर भी माँ सावित्री को नहीं छोड़ती थी। बिना दवा के बेचारी स्वतः ठीक हो जाती थी। माँ अक्सर दस हजार का नाम लेकर ताना मारती थी तथा सौरी में नमक चटाकर मार देने की बातें करती थी लेखक के मन में बहन के प्रति इतना स्नेह था कि उन्होंने एक पाव जलेबी खरीदकर सावित्री दीदी को खिलाया था और कसम खायी थी कि माँ को नहीं बताएंगे। एक बार सावित्री पड़ोसवाली शैली के घर झूले पर बैठकर कजरी गाने चली गयी थी। इधर चूल्हे पर रखी दाल जल गयी थी, जिसके कारण माँ ने उसकी जमकर पिटाई की थी। जब सावित्री सत्रह वर्ष की हुई, तभी से उनके लिए भैया और बाबू जी लड़के ढूँढने लगे थे। दो जगह दहेज के कारण रिश्ता टूट चुका था लेकिन तीसरी जगह दोआह लड़के से चार हजार नकद पर बात पक्की हो गयी थी। लड़का बाबूजी से उम्र में थोड़ा ही छोटा था। भैया और बाबूजी भी राजी हो गये थे लेकिन जब उन्हें लगा कि गाँववाले हँसेंगे और उनपर थूकेंगे, तो वहाँ भी बात टूट जाती है। जिस दिन वे लड़का देखकर निराश लौटते थे, उस दिन माँ सावित्री दीदी को और यातनाएँ देने लगती थी। लेखक को बड़ा होने पर `एहसास होता है कि माँ सावित्री को इतनी यातनाएँ इसलिए देती थी ताकि वह आत्महत्या कर लें। लेखक को उस दिन सावित्री दीदी बहुत सुंदर लग रही थीं, जिस दिन माँ पहली बार उन्हें अपनी नयी साड़ी पहनायी थी क्योंकि बी.ए. पास एक लड़का उन्हें देखने आया था और नापसंद कर देता है। उस दिन सावित्री दीदी के कमरे से रोने की आवाज पूरी रात लेखक को सुनायी दी थी।

अंत में एक जगह सात हजार नकद पर बात पक्की हो जाती है लेकिन बारात को खिलाने और कपड़े-लत्ते को लेकर कुल साढ़े नौ हजार का खर्च था। बाबूजी के पास ग्यारह बीघा टाड़ की जमीन है, जिसमें सिर्फ धान होता है और एक बीघा जमीन बहुत अच्छी है, जो हर फसल के लिए उपजाऊ है। बाबूजी उसी एक बीघे खेत को बेचना चाहते थे क्योंकि उसका दस हजार मिल जाता लेकिन भैया उसे बेचने के पक्ष में न थे। वह पाँच बीघा टाँड़वाली जमीन को रेहन रखकर दस हजार लेने के पक्ष में थे। भैया और बाबूजी में जमीन बेचने को लेकर रोज तोर-मोर होती थी और माँ सावित्री दीदी को इतना कष्ट देती थी कि उनका चेहरा हमेशा उतरा ही रहता था। भैया ने यह घोषणा कर दी थी कि जिस दिन बाबू जी ने उस एक बीघे जमीन को बेचा, उस दिन मैं घर छोड़ दूँगा। सावित्री से यह सब देखा नहीं जाता है क्योंकि वह जानती थी कि यह सब उसी के चलते हो रहा है। उस रात उन्होंने कीड़े मारने की दवा एलड्रीन पी ली थी। जिसके कारण आज से तीसरी सुबह बिस्तर पर उनकी लाश मिली थी। भैया, बाबूजी और माँ ने लेखक का मुँह बन्द कर दिया और पूरे गाँव में यह खबर फैला दी कि रात में उसके पेट में दर्द हुआ जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गयी। सावित्री दीदी तो इस दुनिया में नहीं रहीं लेकिन लेखक अपनी छोटी बहन दीप्ति को बचाना चाहते हैं क्योंकि वह भी एक लड़की है।

१०.३ चरित्र चित्रण

सावित्री इस कहानी की मुख्य पात्र है। जिस दिन उसका जन्म हुआ था, उस दिन पूरे घर में खुशहाली की जगह मातम छा गया था क्योंकि वह एक लड़की के रूप में जन्म ली थी। घर में उसके साथ बचपन से ही भेदपूर्ण व्यवहार किया जाने लगा था। जब कभी बाबू जी मिठाई लेकर आते तो लड़को को अधिक देते थे और सावित्री को कम। इस पर वह तुनक पड़ती थी लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ी होती गयी वैसे-वैसे वह अपने और भाइयों के बीच के फासले को समझने लगी। माँ द्वारा गालियाँ सुनने और मार खाने के बावजूद भी कभी सावित्री जुबान नहीं खोलती है।

मात्र चौदह साल की उम्र से ही वह घर का पूरा काम-धाम सम्भालने लगती है। हर किसी के आवज पर हाजिर होना, जल्दी-जल्दी घर का सारा काम निपटा लेना तथा अपने द्वारा कभी किसी को नाराज न होने देना आदि ऐसी अनेक छोटी-छोटी विशेषताएँ उसमें मौजूद थी। सावित्री बड़े ही विशाल हृदयवाली लड़की थी। माँ द्वारा इतनी यातनाएँ देने के बावजूद भी वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेती थी। माँ-बाबू जी के हृदय में भले ही उसके लिए प्रेम न हो लेकिन सावित्री के हृदय में पूरे परिवार के प्रति प्रेम था। मेले में दो आने का बादाम खरीदती है लेकिन वह भी अपने लिए नहीं बल्कि विनोद और दीप्ति के लिए।

सत्रह साल की होते-होते वह अद्‌भुत सुन्दर लगने लगती है। वे काफी लम्बी, गोरी-चिट्टी और खूब सुन्दर थी। गर्मी, ठण्डी और बरसात हर मौसम को वह एक ही कपड़ा पहने झेल लेती थी। अभाव में जीने की उसे आदस-सी पड़ गयी थी। उसकी आवाज़ बड़ी मधुर थी तथा वह अच्छी कजरी गा लेती थी। हर लड़की को उस दिन का इंतजार रहता जिस दिन वह दुल्हन बनकर अपने पति के घर जाती है। पर सावित्री के जीवन में ऐसा कुछ भी न था। लड़केवाले जब दहेज के कारण उसका रिश्ता ठुकरा देते, तो उसे गहरा दुख होता था लेकिन वह अपना दुख चुपचाप सह लेती थी। जब मन कभी ज्यादा दुखी होता, तो रात में अपने कमरे में रो लेती थी। जब कहीं से उसका रिश्ता टूटता, तो माँ की यातनाएँ और बढ़ जाती थी। उसके जीवन में दुख ही दुख भरा था। अन्त में जिस जगह उसकी शादी तय होती है, वहाँ भी सात हजार नकद दहेज की बात थी। सावित्री अपनी जीवन-लीला समाप्त कर माँ-बापू और भैया की समस्याओं का समाधान कर देती है।

इस प्रकार सावित्री सुन्दर, कर्मठ, विवेकशील, सहनशील, स्नेहमयी, परोपकारी, उदार हृदयवाली तथा अभावों में भी खुश रहनेवाली लड़की थी।

लेखक

लेखक इस कहानी में एक पात्र की भूमिका निभा रहे हैं। वह सावित्री से दो वर्ष छोटे हैं। इक्कीस वर्ष की उम्र में जब सावित्री की मृत्यु हुई, तो उस समय उनकी उम्र उन्नीस वर्ष थी। उन्नीस साल अपनी जिस बहन के साथ वह गुजारे थे, उसकी मृत्यु पर उन्हें गहरा दुख था लेकिन उससे भी ज्यादा दुख उन्हें इस बात का था कि सावित्री दीदी की मृत्यु को अभी तीन दिन ही हुआ था, उसके बावजूद घर में कहीं ऐसा नहीं लग रहा था कि घर के किसी सदस्य की मृत्यु हो गयी हो। माँ-बाबू और भैया को देखकर उन्हें आश्चर्य होता है कि वह कितने खुश नजर आ रहे थे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके हृदय में सावित्री दीदी के प्रति अपार प्रेम है। माँ सावित्री के साथ जिस प्रकार का बर्ताव करती थी, वह उन्हें बचपन से ही पसन्द न था। सावित्री दीदी के पति उनका प्रेम उस समय नज़र आता है, जब वह मेले में एक पाव जलेबी खरीदकर उन्हें खिलाती है।

लेखक बड़े संवेदनशील स्वभाव के युवक हैं। वह सावित्री दीदी के दुखों को देखकर संवेदनशील हो उठते हैं। बाबूजी और भैया जब सावित्री के सामने दहेज के कारण रिश्ता टूटने की बातें करते, तो लेखक को बाबू जी का यह व्यवहार पसन्द नहीं आता था। उसी बहन की मृत्यु देखकर उनका हृदय इतना काँप उठता है कि वह दीप्ति के साथ उन सारी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होने देना चाहते हैं।

अतः लेखक ऐसे माहौल में रहने के बावजूद भी बाकी सदस्यों से बिल्कुल अलग थे। वह बड़े समझदार एवं उदार हृदयवाले युवक हैं। अन्त में वह अपने परिवार द्वारा लड़कियों के प्रति भेदपूर्ण व्यवहार का विरोध करने के लिए प्रण लेते हैं।

'माँ'

'सावित्री दीदी' कहानी में माँ भी एक प्रमुख पात्र हैं क्योंकि वह अपनी यातनाओं के द्वारा सावित्री को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करती थी। एक आदर्श माँ वह है, जो अपने बच्चों को समान रूप से प्रेम करे तथा अपने बच्चों की खातिर स्वयं मौत को गले लगा ले। परन्तु 'सावित्री दीदी' कहानी में जिस माँ का जिक्र है, वह इन विशेषताओं से कोसो दूर है। वह अपने ही तन से जन्मी लड़कियों के प्रति दुर्व्यवहार करती है। वह केवल सावित्री को ही यातनाएँ नहीं देती बल्कि उसकी शुरुवात छोटी दीप्ति के साथ भी हो गयी है। माँ इतनी हृदयविहीन हो जाती हैं कि बीमारी के हालत में भी वह सावित्री को काम करने के लिए मजबूर करती है। जरा-सा दाल जल जाने पर उसकी इस कदर पिटाई करती है कि सावित्र के पीठ पर काले-काले निशान पड़ जाते हैं। वह अक्सर सावित्री की मौत के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती थी। एक दिन ईश्वर उनकी प्रार्थना सुन ही लेता है और सावित्री को अपने पास बुला लेता है। सावित्री की मृत्यु के बाद भी माँ का हृदय नहीं पसीजता है। वह मन से बिल्कुल खुश नज़र आती है कि उसके दहेज के रुपये बच गये।

अतः इस कहानी में सावित्री की मृत्यु का कारण माँ ही बनती है। जब बच्चा मुसीबत में फँसता है, तो माँ को याद करता है लेकिन यहाँ सावित्री के लिए माँ शब्द ही दुखदायी बन गयी थी। माँ एक कुमाता के रूप में इस कहानी में प्रस्तुत हुई है, जो अपनी जवान बेटी की मृत्यु पर प्रसन्न होकर खुशियाँ मनाती है।

१०.४ भाषा शैली

भाषा की दृष्टि से 'सावित्री दीदी' एक उत्तम कहानी है। इस कहानी की भाषा इतनी आकर्षक एवं सरस है कि सम्पूर्ण कहानी सजीव हो उठती है? सम्पूर्ण कहानी का चित्र हमारी आँखों के सामने प्रकट होकर हृदय को भावुक कर देता है। भाषा व शब्दों के बेजोड़ चयन के कारण यह कहानी पाठक को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती है। भाषा के अन्तर्गत लेखक ने अभिधा एवं व्यंजना इन दोनों शब्द शक्तियों का आश्रय लिया है।

'सावित्री दीदी' कहानी की भाषा पात्रानुकूल है। इसकी कुछ बानगी देखिये ''मर जाना चाहिए इस कुलक्षणी को... इसका भतार ही नहीं है इस दुनिया में... बाप भाई इसके चलते दरवाजे-दरवाजे मारे फिर रहे हैं... इसे जहर खा लेना चाहिए... जीकर क्या करेगी यह हरामजादी जब बाप-भाई को कंगाल ही बना देगी... हे भगवान, तू उसे उठा ले... तीनो कुल तर जायेगा।....'' इस कहानी में माँ जितनी कठोर भूमिका निभा रही है, उतनी ही कठोर शब्दों का प्रयोग भी करती है।

कहानी में तत्सम, तद्भव, अरबी-फारसी आदि शब्दों के साथ-साथ कुछ ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जो मूलतः उत्तर भारत की ग्रामीण भाषा है। जैसे बुहारना, पुआल, सौरी, खंखड़ी, दोआह, भतार, ओसार, सुबकने, टॉड़, पुलिया, रेहन, दिराखे आदि। कहानी में ऐसे अनेक मुहावरों का प्रयोग किया गया हैजिनके कारण कहानी सजीव हो उठती है। जैसे- दाहिना हाथ होना, छाती पीटना, कंगाल कर देना, आग बबूला होना, चेहरा उतर जाना, अड़ँगा डाल देना, हाहाकार मच जाना आदि। कहानी में कुछ कहावतों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे - सौरी में नमक चटाकर मार देना, तीनों कुल तर जाना आदि।

यह कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी है लेकिन पात्रों का सजीव चित्र प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने रेखाचित्र शैली का भी प्रयोग किया है।

१०.५ शीर्षक

'सावित्री दीदी' कहानी में सावित्री केवल एक पात्र नहीं है बल्कि वह समाज की ऐसी अनेक लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो आज भी लड़का-लड़की के भेदभाव का शिकार हो रही है। लेखक के मन और मस्तिष्क पर सावित्री दीदी की इतनी गहरी छाप पड़ चुकी है कि दीप्ति के अन्दर भी उन्हें सावित्री दीदी की झलक मिलती है।

इस कहानी के आरम्भ में ही यह बताया गया है कि तीन दिन पहले सावित्री दीदी की मृत्यु हो गयी और कहानी के अन्त तक जो बताने का प्रयास किया गया है वह सावित्री दीदी की मृत्यु की पृष्ठभूमि है। सम्पूर्ण कहानी में सावित्री दीदी की करुण गाथा का वर्णन किया गया है। उनके साथ घटित घटनाओं के माध्यम से ही कहानी का विकास होता है। लेखक जो स्वयं सावित्री दीदी के छोटे भाई की भूमिका निभा रहे हैं, उनके हृदय में गहरी मानवीय संवेदना को जन्म देनेवाली कोई और नहीं बल्कि सावित्री दीदी ही है। सावित्री दीदी के साथ बचपन से ही निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया जा रहा था। बचपन से लेकर जब तक वह जीवित थी, तब तक अपनी वजह से किसी को कोई तकलीफ नहीं होने दी। यहाँ तक कि जब उन्हें लगने लगा कि उनके कारण भैया और बाबूजी में दरार पड़ रही है तथा खेत बेचने की नौबत आ गयी है, तो उन्होंने (सावित्रीने) अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर दी।

माँ-बाबू और भैया की सारी समस्याओं की जड़ भी सावित्री दीदी थी। उनकी मृत्यु के बाद इन सब लोगों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गयी थी। अतः हम देखते हैं कि कहानी की केन्द्र बिन्दु सावित्री दीदी ही हैं। इस दृष्टि से कहानी का शीर्षक 'सावित्री दीदी' सार्थक एवं बिल्कुल उपयुक्त है।

१०.६ उद्देश्य

'सावित्री दीदी' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित सामाजिक कहानी है। जिसमें यह दिखाया गया है कि हमारे समाज में अब भी लड़कियों के जन्म पर शोक मनाया जाता है। जबकि वहीं लड़कों के जन्म पर माँ-बाप का पैर धरती पर नहीं पड़ता है। लड़की जन्म से ही उपेक्षित समझी जाती है और पूरा जीवन उसे अभावों में गुजारना पड़ता है। हमारे समाज में आज भी कुछ ऐसे परिवार हैं, जहाँ लड़का लड़की का भेदभाव किया जाता है। इस कहानी में लेखक सावित्री दीदी के असह्य दुख को देखकर संवेदनशील हो उठते हैं। सावित्री जब बीमार पड़ती थी, तो स्वयं ही ठीक हो जाती थी। जबकि भाइयों के बीमार होने पर उन्हें अच्छे-अच्छे डॉक्टरों को दिखाया जाता था। सावित्री के पास न ठण्डी के लिए कपड़े हैं, न गर्मी में मच्छरों के उत्पाद से बचने के लिए मच्छरदानी और न ही बरसात में गिले कपड़े बदलने के लिए दूसरे कपड़े।

इतना सब के बावजूद माँ उन्हें ताने मारती थी। माँ जो स्वयं एक स्त्री है लेकिन वह भी सावित्री को अनेक यातनाएँ देती थी। माँ को कभी भी इस बात का एहसास न हुआ कि वह स्वयं भी कभी लड़की और क्वाँरी थी। इस कहानी में लेखक ने यह बताया है कि एक माँ द्वारा अपनी जन्मी पुत्री को इतनी यातनाएँ दी गयीं कि वह आत्महत्या करने के लिए विवश हो गयी। वर्तमान समाज में दहेज प्रथा एक प्रमुख समस्या है। लेखक का उद्देश्य कहीं न कहीं इस सत्य को उजागर करना है। बचपन से लेकर इक्कीस साल तक सावित्री दीदी को सारी यातनाएँ इसलिए दी गयी क्योंकि वह दहेज में कम से कम दस हजार रुपये ले जाएगी।

इतना ही नहीं सावित्री की मृत्यु के पश्चात माँ-बापू और भैया खुशी से झूम उठे। जमीन बेचने और रेहन रखने की जो समस्या थी वह समाप्त हो गयी। गाँव में अपनी बदनामी न हो इसलिए यह खबर फैला दी गयी कि रात में सावित्री के पेट में दर्द हुआ जिससे उसकी मृत्यु

हो गयी। यह हमारे समाज का वास्तविक चेहरा है कि लड़की की मृत्यु का दुख माँ-बाप को नहीं है बल्कि बदनामी न हो इस बात का उन्हें डर है। लेखक सब कुछ जान रहे हैं कि सावित्री दीदी की मृत्यु नहीं हुई है बल्कि उनकी हत्या की गयी है। इसलिए वह दीप्ति के साथ वही सब कुछ दोहराना नहीं चाहते हैं।

एक प्रश्न यहाँ और उठता है कि आज दहेज प्रथा के कारण माँ-बाप की सोच ऐसी हो गयी है कि वह दस हजार रुपये दहेज देने से बेहतर लड़की का मर जाना उचित समझते हैं। लेखक ने इस कहानी में लड़का-लड़की के प्रति भेदभाव, दहेज प्रथा की समस्या, लड़कियों की असुरक्षा, लड़कियों का अभावमय जीवन और अन्त में यह बताने का सफल प्रयास किया है कि आज भी लड़की के जन्म पर न खुशियाँ मनायी जाती है और न ही उसकी मृत्यु पर शोक मनाया जाता है बल्कि उनके जन्म पर शोक मनाया जाता है और मृत्यु पर खुशियाँ मनायी जाती है।

लेखक ने सावित्री दीदी के माध्यम से समाज की अनेक ऐसी लड़कियों का यथार्थ वर्णन किया है, जो आज भी इस भयानक परिस्थिति एवं विकृत सोच की शिकार हो रही हैं।

१०.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : 'मर जाना चाहिए इस कुलक्षणी का इसका भतार ही नहीं है इस दुनिया में.. बाप-भाई इसके चलते दरवाजे-दरवाजे मारे फिर रहे हैं... इसे जहर खा लेना चाहिए.... जी कर क्या करेगी यह हरामजादी जब बाप-भाई को कंगाल ही बना देगी..... हे भगवान तू इसे उठा ले... तीनों कुल तर जायेगा।''

सन्दर्भः प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानियाँ' के 'सावित्री दीदी' शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक, आधुनिक युग के बहुचर्चित कथाकार 'मिथिलेश्वरजी' हैं।

प्रसंग : इस अवतरण में लेखक ने माँ के कठोर हृदय का वर्णन किया है। माँ अपनी जन्मी बेटी के प्रति इतनी कठोर हो जाती है कि उसकी मृत्यु तक की कामना करने लगती है। लेखक के बाबूजी और बड़े भैया जब सावित्री के लिए लड़का देखकर निराश लौटते हैं, तो सारा घर सावित्री को कोसने लगता है। सावित्री की उदासी और बेबसी देखकर लेखक गमगीन हो जाते हैं। माँ तरह-तरह की गालियाँ देते हुये सावित्री को कहने लगती हैं -

व्याख्या : सावित्री जिस घर में जन्म ली थी, वहाँ बचपन से ही लड़की को अपशकुन माना जाता है तथा उन्हें घृणा की नजरों से देखा जाता है। लड़कों द्वारा अधिक दहेज की माँग के कारण सावित्री का विवाह कहीं तय नहीं हो पाता है। इस पर माँ उसे गालियाँ देते हुये कहती है कि कुल और परिवार का नाश करनेवाली इस लड़की का पति संसार में है ही नहीं। यह इतनी अपशकुन है कि ईश्वर ने इसके लिए दाम्पत्य सुख बनाया ही नहीं है। इस कुलक्षणी के कारण बाप-भाई दरवाज-दरवाजे जाकर थक गये हैं। अर्थात् हर जगह से उसका रिश्ता ठुकरा दिया जाता है क्योंकि दहेज की माँग ज्यादा रहती है। माँ अपनी जन्मी बेटी को कहती है कि ऐसी लड़की को जहर खा लेनी-चाहिए। इसके जीने से किसी को लाभ नहीं है बल्कि इसके जीने से सभी को कष्ट ही हैं। माँ सावित्री को हराम की औलाद कहते हुये आत्महत्या करे के लिए प्रेरित कर रही है। वह भगवान से प्रार्थना करती है कि हे भगवान, तुम जल्दी से इसे अपने पास बुला लो वरना यह बाप-भाई को कंगाल बना देगी। इसकी मृत्यु से तीनो कुल का उद्धार हो जायेगा।

विशेष :

- इस अवतरण में लड़कियों को अपशकुन माना गया है, जो कि हमारे समाज के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।
- यहाँ पर दहेज प्रथा का दुष्परिणाम वर्णित है।
- मुहावरों का सुन्दर प्रयोग किया गया है।
- यहाँ पर माता को विमाता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

१०. ८ वस्तुनिष्ठ पश्न

प्र.१ लेखक सावित्री दीदी से कितने साल छोटे थे?

(क) दो साल (ख) तीन साल (ग) चार साल (घ) पाँच साल

प्र. २ मृत्यु के वक्त सावित्री की उम्र क्या थी?

(क) अट्ठारह (ख) इक्कीस (ग) बीस (घ) तेईस

प्र. ३ बाबूजी के पास कुल कितनी जमीन थी?

(क) ग्यारह (ख) तेरह (ग) बारह (घ) पन्द्रह

प्र.४ सावित्री शैली के घर क्या करने गयी थी?

(क) सोहर गाने (ख) कजरी गाने (ग) कपड़ा माँगने (घ) दाल माँगने

प्र.५ लेखक किसे बचाना चाहते हैं?

(क) विनोद को (ख) सावित्री को (ग) दीप्ति को (घ) बाबू जी को

१०.९ बोध प्रश्न

प्र.१ सावित्री दीदी के चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्र.२ सावित्री दीदी की मृत्यु का क्या कारण था?

प्र.३ 'सावित्री दीदी' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्र. ४ भाषा शैली की दृष्टि से 'सवित्री दीदी' कहानी कितनी महत्त्वपूर्ण है?

प्र.५ 'सावित्री दीदी' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

❖❖❖

१०-अ

थोड़ी देर बाद

इकाई की रूपरेखा

१०.अ.१ प्रस्तावना
१०.अ.२ कथानक
१०.अ.३ चरित्र चित्रण
१०.अ.४ भाषा शैली
१०.अ.५ शीर्षक
१०.अ.६ उद्देश्य
१०.अ,७ संदर्भ सहित व्याख्या
१०.अ.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
१०.अ.९ बोध प्रश्न

१०.अ.१ प्रस्तावना

'थोड़ी देर बाद' शहर के व्यस्त जीवन की कहानी है। इसी शहर में अनामिका नाम का एक होटल है, जहाँ से कहानी का आरम्भ होता है। इस कहानी में कॉलेज में पढ़नेवाली एक गरीब और लाचार लड़की का शोषण किया जाता है। शोषण करने कोई और नहीं है बल्कि उसके ही कॉलेज में पढ़नेवाला एक लड़का है। शोषण करने से पूर्व वह लड़की से बड़े-बड़े वादा करता है लेकिन बाद में अपने किये वादे से मुखरने लगता है। ये सारी घटनाएं लेखक के सामने अनामिका होटल में घटित होती है लेकिन लेखक कुछ नहीं कर पाते हैं। कहानी का अन्त भी अनामिका होटल में होता है। ये अनामिका होटल अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण आधुनिक युग का कोठा या रंगशाला बन गया है।

१०.अ.२ कथानक

दोपहर के समय में लेखक अपने शहर के अनामिका होटल में चाय पीने के लिए गये हैं। उस होटल के ऊपर छोटे-छोटे कमरे हैं, जो घण्टे और दिन के हिसाब से किराये पर दिये जाते हैं। चाय पीने के बहाने लेखक इस होटल में अपने नगर के खबरों से अवगत होने के लिए आते हैं क्योंकि यहाँ पर विद्यार्थी, नौकरपेशा, शरीफ, बदमाश हर तरह के व्यक्ति आते हैं। रोजाना की तरह लेखक होटल के एक कोने में बैठे चाय की चुस्कियाँ लेते हुए सिगरेट पी रहे हैं। सामने एक टेबल पर एक वकील अपने मुवक्किलों के पैसों पर पुलाव और चिकन करी खा रहा था। दूसरी टेबल पर दो तोंदियल व्यापारी अपने व्यापार पर चर्चा कर रहे थे। तीसरी टेबल पर एक हिन्दी के प्राध्यापक साहब अपने नवीन प्राध्यापकों के साथ विश्वविद्यालय की राजनीति पर चर्चा कर रहे थें। पाँचवे टेबल पर दो दादा लोग बैठे थे, जो बेयरे को डाँट रहे थे। लेखक अपनी टेबल पर से ही हर एक व्यक्ति का सूक्ष्म अध्ययन कर रहे थे।

तभी होटल में एक लड़का-लड़की घूसते हैं और केबिन में जगह न होने के कारण लेखक के बगलवाले टेबल पर बैठ जाते हैं। देखने से लड़का पैसेवाले घर का और लड़की गरीब घर की लग रही थी। लेखक को लगता है कि लड़का यहाँ आने का अभ्यस्त है लेकिन

लड़की शायद! पहली बार होटल में आयी है। लड़का उसे प्रेम से बैठाता है और लड़की के मना करने पर भी उसके लिए रसमलाई, बटर लगा टोस्ट, आमलेट और कॉफी मँगवाता है। दोनों एक ही कॉलेज में पढ़नेवाले छात्र हैं लेकिन पहली बार इस तरह मिल रहे हैं। इसलिए लड़की संकोच करती है। लड़के के प्रेमपूर्ण आग्रह पर लड़की रसमलाई खाने लगती है। लड़का के पूछने पर लड़की अपनी परेशानी का कारण उसे बताने लगती है। लड़की के पिता इस दुनिया में नहीं है। माँ अध्यापिका थी, जो अब रिटायर हो गयी है और जो पेंशन मिलता है उसी से घर चलता है। उस लड़की की एक बहन है, जो पोलियों से पीड़ित है। इसलिए वह प्रिंसिपल के पास मद्द के लिए गयी थी लेकिन प्रिंसिपल ने बात टाल दी। लड़का उसे विश्वास दिलाता है कि वह उसे कॉलेज के 'पूअर ब्वायज फण्ड' से रुपया दिलवा देगा। इतना सुनते ही लड़की के चेहरे पर कृतज्ञता के भाव झलकने लगते हैं। लेखक को लड़का बहुत चतुर और उत्साही लगता है लेकिन लड़की अभावों की मारी एवं भोली-भाली लगती है। लड़का लड़की को अपने विश्वास में लेते हुये, उसकी अन्य परेशानियों के बारे में पूछता है। लड़की अपनी माँ के रूके हुये प्रॉविडेण्ट फण्ड के कुछ रुपयों के बारे में बताती है। लड़का उत्साह में उसे बताता है कि उसके पिता डी.एस.पी. हैं और एज्युकेशन सुपरिटेण्डेण्ट रोज उसके घर आते हैं। यह काम तो वह मिनटों में करा देगा। लड़की के चेहरे पर खुशी के भाव उभरने लगते हैं। वह लड़के को अपना हमदर्द समझते हुये बताती है कि नगरपालिका में वह लिपिक पद के लिए आवेदन की है। अगर यह नौकरी उसे मिल जाती, तो उसे आर्थिक संकट से छुटकारा मिल जाता। लड़का नगरपालिका के चेयरमैन को अपना मौसा बताते हुये कहता है कि यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है। आज-कल में आपको मौसाजी के पास लेकर चलूँगा और समझिएगा काम हो गया। लड़का लड़की पर अपना प्रभाव जमा देखकर उसे ऊपरवाले कमरे में ले जाता है। लड़की अकेले में जाने से घबराती है लेकिन लड़का अपनी मीठी बातों से उसकी घबराहट दूर कर देता है। ऐसी घटनाएँ होटल में रोज घटित होती है लेकिन आज लेखक इसलिए बेचैन है क्योंकि आज की लड़की उन्हें निरीह और बेबस मालूम पड़ती है।

थोड़ी देर बाद दोनों वापस लौटते हैं। लड़की घबराई और परेशान नजर आती है। वह लड़के से कहती है कि आपने मेरे साथ अच्छा नहीं किया। लड़का उसे समझाता है कि आपको कुछ भी तो नहीं हुआ। धीरे-धीरे आप सब समझ जायेंगी। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद लड़की लड़के को मौसाजी और सुपरिंटेण्डेण्ट साहब के पास जाने की बात याद दिलाती है, तो लड़का बात को टालने लगता है। थोड़ी देर पहले जो लड़का लड़की के सामने अनुनय-विनय कर रहा था। वह अब जान छुड़ा रहा था क्योंकि लड़की में उसके लिए अब वह पहलेवाला आकर्षण नहीं रह गया था। लड़के में आये परिवर्तन को लड़की समझ जाती है। जब कॉफी समाप्त करने के बाद दोनों बाहर जाने लगते हैं तो लड़का पुनः आग्रह के साथ कल मिलने के लिए बुलाता है। लड़की उसे याद दिलाती है कि कल हमें आपके मौसाजी और सुपरिटेंडेंट साहब से जरूर मिलना है। लड़का सब ठीक करने का विश्वास दिलाता है। उन दोनों के जाने के बाद लेखक घर की ओर चल देते हैं। लेकिन आज उन्होंने जो अध्ययन किया है, वह रोज से ज्यादा तीखा और कड़वा है।

१०.अ.३ चरित्र चित्रण

लेखक की एक खास आदत है कि जब कभी भी उन्हें समय मिलता है, तो वह अपने शहर के 'अनामिका' होटल में चाय पीने के लिए पहुंच जाते हैं। वह चाय पीने के बहाने वहाँ आने-जानेवालों का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन करते हैं। वहाँ पर मौजूद तरह-तरह के लोगों की बातों से उन्हें अपने नगर के चर्चित खबरों की जानकारी मिल जाती है। लेखक के अन्दर किसी व्यक्ति के सूक्ष्म अध्ययन की अद्भुत कला है। उन्हें सिगरेट पीने का शौक है। होटल में

बैठे वकील को देखकर लेखक उसे परख लेते हैं कि वह अपने मुवक्किल के पैसों पर पुलाव और चिकन करी का मजा ले रहा है।

लेखक समाज में फैले भ्रष्टाचार से भली भाँति परिचित हैं कि आजकल हर सूट-बूट पहना व्यक्ति अफसर नहीं हौता है बल्कि सूट-बूट के वेश में एजेण्ड, स्मगलर या घुसपैठी भी हो सकते हैं। होटल की हर एक गतिविधियों पर उनकी पैनी नजर रहती है। अनामिका होटल में लड़का द्वारा लड़की की मजबूरी का फायदा उठाया जाता है। यह घटना लेखक के लिए कोई नयी बात नहीं थी लेकिन उस लड़की के प्रति लेखक के मन में सहानुभूति इसलिए है क्योंकि वह निरीह और बेबस है। वह अपने सूक्ष्म नजरों एवं अनुभवों के बल पर तुरन्त भाँप लेते हैं कि लड़का अमीर घर से सम्बन्ध रखता है तथा अति उत्साहित है जबकि लड़की आर्थिक रूप से कमजोर तथा दुखी है। लेखक उस लड़की की मासूमियत एवं मजबूरी पर संवेदनशील हो उठते हैं। लेखक को यह घटना हत्या से भी ज्यादा भयावह और पीड़ादायक लगती है। अतः लेखक एक ऐसे सीधे-सादे इंसान है, जो समाज मै फैली हुई बुराईयों से दुखी हैं। अगर वह उस घटना को रोकने का थोड़ा भी प्रयास किये होते, तो उनका चरित्र और निखर गया होता।

१०.अ.४ भाषा शैली

'थोड़ी देर बाद' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी की भाषा जनसामान्य की बोलचाल की भाषा है। कोई भी लेखक कहानी के माध्यम से जिस संदेश को पाठक तक पहुँचाना चाहता है, वह उसमें सफल तभी हो पाता है जब उनके संदेश की भाषा पाठक की भाषा हो। इस दृष्टि से 'थोड़ी देर बाद' कहानी पूर्णतः सफल है। इस कहानी की भाषा सरल और प्रवाहमयी है।

लेखक कहानी की भाषा को सजीव बनाने के लिए ग्रामीण शब्दों के साथ-साथ अरबी-फारसी एवं अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किये हैं। कहानी में प्रयुक्त किये गये अरबी-फारसी के कुछ शब्द इस प्रकार देखे जा सकते हैं- शरीफ, बदमाश, इन्तजाम, अफसरनुमा, नखरूस, खुशबू, तलाशन, लहजा आदि। आज हमारी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रवेश इस कदर हो गया है कि हम चाहकर भी इससे अलग अपने को नहीं कर पा रहे हैं। इसका उदाहरण कहानी में आये कुछ अंग्रेजी शब्द हैं। जैसे - हॉल, केबिन, गॉगल्स, फिल्टर, कॉलेज, बटर, क्लास, प्रिंसिपल, पूअर ब्वायज फंड, रिटायर, पेंशन, एज्युकेशन सुपरिटैण्डेण्ट, प्रॉविडेण्ट फण्ट आदि। भाषा को चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए सुन्दर मुहावरों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे- गुत्थी सुलझाना, सीधे अंगुली घी नहीं निकलता, शर्म की लाली दौड़ जाना, चेहरा लाल हो जाना आदि। कहानी में कुछ सूक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे - ''अकेले के बीच जीना मुश्किल है।'' लेखक ने इस कहानी में उपमा अलंकार का बड़ा सुन्दर प्रयोग किये है। जैसे - ''समस्याएँ पहाड़ की तरह लगती है।''

अभिधा शब्दशक्ति के साथ-साथ व्यंजना शब्द शक्ति का भी कहानी में प्रयोग किया गया है। उसकी एक बानगी देखिए- पता नहीं, वे अफसर हैं या किसी दवा कम्पनी के एजेण्ट या स्मगलर या घुसपैठी, कुछ भी कहा नहीं जा सकता।'' यह कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी है। 'थोड़ी देर बाद' कहानी भाषा-शैली की दृष्टि से काफी सशक्त कहानी है।

१०.अ.५ शीर्षक

'अनामिका' होटल में लेखक जिस लड़का-लड़की को देखते हैं, वह दोनों कॉलेज के छात्र है। लड़की के पिता की मृत्यु के बाद घर का खर्च माँ के पेंशन से चलता था। उस लड़की के पास इतने पैसे न थे कि वह अपना फीस भरकर पढ़ाई कर सके। इसलिए वह मदद की आशा लेकर प्रिंसिपल के पास गयी थी। लड़का अच्छी तरह से समझ जाता है कि वह आर्थिक दृष्टि से कमजोर और मजबूर है। वह झूठी हमदर्दी का नाटक करके उसका शोषण करता है।

वह लड़का बड़े-बड़े लोगों से अपना परिचय व रिश्ता बताकर उस लड़की की मुसिबतों को दूर करने का वादा करता है। लड़की उसकी हमदर्दी से प्रभावित होकर उसके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करती है लेकिन अचानक वह लड़का लड़की को लेकर ऊपरवाले कमरे में जाता है और थोड़ी देर बाद दोनों लौटते हैं। वापस लौटने पर लड़की घबरायी और परेशान नजर आती हैं। उसका चेहरा लाल हो गया था। वह काँपती हुई लड़के से कहती है कि ''यह क्या हो गया?.... आपने ठीक नहीं किया।'' थोड़ी देर पहलो जो लड़का बड़ी बड़ी बातें कर रहा था वापस लौटने के बाद उसका सारा उत्साह समाप्त हो जाता है तथा वह अपना वादा भी भूलने लगता है।

थोड़ी देर पहले लड़की जिस लड़के के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट कर रही थी, अब वह उसे अच्छी तरह समझ गयी है। थोड़ी देर पहले वह बिल्कुल नादान एवं मासूम थी लेकिन अचान उसके अन्दर न जाने कहां से सदियों की समझ आ जाती है। सम्पूर्ण कहानी दो हिस्सों में बँटी हुई नजर आती है। पहला हिस्सा ऊपरवाले कमरे में जाने से पूर्व का है और दूसरा हिस्सा ऊपरवाले कमरे से लौटने के बाद का है। ऊपरवाले कमरे में जाने और थोड़ी देर बाद लौट के आने में लड़की के जीवन में जो भयानक परिवर्तन एवं तूफान आया, वह एक सभ्य समाज की नींद उड़ा सकती है। अतः कहानी में सबसे बड़ा परिवर्तन थोड़ी देर में ही हुआ। इस दृष्टि से कहानी का शीर्षक 'थोड़ी देर बाद' बिल्कुल सटीक एवं उपयुक्त है।

१०.अ.६ उद्देश्य

'थोड़ी देर बाद' मिथिलेश्वर जी द्वारा लिखित एक सामाजिक कहानी है। इस कहानी में लेखक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार दुराचार एवं व्यभिचार का यथार्थ वर्णन करते हैं। वकील द्वारा मुवक्किल के पैसों पर भोजन का आनंद लेना तथा होटल में बैठे दादानुमा व्यक्ति का बयरे को डाँटना इसी भ्रष्टाचार, का अंश है। इस कहानी में जिस लड़की का शारीरिक शोषण किया गया है, वह बिल्कुल नादान एवं अनभिज्ञ है। आर्थिक रूप से स्थिति अच्छी न होने के कारण लड़का उसकी मजबूरी का फायदा उठाता है। लड़की को भरोसे में लेने के लिए लड़का बड़ी-बड़ी बातें करता है लेकिन अंत में जब वह अपने मकसद में कामयाब हो जाता है, तो लड़की के प्रति उसका आकर्षण कुछ समय के लिए समाप्त हो जाता है और वह किसी तरह वहाँ से निकलना चाहता है।

आज समाज में दुराचार एवं व्यभिचार की भावना इस कदर हावी हो गयी है कि उस मासूम लड़की की तरह न जाने कितनी नादान व भोली-भाली लड़कियों को अनेकों ऐसे पुरुषों के हवस का शिकार बनना पड़ता होगा। लेखक कहानी में यह स्पष्ट कर देते हैं कि यह कोई नयी घटना न होकर रोज की घटना है। लेखक चाय पीने के बहाने ऐसी घटनाएँ रोज देखते थे लेकिन आज जिस लड़की को हवस का शिकार बनाया गया वह उन्हें बिल्कुल बेबस नजर आती है। लेखक इसे हत्या का नाम देते हैं। आज हमारा समाज इतना सभ्य हो गया है कि

यहाँ वेश्याओं के कोठे नहीं हैं लेकिन अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण अनामिका जैसे अनेक होटल उसका स्थान ले चुके हैं। वह लड़की जो पहले डरी और सहमी-सी लगती है, वही लड़की थोड़ी देर बाद अपनी आर्थिक मजबूरी के कारण कल फिर मिलने की बात पर राजी है। उसे अब भी विश्वास है कि वह लड़का उसकी नौकरी लगवा देगा तथा माँ के फण्ड के बचे रुपये दिलवा देगा। यह सोच लड़की की मासूमियत को दर्शाता है। लेखक इस कहानी के माध्यम से अनेक ऐसी लड़कियों को आगाह करना चाहते हैं, जो झूठे प्रेम में फँसकर अपना जीवन अपने ही हाथों से कुचल देती हैं। यह व्यभिचार एक दलदल की तरह है जिसमें गिर जाने के बाद इंसान का उसमें से निकलना असम्भव-सा प्रतीत होता है। इसके ऊपर प्रेम व हमदर्दी का पर्दा है लेकिन उसके अन्दर हवस व स्वार्थ है। 'थोड़ी देर बाद' कहानी का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है कि समाज में ऐसे दुराचारी प्रवृत्ति के लोग पहले किसी भोली-भाली लड़की को अपने प्रेमजाल में फँसाते हैं और बाद में उसे अपनी हवस का शिकार बनाते हैं।

१०.अ.७ संदर्भ सहित व्याख्या

गद्यांश : ''अकेले का जीवन कोई जीवन नहीं होता... किसी के साथ जीने... किसी के लिए जीने में ही जीवन का वास्तविक सुख होता है, अन्यथा समस्याएँ पहाड़ की तरह लगती हैं।''

सन्दर्भ: प्रस्तुत अवतरण 'प्रतिनिधि कहानियाँ के 'थोड़ी देर बाद' शीर्षक से लिया गया है। इस कहानी के लेखक 'मिथिलेश्वर जी हैं।

प्रसंग : लेखक अनामिका होटल में बैठे रहते हैं, वहीं पर एक लड़का एक लड़की के साथ आता है। दोनों कॉलेज में पढ़नेवाले छात्र हैं। लड़की गरीब घर की है, इसलिए लड़का उसे अपनी मीठी-मीठी बातों में फँसाता है तथा झूठी हमदर्दी का नाटक करके अपना प्रभाव जमते देखकर लड़का उसे जीवन का महत्त्व समझाता है।

व्याख्या : इस अवतरण में अनामिका होटल में बैठे लड़का-लड़की आपस में बातचित कर रहे हैं। लड़का लड़की के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करके उसे अपने हमदर्दी के जाल में फँसाता है। उसकी तारीफ करते हुये कहता है कि हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी का साथ होना आवश्यक होता है। अकेले के जीवन में व्यक्ति अकेलेपन का शिकार हो जाता है। और ऐसा अकेला जीवन निरर्थक होता है। लड़का लड़की से अपन घनिष्ठता बनाने के लिए उसे समझाता है कि जीवन का वास्तविक सुख तब प्राप्त होता है, जब हम अपने लिए एक हमदर्द चुनते हैं। वह हमदर्द हमारे सुख-दुख में शामिल होता है। जीवन सफल तभी है, जब हम एक-दूसरे के लिए जीते है। अगर हम किसी का साथ ठुकराकर अकेले जीने की कोशिश करते हैं, तो अनेक समस्याएँ पहाड़ की तरह हमारे रास्ते में आ जाते हैं। लड़का अपने इस कथन द्वारा अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है।

विशेष :

- इस अवतरण में लेखक ने बताया है कि जितने भी स्वार्थी एवं अपराधी प्रवृत्तिवाले लोग होते हैं, वह सज्जनता का चादर ओढ़े रहते हैं।
- यहाँ लेखक समाज में व्याप्त दुराचार एवं व्यभिचार का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हैं।
- 'अन्यथा समस्याएँ पहाड़ की तरह लगती हैं। में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है।
- इसकी भाषा स्पष्ट एवं प्रवाहमयी है।

१०.अ.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ लेखक जिस होटल में चाय पीने गये थे, उस होटल का नाम क्या था?
(क) अभिलाषा (ख) अनामिका (ग) अणिमा (घ) अवन्तिका

प्र.२ पुलाव और चिकन कौन खा रहा था?
(क) वकील (ख) व्यापारी (ग) प्राध्यापक (घ) दादा

प्र.३ बेयरा को कौन डाँट रहा था?
(क) वकील (ख) व्यापारी (ग) मुवक्किल (घ) दादा

प्र.४ लड़का नगरपालिका के चेयरमैन से क्या रिश्ता बताता है?
(क) चाचा (ख) मामा (ग) मौसा (घ) फूफा

प्र.५ लड़का अपने पिता को किस पद पर आसीन बताता है?
(क) एस.एस.पी. (ख) डी.एस. पी. (ग) एस.पी. (घ) डी.आई.जी.

१०. अ.९ बोधप्रश्न

प्र.१ 'थोड़ी देर बाद' कहानी का सारांश लिखिए।

प्र.२ 'थोडी देर बाद' कहानी का शीर्षक स्पष्ट कीजिए।

प्र.३ लड़की आर्थिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

प.४ 'थोडी देर बाद' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

प्र.५ 'थोड़ी देर बाद' कहानी में आए हुए, लड़के का चरित्रांकन कीजिए।

❖❖❖

११

रंग-सप्तक

सं. डॉ. सरस्वती भल्ला

इकाई की रूपरेखा

११.० उद्देश्य
११.१ प्रस्तावना
११.२ एकांकी-विकास का संक्षिप्त परिचय
११.३ एकांकीकार उपेन्द्रनाथ अश्क- परिचय
११.४ 'जोंक' एकांकी का कथा-सार
११.५ संदर्भसहित व्याख्या
११.६ टिप्पणी
११.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
११.८ अभ्यास कार्य
१. दीर्घ प्रश्न
२. टिप्पणी
३. संदर्भ सहित व्याख्या

११.० उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य एस. वाय. बी.ए. प्रश्नपत्र III के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत 'रंग-सप्तक' में संकलित एवं पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु प्रस्तावित एकांकियों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

११.१ प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई में 'रंग-सप्तक' में संकलित एकांकी 'जोंक' में व्यक्त व्यंग्य के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, असंगतियों से विद्यार्थियों को परिचित कराने के साथ-साथ आधुनिक हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा एकांकी के विकास से भी अवगत कराना है।

११.२ एकांकी विकास का संक्षिप्त परिचय

आधुनिक एकांकी पाश्चात्य साहित्य की देन है। पश्चिम में एकांकी की रूप-रेखा दसवीं शती के 'मिरेकल्स' और मॉरेलिटीज' जैसे नाटक-रूपों में मिलती है। इनका प्रयोग धर्म-प्रचार या धर्म-कार्यसंबंधी नैतिक उपदेश हेतु किया जाता था। इसके पश्चात् जनता के मनोरंजन के लिए लिखे गये विनोद-पूर्ण 'इंटरल्युड्स' में इसका विकसित रूप मिलता है। जिनमें अधिक से अधिक तीन पात्रों के द्वारा किसी एक भावना के प्रदर्शन की प्रवृत्ति प्रकट हुई। किंतु उन्नीसवीं-बीसवीं शती में पेरिस, बर्लिन, लंदन, डबलिन, शिकागो आदि नगरों में लघुमंचीय आंदोलनों (लिटिल थियेटर मूवमेंट) के विकास प्रीतिभोजों में भोजन से पूर्व के समय का उपयोग करने के

लिए लिखे गये प्रहसनों तथा प्रेक्षागृहों में इन प्रहसनों के प्रारंभ में प्रेक्षकों के बीच में आ जानेवाली भीड़ के लिए द्विपात्रीय संवादात्मक 'कर्टेन रेजर' के प्रचलन ने एकांकियों के सर्जन को अभूतपूर्व प्रेरणा दी। जे.एम. बेरी, जे.बी.शॉ, ग्राहम प्रीस्टले, मोलियर, इब्सन, चेखब गोर्की, मिलर आदि की नाट्य-प्रतिभाओं ने एकांकी का आधुनिक रूप प्रस्तुत किया।

हिन्दी साहित्य में भी आधुनिक एकांकी का रूप संस्कृत नाट्यकला की अपेक्षा पश्चिम के एकांकी के अधिक निकट है। स्वरूप के ऐतिहासिक विकास, आवश्यकता और प्रयोग की दृष्टि से स्पष्ट है कि एकांकी नाटक साहित्य का वह नाट्य-प्रधान रूप है, **जिसके माध्यम से मानव-जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक कार्य, एक भाव की ऐसी कलात्मक अभिव्यंजना की जाती है** कि ये निश्चित रूप से अनेक की सहानुभूति और आत्मीयता प्राप्त कर लेते है।

हिन्दी एकांकी का प्रथम चरण भारतेंदु युग से माना जा सकता है, जहाँ भारतीय नवजागरण का संदेशवाहक हिन्दी साहित्य बना और भारतेंदु उसके उन्नायक। इस युग में राष्ट्रीय, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, पौराणिक हास्य-व्यंग प्रधान एकांकी लिखे गये। भारत-दुर्दशा, 'भारत-जननी' में भारतेंदुजी ने सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया। अन्य एकांकीकारों में बालकृष्ण भट्ट, राधाचरण गोस्वामी, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी एकांकी का दूसरा चरण द्विवेदी युग है, जो आदर्शों, नैतिकताओं का युग है। इस युग में राष्ट्रीय व पौराणिक सामाजिक एकांकी लिखे गये। राधेश्याम कथावाचक, सियाराम शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, हरिशंकर शर्मा, सुदर्शन आदि का नाम प्रमुख एकांकीकारों में लिया जा सकता है। जयशंकर प्रसाद के एकांकी 'एक घूँट' का तो ऐतिहासिक महत्त्व है।

छायावादी युग तक आते-आते हिन्दी एकांकी के विषयवस्तु एवं टेकनीक दोनों में एक स्थिरता आ चुकी थी, जिसे आकाशवाणी के माध्यम से और अधिक प्रोत्साहन मिला। उपेन्द्रनाथ अश्क चूँकि रेडियो से जुड़े थे, उन्होंने इसे स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके अलावा रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचंद्र मधुर इत्यादि का नाम भी महत्त्वपूर्ण है। 'हरिकृष्ण प्रेमी' का तो ऐतिहासिक सामाजिक महत्त्व है ही। मोहन-राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, सुरेन्द्र वर्मा, आदि अनेक अन्य नाम हैं, जिनका हिन्दी एकांकी के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इस प्रकार भारतेंदु युग से हिन्दी एकांकी की यात्रा आरंभ होकर अनेक रूप बदलते हुए आज वह हिन्दी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। रंगमंच की समृद्धि एकांकियों के विकास में निरंतर योगदान करती रही है, दोनों एक दूसरे के पुरक हैं, जिनको स्वर देने में रेडियो नाटकों की भी भूमिका अहम रही है।

११.३ उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का नाम आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में लिया जाता है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध, लेख, संस्मरण, आलोचना, नाटक, एकांकी, कविता इत्यादि के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

'अश्क'जी का जन्म सन् १९१० में १४ दिसंबर को जालंधर में हुआ। इनके पिता पं. माधोराम स्टेशन मास्टर थे। डी.ए.वी. कॉलेज जालंधर से ही इन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की। बचपन से ही अश्कजी अध्यापक, लेखक, संपादक, वक्ता और वकील बनने के साथ-साथ अभिनेता एवं डायरेक्टर बनने तथा थियेटर या फिल्म में जाने के अनेक सपने देखा करते थे। बचपन में देखे इन सभी सपनों को इन्होंने कमोबेश रूप में पूरा किया।

अश्कजी ने लेखन कार्य का आरंभ उर्दू से किया, किंतु हिन्दी में लिखना १९३५ से प्रारंभ

किया। भारत विभाजन के पश्चात् ये लाहौर से इलाहाबाद आकर बस गये। इनका अधिकांश लेखनकार्य वहीं हुआ। इलाहाबाद आने के कुछ समय पूर्व तक इन्होंने ऑल इंडिया रेडियो में नौकरी की तथा फिल्मों के लिए भी लेखन-कार्य किया।

अश्कजी ने साहित्य की लगभग हर विधा को समृद्ध किया। उनकी प्रसिद्ध कविताओं में 'चांदनी रात और अजगर, तथा 'बरगद की बेटी' का नाम लिया जाता है, तो कहानियों में 'निशानियाँ', 'छींटें', 'काले साहब' और उपन्यासों में 'गर्म राख', 'गिरती दीवारें', 'ये आदमी ये चूहे', उल्लेखनीय है नाटकों मे 'छटा बेटा' 'अंजो दीदी' और 'कैद' अश्कजी की नाट्यकला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। एकांकी नाटकों में 'भँवर', 'चरवाहे', 'चिलमन', 'तौलिए' और 'सूखी डाली' उनकी एकांकी कला के के परिचायक है। उनके लगभग सभी एकांकी रंगमंच के अनुरुप हैं।

अश्कजी की एक और अद्‌भुत विशेषता यह है कि उनके सभी चरित्र चाहे वे उपन्यास के हों, नाटक के हों, अथवा कहानी के, वे यथार्थ होते हैं। उनमें सामाजिक-वैयक्तिक जीवन की सभी समस्याओं का चित्रण होता है। जीवन की विसंगतियाँ स्पष्ट रूप से उभारने में वे अत्यंत सफल हुए हैं।

११.४ कथा-सार

मध्यवर्गीय परिवार के मुखिया भोलानाथ एक गंभीर समस्या अर्थात् अनचाहे मेहमान बनवारीलाल से छुटकारा पाने के लिए अपने मित्र प्रो. आनंद के साथ किस तरह जूझते हैं, और दोनों कितने दयनीय हो जाते हैं, इसका चित्रण 'जोंक' एकांकी में हास्य-व्यंगात्मक रूप में किया गया है।

भोलानाथ के घर में बनवारी लाल जब पहली बार मेहमान बनकर आया था, उस समय उन्होंने किसी तरह उससे पीछा छुड़ाया था, उस समय उन्हें पाँच रुपये भी देने पड़े थे। अब वह दुबारा आ गया है। भोलानाथ परेशान हैं। अपनी परेशानी का कारण बताते हुए वे प्रो. आनंद से कहते हैं कि बनवारी लाल उनका नहीं, उनके छोटे भाई का दोस्त था। उससे उनकी मुलाकात ऐसे ही सड़क के किनारे हो गई थी, और वह मेहमान बनकर उनके यहाँ पहुँच गया। पहुँचा ही नहीं, एक हफ्ते उनके घर पर टिका रहा। अब वह फिर आ गया है, तो अब जल्दी जायेगा नहीं। दोनों मित्र मिलकर उसे भगाने के लिए तरह-तरह की योजनायें बनाते हैं, यहाँ तक कि भोलानाथ की बीवी कमला बीमार होने का नाटक करती है। फिर भी, बनवारीलाल टस से मस नहीं होता। भोलानाथ घर से बाहर जाने का बहाना बना निकल जाते हैं। इस बीच घटना-चक्र ऐसे घूमता है कि प्रो. आनंद को गलती से चोर समझ लिया जाता है, और उन्हें पुलिस के हवाले करने की नौबत तक आ जाती है। बनवारीलाल हर बार इन लोगों पर भारी पड़ता है। वह 'जोंक' की तरह चिपक गया है। जोंक एक बार चिपक जाये तो खून चूस लेने के बाद ही छोड़ती है। इसी तरह बनवारीलाल भी अपने कारनामों से पूरे परिवार के छक्के छुड़ा देता है।

११.५ संदर्भ सहित व्याख्या

''तुम तो यह जानते ही हो कि प्रसिद्ध लेखकों, नेताओं और अभिनेताओं को लोग साधारण आदमियों से कुछ ऊँचा ही समझते हैं, और उनसे तो दूर रहा, उनके साथ रहनेवालों तक से बात करके फूले नहीं समाते। फिर यह तो रहमत का दायाँ हाथ था.....

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'रंग-सप्तक' में संकलित एकांकी 'जोंक' से ली गई हैं। 'रंग-सप्तक' का संपादन डॉ. सरस्वती भल्ला द्वारा किया गया है, तथा प्रस्तुत

एकांकी के रचयिता श्री उपेन्द्रनाथ अश्क हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य के एकांकीकारों में अश्कजी का नाम प्रमुख है। इनकी एकांकियों में भारतीय समाज एवं जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण बड़ी सफलता से किया गया है।

व्याख्या - प्रस्तुत पंक्तियाँ भोलानाथ अपने मित्र प्रो. आनंद से उस समय कहते हैं, जब वे घर आये अनचाहे मेहमान बनवारीलाल से छुटकारा पाने की कोशिश में लगे हुए थे। इन पंक्तियों में भोलानाथ प्रो. आनंद से बनवारीलाल की विशेषता बताते हैं कि वह मास्टर रहमत खाँ का दायाँ हाथ था। इन पंक्तियों के माध्यम से वे मास्टर रहमत की कला के प्रति अपने आकर्षण को तो व्यक्त करते ही हैं, साथ ही वे बनवारीलाल से क्यों प्रभावित हुए इसका संकेत भी दे देते हैं।

विशेष - इन पंक्तियों में कलाकारों एवं कला के प्रति आम आदमी के आकर्षण का चित्रण किया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में अश्कजी के बचपन के सपने- अभिनेता बनने, डायरेक्टर बनने थियेटर या फिल्म में जाने- की भी झलक मिलती है।

अश्क जी कुछ समय तक फिल्मों से भी जुड़े रहे। इसलिए इस जगत के दोनों पक्षों - कलाकार एवं कला प्रशंसक को वे बखूबी चित्रित कर सके।

भाषा विषय के अनुरूप है।

११.६ टिप्पणी

'जोंक' एकांकी में भोलानाथ की बेबसी

भोलानाथ मध्यवर्गीय समाज का एक प्रतीक है। मध्यवर्ग जिसे चाहे अनचाहे मेहमानों का स्वागत करना पड़ता है। इन मेहमानों में कुछ मेहमान बनवारीलाल की तरह होते हैं, जो एक बार आ जाते हैं तो जम जाते हैं। बेचारा भोलानाथ बनवारी से पीछा छुड़ाने के लिए अनेक बहाने बनाता है, योजनाएं बनाता है, पत्नी की बीमारी के बहाने उसे मायके छोड़ने का नाटक करता है, उपवास रखता है, शहर से बाहर जाने की भी बात करता है, किंतु बनवारीलाल जोंक की तरह चिपक गया है। उसके सामने भोलानाथ अपने को असहाय और बेबस पाता है।

११.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१- बनवारीलाल किसके यहाँ मेहमान बनकर आता है?

उ.- बनवारीलाल भोलानाथ के यहाँ मेहमान बनकर आता है।

प्र.२- 'जोंक' एकांकी में जोंक कौन है?

उ.- 'जोंक' एकांकी में जोंक बनवारीलाल है।

प्र.३ 'खून का बदला खून' और 'दर्दे जिगर' किसके प्रसिद्ध नाटक है?

उ.- 'खून का बदला खून और दर्दे जिगर' मास्टर रहमत खान के प्रसिद्ध नाटक हैं।

प्र. ४- भोलानाथ का छोटा भाई कौन है?

उ.- भोलानाथ का छोटा भाई परसराम है।

प्र. ५- बनवारीलाल किसका दायाँ हाथ होने का दावा करता था?

उ. - बनवारीलाल मास्टर रहमत खान का दायाँ हाथ होने का दावा करता था।

प्र.६- प्रो. आनंद कहाँ प्रोफेसर थे?

उ.- प्रो. आनंद जालंधर में प्रोफेसर थे।

प्र. ७- मि. बनवारीलाल बाजार से क्या खरीदकर लाये?

उ. मि. बनवारीलाल बाजार से लौकियाँ खरीदकर लाये।

अभ्यास-कार्य

प्रश्न - 'जोंक' एकांकी में भारतीय मध्यवर्गीय परिवार में मेहमान नवाजी की समस्या का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

(उत्तर के लिए कथा-सार की सहायता लें)

टिप्पणी-

भोलानाथ की पत्नी कमला

प्रो. आनंद

'जोंक' एकांकी शीर्षक की सार्थकता

संदर्भसहित व्याख्या

१) अरे भाई उन दिनो..... रसास्वादन कर लिया करते थे।

२) एक बार किसी ने एक साधु..... धनी मानी और हम।

३) मैं कहता हूँ नयी साड़ी..... कई बार देख चुके हैं।

४) यह विचित्र अतिथि..... अपनी जेब से।

१२

राखी का मूल्य

- हरिकृष्ण प्रेमी

इकाई की रूपरेखा

१२.० उद्देश्य
१२.१ प्रस्तावना
१२.२ एकांकीकार हरिकृष्ण प्रेमी का परिचय
१२.३ 'राखी का मूल्य' एकांकी का कथा-सार
१२.४ एकांकी पर आधारित दीर्घ प्रश्न
१२.५ टिप्पणी- राखी का मूल्य : शीर्षक की सार्थकता
१२.६ अभ्यास-कार्य
१. संदर्भ-सहित व्याख्या
२. टिप्पणी
३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१२.० उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य हरिकृष्ण प्रेमी रचित एकांकी 'राखी का मूल्य' के माध्यम से विद्यार्थियों में देशभक्ति, धर्म निरपेक्षता व विश्व-बंधुत्व की भावना को जागृत करना है।

१२.१ प्रस्तावना

भारत के मध्यकालीन इतिहास की पृष्ठभूमि पर लिखे गए प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से भाई-बहन के पावन-संबंधों एवं हिन्दू-मुस्लिम एकता की दिशा में सार्थक कदम उठाकर वर्तमान समाज के व्याप्त सांप्रदायिक द्वेष को दूर कर सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित की जा सकती है। इस प्रकार ऐतिहासिक रचना की प्रासंगिकता को रेखांकित किया जा सकता है।

१२.२ हरिकृष्ण प्रेमी

हरिकृष्ण प्रेमीजी का हिन्दी नाटककारों में विशेष महत्त्व है। मूलतः नाटककार एवं कवि हृदय प्रेमीजी का जन्म १९०८ ई, में गुना ग्वालियर में हुआ। परिवार राष्ट्रभक्त था, अतः राष्ट्रीयता का संस्कार उन्हें बचपन से ही मिला। दो वर्ष की बाल्यावस्था में ही माता की मृत्यु हो गई। प्रेम की अतृप्ति ने उन्हें स्वयं 'प्रेमी' बना दिया। पत्रकार के रूप में साहित्यिक जीवन प्रारंभ कर बाद में कविता की ओर भी झुकाव। अंततः वे नाटकों में रम गए। कुछ समय तक लाहौर एवं बंबई में फिल्म से भी जुड़ाव। आकाशवाणी जालंधर में हिन्दी दिग्दर्शक रहे।

प्रेमीजी की सर्वप्रथम प्रकाशित रचना 'स्वर्ण विहान' गीतिनाट्य है। उन्होंने चालीस से अधिक नाटक एवं एकांकियों की रचना की। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- 'शिवा-साधना',

प्रतिशोध, आहुति, स्वप्न-भंग, मित्र, विषपान, संरक्षक इत्यादि। 'पाताल-विजय' एकमात्र पौराणिक नाटक है। उन्होंने सामाजिक नाटक भी लिखे हैं। 'बंधन' छाया, ममता आदि इनके सामाजिक नाटक हैं।

प्रेमीजी की ख्याति ऐतिहासिक नाटककार के रूप में अधिक है। मध्यकालीन इतिहास से कथा-प्रसंगों को लेकर उन्होंने राष्ट्रीय जागरण, धर्म-निरपेक्षता तथा विश्व-बंधुत्व का संदेश दिया। उनके सामाजिक नाटकों में जीवन की असंगतियों के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह की अभिव्यक्ति हुई है। उन पर गांधी-दर्शन का प्रभाव भी देखा जा सकता है।

१२.३ कथासार-

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित एकांकी 'राखी का मूल्य' में चित्तौड़ की महारानी कर्मवती बहादुरशाह से मेवाड़ को बचाने के लिए मुगल-सम्राट हुमायूँ को राखी भेजकर भाई बनाने का संदेश दूत के माध्यम से भेजने का सुझाव अन्य रानियों एवं राजपूतों के समक्ष रखती है। मेवाड़ शत्रु-सेना से घिरा हुआ है, राणा सांगा स्वर्गीय हो चुके हैं, राजपुताना आपसी कलह में इतना लिप्त हो चुका था कि उनसे सहायता की कोई आशा नहीं की जा सकती थी। मुगल-सम्राट हुमायूँ को राखी-भाई बनाने के इस सुझाव को सुनकर सभी लोग चकित हो जाते हैं। रानी कर्मवती राखी दूत के माध्यम से हुमायूँ तक भेजती है। हिन्दू रानी का संदेश एवं राखी का उपहार पाकर हूमायूँ अपने आपको खुशकिस्मत समझता है और बहन के रिश्ते को सबसे ऊपर रखता है। उसके इस व्यवहार पर उसके सेनापति हिन्दू बेग और तातार खाँ असमंजस में पड़ जाते हैं। इस पर हुमायूँ उनसे कहता है कि वह दुनिया को बता देना चाहता है कि हिंदुओं के रस्मोरिवाज मुसलमानों के लिए भी उतनेही प्यारे और पाक हैं, जितने कि हिंदुओं के लिए। इसीलिए यदि रानी कर्मवती ने राखी भेजी है तो वह उसका उतना ही सम्मान करेगा, जितना कोई राजपूत करता। वह अपना कोई नफा-नुकसान नहीं सोचेगा वह शेरखाँ से युद्ध न कर मेवाड़ की हिफाजत के लिए सेना को कूच करने का आदेश देता हैं। इस एकांकी के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम एकता की दिशा में प्रेमीजी का योगदान अप्रतिम है।

१२.४ दीर्घ प्रश्न

प्रश्न - 'राखी का मूल्य' एकांकी के माध्यम से भाई-बहन के पवित्र संबंधों की स्थापना के साथ-साथ हिन्दू-मुस्लिम एकता का अनोखा प्रयास किस प्रकार किया गया है?

उत्तर - चित्तौड़ के महाराणा सांगा की मृत्यु के पश्चात् मेवाड़ में अराजक स्थिति उत्पन्न हो गई थी। आपसी मनमुटाव, कलह के कारण शासन-व्यवस्था डगमगा गई थी। ऐसी स्थिति में बहादुरशाह जफ़र ने मेवाड़ पर धावा बोल दिया। उसके तोपखाने का मुकाबला करने में मेवाड़ के सैनिक अपने आपको असमर्थ पा रहे थे। इसी कठिन घड़ी में राखी के त्यौहार के अवसर पर महारानी कर्मवती के साथ जवाहर बाई तथा अन्य क्षत्राणियाँ थालियों में राखी सजाकर खड़ी थीं। बहनें भाइयों को तिलक कर राखी पहनाती हैं और तलवारें थमा देती हैं। इसी समय महारानी कर्मवती राजपूतों को चुनौती देते हुए कहती हैं कि ''मेवाड़ में ऐसी रंगीन श्रावणी कभी न आयी होगी। भाइयों क्षत्राणियों की राखियाँ सस्ती नहीं होतीं, ब्राह्मणों की तरह हम पैसे लेकर राखी नहीं बाँधतीं। हमारे तारों का प्रतिदान सर्वस्व-बलिदान हैं। जिन्हें प्राण चढ़ाने का शौक है, वह ही ये राखियाँ स्वीकार करें।'' उनकी इस चुनौती को अर्जुन एवं अन्य सभी क्षत्रिय स्वीकार कर राखी के महत्त्व को मान्य कर बलिदान करने को तत्पर होते हैं और रानी के समक्ष मेवाड़ की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हैं। अएन्य रानियाँ जौहर के लिए प्रस्थान करती हैं। इसी समय

बाघसिंह युद्ध के मैदान की खबर लेकर आते हैं। स्थिति चिंताजनक है। शत्रुओं के आग उगलते तोपखानों का सामना तलवारों के बल पर कर पाने में राजपूत वीर होने के बावजूद कमजोर पड़ रहे हैं। उन्हें अपनी जान का डर नहीं, किंतु मेवाड़ की रक्षा न कर पाने का दुख है। इस पर महारानी कर्मवती को मेवाड़ की रक्षा का एक उपाय सूझता है। वह उपाय है हुमायूँ को राखी भेजकर सहायता प्राप्त करने का। इस सुझाव से बाघसिंह तथा जवाहर बाई इत्यादि चौंक उठते हैं, क्योंकि हुमायूँ एक तो मुसलमान, दूसरे मुगल-सम्राट। किंतु रानी को पूरा विश्वास है कि हुमायूँ राखी का मान रखकर उसकी सहायता करेगा क्योंकि शत्रुपक्ष का होने के बावजूद वह भारतीय संस्कृति और उसमें राखी के महत्त्व को अच्छी तरह जानता है। वे दूत के माध्यम से अपना संदेश और राखी हुमायूँ के पास भेजती हैं। हुमायूँ कर्मवती की राखी और सहायता प्राप्त करने का संदेश पाकर भावुक हो उठत है। स्वयं को खुशकिस्मत मानते हुए कहता है, ''बहन कर्मवती से कहना हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा न हुआ तो क्या, वह तुमारे सगे भाई से बढ़कर है। कह देना मेवाड़ की इज्जत मेरी इज्जत है, जाओ।'' हुमायूँ के सेनापति तातार खाँ और हिन्दू बेग हुमायूँ को मेवाड़ से मुगलों की दुश्मनी की याद दिलाते हैं, किन्तु वह उल्टे उन्हीं को राखी का मोल समझाता है, और दो टूक शब्दों में कहता हैं, ''राखी आ जाने के बाद भी क्या सोच-विचार किया जा सकता है? अब सोचने का वक्त नहीं..... तातार खाँ, हिन्दू बेग जल्द फौज तैयार करो।''

१२.५ टिप्पणी

'राखी का मूल्य' शीर्षक की सार्थकता

किसी भी वस्तु या विषय के बारे में हमें उसके नाम से ही पता चलता है। शीर्षक की सार्थकता यही होती है कि उसके माध्यम से किसी भी रचना के बारे में जानकारी मिलती है। प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक 'राखी का मूल्य' देकर नाटककार हरिकृष्ण प्रेमीजी ने भारतीय संस्कृति में राखी के सांस्कृतिक महत्त्व को रेखांकित किया है।

राखी भाई-बहन के पवित्र संबंधों पर मुहर लगाती है। महारानी कर्मवती राखी के संबंध में कहती है, ''हमारी राखी वह शीतल प्रलेप है जो सारे घाव भर देती है, वह वरदान है जो सारे वैर-भावों को जलाकर भस्म कर देता है। राखी पाने के बाद भी क्यो कोई वैर-विरोध रख सकता है?'' हिन्दू रानी कर्मवती को बहन बनाकर हुमायूँ ने जहाँ हिन्दू मुस्लिम एकता की अद्‌भुत मिसाल प्रस्तुत की, वहाँ राखी पर अपनी सल्तनत को न्यौछावर करने में भी वह नहीं हिचकता। राखी के धागों पर प्राणों की बलि चढ़ानेवाले क्षत्रियों से वह किसी भी मायने में कम नहीं है। हरिकृष्ण प्रेमी ने इस एकांकी के माध्यम से इतिहास के पन्नों में 'राखी के मूल्य' को अनमोल बना दिया है। यही इस शीर्षक की सार्थकता का पमाण है।

१२.६ अभ्यास-कार्य

१. संदर्भसहित व्याख्या

१) ''हमारी राखी वह शीतल..... विरोध रख सकता है।

२) 'अफसोस, कि तुम राखी..... मेरी मदद चाही है।''

३) ''बहन का रिश्ता..... इज्जत करना नहीं जानते।''

२. **टिप्पणी**

१) महारानी कर्मवती

२) मुगल बादसाह हुमायूँ

३) सेनापति हिन्दू बेग

३. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

१) रानी कर्मवती ने राखी किसके पास भेजी थी?

२) रानी कर्मवती की राखी हुमायूँ के पास कौन लेकर गया था?

३) मेवाड़ पर किसने आक्रमण किया था?

४. युद्ध का हाल रानी के पास कौन लेकर आता है?

❖❖❖

१३

वापसी

- विष्णु प्रभाकर

इकाई की रूपरेखा

१३.० उद्देश्य
१३.१ प्रस्तावना
१३.२ एकांकीकार का परिचय
१३.३ एकांकी 'वापसी' का कथासार
१३.४ संदर्भसहित व्याख्या
१३.५ अभ्यास-कार्य
१. प्रश्न
२. टिप्पणी
३. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
४. संदर्भसहित व्याख्या

१३.० उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य एकांकी के माध्यम से मानवीय मूल्यों के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

१३.१ प्रस्तावना

प्रस्तुत एकांकी 'वापसी' भारत-पाकिस्तान के राजनीतिक संबंधों की कड़वाहट को उजागर करने के साथ-साथ दोनों देशवासियों की अपने वतन से दूर जाकर बसने एवं विस्थापन के दर्द का बयान करने के साथ-साथ एकांकी के पात्रों की मानसिक स्थिति, उनके द्वन्द्व को भी स्पष्ट करता है। एकांकी के संवाद अपनी मार्मिकता से मन को छू जाते हैं।

१३.२ एकांकीकार विष्णु प्रभाकर का परिचय

'' आवारा मसीहा'' विष्णु प्रभाकर साहित्य के माध्यम से मानव एवं मानवता की खोज करने वाले कथाकार नाटककार का जन्म २१ जून १९१२ इ.सन्, मीरनपुर ग्राम, जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई, किंतु बी.ए. पंजाब से करने के बाद वे हिन्दी-लेखन क्षेत्र में आये।

विष्णु प्रभाकर जी के दो कहानी-संग्रह 'आदि और अंत' तथा 'रहमान का बेटा' हैं। इनकी पच्चीस नाट्य-कृतियों में ग्यारह नाटक, बारह एकांकी संग्रह, तथा दो प्रेमचंद के उपन्यासों के नाट्य रुपांतरण हैं। पूर्ण नाटक है - 'डॉक्टर', 'नवप्रभात', 'समीप', तथा 'हीरो'। बारह एकांकी, दस बजे रात, क्या वह दोषी था, अशोक, प्रकाश तथा परछाई, ये रेखायें, ये दायरे, इनके प्रसिद्ध एकांकी संग्रह हैं।

प्रभाकर जी के नाटकों में हमें कुशल कहानी-लेखक और नाटक-लेखक के समान दर्शन होते हैं। कहानी की मार्मिकता नाटकों में उभरकर आ जाती है।

'आवारा मसीहा' - विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित शरत्चंद्र की औपन्यासिक जीवनी है। इससे उन्हें विशेष ख्याति मिली।

१३.३ कथासार

'वापसी' एकांकी का कथ्य भारत-पाक विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। भारत से उजड़े लोग पाकिस्तान गये तो पाकिस्तान से भागे लोग हिन्दुस्तान आये। दोनों अपनी-अपनी जगहों से बेदखल किये गये। अपनी जमीन की खुशबू मन में बसाये दोनों देशों के लोग तड़पते रहे, फिर भी अमन-चैन स्थापित नहीं हो पाया। कश्मीर का मुद्दा दोनों देशों के लिए हड्डी का टुकड़ा बन गया। दोनों देश इस पर अपना अधिकार जमाने के लिए हर कोशिश में लगे रहे। युद्ध की स्थितियाँ भी बनी, जो आज तक रह-रहकर युद्ध की चिंगारी भड़कने का अंदेशा बनाये रखती है।

प्रस्तुत एकांकी 'वापसी' भारत-पाकिस्तान के मध्य युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। स्थान काश्मीर है तो काल-सितंबर-अक्टूबर १९६५ ई। पाकिस्तानी सेना का जासूस पहले कभी भारत का बाशिंदा था। बचपन की स्मृतियाँ उसके भीतर जासूस बनने के बावजूद बसी हुई है। उसे और कुछ अन्य लोगों को विशेषण प्रशिक्षण देकर जासूसी के मकसद से भारत भेजा जाता है। भारत की सैन्य गतिविधियों एवं अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ वे पाकिस्तान को दे सकें, इसलिए उन्हें सीमा स्थित कश्मीरी गाँव में उतारा जाता है किंतु दुर्भाग्य से उनके हवाई जहाज को गाँव के कुछ लोग उतरते हुए देख लेते हैं और संबंधित अधिकारियों को सूचित कर देते हैं। दुर्भाग्य से वे पकड़े जाते हैं। भारतीय अधिकारियों के साथ गाँव के चौधरी भी होते हैं। चौधरी को असगर पहचान लेता है, और उन्हें ताऊ कहकर बुलाता है। चौधरी को आश्चर्य होता है किंतु असगर से बातचीत के दौरान वे उसे पहचान तो लेते हैं, किंतु उस पर विश्वास नहीं कर पाते। गोद में जिसे बच्चे की तरह खिलाया था आज वह देश के दुश्मन के रूप में है। वे उसे गिरफ्तार करा, अपना कर्तव्य पूरा करते है। किंतु दुखी भी हो जाते हैं। विशेष बात तो यह है कि असगर को अपने पकड़े जाने का रत्ती भर भी दुख नहीं है, बल्कि अपने वतन में वापसी से उसे सुकून मिलता है। भले ही वह जेल में अपना जीवन बितायेगा लेकिन रहेगा तो अपनी मिट्टी की खुशबू के बीच। सही मायने में उसकी वापसी हुई।

१३.४ संदर्भसहित व्याख्या

पर यह सचमुच असगर है..... यह कैसी वापसी।

संदर्भ- पिछली इकाई में दिये गये उदाहरण के अनुसार

व्याख्या - प्रस्तुत वाक्य चौधरी साहब कहते हैं।

पाकिस्तानी जासूस असगर, जो मूलतः हिंदुस्तानी है, किंतु बँटवारे के बाद पाकिस्तान चला गया। द्वेष की राजनीति के कारण उसे विशेष प्रशिक्षण देकर भारत की गतिविधियों की गुप्त जानकारी पाकिस्तान को भेजने के मकसद से भारत भेजा गया। यहाँ आकर वह अपने अन्य साथियों सहित पकड़ा जाता है। चौधरी साहब असगर के पकड़े जाने पर उक्त वाक्य कहते हैं। असगर का बचपन उनकी आँखों के सामने घूम जाता है, किंतु आज की स्थिति अलग है, वह पाकिस्तानी जासूस है। वह अपने मित्र लतीफ को याद करते हैं, जिसका बेटा असगर है। उन्हें लगता है, वे स्वयं ठगे गये हैं, लतीफ ठगा गया है, असगर ठगा गया है। सबके साथ छल किया गया है। आदमी-आदमी का दुश्मन बन गया है। राजनीति ने इंसान को इंसान का दुश्मन बना दिया।

विशेष- चौधरी साहब का अंतर्व्दन्द्व वाक्यों के बीच में..... अंतर बताते हुए व्यक्त किया गया है।

असगर के देश-प्रेम की ओर संकेत भी 'वापसी' के माध्यम से दिया गया है।

राजनीति की संवेदनशून्यता भी उजागर होती है।

१३.५ अभ्यास-कार्य

१. **प्रश्न** - 'वापसी' एकांकी में 'वापसी' शीर्षक की सार्थकता सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (कथासार की सहायता लें)

२. **टिप्पणी**

१) वापसी एकांकी में 'असगर'

२) चौधरी का अंतर्द्वद्व

३. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

१) असगर बचपन में ताऊ कहकर किसे बुलाता था?

२) पाकिस्तानी सेना का कप्तान कौन है?

३) असगर के पिता का नाम क्या था?

४. **संदर्भसहित व्याख्या**

१) तो खुदाहाफिज..... लड़ाई हो जाये।

२) वही है आज भी वैसे का ..... जंग भी खत्म हो जायेगी।

३) नहीं- नहीं..... क्या सचमुच हमने पाकिस्तान चाहा था?

४) उसके बाद ..... हम लिख नहीं सकते

५) आये हैं..... क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ।

६) उस दिन हम सब ..... क्या इन्सान!

❖❖❖

१४

दो कलाकार

- भगवती चरण वर्मा

इकाई की रूपरेखा

१४.० उद्देश्य
१४.१ प्रस्तावना
१४.२ एकांकीकार भगवतीचरण वर्मा का परिचय
१४.३ दो कलाकार-एकांकी का कथासार
१४.४ संदर्भसहित व्याख्या
१४.५ टिप्पणी- 'दो कलाकार' एकांकी का उद्देश्य
१४.६ अभ्यास कार्य
दीर्घोत्तरी प्रश्न,
संदर्भसहित व्याख्या
टिप्पणी
वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१४.० उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य 'दो कलाकार' एकांकी के माध्यम से समाज एवं समाज के दो महत्त्वपूर्ण वर्गों कला का सृजन करने वालों और कला का उपभोग करनेवालों की क्षुद्र मानसिकता उजागर करना है।

१४.१ प्रस्तावना :

'दो कलाकार' एकांकी वर्तमान समाज और कलाकार दोनों पर व्यंग्य करता है। कला का उपयोग करनेवाले प्रकाशक और रईस कला के वास्तविक उद्देश्य से दूर हो गये हैं। धन कमाना ही उनका उद्देश्य बन गया है। कलाकार भी अपनी कला के माध्यम से नहीं, बल्कि अपनी धूर्तता से समाज पर अपना दबदबा बनाये रखते हैं। सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए हास्य और विनोद का स्वर भी प्रस्तुत एकांकी में उभरा है।

१४.२ भगवतीचरण वर्मा- परिचय

आधुनिक युग के प्रौढ़ कलाकार भगवतीचरण वर्मा का जन्म सन् १९०३ में उन्नाव जिले की शफीपुर तहसील में हुआ। प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए., एल.एल.बी.। लेखन तथा पत्रकारिता ही मुख्य कार्यक्षेत्र रहा। बीच-बीच में फिल्म तथा आकाशवाणी से भी जुड़े रहे। बाद में स्वतंत्र लेखन की वृत्ति अपनाकर लखनऊ में बस गये।

भगवतीचरण मुख्य रूप से उपन्यासकार एव कवि हैं। कवि के रूप में उनकी कविता 'भैंसागाड़ी' का आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में अपना महत्त्व है। उपन्यासकार के रूप में उनकी ख्याति का आधार 'चित्रलेखा' है। उनके अन्य उपन्यासों में 'पतन', तीन वर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, राख और चिंगारी, आखिरी दाँव, भूले-बिसरे चित्र तथा सबहिं नचावत राम गोसाईं' उल्लेखनीय हैं। कहानी संग्रहों में 'इंस्टॉलमेंट', दो बाँके, मोर्चाबंदी तथा 'मेरी कहानियाँ' को अधिक लोकप्रियता मिली। इनके एकांकियों की संख्या कम होते हुए भी एकांकीकार के रूप में इन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया। 'दो कलाकार' 'सबसे बड़ा आदमी' तथा 'चौपाल' समाज की स्थिति का यथार्थ चित्रण है।

४.३ कथा-सार

'दो कलाकार' एकांकी दो कलाकारों- एक कवि चूड़ामणि और एक चित्रकार मार्तंड - के आर्थिक संघर्षों से जूझने और एक प्रकाश-परमानंद तथा एक रईस रामनाथ द्वारा कलाकारों के शोषण पर आधारित है। यह जीवन एवं समाज की सच्चाइयों पर तीखा व्यंग्य है। समाज के महत्त्वपूर्ण घटक एक कवि और एक चित्रकार किसी तरह किराये के मकान में जीवन-यापन कर रहे हैं। उनकी माली हालत इतनी खराब है कि मकान-मालिक बुलाकीदास को उन्होंने छह महीनें से किराया नहीं चुकाया हैं। दोनों कलाकार पारिश्रमिक पाने की उम्मीद में प्रकाशक एवं रईस के पास जाते हैं, किंतु नाउम्मीद होकर लौटते हैं। कवि चूड़ामणि प्रकाशक परमानंद से अपनी मुलाकात की बात बताते हुए कहता है कि परमानंद ने उसे रुपये नहीं दिये और यह कहकर भगा दिया कि किताबों की बिक्री नहीं होती, जबकि असलियत कुछ और ही है। प्रकाशक के पास अपने लिए नई कार खरीदने के लिए रुपये हैं किंतु कवि को उसका पारिश्रमिक देने के लिए नहीं। ऐसा ही चित्रकार मार्तंड के साथ होता है। लाला रामनाथ उसके चित्र की कीमत बहुत कम लगाते हैं। उसकी मजबूरी का लाभ उठाते हुए पचास रुपये के चित्र की कीमत सात रुपये लगाते हैं। यह सुनकर मार्तंड बौखला उठता है और अपने नौकरों को आदेश देता है कि वे मार्तंड को पीटें, किंतु मार्तंड यह अर्थ लगाता है कि लालाजी उससे मारने को कह रहे हैं और वह उनके मुँह पर एक घूँसा मारता है तथा अपना बनाया हुआ चित्र लेकर वहाँ से भाग खड़ा होता है। दोनों अपनी आपबीती एक-दूसरे को सुनाते हैं और प्रसन्न होते हुए कहते हैं कि दोनों - प्रकाशक और लाला रामनाथ दौड़े-दौड़े उनके पास आयेंगे, क्योंकि चूडामणि प्रकाशक परमानंद की सोने की घड़ी यह कहते हुए उठा लाया था कि अगर दो घंटे के भीतर उसे उसका मेहनताना नहीं मिलेगा तो वह उस घड़ी को बाजार में बेच देगा। इस पर मार्तंड भी हँसते हुए कहता है कि हड़बड़ाहट में वह अपनी बनाई हुई तस्वीर के बजाय लाला रामनाथ के पिता की तस्वीर उठा लाया है। इसलिए लालाजी अपने पिता की तस्वीर लेने आयेंगे ही। इसी दौरान दरवाजे पर दस्तक होती है। मकान-मालिक बुलाकीदास अपना बकाया किराया वसूलने आ पहुँचते हैं। दोनो कलाकार बड़ी धूर्तता से उन्हें बेवकूफ बनाकर किराया चुकता कर देने की बात करते हैं। तब तक प्रकाशक परमानंद कवि चूड़ामणि को खोजते हुए आ पहुँचता है और उससे माफी माँगते हुए उसकी किताब के रुपये देते हुए अपनी सोने की घड़ी लौटा देने के लिए कहता है, किंतु कवि चूड़ामणि उसे धमकाता है कि उसकी निंदा करते हुए वह कविता (पुराण) लिखेगा, जिससे उसकी बदनामी होगी। बदनामी के डर से प्रकाशक अपनी सोने की घड़ी लिये बिना ही लौट जाता है। अब बारी आती है, लाला रामनाथ की, वे अपने पिता की तस्वीर वापस लेने आते हैं, किंतु अपने पिता की तस्वीर देखते ही वे आग बबूला हो जाते हैं, क्योंकि चित्रकार मार्तंड ने तस्वीर से नाक गायब कर दी थी। मार्तंड मक्कारी से कहता है कि लालाजी के पिता बहुत दानी और धर्मात्मा थे, किंतु लालाजी ने पचास रुपये की तस्वीर की कीमत सात रुपये लगाकर उनकी नाक कटवा

दी। लाला रामनाथ अपने पिता की तस्वीर ठीक कराने के लिए पचास रुपये मार्तंड को देकर तस्वीर वापस ले जाता है। दोनों कलाकारों के पास रुपये देखकर मकान-मालिक मकान का बकाया किराया देने के लिए कहता है। दोनो कलाकार फिर पुरानी चाल चलते हैं और बुलाकीदास से कहते हैं कि पुराना सब किराया चुकता हो गया है और अब नया चढ़ेगा तो वह देंगे। बुलाकीदास दोनों को मकान से निकल जाने के लिए कहता है, किंतु दोनों शातिर कलाकार उसकी नाककटी तस्वीर की प्रदर्शनी लगाने और परमानंद पुराण को बुलाकी पुराण बनाने का डर दिखाकर मकान में जमे रहते हैं। बेचारा मकानमालिक झुँझलाते हुए लौट जाता है।

४.४ संदर्भसहित व्याख्या-

लाता कैसे? भला बताओ, पचास रुपये की तस्वीर अगर कोई पचीस तक दे, तो भी बेची जा सकती है। लेकिन जब कोई यह कहे कि मैं सात रुपये के ऊपर एक कौड़ी भी नहीं दे सकता, तब तुम्हीं भला बताओं मैं क्या कर सकता था?''

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'रंग-सप्तक' में संकलित एकांकी 'दो कलाकार' से ली गई हैं। 'रंग-सप्तक' का संपादन डॉ. सरस्वती भल्ला द्वारा किया गया है। 'दो कलाकार' एकांकी के रचयिता भगवतीचरण वर्मा है। प्रस्तुत एकांकी आधुनिक समाज और आधुनिक कलाकारों के सतहीपन को उजागर करता है।

व्याख्या - उपर्युक्त पंक्तियाँ चित्रकार मार्तंड द्वारा अपने कवि मित्र चूड़ामणि से कहीं गई हैं। चित्रकार मार्तंड अपनी बनाई हुई तस्वीर लेकर लाला रामनाथ के पास यह उम्मीद लेकर जाता हैं कि उसकी कलाकृति को सही दाम देकर रईस लाला रामनाथ खरीद लेंगे, किंतु वहाँ पहुँचकर उसने पाया कि लाला रामनाथ कला के पारखी नहीं, कला एवं कलाकारों के शोषक हैं। वे पचास रुपये की तस्वीर सात रुपये में खरीदना चाहते हैं। यह सुनकर चित्रकार मार्तंड को क्रोध आ जाता है और वह अपनी भड़ास लाला को 'चोर' कहकर निकालता है। दोनों के बीच कहा-सुनी इतनी हो जाती है कि लाला रामनाथ अपने नौकरों को मार्तंड को पीटने का आदेश देते हैं, किंतु मार्तंड लाला रामनाथ के चेहरे पर घूँसा मारकर अपनी बनाई हुई तस्वीर लेकर भाग खड़ा होता है, किंतु हड़बड़ाहट में वह अपनी बनाई हुई तस्वीर के बजाय विलायत से बनकर आयी लाला रामनाथ के पिता की तस्वीर लेकर चला आता है।

विशेष - प्रस्तुत अवतरण में कलाकार मार्तंड की वेदना व्यक्त हुई है।

रईसों द्वारा कलाकारों के शोषण की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

४.५ टिप्पणी-

'दो कलाकार' एकांकी का उद्देश्य - 'दो कलाकार' एकांकी का उद्देश्य समाज के दोनों वर्गों - कला का सृजन करनेवाले कलाकारों और कला का उपभोग करनेवाले रईसों- की संकीर्ण मानसिकता को उजागर करना है। दोनों वर्ग निजी स्वार्थों से ऊपर नहीं उठ पाते और कला के मूल उद्देश्य - आनंद प्राप्ति - से बहुत दूर चले गये हैं। कला का उपभोग करनेवाले वर्ग के एक प्रतीक हैं- प्रकाशक परमानंद जिनके पास नई मोटर खरीदने के लिए रुपये हैं, किंतु कवि चूड़ामणि की किताब के लिए पारिश्रमिक देने के लिए रुपये नहीं हैं। दूसरे प्रतीक हैं लाला रामानाथ जो ५० रुपये की तस्वीर के लिए ७ रुपये से अधिक एक कौड़ी भी नहीं देना चाहते। वहीं दूसर ीओर दो कलाकार हैं जो जीवन जीने के लिए कला की उदात्तता से कोसों दूर निजी स्वार्थ साधने के लिए धूर्तता पर उतर आते हैं। लोगों की कमजोरियों का लाभ उठाते हैं, वे चाहे प्रकाशक हों, चाहे लाला रामनाथ हों, या मकानमालिक बुलाकीदास हो। दोनों सभी को बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं।

४.६ अभ्यास कार्य

प्रश्न - 'दो कलाकार' एकांकी का व्यंग्य सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(उत्तर के लिए कथासार पढ़ें)

संदर्भसहित व्याख्या

१) आप लोग जानते हैं..... उनकी नाक कटवा दी।

२) तुम्हारी जगह अगर मैं..... सीधा वापस आता।

३) चिंता न करो..... घड़ी बेच दूँगा।

टिप्पणी

१) कवि चूड़ामणि

२) चित्रकार मार्तंड़

३) 'दो कलाकार' एकांकी में कलाकारों की धूर्तता।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) 'दो कलाकार' एकांकी में कवि का नाम बताइये?

२) चूड़ामणि किसकी सोने की घड़ी लेकर भाग जाता है?

३) लाला रामनाथ को पिता की तस्वीर देखते ही क्रोध क्यों आया?

४) बुलाकीदास कौन है?

५) बुलाकीदास को बुलाकी पुराण लिखने की धमकी किसने दी?

६) दोनों कलाकारों ने कितने महीनों से किराया नहीं चुकाया था?

❖❖❖

१५

कॉफी हाऊस में इंतजार

- लक्ष्मीनारायण लाल

इकाई की रूपरेखा

१५.० उद्देश्य
१५.१ प्रस्तावना
१५.२ एकांकीकार लक्ष्मीनारायण का परिचय
१५.३ 'कॉफी हाऊस में इंतजार का कथासार
१५.४ संदर्भसहित व्याख्या
१५.५ टिप्पणी 'कॉफी हाऊस में इंतजार' के पात्रों की प्रतीकात्मकता
१५.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
१५.७ अभ्यासकार्य
प्रश्न-
टिप्पणी
संदर्भसहित व्याख्या

१५.० उद्देश्य

स्वतंत्रता के पश्चात् नाटक व रंगमंच की परंपरा में प्रयोगधर्मी नाटकों (कथ्य एवं शिल्प) के संबंध में प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से यथार्थवादी एवं एब्सर्ड नाटकों का परिचय देना।

१५.१ प्रस्तावना

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में समकालीन जीवन का यथार्थ व सत्य विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त हुआ है। प्रस्तुत एकांकी में भी 'कॉफी हाऊस' संस्कृति, मध्यवर्गीय सोच एवं सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण बड़ी सूक्ष्मता से किया गया है। व्यंग्य बहुत सूक्ष्म एवं सटीक है।

१५.३ लक्ष्मीनारायण लाल- परिचय

एक समर्थ नाटककार, कुशल अभिनेता, सफल निर्देशक एवं समीक्षक लक्ष्मीनारायण लाल का जन्म उत्तरप्रदेश के जलालपुर गाँव में ४ मार्च १९२७ को हुआ। शिक्षा-दीक्षा बस्ती एवं इलाहाबाद में हुई। कार्यक्षेत्र भी हिन्दी अध्यापन रहा। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे और १९५८ में नाट्य-केंद्र' की स्थापना की। 'नाट्य केंद्र' के माध्यम से नाटक एवं रंगमंच क्षेत्र में सक्रिय रहे। उनके छह एकांकी संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें 'ताजमहल के आँसू', 'पर्वत के पीछे', नाटक बहुरंगी, 'दूसरा दरवाजा' 'खेल नहीं नाटक' तथा 'नया तमाशाआ'को विशेष प्रसिद्धि मिली।

लक्ष्मीनारायण लालजी के एकांकियों में सामाजिक जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति मिलती है। समस्याओं का सूक्ष्म समाधान और रंगमचीय सार्थकता इनके नाटकों की सहज उपलब्धियाँ है।

१५.३ कथासार-

'काफी हाऊस में इंतजार ' बद्धिजीवी वर्ग पर सशक्त व्यंग्य है। बुद्धिजीवी की सारी सक्रियता, बहसबाजी तक ही सीमित रहती है। कॉफी पीते हुये कॉफी के प्यालों में बड़े-बड़े तूफान उठाये जाते हैं। प्रस्तुत एकांकी में भी दो व्यक्ति कॉफी हाऊस में मिलते हैं और बैठने की जगह (कुर्सी) को लेकर दोनों में तकरार होती है। प्रस्तुत एकांकी में पात्रों के नाम नहीं हैं, वे वर्ग के प्रतिनिधि हैं, इसलिए पहला व्यक्ति, दूसरा व्यक्ति और बेयरा के रूप में वे चित्रित है। कुर्सी पर बैठने के लिए पहला व्यक्ति कहता है कि वह तेरह साल से एक ही जगह पर आकर बैठता है। दूसरा व्यक्ति कुर्सी पर बैठने के लिए अपने को दावेदार मानता है, क्योंकि पिछले छह दिनों से वह और उसकी गर्लफ्रेंड वहाँ आ रहे थे। वे आमने-सामने बैठकर बातें किया करते थे। पहले और दूसरे व्यक्ति के मध्य हुये संवाद के माध्यम से देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियों से जुड़े प्रश्नों को उठाया गया है। इन दोनों व्यक्तियों के अतिरिक्त एक तीसरा व्यक्ति भी है, जिसे 'सज्जन'कहा गया है। वह कमरे के भीतर बैठकर बाहर की गतिविधियों पर नजर रखता है, बेयरे के माध्यम से दोनों व्यक्तियों को समय-समय पर कॉफी भिजवाता रहता है, दोनों की बातचीत सुनता है। सुनता ही नहीं, नियंत्रित भी करता है। एकांकी के अंत में पहले व्यक्ति को वह एक महापुरुष की आत्मकथा, दूसरे व्यक्ति को मिनी सूट और उसकी गर्लफ्रेंड को मिनी साडी भेंट में बेयरे के द्वारा भिजवाता है। इसके अलावा दूसरे व्यक्ति की गर्लफ्रेंड को वह इंटरप्रेटर बनाकर अपने साथ विदेश ले जाने की बात करता है। चूँकि लक्ष्मीनारायण लाल रंगमंच से भी काफी गहरे तक जुड़े रहे हैं, इसलिए प्रस्तुत एकांकी में भी उन्होंने एब्सर्ड शैली का प्रयोग किया है।

१५.४ संदर्भसहित व्याख्या

''सज्जन पुरुष ने आप लोगों को शीतल जल पिलाने के लिए कहा है। जिसे ज्यादा चोट आयी हैं वह थोड़ा रूककर पियेगा, जिसे कम आयी है वह फौरन पिये।''

संदर्भ - पिछली इकाई में दिये गये उदाहरण के अनुसार

व्याख्या- प्रस्तुत वाक्य बेयरा उस समय फहता है जब दोनों बुद्धिजीवी (पहला व्यक्ति और दूसरा व्यक्ति) कुर्सी के लिए आपस में लड़ते हैं। दोनों बुद्धिजीवियों में से एक के हाथ में कुर्सी है और दूसरा व्यक्ति चोट खाकर नीचे गिरा हुआ है, उसी समय बेयरा हाथ में दो गिलास पानी लिये आता है। बेयरा सज्जन के इशारे से पानी तो लाता है, लेकिन दोनों में फूट डालने के लिए कहता है, जिसे ज्यादा चोट आयी है, वह थोड़ा रूककर पियेगा, जिसे कम आयी है वह फौरन पिये।

विशेष - प्रस्तुत पंक्तियों में शासक वर्ग की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का संकेत है।

- शासक वर्ग की उंगलियों पर नाचनेवाले नौकरशाहों की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।
- बुद्धिजीवियों की स्वार्थपरता का यथार्थ व सफल चित्रण हुआ है।

१५.५ 'काफी हाऊस में इंतजार' एकांकी में पात्रों की प्रतीकात्मकता

- डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल स्वातंत्र्योत्तर काल में नाटक व रंगमंच की परंपरा को जोड़नेवाले कुशल सूत्रधार तो बने ही, साथ ही प्रयोगशील परंपराओं तथा एब्सर्ड शैली से गहरे रूप से जुड़े रहे। प्रस्तुत एकांकी में पात्रों को नाम न देकर विभिन्न वर्गों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पहला व्यक्ति पुरानी पीढ़ी का प्रतीक है, उस पीढ़ी का जिसने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, इतिहास एवं संस्कृति से जुड़ी रही। दूसरा व्यक्ति युवा पीढ़ी का प्रतीक है, युवा पीढ़ी जिसमें अतीत के प्रति संवेदना का अभाव है एवं वर्तमान में सिगरेट के धुएँ और कॉफी हाऊस में बैठकर इंतजार एवं बहस करती है। प्रस्तुत एकांकी में तीसरा व्यक्ति भी है, जिसे सज्जन (व्यंग्य से) कहा गया है। वह उस वर्ग का प्रतीक है, जो बुद्धिजीवी वर्ग पर शासन करता है, नौकरशाहों के माध्यम से। नौकरशाहों के प्रतीक के रूप में 'बेयरा' नामक पात्र की प्रस्तुति की गई है, जो सज्जन के इशारों पर दोनों बुद्धिजीवियों को आपस में लड़वाने का कार्य करता है, क्योंकि उसे अपनी नौकरी बचाये रखनी है।

५.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ एकांकी में पुरानी पीढ़ी का प्रतीक कौनसा व्यक्ति है?

उ. एकांकी में पुरानी पीढ़ी का प्रतीक पहला व्यक्ति है।

प्र.२ पहले व्यक्ति ने किस संग्राम में हिस्सा लिया था।

उ. पहले व्यक्ति ने स्वतंत्रता-संग्राम में हिस्सा लिया था।

प्र.३ सुराजी गुरु ने तेहर दिन का कौन सा उपवास किया था?

उ. सुराजी गुरु ने तेरह दिन का आत्मशुद्धि का उपवास किया था।

प्र.४ अंगरेज कलक्टर ने अपने हाथ से कॉफी किसको पिलाई थी?

उ. अंगरेज कलक्टर ने अपने हाथ से कॉफी सुराजी गुरु को पिलाई थी।

प्र. ५ पहला व्यक्ति सज्जन पुरुष से किस अंग्रेजी शब्द का हिन्दी अनुवाद पूछने के लिए बेयरे से कहता है?

उ. पहला व्यक्ति सज्जन पुरुष से 'इनडिस्पिलिन' शब्द का हिन्दी अनुवाद पूछने के लिए बेयरे से कहता है।

प्र.६ हमारे सांस्कृतिक जीवन में किस प्राणी का अत्यधिक महत्त्व है।

उ. हमारे सांस्कृतिक जीवन में कुत्ते का अत्यधिक महत्त्व है।

प्र.७ सज्जन पुरुष डोसा खाते हुए किस विषय पर प्रेस-कांफ्रेस कर रहे थे?

उ. सज्जन पुरुष डोसा खाते हुए 'फूड-प्राब्लेम' पर प्रेस-कांफ्रेस कर रहे थे।

प्र.८ मिनी कौन थी?

उ. मिनी दूसरे व्यक्ति की गर्लफ्रेंड थी।

प्र.९ सज्जन पुरुष ने पहले व्यक्ति को उपहार में क्या दिया?

उ. सज्जन पुरुष नें पहले व्यक्ति को 'एक महापुरुष की आत्मकता उपहार में दी।

प्र. १० बेयरे ने अपने पिता का नाम क्या बताया था?

उ. बेयरे ने अपने पिता का नाम स्वदेश प्रसाद बताया था।

१५.७ अभ्यास कार्य

प्र. १ 'काफी हाऊस में इंतजार' एकांकी के कथ्य पर प्रकाश डालिए।
(उत्तर के लिए कथासार उद्धृत करें)

टिप्पणी - एकांकी में बेयरे की भूमिका
- एकांकी में वर्णित सज्जन पुरुष

संदर्भसहित व्याख्या

१) अजीब बात है.....हमने स्वतंत्रता संग्राम।

२) देवियों और सज्जनों..... क्रमशः पतन हो रहा है।

३) नहीं, तू अंग्रेज है..... सारी नीति उसी दुश्मन के हाथ में थी।

४) मैं तेरा ही ..... अभिशप्त है।

संदर्भ-पुस्तकें

(१) 'रंग-सप्तक' सं. डॉ. सरस्वती भल्ला।

(२) हिन्दी साहित्यकोश - भाग १

(३) हिन्दी साहित्यकोश - भाग २- संपादक धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान) व्रजेश्वर वर्मा रामस्वरूप चतुर्वेदी
रघुवंश (संयोजक)
ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, द्वितीय संस्करण० १९८६ ई.

❖❖❖